

Shri Raghunath Temple MSS. Library,
JAMMU

No. 2639 (महामाते)
Title भगवद्गीता १८ लेखक महिमा
Author १९५२ अध्यायः
श्रीसदानन्द वासः
Extent २०५ Age ४
Subject वेदान्त शास्त्रं

१५३

(महाभारते)

भगवद्गीता अष्टादश
टीकासहिता वका
दशाय्यायः

२०२१

Double Nos. 6, 9, 12, 15.
 # 50, 58, 65, 84, 107, 123, 147.
 P. 1 + 184 + 10 = 195.
 272 / 184 = 102.
 195 + 102 = 297.
 297 + 102 = 399.
 399 + 102 = 501.
 501 + 102 = 603.
 603 + 102 = 705.
 705 + 102 = 807.
 807 + 102 = 909.
 909 + 102 = 1011.
 1011 + 102 = 1113.
 1113 + 102 = 1215.
 1215 + 102 = 1317.
 1317 + 102 = 1419.
 1419 + 102 = 1521.
 1521 + 102 = 1623.
 1623 + 102 = 1725.
 1725 + 102 = 1827.
 1827 + 102 = 1929.
 1929 + 102 = 2031.
 2031 + 102 = 2133.
 2133 + 102 = 2235.
 2235 + 102 = 2337.
 2337 + 102 = 2439.
 2439 + 102 = 2541.
 2541 + 102 = 2643.
 2643 + 102 = 2745.
 2745 + 102 = 2847.
 2847 + 102 = 2949.
 2949 + 102 = 3051.
 3051 + 102 = 3153.
 3153 + 102 = 3255.
 3255 + 102 = 3357.
 3357 + 102 = 3459.
 3459 + 102 = 3561.
 3561 + 102 = 3663.
 3663 + 102 = 3765.
 3765 + 102 = 3867.
 3867 + 102 = 3969.
 3969 + 102 = 4071.
 4071 + 102 = 4173.
 4173 + 102 = 4275.
 4275 + 102 = 4377.
 4377 + 102 = 4479.
 4479 + 102 = 4581.
 4581 + 102 = 4683.
 4683 + 102 = 4785.
 4785 + 102 = 4887.
 4887 + 102 = 4989.
 4989 + 102 = 5091.
 5091 + 102 = 5193.
 5193 + 102 = 5295.
 5295 + 102 = 5397.
 5397 + 102 = 5499.
 5499 + 102 = 5601.
 5601 + 102 = 5703.
 5703 + 102 = 5805.
 5805 + 102 = 5907.
 5907 + 102 = 6009.
 6009 + 102 = 6111.
 6111 + 102 = 6213.
 6213 + 102 = 6315.
 6315 + 102 = 6417.
 6417 + 102 = 6519.
 6519 + 102 = 6621.
 6621 + 102 = 6723.
 6723 + 102 = 6825.
 6825 + 102 = 6927.
 6927 + 102 = 7029.
 7029 + 102 = 7131.
 7131 + 102 = 7233.
 7233 + 102 = 7335.
 7335 + 102 = 7437.
 7437 + 102 = 7539.
 7539 + 102 = 7641.
 7641 + 102 = 7743.
 7743 + 102 = 7845.
 7845 + 102 = 7947.
 7947 + 102 = 8049.
 8049 + 102 = 8151.
 8151 + 102 = 8253.
 8253 + 102 = 8355.
 8355 + 102 = 8457.
 8457 + 102 = 8559.
 8559 + 102 = 8661.
 8661 + 102 = 8763.
 8763 + 102 = 8865.
 8865 + 102 = 8967.
 8967 + 102 = 9069.
 9069 + 102 = 9171.
 9171 + 102 = 9273.
 9273 + 102 = 9375.
 9375 + 102 = 9477.
 9477 + 102 = 9579.
 9579 + 102 = 9681.
 9681 + 102 = 9783.
 9783 + 102 = 9885.
 9885 + 102 = 9987.
 9987 + 102 = 10089.
 10089 + 102 = 10191.
 10191 + 102 = 10293.
 10293 + 102 = 10395.
 10395 + 102 = 10497.
 10497 + 102 = 10599.
 10599 + 102 = 10701.
 10701 + 102 = 10803.
 10803 + 102 = 10905.
 10905 + 102 = 11007.
 11007 + 102 = 11109.
 11109 + 102 = 11211.
 11211 + 102 = 11313.
 11313 + 102 = 11415.
 11415 + 102 = 11517.
 11517 + 102 = 11619.
 11619 + 102 = 11721.
 11721 + 102 = 11823.
 11823 + 102 = 11925.
 11925 + 102 = 12027.
 12027 + 102 = 12129.
 12129 + 102 = 12231.
 12231 + 102 = 12333.
 12333 + 102 = 12435.
 12435 + 102 = 12537.
 12537 + 102 = 12639.
 12639 + 102 = 12741.
 12741 + 102 = 12843.
 12843 + 102 = 12945.
 12945 + 102 = 13047.
 13047 + 102 = 13149.
 13149 + 102 = 13251.
 13251 + 102 = 13353.
 13353 + 102 = 13455.
 13455 + 102 = 13557.
 13557 + 102 = 13659.
 13659 + 102 = 13761.
 13761 + 102 = 13863.
 13863 + 102 = 13965.
 13965 + 102 = 14067.
 14067 + 102 = 14169.
 14169 + 102 = 14271.
 14271 + 102 = 14373.
 14373 + 102 = 14475.
 14475 + 102 = 14577.
 14577 + 102 = 14679.
 14679 + 102 = 14781.
 14781 + 102 = 14883.
 14883 + 102 = 14985.
 14985 + 102 = 15087.
 15087 + 102 = 15189.
 15189 + 102 = 15291.
 15291 + 102 = 15393.
 15393 + 102 = 15495.
 15495 + 102 = 15597.
 15597 + 102 = 15699.
 15699 + 102 = 15801.
 15801 + 102 = 15903.
 15903 + 102 = 16005.
 16005 + 102 = 16107.
 16107 + 102 = 16209.
 16209 + 102 = 16311.
 16311 + 102 = 16413.
 16413 + 102 = 16515.
 16515 + 102 = 16617.
 16617 + 102 = 16719.
 16719 + 102 = 16821.
 16821 + 102 = 16923.
 16923 + 102 = 17025.
 17025 + 102 = 17127.
 17127 + 102 = 17229.
 17229 + 102 = 17331.
 17331 + 102 = 17433.
 17433 + 102 = 17535.
 17535 + 102 = 17637.
 17637 + 102 = 17739.
 17739 + 102 = 17841.
 17841 + 102 = 17943.
 17943 + 102 = 18045.
 18045 + 102 = 18147.
 18147 + 102 = 18249.
 18249 + 102 = 18351.
 18351 + 102 = 18453.
 18453 + 102 = 18555.
 18555 + 102 = 18657.
 18657 + 102 = 18759.
 18759 + 102 = 18861.
 18861 + 102 = 18963.
 18963 + 102 = 19065.
 19065 + 102 = 19167.
 19167 + 102 = 19269.
 19269 + 102 = 19371.
 19371 + 102 = 19473.
 19473 + 102 = 19575.
 19575 + 102 = 19677.
 19677 + 102 = 19779.
 19779 + 102 = 19881.
 19881 + 102 = 19983.
 19983 + 102 = 20085.
 20085 + 102 = 20187.
 20187 + 102 = 20289.
 20289 + 102 = 20391.
 20391 + 102 = 20493.
 20493 + 102 = 20595.
 20595 + 102 = 20697.
 20697 + 102 = 20799.
 20799 + 102 = 20901.
 20901 + 102 = 21003.
 21003 + 102 = 21105.
 21105 + 102 = 21207.
 21207 + 102 = 21309.
 21309 + 102 = 21411.
 21411 + 102 = 21513.
 21513 + 102 = 21615.
 21615 + 102 = 21717.
 21717 + 102 = 21819.
 21819 + 102 = 21921.
 21921 + 102 = 22023.
 22023 + 102 = 22125.
 22125 + 102 = 22227.
 22227 + 102 = 22329.
 22329 + 102 = 22431.
 22431 + 102 = 22533.
 22533 + 102 = 22635.
 22635 + 102 = 22737.
 22737 + 102 = 22839.
 22839 + 102 = 22941.
 22941 + 102 = 23043.
 23043 + 102 = 23145.
 23145 + 102 = 23247.
 23247 + 102 = 23349.
 23349 + 102 = 23451.
 23451 + 102 = 23553.
 23553 + 102 = 23655.
 23655 + 102 = 23757.
 23757 + 102 = 23859.
 23859 + 102 = 23961.
 23961 + 102 = 24063.
 24063 + 102 = 24165.
 24165 + 102 = 24267.
 24267 + 102 = 24369.
 24369 + 102 = 24471.
 24471 + 102 = 24573.
 24573 + 102 = 24675.
 24675 + 102 = 24777.
 24777 + 102 = 24879.
 24879 + 102 = 24981.
 24981 + 102 = 25083.
 25083 + 102 = 25185.
 25185 + 102 = 25287.
 25287 + 102 = 25389.
 25389 + 102 = 25491.
 25491 + 102 = 25593.
 25593 + 102 = 25695.
 25695 + 102 = 25797.
 25797 + 102 = 25899.
 25899 + 102 = 26001.
 26001 + 102 = 26103.
 26103 + 102 = 26205.
 26205 + 102 = 26307.
 26307 + 102 = 26409.
 26409 + 102 = 26511.
 26511 + 102 = 26613.
 26613 + 102 = 26715.
 26715 + 102 = 26817.
 26817 + 102 = 26919.
 26919 + 102 = 27021.
 27021 + 102 = 27123.
 27123 + 102 = 27225.
 27225 + 102 = 27327.
 27327 + 102 = 27429.
 27429 + 102 = 27531.
 27531 + 102 = 27633.
 27633 + 102 = 27735.
 27735 + 102 = 27837.
 27837 + 102 = 27939.
 27939 + 102 = 28041.
 28041 + 102 = 28143.
 28143 + 102 = 28245.
 28245 + 102 = 28347.
 28347 + 102 = 28449.
 28449 + 102 = 28551.
 28551 + 102 = 28653.
 28653 + 102 = 28755.
 28755 + 102 = 28857.
 28857 + 102 = 28959.
 28959 + 102 = 29061.
 29061 + 102 = 29163.
 29163 + 102 = 29265.
 29265 + 102 = 29367.
 29367 + 102 = 29469.
 29469 + 102 = 29571.
 29571 + 102 = 29673.
 29673 + 102 = 29775.
 29775 + 102 = 29877.
 29877 + 102 = 29979.
 29979 + 102 = 30081.
 30081 + 102 = 30183.
 30183 + 102 = 30285.
 30285 + 102 = 30387.
 30387 + 102 = 30489.
 30489 + 102 = 30591.
 30591 + 102 = 30693.
 30693 + 102 = 30795.
 30795 + 102 = 30897.
 30897 + 102 = 30999.
 30999 + 102 = 31101.
 31101 + 102 = 31203.
 31203 + 102 = 31305.
 31305 + 102 = 31407.
 31407 + 102 = 31509.
 31509 + 102 = 31611.
 31611 + 102 = 31713.
 31713 + 102 = 31815.
 31815 + 102 = 31917.
 31917 + 102 = 32019.
 32019 + 102 = 32121.
 32121 + 102 = 32223.
 32223 + 102 = 32325.
 32325 + 102 = 32427.
 32427 + 102 = 32529.
 32529 + 102 = 32631.
 32631 + 102 = 32733.
 32733 + 102 = 32835.
 32835 + 102 = 32937.
 32937 + 102 = 33039.
 33039 + 102 = 33141.
 33141 + 102 = 33243.
 33243 + 102 = 33345.
 33345 + 102 = 33447.
 33447 + 102 = 33549.
 33549 + 102 = 33651.
 33651 + 102 = 33753.
 33753 + 102 = 33855.
 33855 + 102 = 33957.
 33957 + 102 = 34059.
 34059 + 102 = 34161.
 34161 + 102 = 34263.
 34263 + 102 = 34365.
 34365 + 102 = 34467.
 34467 + 102 = 34569.
 34569 + 102 = 34671.
 34671 + 102 = 34773.
 34773 + 102 = 34875.
 34875 + 102 = 34977.
 34977 + 102 = 35079.
 35079 + 102 = 35181.
 35181 + 102 = 35283.
 35283 + 102 = 35385.
 35385 + 102 = 35487.
 35487 + 102 = 35589.
 35589 + 102 = 35691.
 35691 + 102 = 35793.
 35793 + 102 = 35895.
 35895 + 102 = 35997.
 35997 + 102 = 36099.
 36099 + 102 = 36201.
 36201 + 102 = 36303.
 36303 + 102 = 36405.
 36405 + 102 = 36507.
 36507 + 102 = 36609.
 36609 + 102 = 36711.
 36711 + 102 = 36813.
 36813 + 102 = 36915.
 36915 + 102 = 37017.
 37017 + 102 = 37119.
 37119 + 102 = 37221.
 37221 + 102 = 37323.
 37323 + 102 = 37425.
 37425 + 102 = 37527.
 37527 + 102 = 37629.
 37629 + 102 = 37731.
 37731 + 102 = 37833.
 37833 + 102 = 37935.
 37935 + 102 = 38037.
 38037 + 102 = 38139.
 38139 + 102 = 38241.
 38241 + 102 = 38343.
 38343 + 102 = 38445.
 38445 + 102 = 38547.
 38547 + 102 = 38649.
 38649 + 102 = 38751.
 38751 + 102 = 38853.
 38853 + 102 = 38955.
 38955 + 102 = 39057.
 39057 + 102 = 39159.
 39159 + 102 = 39261.
 39261 + 102 = 39363.
 39363 + 102 = 39465.
 39465 + 102 = 39567.
 39567 + 102 = 39669.
 39669 + 102 = 39771.
 39771 + 102 = 39873.
 39873 + 102 = 39975.
 39975 + 102 = 40077.
 40077 + 102 = 40179.
 40179 + 102 = 40281.
 40281 + 102 = 40383.
 40383 + 102 = 40485.
 40485 + 102 = 40587.
 40587 + 102 = 40689.
 40689 + 102 = 40791.
 40791 + 102 = 40893.
 40893 + 102 = 40995.
 40995 + 102 = 41097.
 41097 + 102 = 41199.
 41199 + 102 = 41301.
 41301 + 102 = 41403.
 41403 + 102 = 41505.
 41505 + 102 = 41607.
 41607 + 102 = 41709.
 41709 + 102 = 41811.
 41811 + 102 = 41913.
 41913 + 102 = 42015.
 42015 + 102 = 42117.
 42117 + 102 = 42219.
 42219 + 102 = 42321.
 42321 + 102 = 42423.
 42423 + 102 = 42525.
 42525 + 102 = 42627.
 42627 + 102 = 42729.
 42729 + 102 = 42831.
 42831 + 102 = 42933.
 42933 + 102 = 43035.
 43035 + 102 = 43137.
 43137 + 102 = 43239.
 43239 + 102 = 43341.
 43341 + 102 = 43443.
 43443 + 102 = 43545.
 43545 + 102 = 43647.
 43647 + 102 = 43749.
 43749 + 102 = 43851.
 43851 + 102 = 43953.
 43953 + 102 = 44055.
 44055 + 102 = 44157.
 44157 + 102 = 44259.
 44259 + 102 = 44361.
 44361 + 102 = 44463.
 44463 + 102 = 44565.
 44565 + 102 = 44667.
 44667 + 102 = 44769.
 44769 + 102 = 44871.
 44871 + 102 = 44973.
 44973 + 102 = 45075.
 45075 + 102 = 45177.
 45177 + 102 = 45279.
 45279 + 102 = 45381.
 45381 + 102 = 45483.
 45483 + 102 = 45585.
 45585 + 102 = 45687.
 45687 + 102 = 45789.
 45789 + 102 = 45891.
 45891 + 102 = 45993.
 45993 + 102 = 46095.
 46095 + 102 = 46197.
 46197 + 102 = 46299.
 46299 + 102 = 46401.
 46401 + 102 = 46503.
 46503 + 102 = 46605.
 46605 + 102 = 46707.
 46707 + 102 = 46809.
 46809 + 102 = 46911.
 46911 + 102 = 47013.
 47013 + 102 = 47115.
 47115 + 102 = 47217.
 47217 + 102 = 47319.
 47319 + 102 = 47421.
 47421 + 102 = 47523.
 47523 + 102 = 47625.
 47625 + 102 = 47727.
 47727 + 102 = 47829.
 47829 + 102 = 47931.
 47931 + 102 = 48033.
 48033 + 102 = 48135.
 48135 + 102 = 48237.
 48237 + 102 = 48339.
 48339 + 102 = 48441.
 48441 + 102 = 48543.
 48543 + 102 = 48645.
 48645 + 102 = 48747.
 48747 + 102 = 48849.
 48849 + 102 = 48951.
 48951 + 102 = 49053.
 49053 + 102 = 49155.
 49155 + 102 = 49257.
 49257 + 102 = 49359.
 49359 + 102 = 49461.
 49461 + 102 = 49563.
 49563 + 102 = 49665.
 49665 + 102 = 49767.
 49767 + 102 = 49869.
 49869 + 102 = 49971.
 49971 + 102 = 50073.
 50073 + 102 = 50175.
 50175 + 102 = 50277.
 50277 + 102 = 50379.
 50379 + 102 = 50481.
 50481 + 102 = 50583.
 50583 + 102 = 50685.
 50685 + 102 = 50787.
 50787 + 102 = 50889.
 50889 + 102 = 50991.
 50991 + 102 = 51093.
 51093 + 102 = 51195.
 51195 + 102 = 51297.
 51297 + 102 = 51399.
 51399 + 102 = 51501.
 51501 + 102 = 51603.
 51603 + 102 = 51705.
 51705 + 102 = 51807.
 51807 + 102 = 51909.
 51909 + 102 = 52011.
 52011 + 102 = 52113.
 52113 + 102 = 52215.
 52215 + 102 = 52317.
 52317 + 102 = 52419.
 52419 + 102 = 52521.
 52521 + 102 = 52623.
 52623 + 102 = 52725.
 52725 + 102 = 52827.
 52827 + 102 = 52929.
 52929 + 102 = 53031.
 53031 + 102 = 53133.
 53133 + 102 = 53235.
 53235 + 102 = 53337.
 53337 + 102 = 53439.
 53439 + 102 = 53541.
 53541 + 102 = 53643.
 53643 + 102 = 53745.
 53745 + 102 = 53847.
 53847 + 102 = 53949.
 53949 + 102 = 54051.
 54051 + 102 = 54153.
 54153 + 102 = 54255.
 54255 + 102 = 54357.
 54357 + 102 = 54459.
 54459 + 102 = 54561.
 54561 + 102 = 54663.
 54663 + 102 = 54765.
 54765 + 102 = 54867.
 54867 + 102 = 54969.
 54969 + 102 = 55071.
 55071 + 102 = 55173.
 55173 + 102 = 55275.
 55275 + 102 = 55377.
 55377 + 102 = 55479.<

एकादशोऽध्याय

शंकरभाष्य
आनेंदगिरिकृतटी.
श्रीधरी स्वामिकृता
पिशुचभाष्य
रामानुजभाष्य
अभिनवगुप्ती
परमार्थप्रपा
वनमाली
ऊसुमेवैजयन्ती
मधुसूदनी
सदानंदी
नीलकंठी
आनंदी
रामकंठी
लासिकी
पंचोली ॥

भाषा अनुवाद ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

विष्णुसहस्रनाम स्तोत्रम्

विष्णुसहस्रनाम स्तोत्रम्

विष्णुसहस्रनाम स्तोत्रम्

विष्णुसहस्रनाम स्तोत्रम्

विष्णुसहस्रनाम स्तोत्रम्

विष्णुसहस्रनाम स्तोत्रम्

विष्णुसहस्रनाम स्तोत्रम्

विष्णुसहस्रनाम स्तोत्रम्

विष्णुसहस्रनाम स्तोत्रम्

विष्णुसहस्रनाम स्तोत्रम्

विष्णुसहस्रनाम स्तोत्रम्

विष्णुसहस्रनाम स्तोत्रम्

विष्णुसहस्रनाम स्तोत्रम्

विष्णुसहस्रनाम स्तोत्रम्

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

**अर्जुन उवाच मदनुग्रहाय परमं गुह्यम
ध्यात्मसंज्ञितं यत्त्वयोक्तं वचस्तेन मोहो
यं विगतो मम १**

आहुरभाष्ये १

भगवतो विभूतय उक्तास्तत्र च विष्टभाहमिदं कृत्स्नमेकां
शेन स्थितो जगदिति भगवताभिहितं श्रुत्वा यज्जगदात्मरू
पमाद्यैर्मैश्वरं तत् साक्षात् कर्तुमिच्छन्नर्जुन उवाच मदनुग्रहा
यं परमं निरतिशयं गुह्यं गोप्यं अध्यात्मसंज्ञितमात्मनात्मविवेक
विषये निरतिशये यत्त्वयोक्तं वचोवाक्यं तेन वचसा मोहो यं वि
गतो ममाविवेकबुद्धिरगतेत्यर्थः १

आनन्दगिरिकृतटीका २

तेन तेनात्मना भगवदनुसन्धानार्थमुक्ता विभूतीरनुवदति भ
गवत इति परस्य सोपाधिकं निरुपाधिकञ्च चिद्रूपं ध्येयत्वेन
ज्ञेयत्वेन चोक्तमित्यर्थः सोपाधिकमैश्वरं रूपमशेषजदात्मकं १ ग
विष्टरूपाद्यमधिकस्याध्यायान्नरमवतारयत्ननन्तरप्रसोपयो
गित्वेन ह्येतकीर्तयति तत्र चेति युदेतदशेषपञ्चात्मकमखिल २ ग
स्येतस्य जगतः कारणं सर्वज्ञं सर्वेश्वर्यवद्रूपमुक्तं तदिदं श्रु
त्वा तस्य साक्षात्कारं यियाचयिषुगदौ एष्टवानित्याह श्रुतेति म
यि करुणा निमित्रीकमोपकारोऽनुग्रहस्तदर्थमिति वचसोविशे
षणं निरतिशयत्वं परमपुरुषार्थसाधनत्वं अशोच्यानित्यादित्ये
दार्थप्रधानवाक्यं मोहस्यायमित्यात्मसात्त्विकत्वं दर्शयति १

आमिहकृतटीका ३

विभूतिवैभवे प्रोक्ता कृपया परयादयः दित्तो रर्जुनस्याप्यविष्टरूप
मदर्शयत् पूर्वाध्यायान्ते विष्टभाहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जग
त् इति विद्यात्मकं पारमेश्वररूपमुपपत्तिमेतदित्यतः पूर्वाक्तमभि
नेदन् अर्जुन उवाच मदनुग्रहायेति च तर्हि ममाऽनुग्रहाय शोक
निवृत्तये परमं परमार्थनिष्ठं गुह्यं गोप्यमपि अध्यात्मसंज्ञितं

श्री.
गी टी.
प

आत्मानात्मविवेकविषयं यत्त्वयोक्तं वचः श्रोतव्यं न त्वश्रोतव्यं
ज्ञावादीसंभाषसे इत्यादिषु व्याख्याय पर्यंतं यद्वाक्यं तेन ममायं मोक्षो
दं देताय ते दंतव्याख्यादिलक्षणो भ्रमो विगतो विनष्टः आत्मनः क
र्तव्याय भावोक्तेः १

पैशाचभाषाम् ४

एवं भगवन्मुक्त्वा संसेपविस्तराभ्यां दिक्कृतं विभूतिं श्रुत्वा पर
पदं कृत्वा मोर्जनं उवाच मद्नुग्रहायेति अथात्मसंसितमथात्म
प्रतिपादकं वचनमप्यपचारेणाथात्मसंसितमित्युच्यते १

समानुजभाषाम् ५

एवं भक्तियोगनिष्पत्तये तद्दिह हृदये च सकलेतरविलसत्तणो न स्वा
भाविकेन भगवदसाधारणेन कल्याणगुणगणेन सह भगवतः
सर्वोत्तमं तत्तत्तद्यतिरिक्तसकृत्तत्त्वस्य चिदचिदात्मकस्य ब्रह्मज्ञा
नस्य स्वरूपी रतया तदायतस्वरूपस्थितिप्रवृत्तिर्न चोक्तं तदेवं भग
वदसाधारणस्वभावेककृतस्य तदायतस्वरूपस्थितिप्रवृत्तिर्न च भ
गवत्सकार्ण्ड्यपशुस्यैव मेवेति च निश्चिततया भूते भगवते सा
त्तात्कर्तृकामोर्जनं उवाच तथैव भगवत्प्रसादादनेतरं दस्येति
सर्वीश्वर्यमये देवमनेते विस्तृतं सुखं तत्रैकस्यैव जगत्कृतं त्वं
विभक्तिमनेकयेति मदिति देहात्माभिमानरूपमोहेन मोहित
समानुग्रहेकप्रयोजनाय परमेश्वरस्य परमरहस्यमथात्मसंसि
तमात्मनिवक्तव्यं वचः न ते वाहजातनासमिप्यदितस्माद्योगी
भवान्ते ते तदेतं यत्त्वयोक्तं तेनायं ममात्मविषयो विमोहः सर्वो वि
गतः हरेतौ निरस्तः १

अभिनवगुप्तकृतटी. ६

समनेतरेणाध्यायेन यद्यवार्थोक्तस्तमेव प्रत्यक्षीकर्तृमर्जनः प्र
वृत्तिः स एव चायमुद्यमः योऽप्युपदेशक्रमेणार्थो वगतः स एव
प्रत्यक्षसंविदापारुह्यमाणः स्रुटीभवति तदर्थमेवेमे उक्तिप्रत्यु
क्ती उच्यते ॥ १ ॥ परमेश्वरार्थरूपाणि उक्तादि तमन्तरं परमं वेदितव्यमित्युक्तम् ॥ १ ॥

परमार्थप्रणाली का ७

एवं व्याख्याते विष्टा व्यादमिदं कृतमेकांशेन स्थितो जगदित्युक्तं तद्दि
तादृशं कीदृशं विषयतो निरूप्यते तमात्मोर्जनः प्रार्थयन् पृच्छति म

दनुग्रहायेति चतुर्भिः ममावग्रहायमोकनिवृत्तयेपरमेरहस्येगुणे
 गोप्यमध्यात्मसंसितेशात्मानात्मविवेकरूपेदहीनित्यमवध्यायमि
 तितथाश्रयत्वेव्यक्तिमापन्नमितितथासयाततमिदंविषमितितथा
 समोहसर्वभूतेष्वित्यादियद्वचः ॥ तेनमेमोहोविगतः निःशेषो
 गतः ॥

दशमालीटीका ८

पूर्वाध्यायेनानाविभूतीरुक्ताविष्टभाह मिदं कृत्स्नमित्यादिना ॥
 सर्वथापकमैश्वर्येयमुक्ते श्रुत्वापरमोक्तं ठितस्तत्सात्ताकर्तृका
 मोर्जनः पृच्छतिमदिति पूर्वषट्के सामानुरादहीनमात्मज्ञानतदुपा
 यकर्मसमाधियोगप्रतिपादकेपरमेगोप्यमात्मपरमात्मविषयता
 दध्यात्मसंसितेयद्वचस्त्वयोक्तेनेनवाधवादिविषयोमोहोपिनष्टः ॥

रुसमवैजयन्तीटीका ५

एकादशेविषयरूपमर्ज्जनायेत्यद्वयः तेनस्ततः पुनः सोम्यस्वरूपोः
 भूदितीयेते दशमेऽध्यायेऽमात्मागुणकेशसर्वभूताशयस्थितः वि
 ष्टभाहमिदं कृत्स्नमित्यपक्रमोपसंहाररूपाभ्याचेतनाचेतनात्मकस्य
 सर्वस्यजगतोभगवत्स्वरूपत्वेभगवत्सुखाच्छुत्वातमेवविद्यात्मक
 भगवत्स्वरूपेदष्टकामोर्जनस्व सारथिभगवन्तेपृच्छतिचतुर्भिः
 मदनुग्रहायेतिमदनुग्रहायममशोकमोहाद्यज्ञाननिवृत्तयेपरमेप
 रमार्थरूपेणसंवदितरेदेवायगोचरे अध्यात्मसंसितेदेहात्मविष
 ययुक्ते अशोचानन्वशोचस्त्वमित्यादिषष्ठाध्यातकेतद्वचः यद्वाक्यं त
 यासर्वेश्वरेणसर्वज्ञेनमन्त्रितेणोक्तेपूर्वकथितेनेनवचसाममत्त
 त्वासादलव्यात्मज्ञानस्यायंबुद्धिस्थितोमोहोदेहपवात्मेत्याकारक
 सर्व आत्मविषयोभ्रमोविगतोविशेषणहरतो निरस्तः ॥

मधुसूदनी टीका १

पूर्वाध्यायेनानाविभूतीरुक्ताविष्टभाहमिदं कृत्स्नमेकां
 शोनस्थितोजगत् इतिविद्यात्मकं परमं रूपं भगवतोतेभिदितं
 श्रुत्वापरमोक्तं ठितस्तत्सात्ताकर्तृकमित्यनपूर्वकमभितेदन्म
 दनुग्रहायशोकनिवृत्तयुपकारायपरमेनिरतिशयेपुरुषार्थप्रका
 शकं गुह्यगोप्यंयस्मैविद्वत्कमनर्हमपिअध्यात्मसंसितमध्यात्ममि
 तिश्रुतमात्मानात्मविवेकविषयमशोचानन्वशोचस्त्वमित्यादि
 षष्ठाध्यायपर्यन्तेनपदार्थप्रधानयत्नयापरमकारुणिकेनसर्वज्ञे

॥ श्रीनृणाव ॥

श्री.
गी. टी.
५

नोक्तं वचोवाक्येन वाकोनादमेघादंतामयेतेदत्तेरमादिविविध
विपर्यासलक्षणो मोहोयमनुभवसात्तिको विगताविनष्टः ममत्व
असक्तदात्मनः सर्वविक्रियाभूतत्वेनोक्तः १

सदानुदी टीका १ ११

सदा लक्षणावासे सकलमुनिवेषे सखनिधौ महाभागे र्ये ये विदाम
करं देसमतिदेविधीणाया स्वाद्ये कुशयवसविक्रेरतिपदे मना भेगो
मे श्रीहरिपदसरोजे प्रविशत १ पूर्वाभ्याये विभूतीः स्वाः प्रो च्छाते प्रो
क्तवा तितिविष्टभाहमिदं कृत्स्नमेकं शोन स्थितो जगत् २ इति विष्टा
त्मकं रूपं कृत्वा भगवतेरितं तत्सात्ता कर्तृकामः समूची क्तमभि
नेदति ३ अर्जुनो भगवद्भक्तिविशुद्धो तमनायतः ममेशा क निवृत्त
ये वाक्यो गोप्ये तयेरितं ४ यदुक्तं पुण्ये लो मो ले पयवसायि सर्वेषा
आत्मानात्मविवेकैकविषये संशयापदे ५ तेन मोहा विनष्टा मे दे
हाय भ्यासलतणाः प्रशोच्या नन्वेषा वस्तुमिह्यारभ्य विवेचनं ६ स
प्राभ्यायो तमेवोक्तं तेषां दार्ष्ट्यमुत्पन्नः तेन हेतादमेतेषां दत्ते ते ते
मयेति च ७ मोहो नष्टो क्रिये कृता स्वात्मानमजरामरे तथेव स
प्रमाभ्यायादारभ्य दशमो ततः ८ तस्य दार्ष्ट्यो विनिर्णीतः श्रीहरे
र्वचसा कृतः कृत्वा दारविंदेयत्मानमस्य दायते ९ माया हरम
यातीती तेनेत्येतेन निश्चिते १०

नीलकंठी टीका १२

पूर्वस्मिन्नभ्याये योगो विभूतिश्च व्याख्येयतेन प्रतिज्ञातौ एतौ विभू
तियोगं च ममयावेतीति आत्मनो योगं विभूतिं च जननादन भूयः
कः ययेतीतरेण च श्रोतव्यं तेन प्रार्थितो तत्र अदमात्मा गुडा केशस
र्वभूताशयस्थित इति संज्ञेयेण योगो भगवतः सर्वभूताधारतल
तण उक्तः प्राविभूतिकथनात् तदेतच्च विष्टभाहमिदं कृत्स्नमे
कोशेन स्थितो जगदिति कुसूलेन ध्यायमिव मयेदं जगद्विष्टमि
सत्ताम एव स्मारितं स देव भगवतः सर्वभूताधारत्वे सात्ता कर्तृ

कामोर्जन उवाच मदनुग्रहायेति मयि अनुग्रहो नु कं पातदर्थं मदनु
ग्रहाय परमेश्वरः शोकमोहनिवर्तकत्वेन उत्कृष्टं पुण्यं गोप्यं अथा
त्मसंज्ञितं आत्मानात्मविवेकाद्यैः शास्त्रैः अथात्मसंज्ञितं यत्तयाव
चः अशास्त्रान्तश्चावदस्यादिना षष्ठाध्यायपर्यंतं पदार्थशुद्धिप्र
धानेनायेदं तिनदमत्तस्यात्मनोऽकर्तृत्वाभोक्तृत्वप्रतिपादकं ते
नमममोहः अविवेको ये विशेषेण गतो नष्टः अत्र अथ मे पादेऽत
राधिकामार्थं ॥ २॥

आनेरीटीका

एवं च त्रंशस्येश्वरस्य प्रकृतिपुरुषादिष्टादिष्टानेन विश्वात्मतां विनिश्चि
त्य प्राप्तिनस्य कालसरूपस्य परीत्यार्थमर्जन उवाच अथात्मसंज्ञितं पर
मात्मविषयज्ञानं यम मोहो यमनात्मनात्मबुद्धिः १

२५

रामकंडीटीका

अथाध्यायदशकेन भगवत्पदिष्टज्ञानविज्ञानशब्देन मत्ताभिषेयवस्तु
वगा माज्ञादेव भगवत् परमेश्वरत्वावगमानस्य परमकारणत्वेन उक्ते व
चसि यथोक्तफलाविसेवादेकतया प्रकृष्टोपायत्वे निवृत्तसंदेहमात्मान
मावेदयं प्रकृतिमात्रप्रतिपन्नतत्तात्तादर्शनेन प्रबोद्धितोर्जन उवाच मदनु
ग्रहाय मामनुग्रहीतं निजया परशक्ता प्रबोधयितं तया परमेश्वरेण स्वयं
प्रतिपादितस्वभावेन यद्वचनमध्यायदशकात्मके वाक्यमथात्मसहितमा
त्मविषयज्ञानमयमतपवपरमेश्वरस्य प्रकृष्टं ह्रस्वमुक्तं मयदिष्टं तेन हेतु
भूतेनायं सर्वजनकीर्णकोशास्थितो मोह इति प्रतिपादितपरमार्थप्रति
पत्त्या त्वया प्रतीतिलक्षणा मज्ञानेन मम विवृत्तौ व्यपगतः १

लक्षिका

रामकंडीटीका

एवं दशमेनाध्यायेन भगवत्पदिष्टेश्वरयोगप्रवेशोपायानभूताविभूतीः
सम्पदकृता अपुन विस्तरेण आत्मनो योगविभूतिं चेत्यादिना एष्टमपि भ
गवत्तेकादशाध्यायेन विवृत्तमिषयानुत्तरितं महाव्याप्तिरूपमेश्वरयोगसंसीदा
कर्तृत्वं कृतमभितं दत्तं न उवाच मदनुग्रहाय मामनुग्रहीतं परमेश्वरस्य प्रकृ
ष्टं ह्रस्वमुक्तं मया प्रतिपादितं आत्मनो परमेश्वररूपस्य बलरूपतया निस्तंगस्यापि
सतः पूर्णाहंभावाधिकृतिलाभाख्यमेश्वर्यापरपर्यायमहमिदमीति वल

गी.
टी.
प

लागोवा अहमादिर्निदेवातामहं सर्वस्य प्रभवस्त्यादियद्वचस्तया सर्व
ज्ञो नोपदिष्टम् तेन ह त्वभूतनाय जगद्वैवित्र्यविषयो मोहस्तत्राप्रतिपत्तिः
किंकारणाकमेतद्वैवित्र्यमित्येवं नूपाविगतेनष्टः ॥

पञ्चोलीटीका

विभूतिवैभवोच्यग्रथायां ते विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो
जगत् इति भगवता यजगदात्मरूपसाध्यमैश्वर्यरूपमभिहितं तत्सा
क्षाक्षिकीर्षः पूर्वोक्तमभिनेदन् अर्जुन उवाच मदनुग्रहायेति हे
कृष्ण त्वयामदनुग्रहाय ममानुग्रहार्थं यत्परमं निरतिशयं यत्समथा
त्मसंज्ञितं ज्ञानैश्वर्यशक्तिबलवीर्यं ते ज्ञोभिः संपन्नं विस्मयस्वरूपं वि
षयमात्मानात्मविवेकविषयं वचः वाक्यं उक्तं तेन मम अयं मोहः
अविवेकः विगतः अपगतः ॥

रत्नदीपसमिद्धोद्यिनी

भगवद्वक्तियुक्तस्वरणावीरमदीभुजः आकल्पमस्तु तद्विषयमद
र्शनतः स्थितिः ॥ इत्युक्तं लक्षणा विभूतिमद्भगवद्वक्त्यप्रवरात्
स्वविषया स्वधर्माचकूलकृतार्थतां निश्चित्य दानी प्रत्यक्षत पेश्वरं
पं दिट्त्वरर्जुनः प्राधिना सर्वकमुपष्टोतं भगवंतं प्रत्याह मदनुग्रहा
येति मदनुग्रहाय मय्यनुग्रहो मदनुग्रहस्तस्मै निमित्तभूताया ध्या
त्मा प्रत्यनुपदेकं तं मयात्मसंज्ञितमात्मानं दोभ्तमधिकृत्य संज्ञि
तं चेष्टया ज्ञापितं संज्ञास्याचेतनानामदस्ताये रर्थसूचनेत्यनुप्रास
नायत्परमं पराङ्मुखीनात्यनेनेति परमं शुद्धस्वेति बोधनाचकूलं
प्रतपवत्संरदस्य वचस्त्योक्तमधुना त्वेव वचसा कथं भीष्ममहं
त्ये इत्याहुक्तं लक्षणाः प्रतिकूलव्यापारो यमेव मोहो विगतो मम
विमूढस्यापि मे विगतः प्रणष्टो धुनैव संज्ञातायात्मविवेको ह मस्मी
ति भावः ॥

१॥

सपुभाष्य

भगवान् अनुवाद

श्रीभगवान् कृष्णवत्स अति कृपा करके अपनी विभूति का विभव कहा और सो सन्तिके दर्शनेछ अर्जुन का विष्टभा द मिदं कृतस्म मे काशेन स्थितो जगदिन्द्रादि श्लोक से भगवान् ने विश्वात्मक परमेश्वर स्वरूप प्रसंग वशते देवाया तो अर्जुन भगवत्क पूर्व वचनों की प्रशंसा करते हुये अब पका दश अध्याय के आरम्भ से चारि श्लोक से कहते हैं कि प्रशोचा नन्वशोचस्मिन्नादि दूसरे अध्याय के ग्यारह श्लोक से ले कर छठे अध्याय तक मेरे श्लोक निवृत्ति के अर्थ परमात्मनिष्ठ अति गोपनीय आत्म अनात्म विचार के जो वचन आपने कहा उन से हम दन्ता औये शत्रु गण मारने योग्य ऐसी जो मेरी भूमि से नष्ट हो गई क्यों कि आत्मा को कटित आदि कुछ नहीं है यह आपने कहा सो ठीक ही है ।

दोहा

मोहि अनुग्रहसे परम उपत प्रध्यात्मनाम कद ज्योतमतिद
वाकते यदमम मोह निशान ।

भवाण्यौहिभूतानां श्रुतौ विसरशोमया ।
ततः कमलपत्रात् महात्ममपि चावयये २

शाङ्करभाष्य १

किञ्च भवेति । भवउत्पत्तिरवययः प्रलयोभूतानां तौ भवाण्यौ श्रुतौ विसरशोमया न संलेपतस्त्वत्तत्सकाशात् कमलपत्रात् कमलस्य पत्रे कमलपत्रे तद्वत् अतिणी यस्य तत्र सत्वं कमलपत्रात् हे कमलपत्रात् महात्ममपि चावययमतये श्रुतमिमुवर्तते २

आनन्दगिरिकृतटीका २

अविवेकबुद्धिरज्ञानविपर्ययात्मिका सममादारभ्य तत्पदार्थनिर्णयार्थमपि भगवदुक्तं वचोमया श्रुतमिमाह किञ्चेति तौ भूतानामुत्पत्तिप्रलयौ ततः श्रुतादिग्राभ्यो सम्बध्यते महात्मनस्तव भावोमाहात्म्यं पारमार्थिकं सांप्राधिकं वा सर्वात्मना दिरूपं श्रुतमिति परिणम्यानुवृत्तिं धीतयितुं अपि चेत्सुक्तं २

स्वामिकृतटीका ३

किञ्च भवाण्याविति भूतानां भवाण्यौ सृष्टिप्रलयौ ततः सकाशादेव भवतइति श्रुतौ मया अद्वैतस्य जगतः प्रभवः प्रलयस्तथा इत्यादौ विसरशः पुनः पुनः कमलस्य पत्रे इव प्रसन्ने विशाले अतिणी यस्य तव हे कमलपत्रात् महात्ममपि चावययमतये श्रुतं विश्वसृष्ट्यादिकर्तृत्वेपि सर्वनियंत्तृत्वेपि शुभाशुभकर्मकारणित्वेपि बंधमोक्षदिफलदातृत्वेपि अविकारावैषम्यासंगोदासीन्यादिलक्षणमपरिमितं महत्त्वं च श्रुते अव्यक्ते व्यक्तिमापत्रे मय्येते मया ततमिदं सर्वं न च मोक्षानि कर्माणि निवर्धेति समो हे सर्वभूतेष्वित्यादिना अतस्त्वत्परतंत्रत्वादपि जीवानामद्वैककर्तृत्वादिमदीयो मोक्षो विगतइति भावः २

पेशाचभाष्यम् ४

भवाण्यौ उत्पत्तिप्रलयौ २

श्री.
मी. टी.
५

गमावुजभाष्यम् ५

भवाप्ययाविति तथासमप्रभृतिदशमपर्यन्तेन त्वद्यतिरिक्तानां
सर्वेषां भूतानां ततः परात्मनो भवाप्ययावुत्पत्तिप्रलये विस्तरशोभ
यासुतौ हे कमलपत्रात्तवाद्ययनित्येवेतनाचेतनवस्तुशेषित्वेना
नवलादिकस्याणुणोस्तैव परतरत्वे सर्वाधारत्वे चित्तनिमिषि
तादिप्रवृत्तिषु तवैव भर्त्सितत्वं मिमांसपरिमितमाहात्म्ये च सुते
दिशो वक्ष्यमाणदिदलाद्येतनाथः २

अभिनवगुप्तकृतटीका- ६

सद्यर्थे २

॥

॥

॥

परमार्थप्रकाशटीका- ७

भवाप्ययाविति ततस्ततः सकाशात् भूतानां भवाप्ययावुत्पत्तिप्रलये
मृदेकतत्त्वस्य जगतः प्रभवः प्रलयश्च तादृशो विस्तरशो विस्तरशो
यासुतौ अवयवमविनाशिमहात्म्यसामर्थ्यमपि सुतं विस्तरशो
कर्त्तव्येण कर्त्तव्यं सर्वनियंतेन संप्रसंगत्वे विचित्रफलदासीनत्वतः
णमाहात्म्यमित्यर्थः ३

वनमालीटीका- ८

भूतानां भवाप्ययावुत्पत्तिप्रलये ततः परवर्तमाने ततः परविस्तरशो
मया श्रुतौ ततः संक्षेपेण सकृदिमर्थः कमलपत्रे रवदीर्घरक्तौ
ते परमे श्रुतिणीयस्य सत्त्वे हे कमलपत्रात् सौंदर्यातिशयोक्तेरित्ये
मातिशयात् न केवलं भवाप्ययावुत्पत्तिः श्रुतौ माहात्म्यनिरतिशयेत्यर्थं
रक्षादिकर्त्तव्येण विकारितेषु भाष्यभक्तकर्मकारयित्वा तेषु वैषम्यम्
च यमोत्तादिविचित्रफलदाह तेषु दासीत्यमरदपि महत्त्वात्तत्वा
दिप्रयुक्तकार्यकर्त्तव्यादिकमवयवसंदेहाकारं ततः श्रुतम् २

रुसमवेजयनीटी- ९

किंच भवाप्ययाविति हे कमलपत्रात् कमलपत्रे रवदीर्घरक्तौ
च दिक्षु नेत्रे यस्य सतथा तस्य संवोधने हे कमलपत्रे नेत्रे सन्तु भगव
तोऽतिप्रसन्नत्वेन यायावोपदेष्टात्वेन निरतिशयसौन्दर्यत्वेन प्रमास्य
दत्तं वस्तु चितम् ततः सर्वसंराज्याहृत्वा भूतानां चामादिस्थावराणां
नां सर्वेषां चेतनाचेतनात्मकानां भवाप्ययावुत्पत्तिप्रलये विस्तरशोऽस

कृत्स्नयात्कृत्वा पात्रेण शुभौ समसारभ्यदशमायापपर्यंतं तेन
 प्रथेन हि शब्देन पालनमपि शुभं तच्च पुनस्तवाद्यं निमित्तमाहात्म्यं
 महाननेन गुणशक्तियुक्त आत्मा स्वरूपस्य समहात्मा तस्य त
 वभावो माहात्म्ये निरतिशयपरमैश्वर्यं विश्वसृष्ट्यादिकर्तृत्वे
 पविकारित्वं सर्वेषु भासुभकर्मकारयितृत्वे पितृत्वं तत्कर्मोप
 त्वं तत्कर्मोपगुणं देवतार्यगादिविविन्नयोनिप्रापकत्वे प
 रम्यं नैधुण्यादित्वं सर्वोधारतसर्वोत्तमादिकमपि मया शुभमि
 त्तयैः २

मधुसूदनीटीका १०

तथा सममादारभ्य दशमपर्यंतं तत्तदार्थनिर्णयप्रधानमपि
 भगवतो वचने मया कृतमित्याह भूतानां भवाण्येवमिति प्र
 लयोत्तम एव विस्तरशो मया कृतौ न त्वं संतैर्पार्श्वकृदित्यर्थः
 कमलपत्रवद्वैतं रक्तं ते परममनोरमं प्रतिणीयस्तव
 सत्त्वं हे कमलपत्रात् अतिमौदयातिशयात् त्वेति ये प्रेमातिशया
 त् न केवलं भवाण्येव तत्तः कृतौ त्वमहात्मनो भावो माहात्म्य
 मनतिशये श्रयं विश्वसृष्ट्यादिकर्तृत्वे पविकारित्वं सुभासुभ
 कर्मकारयितृत्वे पितृत्वं तत्कर्मोपगुणं देवतार्यगादिविविन्नफलदाहृत्वे प
 रमं गौदासीन्यमत्यदपि सर्वात्मतादिमोपाधिकं निरुपाधिकं
 मपि वाच्यमत्ययं मया कृतमिति परिणतमनुवर्तते तच्च कारा
 न २

महानंदी टीका ११

भूतानां जन्मविलयो विस्तराद्भवतः कृतौ पद्मपत्रविशाला
 त्वं वैश्वर्यमपि कृतं १ विश्वसृष्ट्यादिकर्तृत्वे पवि
 कारित्वमात्मनः सुभादेः कारयितृत्वे पवैषम्यं मह
 शितः विविन्नफलदाहृत्वे पौदासीन्यमसंगता इत्या
 दितव माहात्म्यमत्ययं च कृतं मया ३ २ ॥

नीलकंठीटीका १२

भवेति तथा सममाध्यायमारभ्य दशमपर्यंतं तया भूतानां भवा
 ण्यवपि उक्तौ अहं सर्वस्य प्रभवो मत्तः सर्वं प्रवर्तते इति ताव
 दपि मया विस्तरशः तत्तः शुभौ हे कमलपत्रात् अत्ययमाहात्म्यं

श्री.
गी टी.
प

मपिनवमं ननिकर्माणि लिपंतीति विषमसृष्टिकर्तृरपि वैषम्य
नेर्ह्यण्यदोषो नास्ति जगत्कर्तृरपि विकारगंधो नास्ति इमे वमादि
रूपेते सदाशुद्धिप्रधानेषु तमिस्रनुषंगः २

ग्रानंदीटीका

त्वत्तः परमकारणादेकस्मात्सर्वेषां भूतानां सत्प्रलयो मया वि
स्तृतः श्रुतौ प्रवचयमनेच्छिन्नमाहात्म्यपरमव्यापकत्वमपि विभ
तिलक्षणांशतम् २

रामकंठीटीका

अत्र हेतुमाह - यस्मात्त्वत्तः परमकारणादेकस्मात्समस्तानां स्यात्परजंगमभूतानां
प्रभवाप्ययावत्प्रलयो विस्तृतो वै तत्तेन मया श्रुतौ श्रुतिमात्रे
णाप्रतिपादितत्वेन वधारितावपि चावयंति ते माहात्म्यनिरतिश
यैश्चर्यलक्षणां महत्त्वश्रुतमहत्कृत्स्नस्य जगतः प्रभवः प्रलयस्त
यामत्रः परतरेतावत्किंचिदस्तीत्यादेरविमंवारितो भगवद्वचना
देवभगवानेव सकलभूतभावकारणं तथा भावेपि विबुद्धवि
त्मात्रस्वभावाप्रच्युतेरदुतस्यैश्वर्यस्यैकास्पदमिति च मया प्रतिपन्न
मित्यर्थः

लासिकी दसजतीटीका

मोहापगममेवाह - भूतानां स्यात्परजंगमात्मकानां सत्प्रलयो त्वत्तः सकाशा
देवभवतः इति सर्वभूतानि कौंतेयेत्यादिना विस्तरेण मया श्रुतौ
श्रुतिमात्रेणावधारितौ न त्वनुभूतौ तथा च ये जगद्विबुधे
इदं तावभासे सत्यपि शृणांहे त्वलक्षणां स्वसभावाप्रच्युतिरीते
माहात्म्यव्यापकत्वे विस्मयभारमिदं कृत्स्नमित्यादिना श्रुतम् न
तसादाकृतम्

पंचोलीटीका

किंच भवाप्ययाविति हे कमलपत्राक्ष हियस्मात्प्रवृत्तः भूता
नां भवाप्ययो भवउत्पत्तिप्रवचयः प्रलयस्तौ त्वत्सकाशात् विस्तरे
ण श्रुतौ च अत्र प्रवचयमनेते माहात्म्यमपि श्रुते २ ॥

रावीरसमिद्धोधिनी॥

भवाप्ययाविति द्विषाद्वाक्वावथाशोकमलपरादेति संबोध
नमनुग्रहसूचनार्थमयातृभूतानामुत्पन्नवस्तूनां भवाप्ययावुत्प
त्तिविनाशोत्तस्तस्मिन्वाक्कुतावेवाधुना तदव्ययमादास्यतद
पि श्रोतुमिच्छामीति शेषः २॥

मधुभाष्य

6/2
[Faint, illegible text, possibly bleed-through from the reverse side]

भाषा अनुवाद

और भूतों को एहि तया प्रलय भी आपही से होती यह भी मैं ने
विस्तार से सुना और देकमलपत्रात श्रीकृष्ण आप का अवयव कहे
अत्य माहात्म्य भी आपसे सुना इस से अब जीव सकल आपके अ
धीन हैं यह आना और अहे कर्ता भोक्ता इत्यादि रूप मेरा मोह स
मूर्ति हर हो गया २

दोहा

अत्यंतिलय सभभूतकी सुनीविस्तारमें मेंद तोसें पप्रदलन
यन पुनमहात्म अवयवपर २

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
श्री कृष्णाय नमः
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

एवमेतद्यथात्मत्वमात्मानं परमेश्वरं द्रष्टुमिच्छामि ते रूपमेश्वरं पुरुषोत्तमम् ३

शाङ्ख्यभाष्यम् १

एवमिति एवमेतन्नात्मन्यथा यथा येन प्रकारेणात्म कथयसि त्वमात्मानं परमेश्वरं तथापि द्रष्टुमिच्छामि ते तव ज्ञानैश्वर्यशक्ति बलवीर्यतेजोभिः संपन्नमेश्वरं वैष्णवं रूपं पुरुषोत्तमम् ३

आनन्दगिरिकृतटीका २

तदुक्तेर्यः विश्वासाभावात् न तस्मिन् द्रष्टृत्वा किल कृतार्थी बुभूषया इत्याह एवमेतदिति येन प्रकारेण सोपाधिकेन निरुपाधिकेन चेत्यर्थः यदि ममासत्त्वं निश्चितं महात्वं तेमानं तर्हि किमिति सङ्कते कृतार्थी बुभूषयेत्युक्तं मत्वाह तथापीति च तर्जुनादिरूपनिवृत्त्यर्थमाह ऐश्वर्यमिति तद्याचष्टे ज्ञानेत्यादिना ३

स्वामिकृतटीका ३

किंच एवमिति भवाप्यथोहिभूतानामित्यादिमयाश्रुतं यथाचे दानीमात्मानं त्वमात्म विष्टभाहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगदि मेवं कथयसि हे परमेश्वर एवमेतत् अत्राप्यविश्वासो मम नास्तीत्यर्थः तथापि हे पुरुषोत्तम त्वं वैश्वर्यं ज्ञानैश्वर्यशक्तिबलवीर्यतेजोभिः संपन्नं त्वद्रूपं को तूहलादहं द्रष्टुमिच्छामि ३

ऐश्वर्यभाष्यम् ४ टी.

एवमिति ईश्वरस्येदमेश्वरं ३

गमानुजभाष्यम् ५ टी.

एवमिति हे परमेश्वर एवमेतद्विरुद्धोत्तमतदसाधारणं सर्वस्य प्रशासकत्वेणालयित्वं त्वं सृष्टे संहरित्वं कल्याणगुणाकरत्वं परतरत्वं सकलैतरेविसजातीयवर्धनं यथा त्वमात्मानं ब्रवीषि प्रभुत्वे चावस्थितं रूपं द्रष्टुं सात्ताकं तमिच्छामि ३

अभिनवगुप्तकृतटीका ६

स्पष्टार्थः ३

॥

॥

परमार्थप्रपाटीटीका ७

द्रष्टृत्वेऽ

तिष्ठः

यत्नमिः

भर्तृत्वेऽ

गी.
टी. पे

एवमिति विष्टुभ्यामिदं कृत्स्नमितीदानीमात्मानं तं यदा त्वय ह तसि
एतत्ते ये स्यान्तो नैश्वर्यशक्तिवलवीर्यतेजोभिः संपन्नं रूपं दृष्टुमिच्छामि
पुरुषोत्तमेति संबुद्ध्या अलौकिकदर्शनकोत्तरं ह लेदिदत्तांसीति सूचि
ते श्रुतिरपि वामदेवेन सामोपदिशति कथं न शिन्नश्चाधुवदूती स
दाहयः सत्वाकपाशविष्टुपाहतेति भाष्ये वामदेवः सर्वहृथः सदा
वर्धमानः समष्टिरूपः परमात्मा चित्रश्चापनीयः पूजनीयः यदा विचि
त्राकृतिमयः सत्वा मित्रभूतः परमात्मा कथाकुती इत्यासंतर्पणानत
था कथाशविष्टुपाप्रस्तावन्नमनया प्रस्तासहितमनुष्ठीयमानेन कथा
हृता केन वर्तमानेन कर्मणावानोत्सानाधुवत् आभिमुख्येन भवे
त् अनुभवार्गेचरो भवेदित्यादिवाक्यैरेतादयुष्मन्नेवे सौपि वामदे
वस्य मनोरथे एकटी करोति किं पुनरदमित्यर्थः तदुक्तं हरेर्वेशभा
जीरे सखमासीने विदरं तेजनादनं वामदेवभरद्वाजोऽष्टप्रभोजग
मये तावावा योतो समा लोका विज्ञापय चतरीमिते उभयोर्दृष्ट्यामा
सविस्वरूपं स्ववर्ष्मणि ततस्माद्ब्रूवतः कृष्णं सर्वदेवात्मकं विभुं
तमादिः सर्वभूतानां मध्यमं तत्तुष्टाभवान् योमेव वस्तुजाताति
लोकदृष्टानि मायव तव गात्रेषु पश्यामस्मि त्वेदीः सर्वदेवताः जि
नयन्ते रिण्डयः शान्ता रान्ता योगेश्वरेश्वराः तामीदृशं ते
इत्येव विस्मयेति अथ वामदेवस्य साक्षः प्रवृत्तिगोपकं भूषावाया विस्मयेभिर्देवैः एतन्नाजयामि जाग +
वनमासी टीका. ८

दे परमेश्वरयथायेन प्रकारेणावदत्तं पटीयो निरतिशयाने तैश्च दनां
र्येणात्मानं तमास्य कथयसि एवमेतन्नान्यथा तद्वचसि कृत्वापि ममा
विश्वासशक्तानां स्तवययपि शास्त्रात्तद्वचसां तेषां पितृवत्तुष्टादृष्टु
मिच्छामि ते तव रूपं मे श्वरेत्ताने श्वर्यशक्तिवलवीर्यतेजोभिः संप
न्नमदुते दे पुरुषोत्तम संवाधनेन सर्वतर्पामि न तद्वचस्य विश्वा
सो नास्ति मम दिदत्तावास्ति महतीति सर्वज्ञत्वात्वे जानासीति सू
चयति ३

रुसमवैजयन्ती टीका ५

किंच एवमेतदिति दे परमेश्वरचेतनाचेतननियंतः यथा त्वेसस
मतितश्चात्मानं स्वमास्य विष्टुभ्यामिदं कृत्स्नमितीदानीमात्रवीषि
तदेतदेवमित्येवममात्रनास्य विश्वासस्तथापि हे पुरुषोत्तम
प्रपन्नजनवात्सल्यादयेते परमेश्वरस्य तवैश्वरं जगत्कृष्णादिकत्

+ तेन ह्यंदासमदृशेन लोभेन वामदेवेन सात्त्वावस्य दूरेणावज्जेनेति अत्र सामगायने लोभलोभादिल
क्षणमस्माभिः सामवेदभाष्यशोक्तं तेनैव भरद्वाजोपि कर्मणा फलदाता च फलदः कर्मज्वन्तो निषे
दादृष्टसत्त्वानां ग्रहदेवो परतसामिति श्रुतिरपि रत्नाङ्गणमिति ह्येन एतदप्येति ह्यपि ध्याने ३ ॥ +

तेपि सर्वनियं ह तेपि सर्वभर्ते तेपि सर्वप्रशास्ते तेपि स्वाभाविकान्त
 कल्याणगुणार्णवतेनानन्तशक्तिसेनचसकलवेतनाचेतनविसजाती
 येतदसाधारणरूपे विश्वरूपे दृष्टे सात्ताकर्तृमिच्छामि तव निरतिश
 यानेतत्तानैश्वर्यायाश्चयतेन निविलचिदेतरात्मकत्वेनच निरवधि
 कालिषयानेताचिन्मगुणशक्तिकेयोमिथेयेसरनराद्यमोचरेयत्र
 द्रुपेतदृशीतायास्तत्सममेच्छाप्रवृत्तासाचेन्निराशास्यानर्हितव
 भक्तकामपरिपूरकज्ञामनसेत्प्यतस्त्वेतोमदीतोऽश्रयतोऽप्राप्य
 यामीतिसम्बोधनयोरभिप्रायः ३

सधुसूदनी टीका १० निरतिशयैश्वर्येण

हेपरमेश्वर यथायेन प्रकारेण सोपाधिकेन च निरतिशयैश्वर्येण
 त्वानेतमात्मकशयसि एवमेतज्ज्ञानया त्वहचसिद्धापिममावि
 श्वासशोकानास्तेवेत्यर्थः यद्यप्येवं तथापि कृतार्थी बुभूषया दृष्टमि
 च्छामितेतवरूपमैश्वर्येज्ञानैश्वर्यशक्तिवत्तवीर्यतेजोभिः संपन्नम
 दुतेहेपुरुषोत्तम संबोधने त्वहचसि अविश्वासो मम नास्ति दिदृता
 चमहतीवर्तत इति सर्वज्ञत्वात्तेजानासि सर्वोत्तर्यामित्यावेति सूच
 यति ॥

सदानेदी टीका ११

यथायेन प्रकारेण परमेश्वरमापते सोपाधिकात्मना त्वहचसि
 करूपतः १ परमेश्वर्यसंपन्नं स्वात्माने कथयस्यते एवमेवेतदस्ती
 ह नास्ति शोकामना गपि २ यद्यप्येवं तथाप्यत्रादेकतार्थी बुभूषया
 दृष्टमिच्छामिते दृष्टेज्ञानैश्वर्यादि संपुत्तम् ३ सर्वशक्त्याश्रये श्रीम
 त्परमेश्वरमदुते त्वहाकोनात्मविश्वासो दिदृतामहतीवमे ४ अं
 तर्यामितयावेति पुरुषोत्तमचोत्तर ५ ३

नीलकंठी टीका १२

एवमिति यच्च त्वेविष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगदिति
 आत्मानं जगदाधारमात्मा तदपि इत्येव नममात्रासंभावनास्ति

श्री.
गी. टी.
५

हे परमेश्वर ते तव रूपं पश्येत्परमेश्वरस्य देवि स्वात्मकं मायामयमिदं
रूपं हे पुरुषोत्तम तव गतं गती तं विस्तरूपं मायामयं वास्तवं त्वरूपं
मया तीतमित्येष्वरमिति पुरुषोत्तमेति च पदार्थो लभ्यते तथा च
वसति माया सैवामया स्थायत्वात् पश्यन्ति नारद सर्वभूतगुणै
र्युक्तं नैवं मोक्षं तमर्हसीति उक्तं च सुहृत् रूपमभिप्रेत्य प्रवाक्तो
यमर्षितो यमिति ३

श्रानंदी टीका

अतींद्रियस्त्वात्मा श्रुतपदार्थं तत्तवैश्वर्यं सर्वभूतनिवासात्मि
को दिव्यो मूर्तिरदृष्टमिच्छामि ३

श्रुतिमात्रेणैतन्मया प्रतिपन्नं नृत्सा यमर्कं वीरीका लादञ्जुतमिति तदर्थमाह ॥

यथा येन प्रकारेण पूर्वोक्तं तव स्वरूपमात्मानं परमेश्वरं ब्रह्मादी
नामपीश्वराणां मीशित्वात् त्वं प्रभुमाय कथयसे तदस्त्वमने
न प्रकारेण स्थितेनात्र मे भ्रान्तिरित्यर्थः ततपवते रूपं दिव्यं वपुः परेश्वर
मीश्वरमा तव संवत्सि दृष्टं साक्षात् त्रिपयितमिच्छामि भिक्कां लामि
अनेन त्वयुना दृष्टमातेन पुरुषा कृतिना दृष्टेण तत्परं रूपं वां मोक्षेण
मम कथितं केवलं यत्रैकमेकस्मिन् सर्वमेव स्थितं तदिदानीं भगवद्
वनप्रसयात् तव स्वरूपं विद्यमानं तया प्रतिपन्नमतः पुरुषोत्तमप
रमपुरुषत्वत्प्रसादात् त्वत्ततः प्रेतितमभिक्कां लामि ३ ॥

अथ तत्सात्कारार्थं मन्त्रमि लासिकी पंचोली टीका

ति पूर्वमाह ॥ हे पुरुषोत्तम यथा येन प्रकारेण आत्मानं मेश्वरं रूपमाद्रकथयसि प
वं वा छमनेन प्रकारेणैतत् नात्र मे विश्वासाभावः तथापि तवैश्वर्यं
पंसादात्कतं स्पृहयामि ३

पंचोली टीका

पूर्वोक्तमभिनेयस्वाभिप्रायं श्राविकरोति पवमिति हे कस्महे परमेश्व
र यथा त्वमात्मानं नित्यमुद्रमुद्रमुक्तस्वभावपरमेश्वरमात्मानं नमा
त्य कथयसि एतत्तव मेव नान्यथा हे पुरुषोत्तम ते तवैश्वर्यं शक्ति
वीर्यं वलनं जौभिः संपन्नं रूपं दृष्टमिच्छामि ३ ॥

शावीरसमिद्धोयिनी

एवमेतदिति परमेश्वरतन्त्रस्वात्मानमात्मीयंस्वरूपं यथात्यक्त
अयसि तदेतदेवमनेनैवपूर्वोक्तप्रकारेणानिर्णीते भवतीतिशेषः
संप्रतिह्यकुर्योतमतेपेस्वरूपंदृष्टमिच्छामीति ३॥

मधुभाष्य

३॥

9/2

संस्कृत-विद्या-संस्थानम्
संस्कृत-विद्या-संस्थानम्
संस्कृत-विद्या-संस्थानम्
संस्कृत-विद्या-संस्थानम्
संस्कृत-विद्या-संस्थानम्

संस्कृत-विद्या-संस्थानम्

भाषा अनुवाद

और जो आप ने सप्तम अध्याय में कहा कि भूत सृष्टि तथा प्रलय आदि कार्यों का कारण मैं हूँ और दशम अध्याय के अन्त में कहा कि विष्टम्भादमिदेकतस्तु मेकोशेन स्थितो जगदिति और अब भी जो रूप आप आपना कहते हो यह सब ऐसा ही है इसमें हमें कुछ सन्देह नहीं है तो भी है पुरुषोत्तम ज्ञान ऐश्वर्य बल वीर्य और तेज से सम्पन्न कहे युक्त तबकारे रूप को अति आश्चर्य से मैं देखने की इच्छा करता हूँ ३

दीक्षा

ऐसे जो तुम यह कसो आत्मक हूँ भगवान् देखा चक्षुः पुरुषोत्तम तो ईश्वर रूप महान् ३॥

[Faint handwritten text in Devanagari script, likely bleed-through from the reverse side.]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥
 अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

मन्यसे यदि तच्छकं मया दृष्टमिति प्रभो योगेश्वर
ततो मे त्वदर्शयात्मानमवयये ४

शाङ्करभाष्य १

मन्यसे इति मन्यसे चित्तयसि यदि मयार्जनेन तत् शकं दृष्टमिति प्रभो स्वामिन् योगेश्वर योगिनो योगास्तेषामीश्वरो योगेश्वरः हे योगेश्वर यस्मादहमतीवार्थी दृष्टं ततः तस्मात्मे मम मदर्थं दर्शय त्वमात्मानमवयये ४

आनन्दगिरिकृतटीका २

दृष्टमयोग्ये कुतो दित्तत्वाशङ्काह मन्यसे इति प्रभवति स्मृति स्थितिसंहारप्रवेशप्रणामनेभ्यः इति प्रभुः लक्षणाया योगशास्त्रार्थमाह योगिन इति तत् इत्यादि व्याचष्टे यस्मादिति ४

स्वामिकृतटीका ३

नचाहं दृष्टमिच्छामि इत्येतावन्तैव तया तद्वपे दर्शयितव्यं किं तर्हि मन्यसे इति योगिन एव योगास्तेषामीश्वरमयार्जनेन तद्वपे दृष्टं शकं यदि मन्यसे ततः तर्हितद्वयपरमात्मानमवयये निमित्तममदर्शय ४

पेशाचभाष्यटीका ४

मन्यसे इति योगशास्त्रात्स्वमाधिवचनादर्शनादित्यादवप्रत्ययः योगो विशते येषां ते योगीनामीश्वरो योगीश्वरस्तस्य सेवो यत्ने ४

रामानुजभाष्यटीका ५

मन्यसे इति तत्सर्वस्वसृष्टप्रणारुत्सर्वस्वाधारभूतं तद्वपे मया दृष्टं शक्यमिति यदि मन्यसे ततो योगी ज्ञानादिकल्याणगुणयोगः प्रपद्ये योगमेश्वरमिति हिवत्तत्तद्वपे निरिक्तस्य कस्याप्यसंभावितानो ज्ञानवलेष्वर्थवीर्यशक्तिनेजसो नित्ये आत्मानेता मवयये मे दर्शय प्रवययमिति क्रियाविशेषणं तं सकलमेदर्शयेत्यर्थः

अभिनवगुप्तकृतटीका ६

सहाय्ये ६

परमार्थप्रपाटीकाटीका ७

श्री.
गी.सी.
५

अथैतद्व्यदर्शनेन केवलमनुग्रहे कलभ्यमिमांसे मन्वस इति योगेश्वर
योगीनयवयोगालेखामीश्वरतत्त्वहिं अर्वामात्मानंदर्शय ५ ५५

वनमाली टीका. ५

इष्टमयोग्येकतस्तेदिदृक्षेत्ता शंकाद मन्वस इति प्रभवति स्थिति
तिसेतारप्रवेशप्रशासनेष्टितिप्रभुः हेप्रभो सर्वस्वामिनूततवैश्वरे
इष्टमयादृष्टशक्तमिति मन्वसे जानासीच्छिवो देवो योगेश्वर सर्वेषा
मणिमादि सिद्धिं शान्तो योगानां योगिनामीश्वर तत्त्वदिच्छाव
शादेव मे मन्वस मन्वसार्थमर्थिने त्वपरमकारुणिको दर्शय वा त्व
ज्ञानविषयीकारय आत्मानमेश्वर इत्यविशिष्टमव्ययमक्षयं सदै
काकारम् ५

रुसमंवेनयली टीका. ५

ननु ब्रह्मादिभिर्देवैरपिय इष्टमशक्तं साधनसम्यग्त्रैर्योगिभिश्चापि
यदुष्माप्यंतज्ञेसाधने विना कथं दृष्टमिच्छसीति चेन्न ज्ञाह मन्वसेय
दीति प्रभवति स्थितिसेतारप्रवेशप्रशासमर्थो भवतीति प्रभुः
स्तत्संबुद्धो देवप्रभो सर्वस्वामिस्त्रितयनेन भगवतः कर्तृत्वे कारयित्वे
पितृदिवा स्पृष्टं त्वं सूचितं यदि मयाः त्यजेन साधनहीनेन तत्सर्वस
ष्टमवनिघटसर्वाश्रयमयेतद्व्यं दृष्टमवलोकितं शक्तं मदर्शन
योग्यं भवेदिति त्वं मन्वसे जानासीच्छिवो देवो योगेश्वर योग
शक्तोऽज्ञाने तत्ताने सूर्यादिकल्याणगुणयोगः यस्य मे योगमेश्वर
मिति वक्ष्यमाणत्वात् हेताने सूर्यादेर्ज्ञानेनोर्वीर्यवलतेनादिशक्त्यादिज
लये रत्यनेन तत्त्वतिरिक्तानां विधीशेन्द्रादीनां केषामप्येतयोगासमो
वात्रेश्वरतं किं तत्त्वमेव सर्वेश्वरोऽसीति सूचितं अद्य ये निमित्तं कर
संक्रियाविशेषाणां वा सकलेतरविसजातीयं यथास्यात्तथा आत्मा

नस्वेत्तांमेमसमत्पर्यमर्थिनेपरमकारुणिकस्त्वंदर्शयचात्तष-
ज्ञानविषयकारयत्तदनुग्रहेविनात्तद्रूपदर्शनेत्रत्वादयोपिदेवा
नसमर्थास्तत्कृपयास्त्रीपूद्रपशुपत्पादयोपिसमर्थाभवेपुस्तन्नि
त्रस्यममयदियोग्यतास्तिनर्हिदर्शयेत्सभिप्रायः ५

दृष्टमयोगेजतस्तेदिदृक्षे मधुसूदनीटीका १०

त्वांशंकाह ससर्षोभवति प्रभवति स्तुतिस्थिति संहारप्रवेशप्रशासनेष्वि
 निप्रभुः हेप्रभो सर्वस्वामित् तत्तवेस्वरं रूपं मयार्जनेन इष्टं शक
 मितियदि मयसेजानासि इच्छसि वा देयोगेस्वरसर्वेषामणिमा
 दियोगिताशालिनां योगानामीस्वरतत्तस्तदिच्छाव देवमेमल
 मत्यर्थमर्थिते त्वपरमकारुणिको दर्शय त्वात्सल्यज्ञानविषयीका
 रय आत्मानमेस्वररूपविशिष्टमव्ययमलये

सदानंदी टीका ११

सृष्टिस्थितिलयादिभ्यः प्रभुः प्रभवतीत्ययः देवप्रभो सकलस्वामि
नृपं पतनवैश्वरं १ मयार्जनेन शक्यं चेद्ब्रह्मं चिंतयसीश्वर दे
योगेश्वर सर्वेषां योगिनां सिद्धिपालिनो २ योगानां चैव सर्वेषां
मीश्वरो सिरमायते त्वदीयेच्छावशादेव मत्प्रमत्तार्थिने विभो ३
आत्मानं मे श्वरं रूपमत्यंतं कुरुणानिधे च तत्त्वज्ञानविषयीकार
यत्त्वमिहाभुता ५॥ ४

नीलकंठी टीका. १३

मन्यस इति देयोगोश्चरयोगानां योगिनामीश्वर तद्रूपेयदिमया
द्रष्टृशक्तमिति मन्यसेयदिमयितद्रष्टृनाधिकारेण श्यसिततस्त
हि मेममंश्रवयेमायामयं आत्मानं दर्शय मायामयत्वादेवास्या
व्ययत्वं मायायां हि सर्वे सत्तात्मके सर्वदास्तीति प्रसिद्धं यथोक्तं
सिद्धेन वर्तमानमतीते च भविष्यत्सूलम एवपि तथा हरमहर
च निमेषः कल्प इत्यपि विदात्मनि स्थितामेव यश्च माया विज्ञं भि
तमिति न हि मरु मरीचि सरसी क्रमशाः शुष्यति अतो माया मयत्वा
देवास्ते श्वरस्वरूपस्याप्यव्ययत्वं ५

श्रीः
गी. टी.
प

ग्रानंदीटीका

योगीश्वरमहाविदेहाख्ययोगसिद्धासयसर्वजगत्कर्तृसमर्थप्रव्य
यमात्मानमनादिनिधनेस्वरूपम् ५

रामकंडीटीका

किं त- हे प्रभो परमेश्वर तत्र या विधे तात्तिकं रूपं परमयोगिभिरपि प्रार्थ्यमा
न दर्शनं मया मनुष्यमात्रेण द्रष्टुं साक्षात् त्वेति तं शक्यं सत्यमिति यदि म
न्यसे जानासि यदि ममेयं ती योग्यतां संभावयसि त तस्त्वयोगीश्वरस
हजसिद्धिनिर्वाणयोग्यात् प्रयत्नसाध्ययोगानां सर्वेषां योगां
तराणां प्रभो मम ह्यमव्ययमनादिनिधनमात्मानं स्वरूपं दर्शय प्रत्य
क्षीकृर्वित्यभ्यर्चितः प्रसादाभिमुखो भगवानुवाच ५

लासिकी दत्तजलीटीका

किं त- हे प्रभो हे स्वामिन् भो योगेश्वर बुद्धियोगमारभ्य ज्ञानयोगपर्यंतं यथो
पपन्नियोगदातृसमर्थ असमर्थप्रतिहियं चैव व्यर्थेति साकृतमामं
ब्रह्म तदैश्वर्यरूपं मया मनुष्येणालज्जामात्रवोधेन द्रष्टुं साक्षात्क
र्तृशक्यं सत्यमिति चेत्सत्यसे जानासि यदि ममेयं ती योग्यतां संभाव
यसि ततो मम ह्यमव्ययं यथोक्तमात्मानं दर्शय प्रक्षीकृर्वित्येवमभ्यर्चि
तः प्रसादाभिमुखः ५

पंचोलीटीका

न केवलं मम इच्छया दंदत्वादर्शयितव्यं मदीयमधिकारित्वं वा
येन एणीयमित्याह मयस इति हे प्रभो यदि तदैश्वर्यरूपं मया द्रष्टुं श
क्यमिति मयसे हे योगेश्वर योगाः योगिनस्तेषां मीश्वरस्त तस्त्वमम
संज्ञात्मानं दर्शय ५

रामाक्षरीसमिद्धेयिनी ॥

इहामी भगवंतं स्वाभिखीकृत्य विस्मृत्य दर्शयितुं मभ्युपगमयति मय
से इति प्रभो संवोधने सर्वशक्तिमत्तुषोतनार्थं तया यदि मयसे सहिष
यं योग्यतं वे जानासि तस्वरूपं द्रष्टुं साक्षात् दवधारयितुं मया जुनेन प्र

कामिति ततस्तर्हियोगेश्वर भगवन्नात्मानं स्वरूपमव्ययं सनातनं
मेमसंदर्शयेतीत्यं प्रार्थनापूर्वं प्रस्तुतो भगवानुवाच पश्य मे
ति ४ ॥

मधुभाष

यथा श्रुते ध्यानं प्रोक्तं तथा स्वरूपस्थितिर्नेनाध्यायेनोच्यते
प्रभुः समर्थः नास्ति तस्मात्परं भूतं पुरुषाहं सनातनादिति
मोक्षार्थं प्रभुरीशः ॥

महाराष्ट्र सरकार
मुंबई
१२/१२/५६

महाराष्ट्र सरकार
मुंबई
१२/१२/५६

भाषा अनुवाद

और मेरी इच्छा है देवने की इस हेतु आपको अपना रूप देखावना
उचित है यह कुछ बात नहीं है परन्तु है योगेश्वर जो वह आपका
ईश्वर स्वरूप हमारे देव नयोग होय और हम देव सके तो हे प्रभो
वही अथवा स्वरूप अपना हमें कृपा करि दिखावो यह अर्जुन ने क
हा ४

टीका

जो प्रभुमानत योग्य यह देवने को मोहि यादि तो मोह योगेश
हम प्राप्त प्रलय देखादि ४

13

ਸਤਿਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਹਰਿ ॥ ਅੰਤਰਿ ਮਨਿ ਮਨਿ ॥
ਨਿਰੰਕਾਰੁ ਨਾਨਕ ਭਗਤੁ ॥ ਜਿਸੁ ਭਗਤੁ ॥
ਜਿਸੁ ਭਗਤੁ ॥ ਜਿਸੁ ਭਗਤੁ ॥ ਜਿਸੁ ਭਗਤੁ ॥
ਜਿਸੁ ਭਗਤੁ ॥ ਜਿਸੁ ਭਗਤੁ ॥ ਜਿਸੁ ਭਗਤੁ ॥
ਜਿਸੁ ਭਗਤੁ ॥ ਜਿਸੁ ਭਗਤੁ ॥ ਜਿਸੁ ਭਗਤੁ ॥

ਸਤਿ

ਸਤਿਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਹਰਿ ॥ ਅੰਤਰਿ ਮਨਿ ਮਨਿ ॥
ਨਿਰੰਕਾਰੁ ਨਾਨਕ ਭਗਤੁ ॥ ਜਿਸੁ ਭਗਤੁ ॥
ਜਿਸੁ ਭਗਤੁ ॥ ਜਿਸੁ ਭਗਤੁ ॥ ਜਿਸੁ ਭਗਤੁ ॥

श्रीभगवानुवाच पश्यमे पार्थरूपाणि शतशो
सहस्रशः नानाविधानि दिव्यानि नानाव
र्णाकृतीनि च ५ शाङ्करभाष्ये १

एवञ्चोदितोऽर्जनेन भगवानुवाच पश्येति पश्य मे मम
पार्थ रूपाणि शतशोऽथ सहस्रशः अनेकश इत्यर्थः तानि
च नानाविधानि अनेकप्रकाराणि दिवि भवानि दिव्यामप्रा
कृतानि च नानावर्णा कृतीनि च नाना नील पीतादिप्रकारा
वर्णा विलसन्नास्तथा आकृतयोऽवयवसंस्थानविशेषा येषां
रूपाणां तानि नानावर्णाकृतीनि च ५

आनन्दगिरिकृतटीका २

अर्जनमभिभक्तं सावाये प्रार्थितप्रतिश्रुवणेनाप्रवासयित्वा एव
मिति ५ स्वामिकृतटीका १

एवंप्रार्थितः सन् अत्यद्भुते रूपे दर्शयिष्यन् सावधानो भवेत्पुनर्मभि
मुखीकरोति श्रीभगवानुवाच पश्येति चतुर्भिः रूपैरेकतेपि नानावि
धता रूपाणीति वक्तव्यं च नैव परिमितामनेकप्रकाराणि अलौकिकानि
मम रूपाणि पश्य वर्णाः शुक्ल कृष्णादयः आकृतयोऽवयवसन्निवेश
विशेषाः नाना अनेका वर्णा आकृतयश्च येषां तानि नानावर्णाकृती
नि ५

पेशाचभाष्यटीका ४

एवमर्जनेन स्वरूपदर्शनं प्रार्थितं तद्दर्शयित्वा मो भगवानुवाच प
श्य मे इति शतशः शतानि सहस्रशः सहस्राणि नानावर्णाकृतीनि ना
नाविधवर्णसंस्थानि ५

गमानुजभाष्यटीका ५

एवं कौतूहलान्वितेन हर्षगद्गदकंठेन पार्थने प्रार्थितः ॥

श्रीभगवानुवाच पश्य मे सर्वं अयं भूतानि रूपाणि अथ शतशः सह
स्रशश्च नानाविधानि नानाप्रकाराणि दिव्यामप्राकृतानि नानावर्णाकृ
तीनि शुक्ल कृष्णादि नानावर्णाकृतीनि पश्य ५

अभिनवगुप्तकृतटीका ६

स्यार्थे ५

॥

॥

१

परमार्थप्रपाटीटीका. ७

श्री.
गी.टी.

अथ भगवानपि अलौकिकरूपं दिदत्तं तमर्जने सन्मुखी करोति पश्ये
त्पादि चतुर्भिः भोपार्थमेशतशः सदसशस्ररूपाणि येषां शतशो मु
खा विभूतिरूपाणि सदसशोर्वातराणि शतसदसशोऽनंतरे सं
ख्यावाची वा नानाविधानिना प्रकाराणि तदेवाह नानावर्णाः सुल्का
दयः नानाग्राह्यतयशकारायेषां ताति ५

वनमालीटीका ८

स्वभक्ते नैवं प्रार्थितः सत्राह पश्येति अत्र क्रमेण श्लोकचतुष्टये पि
पश्येत्पाहमादुत रूपाणि दर्शयिष्यामि तं सावधानो भवेत्सर्जनमभि
मुखी करोति भगवान् शतशो य सदसशस्रमितानि च नानाविधा
सनेकप्रकाराणि दिव्यामयदुत्तानि नानावितत्तणवर्णानीतपी
तादिप्रकारास्तथाकृतयश्चावयवसंस्थानवयो विशेषायेषां ता नि
नानावर्णाकृती निचममरूपाणि येषां हेतोः इदं मही भवेत्सर्गः
यथा षोडशसदसरीनां विवाहं स्वस्य वसुदेवो दैवैकस्मिन्नेव का
ले तावद्रूपतमनेषां तावद्रूपास्ताने अष्टवटवटनापरीयस्याचिन्त्यश
क्तोपपन्नतथात्राप्येकस्य वसुदेवैक रूपतमुपपद्यत इति भावः ५

रुसमवेजयनीटीका. ५

इत्येवं भगवतो विसरूपदर्शने कृत्वा भगवत्पत्रेन परममित्रेणा
र्जुनेन समर्थितः स्वाभाविकानवधिकातिशया विन्यानेन गुणश
क्तको भक्तवात्सल्यतयातिप्रपन्नो क्लृप्तवारिजवदननयनो भक्तकै
रवसर्णोदराजो भक्तिविवशो भक्तकामपरिपूरको भगवाञ्जने
प्रसुवाच चतुर्भिः पश्य मे पार्थेति श्लोकचतुष्टये पुनः पुनः पश्ये
त्सत्पादर्शनीयानोरूपाणामसदुतं विविचित्रानेकविधतमप्राकृतं
च सूचितं हे पार्थ सनेन यत्तस्मै सितदृष्टे यो ममातीव प्रियो मत्स
पुत्रश्चासि अतस्मात्सरनरादिभिरपि दर्शनायोग्यमलौकिकमिदं रू
पं दर्शयामि तद्व्यतिरेकः कोपीदृशोदृष्टं न शक्नोतीति सूचितम् मे स
र्वेश्वरस्य सर्वनियंतृर्विभूतिमतो मम शतशः शतानि अथ च सद
सशः सदस्राणि नानाविधासनेन प्रकारकाणि च पुनर्नानावर्णाकृ
तीनि नानानेके वर्णाः श्वेतकृष्णरक्तपीतादयः आकृतयोऽवयवसं
निवेशभूता प्रकाशयेषां येषु वातानि नन्वेतादृशा विप्राकृता अपि
सुरिति चेन्न त्राददिव्यानि प्रकृतिकार्यतत्संवेधगंधरहितानि नित्य

हे पार्थ मेमेकस्यैव परमार्थसतः परमात्मनः त्वेष्यति शयात्त्वशक्तित्वेन संबद्धानि ग्रसे
 एतानि रूपाणां कृतिविशेषात्मकानि पञ्चावलोक्य कीदृशानि नानाविधानि विवि
 त्राणि अतएव नानावर्णकृतीनि विविधावभाससंस्थानानि तथा दिव्यान्मात्रुषीयाणीति ५५

श्री.
 गो टी.
 प

आनेदीरीका
 सहस्र पतत्सामान्यतः उदिप्रविशेषो गो ५

रामकंठीरीका सहस्र ५

हे पार्थ शतशः सहस्रश इति असंख्यातानि नानाविधान्यनेकप्र
 काराणि दिव्यानि रूपावभासमानत्वे पि एतानि मयत्वा
 लोकेतराणि नानाविलक्षणवर्णाः शुक्लादय आकृतयो वयवसं
 स्थानविशेषायेषां तानि रूपाणि पश्य द्रष्टुमर्हतीभव अहं लो ५॥

पंचोलीरीका

पंचपार्थितो भगवान् अत्यद्भुतस्वकीये त्वं दर्शयिष्यन् साव
 धानत्वं स पादने नार्जुन मभिमुखीकरोति पश्य मे इति हे पार्थ
 मे मम शतशः अथ सहस्रशः नानाविधान्यनेकप्रकाराणि
 दिवि भवानि दिव्यानि अप्राकृतानि च पुनः नानावर्णकृतीनि
 नानाविधानि लक्षणानि नीलपीतप्रकारवर्णस्तथा प्राकृतय
 अथ वयवस्थानविशेषायेषां रूपाणां तानि नानावर्णकृतीनि
 पश्य ५

सहस्रार्थेयं श्लोकः रागवीरसमिद्धेति नी ॥ ५॥

५॥

सधुभाष्य

भाष्य अनुवाद

जब ऐसी प्रार्थना अर्जनने किया तब भगवान् श्रीकृष्ण अपने रूप देवावने का मनोरथ करके अर्जन को सावधान होउ यह कहिक रिचारी श्लोक से कहते हैं कि हे पार्थ अर्जन अपरिमित नाना प्रकार के अलौकिक मेरे रूप देवों और वरों कहे सुक्त कृष्ण आदि आकृति कहे कर चरण अङ्ग सब यथा योग मेरा दिव्य रूप नाना वरों नाना आकृति तम देवों जो देवा चाहते हो ५

टोका

मेरे पार्थ रूप कहें प्रातःसहस्र त्रिदशे बहु विधन के दिव्य बहव रण प्रकार विशेष ५

31521-2376

16

Handwritten text in Devanagari script, likely a manuscript or document.

157

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 श्रीकृष्णार्जुनसंवादे श्रीकृष्ण उवाच ॥
 अहं कुरुक्षेत्रे समवेता युयुतसः ॥
 मामकाः पाण्डवाश्चैव ततः समासृतः ॥
 त्वं द्रुपद उवाच ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

पश्यादित्यान् वसून् दानमिन्नौ मरुतस्तथा बह्व्यदृष्टपूर्वाणि पश्याम्यर्थाणि भारत ६

शाङ्ख्यभाष्यटीका-१

पश्यादित्यानि पश्य आदित्यान् द्वादश वसून् दानमिन्नौ मरुतस्तथा
शा विवर्तौ द्वौ मरुतः सप्त सप्तगणान् यतान् तथा च बह्व्य
मपि अदृष्टपूर्वाणि मनुष्यलोके त्वया तत्तन्नेन वा केन
चित् पश्याम्यर्थाणि रूपाण्यदुतानि भारत ६

आनन्दगिरिकृतटीका-२

दिव्यानि रूपाणि पश्येत्तत् तान्येव लेशतोऽुक्तामिति पश्यादि
त्यानि तान् मरुतस्तथा पश्येति सत्त्वन्तः नानाविधानीतत् ॥
तदेव स्फुटयति बह्वनीति अदृष्टपूर्वाणि पूर्वमदृष्टानि नाना
वर्णाकृतीनीतत् व्यनक्ति आश्चर्याणीति ६

स्वामिकृतटीका-३

तान्येवाह पश्येति आदित्यादीन् मम देहे पश्य मरुतयकोनपंचाश
देवविशेषाः अदृष्टपूर्वाणित्वयामेन च पूर्वमदृष्टानि रूपाणि आ
श्चर्याण्यदुतानि ६

पेशाचभाष्यटीका-४

सप्तार्थे ॥

शमानुजभाष्यटीका-५

पश्येति ममेकैकस्मिन् रूपे पश्यादित्यान् द्वादश वसून् दानमिन्नौ मरुतस्तथा
एकादशा मरुतौ द्वौ मरुतस्तथा कोनपंचाशतं प्रदत्तार्थमिदं इह
जगति प्रत्यक्षदृष्टानि शास्त्रदृष्टानि च यानि वस्तूनि च तानि सदीप्य
मपि सर्वेषु कालेषु सर्वेषु च शास्त्रेषु अदृष्टपूर्वाणि बह्व्यम्यर्थाणि
पश्य ६

अभिनवगुप्तकृतटीका-६

सप्तार्थे ॥ ६

परमार्थप्रदीटीका-७

अथ तान्येवाह पश्येति द्वादशादित्यान् अष्टवसून् दानमिन्नौ प

श्री-
ती टी-
प

कोनपेवाशमरुतः तथा अस्याति अट्टपूर्वाणि पूर्वमट्टास्यत
एवा अयंजनकानि मरुपाणीति पूर्वमुक्तं तर्हि मरुतः पृथग्यति
हंतीति

वनमाली टीका ६

दिव्यानिरुपाणिपश्येत्सत्तातामेवाच कामति पश्येति पश्यादिमा
नहादशवसूनष्टोरुदनेकादश अश्विनोदो मरुत एकोनपेवाशत
तथा नोनपि देवानि मरुतः बह्वस्यमान्यट्टपूर्वाणि पूर्वमट्टास्यति
मनुष्यलोके मनुष्यान्वायामेन वा कदाचित् नट्टातीत्यर्थः पश्याम
याण्डुतानि आश्रयमया निमद्वृत्तिनवस्थितानि इदिलोककणा पा
लोकोऽपश्येति भावः ६

रुसमवेजयनी टीका ५

स्वदेहस्यानितामेवरुपाणाहहाभ्याम् पश्यादित्यानिति आदिमा
नदितेः पुत्रान्हादशसूर्यानि रस्यसुख्यतादशदिकपालावसू
नष्टोरुदनेकादश अश्विनोदो नासयो मरुतः एकोनपेवाशदश
न ममेकस्मिन्नेव देहे रस्यत्रेण सम्बन्धः त्वपश्यसावधानतया व
लोकयतथा तथाहेभारत अट्टपूर्वाणि त्रयोने अपि कैश्चित्
वमितः प्राकालेनट्टानि ननु विविक्तावतोरः सगदिभिर्ज्ञेयत्वा
शायशोदयासभायोडयोथनादिभिश्चट्टानिकथमट्टपूर्वाणि स
किसुवचरते इति चेत्समेतेषां भयोत्पादनाय मोहनाय च किंचित्पु
रकं परिच्छिन्नं तत्रैव मया ते तदर्थिता इदानीं तथा मनेन प्रकारका
एव परिच्छिन्नं तया दृष्टानि सन्तानि ते सदिता रमेव स्मादिभिः
सुदृढैः केचिदपि ट्टपूर्वाणि न भवं मतो मरुति संगच्छेते यवना
संभवेति वोदाम अट्टपूर्वमेव तमेव दृष्टयति बह्वस्य ननामा अयं
एण्डुतानि ते रमेवा आश्रयणीकानि विट्टास्यपि बह्वस्य अयं
तनट्टानि एवैभूतानि रुपाणि मत्सदावेन मरुतुग्रहभाजनस्त्वमेव
पश्यमहपदर्शनाहो भवेत्यर्थः ६

दिव्यानिरुपाणिपश्येत्सत्तातामेव लेखने मधुसूदनी टीका १

उक्तामतिदाभा पश्यादित्यान्हादशवसूनष्टोरुदनेकादश अश्विनोदो मरुतः स

प्रसप्तकानेकोनपंचाशत् तथाप्यनपिदेवानित्यर्थः बह्व्यस्या
 नि अट्टष्टपूर्वाणि पूर्वमट्टष्टानि मनुष्यलोके तथा तन्मेनवाके
 नचित् पश्याम्यर्थाण्यदुतानि हेभारत अत्रशतशोयसरसशः
 नानाविधानीत्यस्यविवरणंवहूनीति आदित्यादित्यादिव अट्टष्ट
 पूर्वाणीतिदिव्यानीत्यस्य आश्रयाणीतिनानावर्णाकृतीनीत्यस्य
 तिदष्टव्ये

॥

सदानंदीटीका ॥

पश्येत्तत्कोशतोद्भाभ्योतामनुक्रामतीत्यर्थः पश्यतेहादशादित्या
 त्वसूनष्टासिनावुभौ रुद्रानेकादशोकोनपंचाशत्तत्तथा
 तथाप्यनपिदेवास्तदष्टमर्हीभवार्जन २ वहूनिप्रागट्टष्टानि त
 यावामेनकेनचित् अत्यदुतैकदृष्ट्यापश्यभारतभूषण ६

नीलकंठी टीका ॥

दिव्यानितावदाह पश्यादित्यादिति अट्टष्टपूर्वाणि आश्रयाणि
 अदुतानि चतुर्ध्रुवेषु च सुखेषु च एवमिदानीं ६

आनेदीटीका

शक्रसभायां अट्टष्टपूर्वाणादित्यादीन्यप्ययमट्टष्टपूर्वाण्यन्यस्य
 र्याणि पश्य

रामकंदीटीका सहाय्य ६

लासिकी वत्तुनीटीका एवं सामान्यतः उक्ताविशेषतो निर्दिशति ॥

आदित्यादिग्रहणामुपलक्षणार्थम् ये पूर्वविभूतियोगे आदित्यादयो
 व्याप्यतेनोक्ताः तानि दातुं पश्य महाव्यासासाक्षात्कुरु तथायान्यपि
 बह्व्यपरिमितानि अट्टष्टपूर्वाणितया मेनवाकेनचित् पूर्वमट्टष्टान्या
 म्यर्थाण्यदुतानि च पश्य ६ ॥

सामान्येनोपक्रमविशिष्टाण्युद्देशमाह आदित्यादृहादशमेखान्देवविशेषांस्तथावत्तत्तत्संख्यां
 रुद्रानेकादशसंख्यानसिन्धौ मरुतश्चैकोनपंचाशत्तदेवविशेषान् पश्येति प्राधान्यादेव तादृशाण्युद्देशमात्रे
 ण संक्षेपत आह एतानि तावन्वयासुरलोकवासिनासतादृष्टानि यान्यपि बह्व्यपरिमितान्याह अट्टष्टपूर्वाणि
 न कदाचिदालोकितानि आश्रयाणि तान्यपि सर्वाणि पश्य ६ ॥

श्री.
ली. टी.
५

पंचोलीटीका

किंच पश्येति हे भारत तथा आदित्यान्वसू नरुदान् अश्विनो मरुत
पश्य बह्व्यदृष्टपूर्वाणि आश्वर्याणि आश्वर्यकराणि पश्य ॥

ररावीरसमिहोधिनी ॥

अथ नानाविधानि दिव्यानि दृष्ट्याणि दर्शयति पश्येति भारत
पश्य आदित्यानां दित्यगणान् सूर्यलोकव्यापिनस्तथा रुद्रा रुद्र
गणान् तैरिज्ञचरांसो मलोकव्यापिनस्तथा च वसून् च सगरा
न्मूलोकव्यापिनोऽप्युत्पादकान् पश्येत्येनानुबन्धः अश्विनो मरु
तश्च दृष्ट्या दृष्ट्या वशिनी सती तथा मरुतो मरुद्गणान्वातर
णान् देवसंज्ञकांश्च पश्य किंच बह्वतीति बह्व्यदृष्टपूर्वा
णि पूर्वतन् दृष्टानि यान्यपूर्वाद्भूतदर्शानां लोकिकचमत्का
रकानि मद्रूपाणि तान्यपि साक्षात्कृतवित्यर्थः ॥

मधुभाष्य

६॥

भाषा अनुवाद

अब सोई धाप कहते हैं कि हे भारत सब आदिस ओ वसुगण रु
द्रगण तथा अश्विनीकुमार ओमरुतगण ये सकल देवता को
मेरी देह मे देवो और हे अर्जुन जो मेरा रूप न तम ने न और
किसीने कभी देखा है ऐसा अद्भुत मेरा रूप देवो ६

दोहा

देववि बस रुद्र कहुं अश्वनि मरु मारुत सर्व अट्टबहु देव
हुं आचरन मय भारत ६॥

19
[Faint, illegible text, possibly a list or index]

[Faint, illegible text, possibly a list or index]

इहैकस्येजगतकृतसंप्रपणायसचराचरे ।
मम देहे गुणकेशयच्चात्पद्रष्टुमिच्छसि ७

शाङ्करभाष्यटीका १

न केवलमेतावदेव इहैकस्यमिति इहैकस्य एकस्मिन् स्थि
ते जगत कृत्ते समस्तं पण्येदानींसचराचरे सह चरेणाचरेण
वर्तते मम देहे गुणकेश यच्चात्मजयपराजयादि यच्छेकमे य
हा जयेम यदि वा नोजयेयुरिति यदवोचः तदपि द्रष्टुं यदीच्छ
सि ७

आनन्दगिरिकृतटीका २

न केवलमादित्यवस्वाये व मद्रूपे तथा द्रष्टुं शक्यं किन्तु समस्तं
जगदपि मदेहस्ये द्रष्टुमर्हसीत्याह नेत्यादिना सममीदृये भिद्यः
सम्बध्यते समासात्तर्गतापि सममी तत्तै वानीता यदीच्छसि तर्हि
इहैव पश्येति सम्बन्धः ७

स्वामिकृतटीका ३

किंचेदेति तत्रतत्रपरिभ्रमतावर्षकोटिभिरपि द्रष्टुमशक्यं कृत्स्नमपि
चराचरसहितं जगदिहास्मिन्ममदेहवयवद्रूपेणैकत्रैवस्थितं त्रयाधु
नैवपश्ययच्चात्मन् जगदाश्रयभूतकारणस्वरूपं जगतश्चावस्थाविश
ष्टादिकं जयपराजयादिकंच यदप्यन्यत् द्रष्टुमिच्छसि तत्सर्वं पश्य ७

पेशाचभाष्यटीका ४

इहममदेहे गुणकानि दातव्या ईश्वरः स्वामी गुणकेशः जितेति द्रष्टव्य
र्थः ७॥

रामानुजभाष्यटीका ५

इहेति इहममैकस्मिन् देहे तत्राप्येकदेशस्ये सचराचरं कृत्स्नं जगत्
पश्य यच्चात्मद्रष्टुमिच्छसि तदप्येकदेशायवपश्य ७

अभिनवगुप्तकृतटीका ६

स्पष्टार्थ ६

परमार्थप्रपाटीटीका ७

या सोनाल्लीत्याह इहैकस्य इति ॥

ताम्यले छंदेनातः कालतोवाप्र इहपुरोवर्तिनिवोजे मासर्वभूतानां तस्यात्मस्य विस्मयपरनिदानमि
ज५ निउक्तत्वात्कलवीभूतेमनुष्ठाकृतिकेममदेहेकृत्स्नं सर्वजगदेक
स्यमेकत्रस्थितमग्राधुनैवपश्येत्तत्तं पार्थौरथस्यदिभुजस्वरूपेद

श्री १
गी टी.
प

पृ५

हं

हं

दर्शदेहेविलेखरूपं नविस्वरूपेददशोरथस्ययद्विस्वरूपस्यनिरा
नमेतदितियतः पूर्वस्वशरीरांतर्माकेडेयमुनयेअनंतशरीरैक
देशोजनमेविस्वरूपं दर्शितवान् तउक्तमारण्यकेपर्वणि काम्यकव
नोपविष्टं श्रीकृष्ण सहितं पुष्टिरप्रतिमाकेडेयेन ततः कदाचिस्वप
मितस्मिन्संखितसंयवे न्यग्रोथं समहांतं वैतच्छावायानराथिय उप
विष्टं तपयेंकेष्टौ दुसदृशानने फलपयविषालांतवांतं श्रीवत्सतां
छने ततोवालेनतेनस्वसदसाविहतेमुत्त तस्यादमवशावक्केदेवयो
गात्वेशितः तत्रप्रविष्टस्तुक्तावपश्यंनिविलंजगत यः सदेवो
मयादृष्टः प्ररापयनिभेतपः सपवपुरुषव्याचसेवेधीतेजनार्दनः
अस्यैववव दानेनस्मृतिनेप्रजहातिमा दीर्घमायुश्चकौतेयस्वच्छंद
मरणचवे सपषक्तसोवासीयः प्रराणपुरुषोत्तमः आस्तद्विरविष्ण
त्माक्रीडनिवमहाभुजः तथाप्राप्तमेधिकेपर्वणिपोडवपदाभिषेका
नंतरेद्वारिकाभिगंतंक मुनेरूपदेशायभगवताविस्वरूपं दर्शिते
तद्विलस्रभयाकिंचित्त्रिख्यते उतंकः अभिजानामिजगतः कर्तारं
तोजनार्दनयदितनुप्रकिंचित्तोदेहिजनार्दन इष्टमिच्छामितेरूपे
वैसतएदृशय वेशोपायः ततः स्तस्मैप्रीतात्मा दर्शयामासतद
पुः शास्यतविस्वरूपं हि ददशोरथस्यार्जन इति भागवतेपि सातत्रद
टपोविस्वजगत्प्राप्तुवतिदिशः सा दिदीपादिभूगोलेसवायुशी
उत्तारकमिति एवंसति किंपुनः सकलदेहइत्यर्थः अथकिंपुनभूत
जातमिहैता येषति यच्चान्तकारणीभूतं ब्रह्मादिदेवता विशेषा
दिकेवाद्दृष्टमिच्छसितदपिपश्येत्यर्थः अथशतशोथसहस्रशोथस्य
श्रुतिरपि सहस्रशीर्षीपुरुषः सहसातः सहस्रपात भूमेमिविस्वतो
ह्रस्वात्तिएदशोगुलमिति भाष्ये सहस्रशीर्षेतिषोडशार्धसूक्तं
नारायणोनामऋषिः श्रेयस्विष्टयः शेषाअनुष्टुभः अथक्तमहदा
दिचेतनोयः पुरुषः सदेवतेनिसर्वानुक्रमः तत्रप्रथमासहस्रशीर्ष
ति सर्वप्राणिनांसमष्टिरूपोब्रह्मादेहो विराडाख्यायः पुरुषः सोयस
हस्रशीर्षी सहस्रशब्दस्यापलणत्वादन्तेतः शीर्षेतिरोभिः युक्तइम
र्थः यानिसर्वप्राणिनां शिरोमितानिसर्वाणि तदेहान्तः पातितानदी
यामेवेतिसहस्रशीर्षते एवंसहसाततंसहस्रपातंच सपुरुषः

भूमिं च त्र्यंशोऽगोलरूपो विद्यतः सर्वतोऽङ्गतापरिवेष्टा दशो
गुलपरिमिते देशे अत्यतिष्ठत् अतिक्रम्य च वस्थितः दशो गुलमि
स्य लल्लोतेन त्र्यंशोऽङ्गहिरपि सर्वतोऽङ्गतापरिवेष्टा तमिसर्यः
यद्युसमव्यादृतिके प्राणायामे दशप्रणवा यवदशो गुलानीति
केचित् ७

वनमालीटीका ५

न केवलमेतावदेव समस्तजगदपि महेदहस्यं दृष्टुमर्हसीत्याह
इहेति इहास्मिन्महेदे एकस्थाने कस्मिन्नेव यत्र ऊचिदवय
वे स्थितं कृतं समस्तजगच्च गवरे जगमस्यावरसंहितं तत्रत
त्रपरिभ्रमता वर्षकोटिसहस्रैरपि दृष्टुं न शक्यं अथापुनैव
पश्यदे गुडाकेश आलस्यं शूय यच्चान्यजय पराजयादिकं दृष्टु
मिच्छसि तदपि संदेहोच्छेदाय पश्य ७

ऊसमवैजयन्तीटीका ५

किंच देगुडाकेश जितनिद्रममसर्वेष्वरस्येह तद्वयस्ये एकस्मिन्ने
वदेहे शरीरे एकस्थाने अपि एकदेशे स्थितं सवराचरं चराचरस
हितं कृतं समस्तजगच्च तनात्मकं अथापुनैव तं पश्य यत्र तत्र
त्रकर्मणारवशेन परिभ्रमता तानं वैराग्यसाधनवत्तापितयापु
नापुनैव वैरपि दृष्टुमशक्यं तदेवैकैव मदनुग्रहात्मद्वन्द्वे वाव
लोकस्येत्यर्थः च पुनः यत्कालस्य भावप्रकृतिमहदहंकारादिकं
जगत्कारणरूपं ब्रह्मेशमरीचीत्यादिप्रजापतिरूपं च तदंशलो
कात्मकमात्रं च अत्र दृष्टुं तं यद्वस्तु तदपि यच्च दृष्टुमिच्छसि त
त्र सर्वं तं पश्य इदमिच्छामि तीयतावच्छेदेन धारयितुमशक्यम
पि मत्कथयेवमवलोक्येत्यर्थः ७

मधुसूदनीटीका १० जगदपि महेदहस्यं दृष्टुमर्हसी

न केवलमेतावदेव समस्त
त्याह इहास्मिन्महेदे एकस्थाने कस्मिन्नेवावयव रूपेण स्थितं जगत्
कृतं समस्तं सवराचरं जगमस्यावरसंहितं तत्र तत्र परिभ्रम
ता वर्षकोटिसहस्रैरपि दृष्टुं न शक्यं अथापुनैव पश्य देगुडा
केश यच्चान्यजय पराजयादि यत्र शक्यं यद्वा जयेम यदि
वानाजयेयुरिति यदवोचस्तदपि दृष्टुं यदीक्षुः तदपि संदेहो

श्रीः
ती दी.
ए

छेदायपश्य

सदानंदी टीका ११

वेममास्मिच्छरीरेयमेकस्मिन्कलेजगत् यकावयवद्वयेण
स्थितेसस्यापनेगमे वर्षकोटिसहस्रेणभ्रमतातत्रतत्रच अ
शकोदष्टमयतेतयपणिततिद्रक २ जयानयादिकेयद्य
त्सदिग्धेदष्टमिच्छसि पश्यसंदेहनाशायतत्सर्वमच्छरीरगे
३। ७

नीलकंठीटीका १२

हेगुअकेशनितनिद्र इहममदेहेएकस्येएकस्मिन्नेवावय
वेनत्वाप्रमात्रेस्थितेकृत्स्नवर्तमानजगत्पश्य यच्चान्यत
अतीतमनागतेविप्रकृष्टव्यवहितेस्पृतेसूतेवातत्सर्वमि
हपश्य ७

अदृष्टपूर्वाण्येवाह

ग्रानंदीटीका

एवंसामान्यतः प्रोक्तेपि यच्चान्यदितितुर्ज्योथनारीत्तयापूर्वमेव
हतानित्यर्थः

रामकंठीटीका

किंवदनेहममसंवधिनिदेहेएकस्मिन्नेवश्येएकत्र

स्थितं कृत्स्नमविलेख्य चरत्पता संलयेणादिप्रकारं यद्यप्यस्य
किंविद्यया मिलितं द्रष्टुमभिवांक्ष्य सितद्वयेकस्यैव पश्येत्पेक
स्यैव परमार्थसतः परमकारणस्य समायाशक्तवभासिताने-
तात्प्राप्त्यभिन्नभावात्मकत्वमिदमप्युक्तं पश्येत्पत्रतात्पर्यं

७१॥

लासिकी चरुजतीरीका

किंच हेगुडाकेश इहानुभावयिष्यमाणो ममेश्वरस्य देहे सचरे चराचरे स्यावर
जंगमादिचेतनभेदभिन्नकृत्स्नवर्षकोटिभिरपि द्रष्टुमशक्यं जगदिदं ता-
स्य दीभूतं जज्ञातम् अयमन्तप्रसारेनैकस्यैकत्वेन मय्यभेदेन स्थितं
विश्रान्तं पश्य पक्षे तत्र भावो विवक्षितः श्येकया हि वचनैकवचनेति
वत् यच्चान्यजगतो वस्याविशेषादिकं जयपराजयादिकं च द्रष्टुमिच्छसि
तदपि सर्वं सन्देहोच्छेद्य यथा

पंचोलीटीका

न केवलमेतावदेव किंच इहेति हेगुडाकेश इह मम देहे अ-
द्याधुनैव कृत्स्नसमग्रं चराचरं चरेणाचरेण सह वर्तमानः इति
सचराचरे स्यावरजंगमं एकस्य जगत्पश्य यच्च अन्यदपि जयपरा-
जयादिकं द्रष्टुं तात्तुमिच्छसि तदपि पश्य ७

शाखीरसमिद्धो धिनी

न केवलमेतावदेव मत्स्वरूपमपि वित्याह इदं कस्यमिति अत्र
गुडाकेशोति संबोधनं क्षेत्रज्ञविवेकितयोनार्थं इहामिन्मम
देहे भौतिकेरूपावतारे यत्तस्मिन्नेव काले सचराचरं कृत्स्नं सर्वं
जगदुपपज्जातं यत्तदेकस्यैकस्थितं पश्य मदेहांतः स्थितं प-
श्येत्पर्यः किंच यद्यदि अन्यस्वरूपांतरं द्रष्टुमिच्छसि तदपि प-
श्येति वाक्यशेषः ७॥

सुभाष

७॥

१२

॥

॥

॥

॥

॥

॥

॥

॥

॥

भाषा अनुवाद

और इस ब्रह्माण्ड के बीच हर एक स्थानोमे भ्रमण करते ह्ये जो
सूर्य चन्द्र ग्रह नक्षत्रदि समस्त चराचर जिन को कोटि वर्ष मे
भी कोई नहीं देखि सकै है सो सब स्थावर जड़म समेत समस्त
जगत इस मेरी शरीर मे अवयव कहे अङ्ग रूप देखो और हे पुत्र
केश अर्जुन जगत का आश्रय ओ संसार की अवस्था तथा जय
पराजय आदिजो कुछ और देखा चाहो सो सब मेरे रूप मे देखो ७

दोहा

इहं एकदा सभजगत देष चराचर याद पार्थ अवममदेहम
दिं जो औरदि देषनवाह ७॥

नतमो शक्यसे दृष्टमनेनैव स्वचक्षुषा । दि
व्यं ददामिते चक्षुःपश्यमे योगमैश्वरं ८ ॥

शाङ्ख्यभाष्यटीका- १

किन्तु नत मामिति । नतमो शक्यसे न स्वीयेन चक्षुषा
मो विश्वरूपधरे शक्यसे दृष्टमनेन प्राकृतेन स्वचक्षुषा स्व
कीयेन चक्षुषा येन त शक्यसे दृष्टं दिव्येन तद्विद्यं ददामि ते
तभ्यं चक्षुसेन पश्य मे मम योगमैश्वरं ईश्वरस्य ममैश्वरं यो
गे योगशक्त्यतिशयमित्यर्थः ८

ज्ञानरूपिणिकृतटीका २

ममसे यदीत्युक्तमनुवदति किञ्चित्ति सप्रयत्नमनवच्छिन्ने मो
स्वचक्षुषा न शक्नोषि दृष्टमित्याह न त्विति कथं तर्हि त्वो दृष्टं
शक्त्यामित्याशङ्क्याह येनेति दिव्यस्य चक्षुषो वक्ष्यमाणयोगशो
क्त्यतिशयदर्शने विनियोगं दर्शयति तेनेति ८

स्वामिकृतटीका ३

यदुक्तमर्जुनेन ममसे यदि तच्छक्त्यामितित्याह न त्विति अनेनैव त
स्वीयेन चर्मचक्षुषामो दृष्टं न शक्यसे शक्तौ न भविष्यति अतो हं दि
व्यमलौकिकं ज्ञानात्मकं चक्षुस्तभ्यं ददामि ममैश्वरमसाधारणं यो
गे युक्तिमवदितचटना सामर्थ्यं पश्य ८

पेशाचभाष्यटीका ४

स्पष्टार्थे

गमानुजभाष्यटीका ५

नतमामिति अहं ममदेहैकदेहो सर्वजगदर्शयिष्यामिते तनेन
नियमेन परिमितग्राहिणा प्राकृतेन स्वचक्षुषामो तथा भूते सकले
तरविसजातीयमपरिमेयं दृष्टं न शक्यसे तव दिव्यमप्राकृते ममद
र्शनसाधने चक्षुर्ददामि पश्य मे योगमैश्वरं ममासाधारणं योगं पश्य
ममानेतज्ज्ञानादियोगमनेन तविभूतियोगं च पश्येत्यर्थः ८

अभिनवगुप्तकृतटीका- ६

स्पष्टार्थे ८

॥

॥

॥

श्री.
गी टी.
प

परमार्थप्रपाटीकाटी. ३

अथेतादृशभूतरूपदर्शनेवर्मचत्तुषां कथं स्यादित्याह नत्विति अने
नवर्तमानेन स्वचत्तुषामेपेक्षरमलौकिकं रूपं दृष्टुं न शक्यमेतर्हि
तुभ्यमहमंतयामीदित्येसत्ताकारांतः करणवृत्तिसदृक्कृतं ज्ञानात्म
कंचत्तुर्दामिततः पश्य यथाजनसंस्कारेणातींद्रियमपि निधानं
दृश्यते तथैवेत्यर्थः देयासकृत्सां जनदिव्यदृष्टिरिति पूर्वमेवोक्तं दि
प्पणिकास्यपि देवकीतनयसेवकीकृतं यैर्मवागपिसनो विनोद
तः अंजनं भवति तं जलोचनसदृशो गीतिनिधानसाधन इति त
उक्ते पावत्वे विषयरूपं निजवपुषि परे दृष्टवान् समसाचीतावत्
स्यात्सभावस्थित इह भगवान् दिव्यदृष्टिस्ततोः भूत् नाप्यप्यदृष्टि
रूपेण गतमप्यरेचार्जनस्तर्हि

उतसुथियः
वमेवाप्येवपि दिव्यदृष्टिदानपूर्वकं कृत्वा देहावयवेषु विषयरूपं दृ
ष्टुमिच्छेद्योगपर्वणि पांडवदोमेन कौरवसभां प्रति भगवद्वाक्ये
क्तं विडरेणेवमुक्ते त्रकेशवः परवीरहा उद्योयनं यार्तं राष्ट्रमप्यभा
षतवीर्यावान् एको ह मितियन्मोहात्मसमसंयोजन परिभूय
च उर्वुहेरहीतं मोविकीर्षसि इदं वपांडवाः सर्वतथैवाधकवृत्त
यः इहादिताम्यकृदाश्च तथैव च महर्षयः पवमुक्ता जहासो चैः केश
वः परवीरहा तस्यात्मात्मयतः शौरेर्विशुद्धा महात्मनः अंगुष्ठमा
त्रास्त्रिदशामुमुचुः पावकाचिषः तस्या ब्रह्मा ललाटस्थो रुद्रो वलसि
वाभवत् प्राउरास्तेषां दोर्भा संकर्षणयने जयो भीमो पुष्टिरेव
मंदीपुत्रो च दृष्टतः अथ काहस्येव प्रमुत्प्रमुत्वास्त्रा आवि
र्वभूवुः कृत्वा गीं समुद्यतमहापुथाः शंखचक्रगदाशक्तीः शा
स्त्रं लांगूलनदं कौ अट्टशत्रुयतामेव सर्वप्रहरणा निच नानावा
रुष्ट्रकृत्वा दीप्पमानानि सवैशः नेत्राभ्यावतसंख्येव शोभा च
समंततः प्राउरासत्तदोर्दः सभूमाः पावकाचिषः शंखचक्रेषु च त
थासूर्यस्यैवमरोचयः तट्टा महासूर्यकेशवस्य महात्मनः तस्मी
लयत नेत्राणि राजानस्तस्वचैतसः कृतभीष्मचदोणच विडरे संज
यतथा प्रादातेषां सभगवान् दिव्यवत्तर्जनादनः तट्टा महादा

स्वर्गमाथवस्यसभातलेदेवउंडभयोनेउःपुष्पवर्षपपातचेति

----- अथप्रकृतमनुसंगमः ८

वनमात्मी टीका ८

इन्द्रियप्रवर्तकस्यमनसाप्यगस्यस्यममापरोक्षेमतत्कृपाविना
नभवतिमतत्कृपायाचातायासेनभवतीत्याह नत्विति अनेनै
वप्राकृतेनमत्प्रसादशून्येनचत्तषामादिव्यालौकिकानेतैश्च
र्यविशिष्टेदृष्टेनशक्त्यसेनशक्तोपि अतोदिव्यमप्राकृतेमम
दिव्यरूपदर्शनं तमेददामितेतभ्यंचत्तलेनचत्तषापश्यमेयो
गमचुटचटनासामर्थ्यातिशयमेष्ममीश्वरस्यममासाधारणं
यद्यपियावहर्मविशिष्टेभगवद्रूपेस्वस्योपास्येयज्ञानावमोत्त
स्तावहर्मविशिष्टरूपमर्जनः सर्वदासाक्षात्करोति तस्याप्यमि
तगुणालयस्यहरेस्ततोधिकमेष्ट्वर्यमर्जनेनभगवन्मुखान्
श्रुतंतदेवायरोततोत्तातेष्टृ तस्यानेनचत्तषादष्टमशक्तं
तादृशैश्वर्यदर्शनयोग्यभगवत्प्रसादस्याभावात् यथायथा
हिभगवत्प्रसादाधिक्यं तथा तादृगधिक्येष्ट्वर्यस्यज्ञाने नायमा
त्माप्रवचनेनलभ्योनेमथपानवक्रनाश्रुतेनयमेष्ट्वर्येतेन
तलभ्यइति श्रुतिरितिभावः ८

रुसमवेजयलीटीका ९

मत्प्रसेयदितच्छ्रुत्वापिमर्जनप्रार्थितंसेपादिनेस्वस्याप्राकृत
रूपदर्शनयोग्येदिवंचत्तस्वस्वयमेवददाविताह नत्वमा
मिति अनेनैवप्राकृतरूपं ग्राहिणाप्राकृतेनस्वचत्तषास्व
कीयेनचर्मचत्तषामामपरिमेयेपुण्यपुण्यदयगतातेतप्रचेत्त
एकमुपपन्नं सकलेतरविमजानीयमत्युत्तरूपेदृष्टेनशक्त
सेनशक्तोपिसमर्थो नभविष्यसीत्यर्थः अतस्तेतभ्यंदिव्यमप्रा
कृतेमदर्शनसाधनभूतेचत्तर्ददामियथाहंनिरतिशयप्रभा
कांतमात्मानंयान्ति तथैवतत्तत्तरपितदर्शनं तमेददामी
त्यर्थः मेममसर्वेष्ट्वर्येष्ट्वर्ययोगमसाधारणमनज्ञज्ञानादि

श्री.
गी. टी.
प

योगमनेतविभूतियोगं च पश्य यद्वा युज्यतेऽनेनेति युज्यते यो गोरू
पेपरमेरूपमैश्वर्यमिति वक्ष्यमाणान् महत्तैर्नैव दिव्येन च त्वष्टाम
मैश्वर्यरूपेण पश्यत्यर्थः ननु यथा नैतस्य भगवता दिव्यं च तददौत
ष्टामनोपि दिव्यमदादिति चेन्न तस्य तद्रूपेण युज्यते दर्शनादस्य
तदेवमेदर्शयदेवरूपं किरीटिने गदिने च कदलमिच्छामितो द
ष्टमदत्तैर्नैवरूपेण च तदुज्जैनसदृशवादे भवेत्तादिवस्यमाण
सर्वे पश्यन्ते न च पार्थसारथिरूपात्सदृशशिरसो विस्वरूप
स्याधिकं भवेद्विद्युद्विप्रदानरूपलिङ्गादिति वाच्यं तस्मै व दे
वाकारस्य हि भुजं च तदुज्जैनराकाराधीनत्वात् निरतिशय
तेजः प्रभावे वा संक्रांते सदृशशीर्षिरूपे निरतिशय तेजः प्रभा
वेना संक्रांते च दृष्टिर्गोहिणीयुक्तानवातिर्गोदर्यात्वावपमाधु
र्णादिगुणानां वनराकृतिरूपरूपावभावविनीटद्विस्तत्रादि
णी भवेदतस्तस्मात्तस्याभिन्नत्वेनाधिकतं नास्मै व यथा सदृशशी
र्षो विवित्रविस्वरूपस्य सर्वपरतंतयेव वसुदेवसूनोः पार्थसार
थेरपि युज्यते तथा हि सच्चिदानंदरूपाय कृष्णाय क्लृष्टका विणो
नमो वेदांतवेद्याय पुरवे बुद्धिसाक्षिणे कृष्णो वै परमं देवत एको
वशीस वेगः कृष्णैर्युगकोपिसन् ब्रह्मया विभाति ईश्वरः प
रमः कृष्णः सच्चिदानंदविग्रहः अनादिशदिर्गो विंदः सर्वकारण
अत्रापि स्वयमेवोक्तं मतः परतरेनाम किं विदस्ति धने जय अहं स
वस्य प्रभवो मत्तः सर्वं प्रवर्तते मपि सर्वमिदं प्रोते अहमादि हि देवा
नाम् अर्जनेनाशुक्ते परं ब्रह्म परं धाम पवित्रं परमं भवानिमादिषु
तिस्मृति संघात प्रमाणानि संति तस्मात्तदुभयोरूपयोरधिकमून
तामत्ता एव युतयाभासेन वदेति न तत्तत्सादृश्यत्वेन कुतश्चिन्नैः

यत्कर्म न्यसेयुदितकर्मका मधुसूदनीटीका- १ इष्टमिति तत्र विशेषः माह ॥
अनेनैव प्राकृतेन स च त्वष्टा स भावमिदं न च त्वष्टामादिव्यरूपं द
ष्टं न तश्चासेन शक्तो वित्तपवाशक्तमेव इति पाठे शक्तो न भवि
ष्यतीत्यर्थः सो वादिकस्यापि शक्तोऽनेन देवादिकः शक्तो दसर
ति वा दिवा दौ पाठो वैसेव सांप्रदायिकं तर्हि तो दृष्टं कथं शक्त
यामत आह दिव्यमप्राकृतेन मम दिव्यरूपदर्शनत्वेन मददामिते

तुभ्यं चतः तेन दिव्येन चतुष्पापपमयोगचेष्टनचटनासामर्थ्या
तिशयमेश्वरमीश्वरस्य ममासाधारणं

~~तुभ्यं चतः तेन दिव्येन चतुष्पापपमयोगचेष्टनचटनासामर्थ्या~~
~~तिशयमेश्वरमीश्वरस्य ममासाधारणं~~

सदानेदीटीका ॥

अनेन प्राकृतेन तेन शक्तौषिस्वचतुष्पा दिव्यविष्णुत्वं दृष्टं स
र्वीश्वर्यमये हि मो १ ददास्य प्राकृते चतः तमेय दिव्यदर्शने दिव्ये
न चतुष्पातेन महामायाश्रये परे ममासाधारणे नृपे पश्यते चाडु
तोपमे १ ८

नीलकंटीकाटीका ॥

यत्कं मन्यसे यदि तच्छक्यं मया दृष्टमिति तत्राह न त्विति शक्यसे
शक्तौषि पदविकरणाय तय श्रावः अनेन प्राकृतेन दिव्यमप्रा
कृते ऐश्वर्ये ईश्वरसंबन्धिने योगे विष्णुश्रयतल्लक्षणं सामर्थ्यं ८

मन्यसे यदि तच्छक्यमिति यडकं त आनेदीटीका

ब्राह्म - अनेनैव मर्त्यजन्मा तृणापात्परिमितदर्शिता चतुष्पापेश्वरयोगमी
श्वरस्य कृतिमविंश चरनतां पश्यतया च स्तुते निरुपादानसंभा
रमभितावेव तनुते जगद्विज्ञेन मस्तस्मे कला आचार्यशूलिने इति
अथ च दर्शमानेस्मिन्नेकत्र भूतसंघे ममैश्वर्येण संबन्धं पश्य

८ ॥

अतएवात्तद्वृत्तत्वादस्यार्थस्य ॥

समकंठीटीका

अनेनैव मर्त्यभावात्परिमितदर्शिनैव चतुष्पागोलकापि हानयाटक
च्छक्ता पुनर्मो प्रदर्शयिष्यमा गावय नृपे दृष्टमालोकयितं न शक्य
मेव लभो भविष्यतो दिव्यं सर्वदर्शी शक्तियोगात्परमात्मरूपपर
माकाशभवं प्रकृष्टज्ञानं तत्कंच चतुर्ते रदामिते पारमेश्वर्यास्वशक्ता
निष्प्रयत्नस्यैवाविर्भावयेयम् तेन ममैश्वर्यमोश्वरस्य संबन्धिप्रदर्शना
यिष्यमाणं नृपे पश्य साक्षात्प्रपयेति

गी.
टी. ५.

लासिकी वसुधायुगीका

किंच- तः पलांतरे यथा मां वसुदेवात्मजमनेन सवत्सरापश्यामि तथा-
मां मीश्वरसकललक्षणोद्भूमात्मा कर्तुमनेनैव च मम येन सवकीयेन च
लघानशक्नोमि श्रुतो हेतोर्दिव्यलोके तरे च तुरिव वत्स मेदीये श्वररूपमा
दात्ताकारक्रियाकाराणां ज्ञानेन च तस्ते तभ्यं ददामि तेनैव ममैश्वरयोगं म
हाव्याप्तिसहितं समाधानं पश्यसात्तात ऊह

पंचोलीटीका

विद्यमानवत्सराश्रयनधिकारित्वं दर्शयन् च तुरंतरं दातुं प्रतिजा
नीते न त्वितितपुनः मां विषयमनेन प्राकृतेन च त्वुषा दृष्टुं न-
शक्यसे न शक्नोषि ते तभ्यं दिव्यवत्सवी ददामि येन दिव्येन च त्वुषा
दृष्टुं शक्नोषि मे ममैश्वरसंबन्धिनं योगं शक्यति शयं पश्य द

शास्त्रीरसमिहोधिनी ॥

तनु किंपुनर्भव रूपं च मां हतेन च त्वेषेव दृश्यं भवेदित्यत आह
न त्विति त्वुषा विप्रोषयोकः त्वया मां सत्त्वरूपं दृष्टुमनेनैव
च त्वुषानशक्यसे तस्ते तदिव्यं वत्सः प्रज्ञानात्मिका दृक्शक्तिं
ददासि येन साधनभूतेन मे ममैश्वरयोगं पश्यसात्तात्कारोषी
त्यर्थः ८॥

मधुभाष

भाषा अनुवाद
और जो अर्जुन ने कहा कि वह रूप मेरे देवते जोग्य होय तो दे
खावी इस पर कहते हैं कि हे अर्जुन इन अपने चर्म चल कहे
चमड़े की आँखों से हमारे उस रूप को न देख सकोगे इस से द
मत्तम को अलौकिक दिव्य ज्ञान चल देते हैं सो मेरा ईश्वर रूप
अचटन चटना समर्प्य दर्शन करो ८

दोहा

मोहि शकें नहि देषतं इन चक्षुनिज सेंद दिव्य नयन तोहि
देत हों मम पेश्वर योग लषेद ८

ਸਿਰਮੌਰ ਸ਼ਹਿਰ

ਮੇਰੀ ਮਾਂ ਦੀ ਮੌਤ ਹੋਈ ਸੀ ਮੇਰੇ ਪਿਤਾ ਜੀ ਨੇ ਮੇਰੇ ਪਿਤਾ ਜੀ ਦੇ ਨਾਂ
ਪਿੱਛੇ ਮੇਰੇ ਨਾਂ ਦੇ ਪਿੱਛੇ ਮੇਰੇ ਨਾਂ ਦੇ ਪਿੱਛੇ ਮੇਰੇ ਨਾਂ ਦੇ ਪਿੱਛੇ
ਮੇਰੇ ਨਾਂ ਦੇ ਪਿੱਛੇ ਮੇਰੇ ਨਾਂ ਦੇ ਪਿੱਛੇ ਮੇਰੇ ਨਾਂ ਦੇ ਪਿੱਛੇ
ਮੇਰੇ ਨਾਂ ਦੇ ਪਿੱਛੇ ਮੇਰੇ ਨਾਂ ਦੇ ਪਿੱਛੇ ਮੇਰੇ ਨਾਂ ਦੇ ਪਿੱਛੇ
ਮੇਰੇ ਨਾਂ ਦੇ ਪਿੱਛੇ ਮੇਰੇ ਨਾਂ ਦੇ ਪਿੱਛੇ ਮੇਰੇ ਨਾਂ ਦੇ ਪਿੱਛੇ

97

ਮੇਰੇ

ਮੇਰੇ ਨਾਂ ਦੇ ਪਿੱਛੇ ਮੇਰੇ ਨਾਂ ਦੇ ਪਿੱਛੇ ਮੇਰੇ ਨਾਂ ਦੇ ਪਿੱਛੇ
ਮੇਰੇ ਨਾਂ ਦੇ ਪਿੱਛੇ ਮੇਰੇ ਨਾਂ ਦੇ ਪਿੱਛੇ ਮੇਰੇ ਨਾਂ ਦੇ ਪਿੱਛੇ

संज्ञयउवाच एवमुक्त्वा ततो राजन् महायोगे
श्वरोदरिः दर्शयामास पार्थाय परमं रूपमै
श्वरं ५

शाङ्करभाष्यटीका-१

एवं ते यथोक्तप्रकारेणोक्त्वा ततो नन्तरं राजन् एतच्छब्दं महायोगो
योगेश्वरेश्वरो हरिर्नारायणः दर्शयामास दर्शितवान् पार्थाय एषा
सत्ताय परमरूपे विश्वरूपमैश्वरं ५

आनन्दगिरिकृतटीका-२

इमं वृत्तान्तं एतच्छब्दं संज्ञयोनिरुद्धितवानित्याह संज्ञयइति स
दीये विश्वरूपाख्यं रूपं न प्राकृतेन चक्षुषा निरोक्षितं तमं किन्तु
दिव्येन इत्यादि यथोक्तप्रकारः अनन्तरं दिव्यचक्षुषः प्रदानादिति शेषः
हरत्पदविशेषो सकार्यो इति हरिः यदीश्वरस्य मायोपहितस्य परम
सुतरूपं रूपं तदर्शयाम्बभूवेत्याह परममिति ५

स्वामिकृतटीका-३

एवमुक्त्वा भगवानर्जुनाय रूपं दर्शितवान् तच्च रूपं दृष्ट्वा र्जुनः श्रीकृष्णं वि
ज्ञापितवानिति ममर्थमेवमुक्ते सादिभिः षड्भ्यः श्लोकैः एतच्छब्दं प्रति सं
ज्ञयउवाच एवमिति राजन् एतच्छब्दं महायोगो योगेश्वरेश्वरोदरिः परमं
पेश्वररूपं दर्शितवान् ५

पेशावभाष्यटीका-४

संज्ञयउवाच एवमुक्तेति राजविति एतच्छब्दस्य सेवो यने योगो विद्यते ये
षो न योगाः महायोगानामीश्वरोदरिः ५

रामानुजभाष्यटीका-५

संज्ञयउवाच एवमिति एवमुक्त्वा सरणेष्वस्थितः पार्थमा तत्तज्जो महा
योगेश्वरोदरिः महाश्रुत्ययोगानामीश्वरः परब्रह्मभूतो नारायणः पर
मैश्वरे स्वासाधारणं रूपं पार्थाय पितृषु सः पृथायाः पुत्राय दर्शयामास ५

अभिनवगुप्तकृतटीका-६

स्पष्टार्थं ५

परमार्थप्रपाटीका-७

श्री.
मी. टी.
प

एवमुक्ताभगवानर्जुनाय रूपं दर्शितवान् तच्च रूपं दृष्ट्वा र्जुनः श्रीकृ
ष्णं विज्ञापितवानितीमेव ज्ञातं धृतराष्ट्रं प्रति संजय उवाच एवमुक्तेति
षड्विंशोऽंशः भोगजनधृतराष्ट्रमहायोगेश्वरो हरिः सहोतस्य ते योगेश्व
रश्च महायोगेश्वरः योगो दिनीव वल्लोकांतत्र ईश्वरः समर्थाः सुकवामदे
व वराजवल्गुभूतयस्त्रिषामपीश्वरः कृष्णः पार्थाय परमं पारमार्थिकं रूप
मेश्वरमचटनचटतापटीयो दर्शयामास ५

वनमातीटीका. ५

भगवानर्जुनाय दिव्यं रूपं दर्शितवान् स च तद् दृष्ट्वा विस्मयाविष्टो भगवन्ते
विज्ञापितवानितीमेव ज्ञातं तमेव मुक्तेत्यादिभिः षड्विंशोऽंशः धृतराष्ट्रं प्र
साह संजयः एवं न तमांशकमेव दृष्ट्वा मित्या युक्ता दिव्यवत्तः प्रदानाने
तरं देराजत्सहान् जगदुदयं दिक्तेन संवीत र्यामिते च सर्वो कृष्णश्च
सो योगेश्वरश्चेति महायोगेश्वरः योगानामचटचनापटीयो न तशक्तीना ८
मीश्वरो भक्तानां सर्वकृष्णाय हारी दर्शनाय गोपमपि कृष्णाय दर्शयामा
स पार्थायैकांतभक्त्या परमं दिव्यं रूपमेश्वरम् ५

कृष्णमेव संजयतीटीका. ५

पार्थसारथिर्भगवान् पार्थमेव मेवोक्ता तस्मै स्वकं रूपं दर्शितवान् तद्
पदर्शनेनार्जुनोऽप्यनविस्मयमना भवन्तमेव विज्ञापितवानिमेव म
र्थं संजयो धृतराष्ट्रं प्रसाह संजयः एवमुक्तेति ततो दिव्यवत्तः प्रदानो
तरं देराजन्धृतराष्ट्रमहायोगिन्योगेश्वरोऽयं योगेश्वरो महा
श्वा सो योगेश्वरश्च मेहतामत्याः स्वर्ग्यरूपाणां योगानामदसाधारण
रूपाणामनेतज्ञानादियोगरूपाणामनेतविभूतियोगरूपाणां चेश्वरो
नियतेति वासः हरिः कृष्णः परब्रह्मभूतः पार्था मातलेयः श्रीकृष्णः पा
रथश्च यथावस्थितस्मिन् एवमुक्तप्रकारेणोक्ता प्रमत्तवत्परिहासमिष
णात्र मृषानवदामि किंतु सत्यमेवेत्याशयेनोक्तेः सक्तः पार्थाय पितृषु
स्त्रियाय परममित्राय परमं सर्वोत्कृष्टमेश्वरं स्वस्वभाविकासाधारणं रू
पं विविधविचित्रान्ता विन्याविलचेतनाचेतनात्मकविश्रायभूतं
वियदं दर्शयामास दर्शितवान् ५

मधुसूदनीटीका १

एवं न तमांशकमेव दृष्ट्वा मेननेव सवत्तथा दिव्यं ददामिते च तत्परि
क्षाततो दिव्यवत्तः प्रदानादनंतरं देराजन्धृतराष्ट्रस्थिरो भवन्प्रवण

भगवानर्जुनाय दिव्यं रूपं दर्शितवान् स च तद् दृष्ट्वा विस्मयाविष्टो भगवन्ते विज्ञापितवानितीमेव ज्ञा
तमेव मुक्तेत्यादिभिः षड्विंशोऽंशः धृतराष्ट्रं प्रति संजय उवाच ॥

यमहानसर्वोत्कृष्टश्चासौ योगेश्वरश्चेति महायोगेश्वरो हरिः भक्तानो
सर्वलेशापहारी भगवान् दर्शनायोग्यमपि दर्शयामास पार्थाय
एकान्तभक्ताय परमं दिव्यं रूपं मे श्वरं

सदानंदी टीका ११

समस्त्वाश्चर्यं नित्यं समस्तैश्चर्यं संयुते भगवान् आर्षितो रूपं दर्शयामा
स निस्सवे १ तदष्टाविस्मयाविष्टः स विज्ञापितवान् हरिं ३ तीमं सर्वं
तांते धृतराष्ट्रं त्वं प्रति २ उवाच संजयः षड्विंशोऽंशैश्चर्यं तत्परैः दि
व्यं ददामि ते च त्वरे व मुक्तां जने प्रति ३ सर्वोत्कृष्टोऽस्ति योगेश्वरः
सौ परमेश्वरः दिव्यचतुःप्रदानादौ दर्शयामास तद्वपुः ४ भक्तलै
शहरः स्वामी दर्शनानर्हमप्यसौ दर्शयामास पार्थाय दिव्यं तत्परं मे
श्वरं ५ ५

नीलकंठी टीका १२

एवमुक्त्वा भगवान् नर्जनाय दिव्यं रूपं दर्शितवान् स च दृष्ट्वा विस्म
याविष्टो भगवते विज्ञापितवान् तीमं हृतां तमेव मुक्तेत्यादि ष
ड्विंशोऽंशैश्चर्यं तत्परं प्रति संजय उवाच एवमुक्तेत्यादि ततः दिव्यच
तुःप्रदानात् तत्परं राजन दे धृतराष्ट्रं महाश्चासौ योगेश्वरश्चेति वि
ग्रहः महतो योगस्य वारं श्वरः परमं दिव्यं रूपं ऐश्वर्यं मायाविसे
वेधिनं तमायातीतं दर्शयामास ६

आनंदी टीका स्पष्टार्थम् ६

रामकंठी टीका स्पष्टार्थम् ६

अथ व्यास उवाच ॥ ब्रह्मविद्यं दृष्टिर्ह लासिकी ॥ १ ॥ अथ भगवता परमसमाधिना नि
रतिशय निजरूपयोग्यतादानायां नो यथा उच्यते तथैव सर्वं भगवद्वा स उवाच ॥ २ ॥
स्ति नः परं हे राजन धृतराष्ट्रं महात्सवं ज्ञात्मा तया व्यामिलत्वाणो योगस्य समर्पयि
तुमीश्वरः समर्थो हरिः श्रीकृष्णः एवं दिव्यं ददामि ते च त्वरित्युक्त्वाः ततः
प्रतिज्ञानं तत्परं पार्थायार्जनमनुग्रहीतं परममत्युत्कृष्टं मे श्वरं रूपं दर्शया
मास पश्य तं प्रपुष्टं पार्थ स्पष्टं तयात्मत्वेनैश्वर्यं रूपं ज्ञानविषयी च का
रेत्यर्थः तत्रैश्वर्यं रूपं त्रिधा एकं महताकादितास्फुटे देता मय महमिदमि
ति यच्च सदाशिवतत्त्वमिति नामान्नत्रैवादिभिर्व्यवहृतम् द्वितीयं स्फु
टे देता देता सामानाधिकरण्यात्तत्त्वमिदमहमिति यत्तु श्वरतत्त्वमित्युक्तं
तृतीयं समधृततत्त्वलापुस्त्यायेताहमिदं धियोः सामानाधिकरण्यं तु

गी.
टी.
प

त्यबलंशुहविद्यामिति ()

२॥

पंचोलीटीका

पवमुक्ताभगवान् अर्जुनाय यत्स्वरूपं दर्शितवान् च रूपं यादृ-
शं दृष्टमर्जुनेन तादृशं धृतं गच्छेत्प्रति संजयः पवमुक्तेत्यादिभि-
षद्भिः श्रोतैः प्रतिपादयति पवमिति हे राजन् महायोगेश्वरः
महाश्रौतयोगेश्वरश्च महायोगेश्वरो हरिः पवं यशोक्तेन प्रका-
रणोक्ता ततः अनेन रं पार्थायार्जुनाय परमं पेश्वं रूपं दर्शया-
मास १॥

रागवीरसमिद्धोधिनी ॥

पवं भगवता र्जुनं प्रति यदनुग्रहं लक्षणं वचनं यथोपदिष्टं तत्
यैव धृतं गच्छेत्प्रति संजय उवाच पवमुक्तेति निगदव्याख्यात
मेतच्छ्लोकं यं १॥

मधुभाष्य

समर्थश्रेत्यादिवाभिधानं हरिः सर्वयज्ञादिभागदारित्वात्
श्रोतृपूतंगेहेषु हरेभागं कर्तुं वरुणो मे हरितः श्रेष्ठस्त-
स्माद्दिविरिति स्मृतं निमोक्षय मे (सर्वीश्वर्यमयं सर्वं श्रूयते
कंसहस)

भाषा अनुवाद

इस प्रकार से कहिकर भगवान ने अर्जुन को अपना विराट रूप देखाया तो वह रूप देखि अर्जुन श्रीकृष्ण को जैसा जाना श्री देवा सोई छः श्लोक से राजा धृतराष्ट्र के प्रति सज्जय कहते हैं किहे राजन् धृतराष्ट्र महात्मा श्रीकृष्ण योगेश्वरने अर्जुन से ये स बातें करके अपना ऐश्वर्य विशिष्ट परम रूप अर्जुन को दर्शन कराया ॥

दोहा

येसें कहि फिर न्यप महायोगेश्वर हरि सोय परम रूप येचर तवे
दर्पादिपार्थकोय ॥

[illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अनेकवक्त्रनयनमनेकादुतदर्शने अने कदिव्याभरणदिव्यानेकोयतायुथं १

शाङ्ख्यभाष्यटीका १

अनेकेति अनेकवक्त्रनयने अनेकानि वक्त्राणि नयनानि
च यस्मिन् रूपे तदनेकवक्त्रनयनं अनेकादुतदर्शने अनेका
मृदुतानि विस्मापकानि दर्शनानि यस्मिन् रूपे तदनेकादुतदर्
शने रूपे तथानेकदिव्याभरणं अनेकानि दिव्याभरणानि यस्मि
स्तदनेकदिव्याभरणं तथा दिव्यानेकोयतायुथं दिव्यानि अने
कानि उद्यतानि आयुधानि यस्मिस्तदिव्यानेकोयतायुथं दर्शया
मासेति एवैण सम्बन्धः १

आनन्दगिरिकृतटीका २

तदेव रूपे विशिनष्टि अनेकेति दिव्याभरणदिव्यानेकोयतायु
थतानि उद्भूतानि १

स्वामिकृतटीका ३

कथं भूतं
तदिव्याह अनेकेति अनेकानिवक्त्राणानयनानि च यस्मिंस्तत् अनेकानां
अदुतानां दर्शने यस्मिन् तत् अनेकानि दिव्याभरणानि यस्मिंस्तत्
दिव्यामनेकानि उद्यतानि आयुधानि यस्मिंस्तत् १

पेशाचभाष्यटीका ४

अनेकवक्त्रनयने अनेकानि वक्त्राणि नयनानि अनेकादुतानां
दर्शनमुपलब्धिं यत्र रूपे तद् रूपमनेकादुतदर्शने दिव्यामनेकासु
द्यतानि आयुधानि यत्र रूपे तदिव्यानेकथाप्रविभक्तमेकस्य मयस्य
दिनिव्यवहितेन संवेद्यः १

रामानुजभाष्यटीका ५

स्युद्यर्थं अनेकेति अनेकानि वक्त्राणि नयनानि अनेकादुतानां
दर्शनमुपलब्धिं यत्र रूपे तद् रूपमनेकादुतदर्शने दिव्यामनेकासु
द्यतानि आयुधानि यत्र रूपे तदिव्यानेकथाप्रविभक्तमेकस्य मयस्य
दिनिव्यवहितेन संवेद्यः १

तमानतावापानं

अभिनवगुप्तकृतटीका ६

स्युद्यर्थं १

परमार्थप्रदीपीका ७

तत् अनेकवक्त्रनयनमित्यादितः श्लोकद्वयरूपवर्णनार्थं स्युद्यर्थं १

श्री-
गीटी-
५

वसमासी टीका- ८

अनेकवक्राणि नयनानि च यस्मिन् रूपे अनेकेषामद्भुतानां विस्मयदे-
हानां दर्शने यस्मिन् अनेकानि दिव्यानां भरणानि भूषणानि यस्मिन्
दिव्यामनेकासु युतानां सुधासखाणि यस्मिन् तथा रूपम् १-

ऊसमवेन यन्ती टीका- ५

तस्मिन्माकारं रूपमिदं पेत्यामाह अनेकवक्रनयनमिति अने-
कवक्रनयने अनेकसदृशशब्दाः असेवेयार्थवाचिनः विस्मयतश्च
त्वरुतविस्मयो मुखादिति श्रुतेः अनेकानि अपरिमितानि सेव्यावच्छे-
दशूमानिवक्राणि मुखानि नयनानि च तेष्वेव यस्मिन् तद्वत्
अनेकाद्भुतदर्शने अनेकानामसेवेयानामद्भुतानां माश्रयाणां
दर्शने यस्मिन् तथा अनेकदिव्याभरणं अनेकायसेवेयानि दिव्या-
नियोजनमानानि आभरणानि मुकुटकुंडलकेयूरकटककौस्तुभ-
कटिसूत्रहारनूपुरादीनि यस्मिन् दिव्यानेकायुनायुधम् दिव्या-
मयं ज्वलाममोदामनेकायनेतामद्भुतानि सज्जीकृतकरोतीति
तानि आयुधानि चक्रवर्मापराजगदाहतमुसलादीनि यस्मिन्
तथा अत्रायुधशब्देनोपलक्षिताः शस्त्रवेषणादयो वाया अपूहनीया
स्तेषामपि सांघातिकतात् १-

तदेवं रूपं विशिनष्टि-

मधुसूदनी टीका- १-

अनेकानि वक्राणि नयनानि च यस्मिन् रूपे अनेकानामद्भुतानां वि-
स्मयदेहानां दर्शने यस्मिन् अनेकानि दिव्यानि आभरणानि भूषा-
णानि यस्मिन् दिव्यानि अनेकानि उद्यतानि आयुधान्यस्य नियसि-
न् तथा रूपम् १-

सरानेदी टीका- ११

तदेवं रूपं श्रीविश्वो विशिनष्टि ससेनयः यस्मिन् वक्राण्यनेकानि ने-
त्राणि तथा वपुः १ अद्भुतानामनेकेषां यस्मिन् रूपे सिद्धदर्शने य-
स्मिन् दिव्यामनेकानि भूषणानि च तथा २ यस्मिन् दिव्यामनेका-
नियोजनान्यायुधानि तत् १-

नीलकंठी टीका- १२

तदेवं रूपं विशिनष्टि द्वाभ्यां अनेकेषां दिना अनेकानि अनेकानि
वक्राणि नयनानि च यस्मिन् तदनेकवक्रनयने अनेकामद्भुता-

निदर्शनानियस्मिस्तदनेकाद्भुतदर्शने अनेकानिदिव्याभ
रणानियस्मिन् दिव्यानिअनेकानिचउद्यतानिआयुधानिचक्रा
दीनियस्मिन् १

आनंदोरीका स्पष्टार्थम् १

रामकंदोरीका स्पष्टार्थम् १

तत्रकीटशतदेसंरूपमि लासिकी वस्तुमोरीका निविशेषणद्वारेणसदाशिवतत्वाङ्गुडविद्यातच्चैश्वरं
रूपंविशि
नष्टि॥ अनेकानिवक्राणिनयनानिवयस्मिस्त अनेकवक्रनयनम्
अनेकानामद्भुतानांविस्मयहेतूनांदर्शनंयस्मिस्त अनेकानिदि
व्यानिलोकोत्तराणिआभरणानिभूषणानियस्मिस्त दिव्यामनेका
द्यतानिआयुधानियस्तत १

पंचोलीटीका

कथंभूतंतदित्याह अनेकेति अनेकानिवक्रानिनयनानिवयस्मिन्
रूपेतदनेकवक्रनयनंअनेकानिअद्भुतानिविस्मयकानिदर्श
नानियस्मिन्रूपेतदनेकाद्भुतदर्शनमनेकानिदिव्याभराणा
नियस्मिन्रूपेतदनेकदिव्याभरणंदिव्यामनेकानिखड्गादीनि
उद्यतानिआयुधानियस्मिन्रूपेतदिव्यानेकोद्यतायुधं १॥

रामवीरसमिद्धोपिनी

स्पष्टः १॥

मधुभाष्य

१॥

... ..
... ..
... ..

32

... ..
... ..
... ..
... ..
... ..

... ..
... ..
... ..
... ..
... ..
... ..
... ..

भाषा अनुवाद

अब किस प्रकार का वह रूप है सो कहते हैं कि अनेक हैं वक्र
कहे मुख और नेत्र तथा अनेक अनेक हैं अद्भुत वस्त्रों का दर्शन
जिसमें और अनेक दिव्य आभरण और दिव्य अनेक आशुय धारण
हैं जिसमें ऐसा रूप भगवान ने अर्जुन को देखाया १

दोहा

मुख अनेक अरु नयनहुं अद्भुत दर्श अनेक भूषण दिव्य अनेक
सो आरु दिव्य लसै नैक १

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

कहैं कहे की ई विषय कि ई प्रभु कहैं कहैं कहैं कहैं कहैं
कहे कहैं कहैं कहैं कहैं कहैं कहैं कहैं कहैं कहैं कहैं
कहे कहैं कहैं कहैं कहैं कहैं कहैं कहैं कहैं कहैं कहैं
७ कहैं कहैं कहैं कहैं कहैं कहैं कहैं कहैं कहैं कहैं

ॐ

कहे कहैं कहैं कहैं कहैं कहैं कहैं कहैं कहैं कहैं कहैं
७ कहैं कहैं कहैं कहैं कहैं कहैं कहैं कहैं कहैं कहैं

दिव्यमात्म्याम्बरधरे दिव्यगन्धानुलेपने स
र्वाश्चर्यमये देवमनने विस्मृतो मुखे ॥

शाङ्करभाष्यटीका-१

किञ्च दिव्येति दिव्यमात्म्याम्बरधरे दिव्यानि मात्म्यानि पुष्पाणि
अम्बराणि वस्त्राणि च धियने येनेश्वरेण ते दिव्यमात्म्याम्बर
धरे दिव्यगन्धानुलेपने दिव्यगन्धानुलेपने सर्वाश्चर्यमये स
र्वाश्चर्यं प्राये देवमनने नास्मान्नोस्तीति अनन्तं विस्मृतो मु
खे सर्वभूतात्मत्वात् ते दर्शयामासार्जुनोददर्शयति वा अभ्यादि
यते ॥

आनन्दगिरिकृतटीका-२

तदेव रूपं विनिर्दिष्टं अनेकेषां दिव्यान्माभरणानि तारकैः
रासीनि भूषणानि उच्यन्ते ॥ उक्तं रूपवन्तं भगवन्तं
प्रकारान्तराणि विनिर्दिष्टं किञ्चेति अभ्याहारोपि पदसंघटना
सम्भवात् ॥

स्वामिकृतटीका-३

किञ्चदिव्येति दिव्यानिमात्म्याम्बरधराधारयतीति तथादिव्यगन्धो
यस्य तादृशमनुलेपने यस्य तत् सर्वाश्चर्यमयमनेकाश्चर्यप्राये दे
वयोतनात्मके अनेतमपरिच्छिन्नं विस्मृतः सर्वतोमुखानियस्मिन्त
त् ॥

ऐश्वर्यभाष्यटीका-४

स्पष्टार्थे ॥

रामानुजभाष्यटीका-५

दिव्येति द्योतमाने देवे अनेतं कालत्रयवर्तेनि विलज्जगदाश्रयतया देशका
लपरिच्छेदानर्हं विस्मृतो मुखं विस्मदिग्वर्तिमुखं स्वाचितदिव्याम्बरगन्धमा
त्माभरणयुधान्वितं ॥ ॥ अभिनवप्रसन्नकृतटीका-६

स्पष्टार्थे ॥

॥

॥

॥

परमार्थप्रकाशटीका-७

स्पष्टार्थे ॥

॥

॥

वनमाली टीका-८

दिव्यानिमात्म्यानि पुष्पमयानि रत्नमयानि च तथा दिव्यान्ते वराणि वस्त्रा

श्री
गी टी

णिचधियेतेयेनतदिव्यमात्मावरधरेदिव्यगंधोस्येतिदिव्यगंधसुद
उपलेपनेयस्यतत सर्वाश्चर्यमयमनेकादुतप्रचुरदेवेद्योतनात्मके
अनेतेदेशकालाद्यपरिच्छिन्नेविद्यतः सर्वतोमुखानियस्मिन् तत
तदप्यदर्शयामासेतिपूर्वेणसंबंधः ददर्शयथाहागेवा ॥

ऊसमेवैजयन्तीटिका ५

किंचदिव्यमात्मावरधरमितिदिव्यात्मसुज्वलनूतनादिमात्मानिवै
जयन्त्यादीन्स्वराणिश्रुतपीतरक्तनीलवर्णकानिचयवतीतितथा
ततदिव्यःकालाद्यमयाभावरहितस्तत्कलसरनरादिमनोहरोगंधो
यस्यतादृशमनुलेपनेयस्यततसर्वोच्चमदचेदनकुंकुमादिपंकयस्यततथास
र्वाश्चर्यमयमनेकादुतप्रचुरदेवेद्योतनात्मकेअनेतेदेशकालादिपु
रिच्छिन्नशून्येविद्यतोमुखेविद्यतस्तत्सर्वतोमुखानियस्मिन्तत्रथा तदप्य
दर्शयामासेतिसंबंधःपाषाणददर्शयथाहागेवापूर्वसोकेअनेकव
क्रनयनमित्यपललितानोसर्वेषांश्रोत्रादीद्वियाणोसंख्यापरिच्छेद
शून्येदर्शितेअत्रतमुखमित्यपललितानोसर्वेद्वियाणोसर्वेद्वियाण्य
ग्रहणसामर्थ्येदर्शितमतोवक्रमुखयोरुच्चारणेनपुनरुक्तिदोषगो
थावकाशइतिभावः ॥

मधुसूदनी टीका १०

दिव्यानिमात्मानिपुष्पमयानिरत्नमयानिचतथादिव्यान्स्वराणिव
स्वराणिचधियेतेयेनतदिव्यमात्मावरधरेदिव्यगंधोस्येतिदिव्यगंधसु
दनुलेपनेयस्यततसर्वाश्चर्यमयमनेकादुतवन्दनकरूप्यादिद्वयप्र
चुरे देवेद्योतनात्मकेमनेतमपरिच्छिन्नेविद्यतः सर्वतोमुखानियस्मि
न् तदप्यदर्शयामासे तिपूर्वेणसंबंधः अनेनोददर्शितिश्रथाहागेवा ॥

सदानंदी टीका ११

धियेतेयेनदिव्यानिमात्मानिवसनानितत दिव्यगंधोस्यतेनानुले
पनेयस्यततथा अनेकाश्चर्यप्रचुरमनेतेद्योतनात्मके तदप्यमणीर
च्छिन्नेसर्वतोमुखसंयुते २ दर्शयामासपाषाणेतनेनान्वयइत्यते ॥

नीलकंठी टीका १२

विद्यतोमुखमिति सूचीकृतस्य एकत्वेनपृथक्केनवद्वयाविद्यतोमुख

मिमस्यायेपरामर्शः अनंतं सर्वतः परिच्छेदरहितं ११

आनंदीटीका स्पष्टार्थम् ॥

रामकंडीटीका

१५ गताथमेतं श्लोकत्रयं कित्वेकमेवैश्वरं भगवत्संबन्धिविशुद्धसंवि-
मात्रेपरमार्थतोयद्रूपं तदेव सकलजीवलोकविविक्ताकृतिभेदेन
तन्मायाशक्तौवावभासते ततोविश्वमेव भगवद्रूपमित्येतावन्मा-
त्रतात्पर्याणि रूपविशेषाण्यवगंतव्यानि येन रूपसामानाधिकर-
ण्येनानंतं विप्रवतोऽसत्त्वं देवमिति ग्रंथः संवधमेति ~~आनंदीटीका~~
~~आनंदीटीका~~ ॥ ॥

लासिकीटीका

किंच दिव्यानिमाल्यान्मखराणि च धारयतीति दिव्यगंधोद्यमतादृगतु-
लेपनेयस्य तत् सर्वाश्चर्यमयं मनेकाश्चर्यप्रभुरं देवोत्तनात्मक-
मनंतमपरिच्छिन्नविश्वतः सर्वतपवसत्त्वं जगत्शक्तिर्यस्य तत् दर्शया-
मांसेति पूर्वणान्वयः ~~आनंदीटीका~~ ॥

पंचोलीटीका

दिव्यानिमाल्यानि पुष्पाणि अमखराणि वस्त्राणि च विभूर्तीति दिव्य-
मालाश्चर्यरस्तं दिव्यगंधाः अनुलेपनानि च यस्य तं दिव्यगंधानु-
लेपनं सर्वैराश्चर्यकारिभिः वस्तुभिः वद्भूतं सर्वाश्चर्यमयं देवं
अनंतं देशतः कालतो वस्तुतश्च अतो यस्य नेत्यनंतस्तमनंतं वि-
श्वतोऽसत्त्वं सर्वतोऽसत्त्वं सर्वदृष्टारं ॥

रामवीरसमिद्धोधिनी

स्पष्टार्थः ॥

मधुभाष्य

सर्वाश्चर्यमयं सर्वाश्चर्यात्मकं सदस्यप्रदोऽनंतवाची तदपि

संस्कृत-विभाग

भाषा अनुवाद
और दिव्य माला कहे पुष्प और दिव्य अम्बर कहे वस्त्र तथा दिव्य
गन्ध लेपन हैं जिस रूपमें और नाना आसर्ग्य युक्त तथा अनन्त
अपरिच्छिन्न और सर्वत्र हैं सब जिस में सौरूप देखाया ११

दोहा
दिव्यमाला अम्बरयुगे दिव्यगन्धप्रतिसेव सभ अचर्य मय अनं
तहि सर्वत्र सुख देव ११

ਸਤਨਾਮੁ ਨਾਮੁ

੬
ਤਸੀ ਸਤਨਾਮੁ ਨਾਮੁ ਤੇਰੇ ਸਤਨਾਮੁ ਤਸੀ ਤੇਰੇ ਸਤਨਾਮੁ ਤਸੀ ਤੇਰੇ
ਸਤਨਾਮੁ ਨਾਮੁ ਤੇਰੇ ਸਤਨਾਮੁ ਨਾਮੁ ਤੇਰੇ ਸਤਨਾਮੁ ਨਾਮੁ ਤੇਰੇ ਸਤਨਾਮੁ
ਨਾਮੁ ਤੇਰੇ ਸਤਨਾਮੁ ਨਾਮੁ ਤੇਰੇ ਸਤਨਾਮੁ ਨਾਮੁ ਤੇਰੇ ਸਤਨਾਮੁ ਨਾਮੁ

ਅੰਤ

ਸਤਨਾਮੁ ਨਾਮੁ ਤੇਰੇ ਸਤਨਾਮੁ ਨਾਮੁ ਤੇਰੇ ਸਤਨਾਮੁ ਨਾਮੁ ਤੇਰੇ
ਸਤਨਾਮੁ ਨਾਮੁ ਤੇਰੇ ਸਤਨਾਮੁ ਨਾਮੁ ਤੇਰੇ ਸਤਨਾਮੁ ਨਾਮੁ ਤੇਰੇ

दिविसूर्यसहस्रस्य भवेद्युगपडस्थिता य
दिभाः सदृशी सा स्याद्वासस्तस्य महात्मनः
१२

शाङ्ख्यभाष्ये १

या पुनर्भगवतो विस्वरूपस्य भास्यस्याप्युच्यते दिवीति दिव्य
नरिते तृतीयस्य वा दिवि सूर्याणां सहस्रं सूर्यसहस्रं तस्य
युगपडस्थितस्य युगपडस्थिता भाः सा यदि सदृशी स्यात् तस्य
महात्मनो विस्वरूपस्य भासो यदि वा स्यात् ततोपि विस्वरूपमेव
भाः अतिरिच्यत इत्यभिप्रायः १२

आनन्दगिरिकृतटीका-२

ननु प्रकृतस्य भगवतोरूपस्य दीप्तिरस्ति न वा नवेत काष्ठा
दिसाम्यं यद्यस्ति कीदृशी सत्याशङ्क्याह या पुनरिति सा यदि
स्यात्तद्भासः सदृशी सेति योजना असम्भावितभ्युपगमाधाय
दिशब्दः स्याच्छब्दो निश्चयार्थः सा कथं सदृशी सम्भवति न तत्र
वत्येवेति विवक्षितार्थं यदि वेति १२

स्वामिकृतटीकाटी-३

विषयदीप्ते निरूपमतमाह दिवीति दिविश्रुत्वा शेषसूर्यसहस्रस्य
युगपडस्थितस्य यदि युगपडस्थिता भाप्रभा भवेत् तर्हि सा तदा महा
त्मनो विस्वरूपस्य भासः प्रभायाः कथं वित्तदृशी स्यात् नान्यथाप्यमासी
त्यर्थः तथा भूते रूपे दर्शयामासेति पूर्वैरौवाच्यः १२

पेशाचभाष्यटीका-४

स्पष्टार्थ १२

रामानुजभाष्यटीका-५

स्पष्टार्थे १२

तामेव देवशब्दनिर्दिष्टं ध्यातव्यं ततो विनिर्दिष्टं दिवीति ने जसोपसिमितं तस्य दर्शनाद्यमिदं मह्यं तेजस्वसं
अभिनवगुप्तकृतटीका-६

स्पष्टार्थ १२

परमार्थप्रपाटीटीका-७

अथैवैश्वरूपतेजसो दृष्टाता भावे दर्शयति दिवीति ॥
तस्य महात्मनो विस्वरूपस्य भासो दीप्तेः सदृशी समाना भादीनि सूर्ये वस्यात् तर्हि कथं यदि दि
वा काशे सूर्यसहस्रस्य युगपदेकवारं उदयः स्यात् इत्युक्तोपमालेकारः १२ ॥

श्री
नीदी.
५

वनमाली टीका ६

देवमित्युक्तं विहणोति दिव्यं तरिते सूर्याणामसहस्रापरिमितसूर्यसमूहस्य
युगपदुत्थिताभाः यदि भवेत् तदा सातस्य महात्मनो वि
सृष्टपद्मभासो दीप्तेः सदृशी तस्या यदि स्याद्यदि वा न स्यात् ततोऽपि नूने वि
सृष्टपद्मभासतिरिच्येत इत्यहं ममे अस्यात्पमानास्तेवमर्थः १२

रुसमवेजयनी टीका ५

देवमित्युक्तं तस्य दीप्तेनैरूपस्यैव दन्विवरणमाह दिवीति दिवि चाकोशे
सूर्यसहस्रस्य युगपत्प्रकृताहोदितागणितप्रचारांश्च हृदस्य युगपदु
त्थिताभाप्रभायदि भवेत् तदा सातस्य महात्मनो विस्वरूपस्य भू
गवतो भासो दीप्तेः सदृशी तस्या स्यान्न वेति सम्भावनाया लिङ् अभूतो
पमेयमतिशयोक्तिरुक्ते तावन्नयति सर्वेण निरूपमत्वमेव वयनक्ति
उभो यदि यो मिष्टश्च कप्रवाहावितादिवत्तादयूप दर्शयामासेति पूर्व
णात्वयः १३

मधुसूदनी टीका १

देवमित्युक्तं विहणोति दिव्यं तरिते सूर्याणामसहस्रापरिमितसूर्यसमूहस्य युगपदुत्थितस्य
युगपदुत्थिताभाः प्रभायदि भवेत् तदा सातस्य महात्मनो विस्वरूपस्य
भासो दीप्तेः सदृशी तस्या यदि स्याद्यदि वा न स्यात् ततोऽपि नूने विस्वरूपस्यै
व भासतिरिच्येत इत्यहं ममे अस्यात्पमानास्तेवमर्थः अत्राविशमाना
भवसायात्तदभावेनोपमाभावपरादभूतोपद्रूपेयमतिशयोक्तिरु
क्ते तावन्नयति सर्वेण निरूपमत्वमेव वयनक्ति उभो यदि यो मिष्टश्च
कप्रवाहावाकाशगोपायसायतेतामिसादिवत् १४

सदानंदी टीका ११

अंतरिते सहस्रस्य समूहस्य विवसतो युगपदुत्थितस्य स्यात्प्रभायुग
पदुत्थिता १ तदा साविस्वरूपस्य दीप्तेन स्यात्तद्भावेन वा ततोऽपि विस्
रूपस्य प्रभासैवतिरिच्येत इत्यहं स्वधियामन्येनामालीहोपमेव हि
१२

नीलकंठी टीका १३

दिवि अंतरिते भाः दीप्तेः भासः दीप्तेः अभूतोपमेयं निरूपमत्वमेव
तस्य दीप्ते दर्शयति उभो यदि यो मिष्टश्च कप्रवाहावितादिवत् १३

ग्रान्तेरीटीका स्वार्थम् १२

अतपेवेकस्य परमार्थो द्वैतवित्प्रकाशात्मनो वे रामकंदीटीका स्वरूपेणावभासमानस्वरूपं प्रतिपादयितु
माह यद्यतरिक्तसमुदितस्य भास्वरसहस्रस्य समकालमेव समुत्पिता
प्रसूताभादीतिः कदाविद्भवेत् सातसेकस्य परप्रकाशस्य भावस्य
महात्मनः पुरुषस्य सदृशी स्यात्तत्त्वाभवेदितिका काव्याख्ये ये
न सदृशी स्यादित्येवं पर्यवसेत् न त्वनस्य प्रकाशस्य सकलवस्तुप्र-
काशकनिरतिशयप्रकाशात्मनस्तस्य कोटिशोऽप्युदितानां प्रग-
दिनकराणां दीप्तिस्तत्प्रकाशम दृश्यलेशमप्यासादयितुमर्हति
एवमनुत्तरप्रकाशात्मनि १२

अथ नैश्वर्यरूपस्योपमानभावंद लासिकी चतुर्जतीटीका
श्रियति॥ दिवाकाशे समुदितस्य सूर्यसहस्रस्य समकालं प्रसूतादीतिः यदा
कदाविद्भवेत्सातस्य महात्मनो महान्वापका आत्मा यस्य विश्वरूपे
स्वरूपभासः प्रभायास्तत्त्वा स्यादस्तीति संभाव्यते तान्योपमास्तीत्य-
र्थः अथवा स्यादितिका काव्याख्ये न भवेदित्यर्थः विश्वात्मन उप-
माभावपराः भूतोपमारेपेयमतिशयोक्तिरुत्पेक्षा व्यंजयंती सर्व-
थानिरूपमतमेव मनक्ति १२

पंचोलीटीका

या पुनः भगवतो विश्वरूपस्य भासस्या उपमां ऊर्ध्वनूतस्यातिरूप-
त्वे निरतिशयत्वं चाह दिवीति दिव्यग्रंतरिक्तो युलो केवायुगपड-
स्थितस्य सूर्यसहस्रस्य युगपडस्थिता भाः कांतिस्तस्य महात्म-
नो विश्वरूपस्य भासः भासा कांत्यायदिसदृशी स्यात् भगवतो
भासस्ततोऽधिकारित्यर्थः १२

रामवीरसमिद्धोधिनी

भरानी नद्वयलक्षणं प्रतिपादयति दिवीति यदि प्राद्वेवकालवा-
चको यदि यस्मिन्कालांतरे सूर्यसहस्रस्य भास्युगपदेककालमुत्पि-
ता प्रसरंती भवति तदैव सा भासस्तत्तत्कृद्गम्यस्य महात्मनो ब्र-
ह्मणो भासः पूर्णप्रकाशस्य सदृशी समानस्यात्का कान स्यादिति
भावः १२

मधुभाष्य

पाकशसनविक्रमश्रुत्यादिवत्प्रत्यायनार्थमेव तथाह
 वेदाखिलेषु अनंतशक्तिः परमोनंतवीर्यः सौनंततेजाश्चत
 तेस्ततोपीति मदात्तायर्थाच्च प्राबुल्यम् नच परिमाराणां
 किं वित्तयोजने अनेकप्राज्ञाः नंतवाची अनंतवाद्भूमि
 तिचवक्ष्यति विषयतश्चरुतविषयतोमुखोविषयतोवा
 द्भूतविषयतस्यात् संवाद्भूयान्धमति संपतयेर्थावाभूमीर्ज
 नयदेवपकइति सृष्टे दे विषयतश्चरुतविषयतोमुखो
 विषयतोवाद्भूतविषयतस्यात् संवाद्भूयान्धमति संपतये
 र्थावापृथिवीर्जनयदेवपकयजुर्वदे विषयतश्चरुतविषयतो
 वाची सर्वसक्तविषयचरुततं पूर्णमेव चेत्यभिधानात्
 अनंतवाद्भूमनंततूपं पुरुवरुमेकमिति च बाधव्यप्रा
 खाया मदात्तायुक्तिस्तुतयत्नकत्वेनापि भवति अन्यथा
 नादिमत्पदं ब्रह्मेत्याद्युक्तं स्यात् एकत्वानंतान्यस्य रूपा
 णीत्यनंततूपः अन्यत्र परिमाराइति उक्तं सुभय
 मवि

भाषा अनुवाद
और उस रूप की निरूपण प्रभा प्रकाश करते हैं कि आकाश
में जो एक काल सदस सूर्य के उदय की प्रभा हो उसे तो कहा
चित उन महात्मा कान्ति के कोई अंश की उपमा होय तो होय न
ही तो उस रूप की उपमा नहीं है १२

दोहा
नभ सदस रवि उदित हि एक बार जो होय आभा समते हि रूप के
तेज बराबर सोय १२

一、凡在本行存款之存款人，其存款之利息，均按本行所定之利率计算。

1853

तत्रैकस्य जगत्कृत्स्नं प्रविभक्तमनेकधा
अपश्यदेवदेवस्य शरीरे पांडवस्तदा ॥

शाङ्करभाष्यटीका १

नर किञ्च तत्रैकस्यमिति तत्रस्मिन् विस्वरूपे एकस्मिन् स्थितमे
कस्य जगत् कृत्स्नं प्रविभक्तमनेकधा देवपितृमनुष्यादिभे
दैरपश्यत् दृष्टवान् देवदेवस्य हरेः शरीरे पाण्डवोर्जनस्तदा ॥

आनन्दगिरिकृतटीका २

न केवलं अक्तमेवार्जुनो दृष्टवान् किन्तु तत्रैव विस्वरूपे स
र्वे जगदेकस्मिन् अवस्थितमनुभूतवानित्याह किञ्चेति तदा वि
स्वरूपस्य भगवद्गुणस्य दर्शने दर्शयामीत्यर्थः ॥

स्वामिकृतटीका ३

ततः किं ह्येतन्मिषेतायामाहमे जयः तत्रेति अनेकधा प्रविभक्ते
नानाविभागो नावस्थितं जगत् देवदेवस्य शरीरे तदवयवत्वेनैक
त्रैव एव कष्टं गवस्थितं तदा पांडवोर्जनोपश्यत् ॥

पेशाचभाष्यटीका ४

सप्तम्यर्थे ॥

गमानुजभाष्यटीका ५

तत्रेति तज्ज्ञानेतापरमितविसृजे अनेतवाहूदरवक्रनेत्रे अपरिमित
दिवायुयोयेते सोचितापरिमितदिवाभूषणभूषिते दिवा मालाव
रधरे दिवा गंधानुलेपने अनेताश्चर्यमये देवदेवस्य दिव्यशरीरे अ
नेकधा प्रविभक्ते ब्रह्मादिविविधविविधदेवतियेकमनुष्मस्याव
रादिभोक्तृवर्गेष्वपि व्यातरितस्वर्गपातालवितलसुतलादिभोगस्था
नभोगोपकरणभेदभिन्ने प्रकृतिपुरुषात्मके कृत्स्नं जगत् अहं सर्वं
स्य प्रभवो मत्तः सर्वं प्रवर्तते इहं तत्रैकशयिष्णामि दिवा एतात्मविभू
तेयः अहमात्मा गुणकेश सर्वभूताशयास्थितः आदिता नामहं वि
सृजिष्यामि तदस्ति विनायकस्यात्मया भूते चराचरे विष्टभ्याहमिदं
कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगदिदं तेनोदितं एकस्य मेकदेशस्यो
उवाभगवत्प्रसादलब्धतदंशनाशुगुणादिद्यवत्तरपश्यत् ॥

तृणानैः अगणितानेतनगनदीसिंधुधनदाग्निनीभिः असेख्येया
 तलवितलविस्तृतसतलमहातलरसातलतलातलापाताल
 भूर्भुवस्वर्महर्जनतपःसत्तात्मकचतुर्दशलोकगर्भकपेचभूता
 हंकारमहत्प्रकृतिकालाद्यात्मकचेतनाचेतनरूपानेतापरिमिता
 सेख्येयवर्णोणेश्वप्रविभक्तं पृथक् पृथक् स्थितम् कृत्स्नं सर्वजग
 त् नदायदादिद्यदृष्टं लब्धस्मिन्नेवकाले पांडवो गोविंद उ
 ग्रहलब्धदिद्यदृष्टिः पार्थोपपन्न ददर्श १३

इहैकस्थं जगत्कृत्स्नं पश्याम्यस्य मधुसूदनी टीका १० राचरमिति भगवदाज्ञातमप्यनुभूतवानर्जन इत्याह ॥
 एकस्थमेकत्रस्थिते जगत्कृत्स्नं प्रविभक्तमनेकधा देवपितृम
 नुष्यादिना नामकारैः अपृथक् देवदेवस्य भगवतो विष्वक्पश्यत
 उशरीरे पांडवोर्जनः तदेव विष्वक्पश्यत्यर्धदृष्टं न दृष्टायो

[Faded text block, likely bleed-through from the reverse side of the page.]

सदानंदी टीका ११
 तत्रैकत्रस्थिते सर्वे प्रविभक्तं जगत्पृथक् देवपितृमनुष्यादिप्र
 कारैर्भिन्नमद्भुते १ दृष्टवानर्जो देदे देवदेवस्य शास्त्रिणः तदा
 अर्धमयानेकदर्शनावसरे किल १३
 नीलकंठी काटी १२

इहैकस्थं जगत्कृत्स्नं पश्येति यत्वा कुभगवता उक्तं तदप्यपृथक्
 दित्याह तत्रैति अनेकधा प्रविभक्तमित्येतत्तवर्षासूचितं ति
 तिणीवीजे सूक्ष्मरूपेण तदुद्दिश्यते तद्वत्मा भूदिति दर्शयितुं साव
 कांशं अनेकधा विभागयुक्तं विविक्तं अपृथक् एकस्थं एकावय
 वस्थं अयमर्थः यदा भगवत्पश्यत भुंजे रूपं चिंतयते तत्र चचेतसि
 लब्धपदे सति क्रमशः दीयावयवो रूपत्वा सुविस्मिते वापदन
 विवाचिते धियते तत्रापि लब्धपदे तस्मिन् सदपि तत्का विष्वक्पश्य
 मा रोहति दिद्यं च तत्रापि वै सूक्ष्मता माणादिते मन एव मनोस्य
 देवे च तः सपतेन देवेन च तस्मात्तान् कामान् पश्यन् रम
 त इति श्रुतेः कामान् विषयान् पतान् हार्दीकाणां च सपुण्यत्र

श्री.
गी टी.

लगतानिति श्रुतिपदयोरर्थः यद्योक्तं श्रीभागवते तत्र लब्धपदे
चित्तमाकृष्यैकत्रधारयेत् नास्मानि चित्तये इयः सस्मितभावये-
सुखे तत्र लब्धपदे चित्तमाकृष्यो मित्रधारयेत् तच्च यत्कामदा
रोहो न किंचिदपि चित्तयेदिति तत्र सूक्तो एकत्र श्रेयो यो मित्रिका
रणो मशरोहो निर्विकल्पो ब्रह्माण्डरूपः तदिदमुक्तं देवदेवस्य
शरीरे कृत्स्नजगदेकस्थो ऽवोपपद्यते १३

आनंदी टीका

अनेकधा चराचरादि चतुर्दशभूतसर्गाणां नाना प्रकारैः प्रविभक्तैः
विभागप्रकर्षेण युक्तं न तस्य कीर्णमित्यर्थः १३ ॥

१३

रामकंठी टीका

तदा तादृगात्पुनर्भगवद्रूपवैश्वरूपदर्शनेन कारणभूतदिव्यज्ञा-
नात्मकवत्तदी नलक्षणाय रात्ररूपकालेन तत्र तादृशियस्य
काणात्मनि देवदेवस्य सर्वेश्वरस्य शरीररूपे एकस्य मेकत्रैवाश्रये
स्थितमयं च नैकधा प्रविभक्तं विश्वभाव रूपैर्भेदैर्विप्रकीर्णं कृतं
स्वमविलेजगदर्जनोपपत्त्या तात्कालतया निति संजयोदियेन च त-
साधारमेश्वरमनुग्रहमर्जनस्य दृष्टं तदुक्तवान्

१३

अथार्जनस्येश्वररूपसाक्षात् लासिकी दत्तशुक्ली टीका

कारमाह ॥— देवदेवस्य विश्वरूपेश्वरस्य शरीरे सत्त्वेनेकधा प्रविभक्तं नाना विभा-
गेन स्थितं कृत्स्नमविलेजगदेकस्थं मेवो नाभेदेन स्थितं सौर्जनस्त-
दैश्वररूपसमाधानकाले पश्यत्सत्त्वेन साक्षात्कृतवान् प्रविभक्तपदेन
श्वररूपं सदा शिवतत्वाद्यावर्तितम् एकपदेन शुद्धविद्यातत्वाच्च पवम-
र्जनस्य तत्कालगोचरे विश्वरूपेश्वरसाक्षात्कारमभिधाय अथुना च्युत्ति-
तस्य दृष्टमाह ॥ १३ ॥

पंचोली टीका

ततः किं वृत्तमित्यपेक्षायामाह संजय उवाच तत्रेति पांडवः तदा त-
स्मिन् देवदेवस्य शरीरे विश्वरूपे एकस्य एकत्र स्थितं अनेकधा देव-
पितृमनुष्यादिभेदैः प्रविभक्तं भिन्नं कृत्स्नजगत् अपश्यत् ॥ १३

रागवीरसमिद्धेयिनी

प्रथार्जुनोभगवद्दयमयप्रदित्याह तत्रैकस्यमिति तदा तस्मिन्
गवदनुग्रहावसरे कृत्स्नं जगत्स्यावर्जं गमात्मकं विषमनेकथाने
काश्रयादिभेदैः स्वभावादेव प्रविभक्तं विभिन्नावभासमानमपि
तत्सर्वं देवदेवस्य शरीरे भौतिके रूपावतारे तत्रैकस्य युगपदेक
स्मिन्नेवावकाशे स्थितमप्यप्रयत्नाद्वा दृष्टवान्मांडव इत्यर्थः १३॥

मधुभाष्य

भाषा अनुवाद

तिस के वारि का भया सो कहते हैं कि उस समय अज्ञान को
नाना प्रकार शरीर के अनेक भागों में स्थित समस्त जगत श्री
कृष्ण एक अपनी शरीर में एक बारगी देखाया ॥

दोहा

तस्यै एकदा जगतसमं भिन्न अनेक प्रकार देवदेवकी देहमहिं
लघ्ये पांउवते दिवार ॥

ਸਤਨਾਮੁ ਨਾਮੁ

ਕਿ ਮਨੁ ਮਨੁ ਮਨੁ ਨਾਮੁ ਨਾਮੁ ਨਾਮੁ ਨਾਮੁ ਨਾਮੁ ਨਾਮੁ
ਨਾਮੁ ਨਾਮੁ ਨਾਮੁ ਨਾਮੁ ਨਾਮੁ ਨਾਮੁ ਨਾਮੁ ਨਾਮੁ
ਨਾਮੁ ਨਾਮੁ ਨਾਮੁ ਨਾਮੁ ਨਾਮੁ ਨਾਮੁ ਨਾਮੁ ਨਾਮੁ

ਨਾਮੁ

ਸਤਨਾਮੁ ਨਾਮੁ ਨਾਮੁ ਨਾਮੁ ਨਾਮੁ ਨਾਮੁ ਨਾਮੁ ਨਾਮੁ
ਨਾਮੁ ਨਾਮੁ ਨਾਮੁ ਨਾਮੁ ਨਾਮੁ ਨਾਮੁ ਨਾਮੁ ਨਾਮੁ

ततःसविस्मयाविष्टोदृष्टरोमायनञ्जयः
प्रणम्यशिरसादेवंकृतान्नलिरभाषत ॥५॥

शाङ्करभाष्यटीका १

तत इति ततस्ते दृष्ट्वा सविस्मयेनाविष्टोविस्मयाविष्टोदृष्टा
नि रोमाणस्य सोये दृष्ट्वा रोमा चाभवद्वनञ्जयः प्रणम्य प्रक
र्षेण नमने कृत्वा प्रहृष्टभूतः सन् शिरसा देवे विस्वरूपयरे
कृतान्नलिर्नमस्कारार्थं संप्रदीकृतदस्तः सन्नभाषतोक्तवान्
॥५॥

आनन्दगिरिकृतटीका २

विस्वरूपयरस्य भगवतस्तस्मिन्नेकीभूतजगतश्चोक्तविशेषण
स्य दर्शनानन्तरं किमकरोदित्येतायामाह तत इति आश्चर्यं
बुद्धिर्विस्मयः रोमो दृष्टत्वे पुलकितत्वं प्रकर्षोभक्तिप्रयुक्तो
तिशयः ॥५॥

स्वामिकृतटीका ३

एवंदृष्ट्वा किंकृतवानित्यत आह तत इति ततो दर्शनानन्तरं वि
स्मयेनाविष्टो व्यासः सन् दृष्ट्वा सुसुलकितो विरोमानियससथ
नेनयोदेवंतमेव शिरसा प्रणम्य कृतान्नलिः संप्रदीकृतदस्तो भू
त्वा अभाषत उक्तवान् ॥५॥

पेशाचभाष्यटीका ४

स्पष्टार्थे ॥५॥

॥

रामानुजभाष्यटीका ५

तत इति ततोथ नेनयो महाश्रुत्यस्य कृत्स्नस्य जगतस्तस्य देदेक
देशे दर्शनात् विस्मयाविष्टः कृत्स्नजगदाश्रयभूतकृत्स्नस्य प्रव
र्तयितारमाश्रयिनेतज्ञानादिकल्याणगुणे देवं दृष्ट्वा दृष्ट्वा रोमा शिर
सादे उवत् प्रणम्य कृतान्नलिरभाषत ॥५॥

अभिनवगुप्तकृतटीका ६

स्पष्टार्थे ॥५॥

॥

श्री
गी टी.
५

परमार्थप्रण टीका ७

ततोदर्शनानंतरं यनेन योजनः श्रुतदर्शनोत्पन्नेन विस्मयेन प्रा
विष्टो व्यासः एवमद्भुतरसम्या विभवेन दृष्टो मः रामा चितः सत् ।
देवं कृष्णशिरसा प्रणम्य कृतोजलिः सन्नभाषत ॥ १४ ॥

वनमाली टीका ८

एवमद्भुतदर्शनेन यज्ञो न विभयो चकार नापि नेत्रे संववारनापि
संभ्रमा कर्तव्ये विस्मयारनापि तस्माद्देशाद् प्रससार किं न तिथीरा
त्वात् कालोचितमेव यज्ञहारमहति विव्रलोभे पीम्यादतत इति त
तस्तदर्शनानंतरं विस्मयेनाद्भुतदर्शनप्रभवेनालौकिक चित्तचम
त्कारविशेषेणाविष्टो व्यासः अतएव दृष्टो रामा पुलकितः सत् स
प्रख्यातमहादेवसंग्रामादिप्रभावो यनेन यो देवतमेवाद्भुताने
नैसर्ग्यविशिष्टं नारायणेशिरसाभूतमेन प्रणम्य भक्तिप्रवृत्ति
शयेन नत्वा कृतोजलिरभाषत ॥ १५ ॥

रुसमवेन यली टीका ९

एवं अहं सर्वस्य प्रभवो मत्तः सर्वं प्रवर्तते इति ते कथयिष्यामि दि
व्यात्मात्मविभूतयः अहं मात्मा गुणकेश सर्वभूताशयस्थितः
आदिपानामहं विस्मरित्यादिना तदस्ति विना यत्स्यात्स याभूतं
चराचरं विष्टभ्याहं मिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगदिदं सत्कमिरा
ते विष्ठाकारकं भगवद् रूपं कृत्स्नतत्त्वाः जेनोऽप्यपि दिसु कमिरा
नीतदृष्टार्जनः किं कृतवानि तपे लाया तद्दीत्याद्भुतं रसमन्तुभू
दित्याह तत इति ॥ ततो विस्वरूपदर्शनेन तरेयं जितं तद्दृष्टं कृतं भ
गवंते विलोक्य सः यो विस्मापितः सत्कतेनो अयि यनेन यः अथिरान
सूये गंधर्व निवात कवचादिपुद्गे चोत्तरगो गदेवाः राति शिरोभूषणा
दिरुपे यनेन यतीति तथा सः तादृशा वीरशिरोमणि रतिथीरोपि वि
स्मया विष्टः विस्मयेनालौकिकाद्भुतदर्शनजस्येनालौकिक चित्तच
मत्कारविशेषेणाविष्टो व्यास सन्न अतएव दृष्टो रामा दृष्टानि उल्ल
किता निरोमापि यस्स सतथा तादृशः सन्न प्रथमं देवं असृज्य तने
जः पुंजज्ञान्यमान ज्वलनोपमदीप्तिमेतं सर्वकारणं सर्वनियं
तारं सर्वपितरं सर्वगुप्तं तमेव विस्वरूपधरं श्रीकृष्णेशिरसे लुपति
तेन दंडवत्साष्टांगप्रतिपातेन प्रणम्य प्रकर्षेण कायवाह्यं नो हतीना

मेकभावेन नमनेकतापश्चात्कृतो जतिः समुदीकृतकरयुग
 सनश्चभाषतोक्तवान् अत्राज्ञेनसमयेनेत्रसम्बरणादिकेनाभू
 किं तदुत्तरसोऽभ्युदेदितिव्यज्यते तथाहि इदतादृशोदरिरात्म
 नः मुहुर्मुहुस्लक्ष्मीतरासुदीपनम् प्रणतिपाणियोगोरोमाचा
 सुनुमावः सातिकः तैरातिप्रामतिभूतिदृष्टादयः संचारिणः पते
 रालेवनायेः पुष्टो विस्मयस्यापिभावोदुत्तरसहतिभावः तथा
 दिवशलोके आलेवनादीपनात्मविभावः कारणं द्विधाकार्योऽ
 भावोभावस्तस्यसहायोऽयमिवाप्यपिअदुतो विस्मयस्यापीमाया
 दिकविभावभूः रोमासायनुभावोयस्यस्मादिव्यभिवारिकइति १५

+ एवमदुतदर्शनेष्वर्जनेनविभक्ता मधुसूदनीदीका १५ चकारनापिनेत्रेसंबवारनापिसप्रमातकर्तव्येविसस्या
 + ततस्तदर्शनानेतरविस्मयेनादुत दर्शनप्रभवेनालौकिकचित् रनापितस्मादेशादपससार
 चमत्कारविशेषेणव्याप्तः अतएवहृष्टरोमापुलकितः स किंत्वितिथीरत्नातत्कालावित
 नसप्रत्यातमहादेवसंग्रामादिप्रभावः धनेजयः युधिष्ठिरा भवव्यवजहारमहतिचित्तो
 जस्येउत्तरगोपदेसर्वाङ्गीरान्जिताथनमास्तवाभितिप्रशि
 तमहायशक्रमोतिवीरः सात्तादगिरिवमहातेजस्वितात् देवते
 मेवविस्मरूपधरेनारायण शिरसाभूमितयेनप्रणम्यप्रकर्षेण
 भक्तिश्चक्षुतिशयेननतानमस्कृत्यकृतो जतिः संपुदीकृतहस्त
 युगः सन्नभाषतोक्तवान् अत्रविस्मयाद्यस्य विभावस्याज्ञेनग
 तस्यालंभनविभावेनभगवताविस्मरूपेणउदीपनविभावेनास
 कृतदर्शनेनानुभावेनसातिकरोमरर्षेणनमस्कारेणाजलिक
 रणेनचयमिचारिणाचानुभावात्तिमेनभूतिम इति दृष्टवितर्का
 दिनापरिपोषात्सवासनानांश्रीशृङ्गातादृशः चित्तवमत्कारोपि
 तद्देवानांयवसायात्परिपोषेगतः परमानेदास्वादरूपेणादुत
 रसोभवतीतिस्त्विति

स्या

सदानेदी दीका १५

श्री.
गी टी.
प

एवेदियादुतेरूपेष्टुभगवतोर्जनः नविभियोचकारासौसेव
चारनचत्तषी १ विसस्मारनकर्तव्येस्थानात्रापससारह किं
तथीरतयाचक्रेयवहारेयथोचितं चित्ततोभेपिमदतिपादेमे
वंससंजयः तद्वपदर्शनाज्ञातविस्मयेनाहृतस्ततः १ हृष्टरो
मोचनोभूताविष्टरूपधरंहरिं भूमिलयेनशिरसाभक्तिप्रह्ला
समन्वितः ४ प्रकर्षेणानमस्कृत्यस्वाभिमानेविहायच संप्रदी
कृतदस्तःसज्जवाचानतकंथरः ४ १५

नीलकंठी टीका १२

हृष्टरोमोरोमोचितगात्रः १५

अथचभगवतोवैश्वरूपेष्टुभगवतोर्जनः॥ आनेदीटीका
ततोविश्वरूपदर्शनांतरंविस्मयेनालौकिकेनचित्तवमत्कारेणा
विष्टोतपवहृष्टरोमोर्जनोरेवेपरस्थितंश्रीकृष्णंवेष्टुष्टदर्शनाथं
ज्ञातभक्तप्रतिशयः मूर्ध्निप्रणाम्यकृतोजलिरिदेवदामागामाह १५

रामकंठीटीका

अथहृष्टपरमेश्वरवैश्वरूपोर्जनःकिंचकारे
त्याह॥ ततस्तादृगत्यदुतभगवदृष्टसाक्षात्करणादनंतरं११नर्मानुषभा
वाविर्भावेऽनुभूतपरतत्त्वस्मरणजनितेनविस्मयेनाविष्टया
क्रांतचित्तवृत्तिरतपवहृष्टरोमासंज्ञातपुलकोधनंजयोदेवकी
पुत्रं११रोवर्तिनेसाक्षात्कृतनिरतिशयप्रभावतात्संज्ञाततविष
यवद्भमानातिशयोक्तमूर्ध्निप्रणामेकृतोजलिसुविदेवदामागामा
मभाषतोवाच

लासिकी चरुजतीटीका १५

ततोविश्वरूपेष्टुष्टदर्शनातनतरंसईष्टुष्टानुग्रहादीभूतोर्जनोवि
स्मयेनयोगभूमिकालक्षणीभूतेनच्युत्यानेपिपरतत्त्वमत्कारेणा
विष्टयाचित्रचित्तवृत्तितयाव्याप्त्यात्मसात्कृतः हृष्टरोमापरमाने

दानुभवेनोत्पलकितरोमाकृतोजलिः संप्रदीकृतहस्तः देवंपरोवर्तितंदेव
कीपुत्रं श्रीकृष्णसाक्षात्कृतप्रभावतात्तेजाततद्विषयवद्गमानोन्मूर्ध्नि प्र
णाम्यभाषतोवाच १४

पंचोलीटीका

एवं दृष्ट्वा र्जुनः किंकृतवानित्याह ततश्चित्सयने जयोऽर्जुनः ततः
स्मदृशानानंतरं विस्मयाविष्टः उत्पन्नविस्मयः दृष्टरोमाकृतोजलिः
सन्देवं शिरसा प्रणाम्य भाषत वक्ष्यमाणमब्रवीत् १५

रागवीरसमिद्धोधिनी

अथ साक्षाद् दृष्ट्वा द्रुतपारमेष्ठिरूपो र्जुनः किंकृतवानिति तदाह
ततश्चित्सयने जयोऽर्जुनः ततो भगवद्रूपस्य साक्षात्करणानंतरं धनं जयश्च धनं
जयो र्जुनः स विस्मयाविष्टो दृष्ट्वा द्रुतो तपवानंदं स्पर्शत्वा दृष्ट्वा
रोमापुनर्काकित तत्र देवं भूतः ततः किंकृतवानित्याह प्रणाम्ये
ति देवं भगवंतं सर्वं प्रणाम्य तदनुकृतोजलिः सन्नुत्तरं वाक्यमभा
षतेति १४॥

मधुभाष

भाषा अनुवाद

तबतो अर्जुनवर आश्चर्य रूप भगवान का रूप देखि अतिशय
कौतुकयुक्त होय आनन्द से पुलकित भये और मल्लक भुंका
य प्रणाम करि हाथ जोड़ि यह वचन बोलते भये ॥

दोहा

तातो विस्मययुक्त सो अर्जुन पुलकित देख अंजलिजोड निवा
य शिर कलदि भाषत यह १४

10

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
सर्वभूतहितं कुरु सर्वभूतहितं कुरु
सर्वभूतहितं कुरु सर्वभूतहितं कुरु
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ

सर्वभूतहितं कुरु सर्वभूतहितं कुरु
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

अर्जुन उवाच पश्यामि देवांस्तव देव देहे स
वोस्तथा भूतविशेषसंचान् ब्रह्माणामी
शंकमलासनस्थमृषींश्च सर्वांश्चरणांश्च दि
व्यान् १५

शाङ्ख्यभाष्यटीका १

कथं यत्तया दर्शितं विश्वरूपं तदहं पश्यामीति स्वानुभवमा
विष्णुर्वन् अर्जुन उवाच पश्यामीति पश्याम्युपलभे हे देवः दे तव
हे देवान् सर्वोस्तथा भूतविशेषसंचान् भूतविशेषाणां स्याव
रजङ्गमानां नानासंस्थानविशेषाणां संचाः भूतविशेषसंचास्ता
न् किञ्च ब्रह्माणो चतुर्मुखमीशितारे प्रजानां कमलासनस्थ
पृथिवीपद्ममध्ये मेरुकर्णिकासनस्थमित्यर्थः ऋषींश्च वशिष्ठा
दीन् सर्वांश्चरणांश्च वासकिप्रभृतीन् दिव्यान् दिवि भवान् १५

आनन्दगिरिकृतटीका २

कथं भगवन्ने प्रमर्ज्योभाषितवानिति पृच्छति कथमिति त
त् प्रश्नमप्येति ते पुरयन्तवतारयति यत्तयेति भूतविशेषसं
ज्ञातेषु देवतानामन्तर्भावेऽपि पृथक् करणसुतकृष्णब्रह्माणः
सर्वदेवतात्मतेऽपि तेभ्योभेदकथनं तदुत्पादकत्वादिति मतार
किञ्चेति ऋषीणामुत्तराणाञ्च किञ्चिद्वैषम्यात् पृथक्त्वं दि
व्यानीत्युभयेषां विशेषणं १५

स्वामिकृतटीका ३

भाषणमेवाह पश्यामीतिसप्तदशभिः अर्जुन उवाच हे देव तव दे
हे देवानादित्यादीन् पश्यामि तथा सर्वांश्च भूतविशेषाणां जराश्रुजां
उजादीनां संचांश्च तथा दिव्यान् ऋषीन् वशिष्ठादीन् उरगांश्च तत्त
कादीन् तथा तेषां देवादीनामीषां स्वामिने ब्रह्माणो च कथं भूतं क
मलासनस्थं पृथ्वीकर्णिकायोर्महोत्थितं यदा तत्राभिपश्याम
स्यम् १५

श्री.
लीटी.
५

उवाच ॥ पेशाचभाष्यटीका ५
स्यष्टार्थे अर्जन १५

रामानुजभाष्यम् ५

अर्जन उवाच पश्यामीति हे देव तव देहे सर्वान् देवान् पश्या
मितथा सर्वान् प्राणि विशेषाणां संचान् तथा ब्रह्माणं च तस्यैव मे
राधिपं तेषां कमलासनस्थं कमलासने ब्रह्मणि स्थितमीशं तत्स
नोऽवस्थितं तथा देवर्षिप्रभुर्वेन सर्वं तद्वीतराणं च वासकित्त
कादीन् सर्पान् १५

स्यष्टार्थे १५

अभिनवगुप्तकृतटीका ६

परमार्थप्रपाटी टीका ७

हपश्यामीति समद शभिः भो देव दीपमानतव देहे स्वर्गस्थान् दे
वान् पश्यामि तथा भूमिस्थान् सर्वान् भूतविशेषाणां जगद्युजां उजा
दीनां संचान् समूहान् तथा दिव्यान् दिव्यन्तरिक्षे वर्तमानान् ऋषी
न् पुत्रस्य कुलादीन् तथा पातालस्थितान् उरगांश्च पश्यामि किं वस
मलोकनिवासिने ब्रह्माणं तथा कैलासवासिन मीशमीश्वरं पश्या
मि किं च कमलासनालक्षणा सहस्रासने गरुडासने स्थितो विष्णु
स्वमपि वैकुण्ठवासिने पश्यामीति दिव्यदृष्टिदानस्य फलमुक्ते १५

पुनः

वनमाली टीका ८

यद्गवतादर्शितमनेनैष्येतद्गवदनेनैव दिव्येन च तेषां सर्वज
नादृशपसपि पश्याम्यहो मम भाग्यप्रकर्षं इति स्वात्तु भवमा विः क्र
वन्नेन तथा हपश्यामीति पश्यामि च तेषां विषयीकरोमि हे देव त
व देहे देवान् तदादीन् सर्वान् तथा भूतविशेष संचान् स्याचराणं जं ए
गमानां जगद्युजस्वेदजो द्विजं उजां संचान् समूहान् तथा ब्रह्मा
णं च तस्यैव मीशं रुद्रं कीदृशं कमलासनस्थं कमलासने यस्य स
कमलासनस्थ तस्यैव स देवस्य मित्यर्थः ऋषींश्च सर्वान् विष्णुदीन्
ब्रह्मपुत्रान् उरगांश्च दिव्यान् वासकिप्रभूतान् पश्यामीति सर्वगत्वः

ऊसमवैजयन्तीटीका. ५

किमभाषतेसपेतायोतसभाषणमेवादसप्तदशभिःपश्यामिदे-
वानिति हेदेवयोतमानतवदेदेविष्वात्मकेविग्रहेसर्वान् देवानि
इवरूपादीन् तथा सर्वान्भूतविशेषसंचान् भूतविशेषाणांज
गपुत्रादीनांसंचान्समूहान्पश्यामि तथा ब्रह्माणचतसृत्वं तथा
ऐशसर्वनियेतांगर्भोदशायिनेकीटशंकमलासनस्यंकमला
सनेचतसृत्वेतदेतयामिरूपेणास्थितं यद्वा ब्रह्मणोभेविशेष
णोःस्तःऐशसर्वेश्वरंविस्मंरते श्रुतेषांसर्वेषामीशमीशतारमि
त्यर्थःकमलासनस्यप्रलयास्तुधिशेषणापिनोविस्मोर्नाभिकम
लासनेस्थितभूकमलमध्यमेरुकर्णिकासनेस्थितेवातथासर्वा
न्दिव्यान्दि विभवान् ऋषीन्देवर्षीन्तथासर्वान्उरगान्वास
किर्ककोटकतत्तकादीन्सर्पान्पश्यामीत्यस्यभगवतादर्शितं
विष्वाकारंयत्स्वरूपेतत्सर्वलोकादृश्यमपिभगवदनुग्रहेणैवदि
द्यच्चक्षुषाःहंपश्याम्यहोममभाग्यप्रकर्षइतिस्वानुभावमाविष्कृत
पश्यामिवात्तवज्ञानविषयीकरोमीत्यभिप्रायः १५

यद्भगवतादर्शितंविस्वरूपेतद्भगमधुसूदनीटीका. १० वदनेनदिवेनचक्षुषासर्वलोकादृश्यमपिपश्या
म्यहोममभाग्यप्रकर्षइति
स्वानुभवमाविष्कृतं॥

पश्यामिवात्तवज्ञानविषयीकरोमिहेदेवतवदेदेविस्वरूपेदेवा
न्वस्वादीन् तथा भूतविशेषाणांस्थावरणान्जगमानांचनाना
संस्थानानांसंचान् समूहान् तथाब्रह्माणचतसृत्वं ऐशमीशि
तारंसर्वेषांकमलासनस्यंष्टिबीपममध्यमेरुकर्णिकासनस्य
भगवताभिकमलासनस्यमितिवा तथाऋषींश्चसर्वान्त्वमिष्टा
दीन्ब्रह्मपुत्रान्उरगाश्चदिव्यानामाकृतान्वासकिप्रभृतीन्
पश्यामीतिसर्वज्ञातवः

सदानंदीटीका. ११

दर्शितंविस्वरूपंयच्छीमद्भगवतादुते तदनेनैवदिवेनसर्वाट
श्यमपीदतत् १ श्रुतेपश्यामिनेत्राणममभाग्यप्रकर्षतः इति
स्वानुभवेपाउःकुर्वन्वावाचपोऽवः २ पश्यामितवदेदेस्मि
न्निस्वरूपेसुरानहं समस्तानेववस्वादीन्तदनेनैवचक्षुषा
तथाभूतविशेषाणांस्थावरणान्जगमनुपिणा नानासंस्थानपुत्रा
नांसमूहान्त्रैगोवरान् च चतसृत्वंसमस्तानामीशितारंतयि

श्री.
गी. टी.
५

स्थितं भूपममयेमेवीत्यकर्णिकासतसेस्थितं ५ तथैवधीत्य
सिष्टादीन्समस्तात्तददर्शिनः वासकिप्रभतीन्सर्पादिविभवो वादिः
लथा ६ १५

नीलकंठी टीका १२

देवान्शादित्यादीन् भूतविशेषाश्चतुर्विधाजरायुजादयस्तेषां
सेवान्समूहान् ब्रह्माण्डतत्सुखे ईशोईशितारे कमलासन
स्थितमनेनहरदर्शनमुक्तं उरगान्पातालस्थाननेतादीन्
दिव्यान्कैलासादौ स्थितान्वासकिप्रभुवान् एतेनयवहित
दर्शनमुक्तं १५

शान्तरी टीका

भूतविशेषाणां चराचराणां सेवान्सार्यान् ब्रह्मणो दर्शनाहर्षं स
तलोकांतं दर्शनमुक्तमक्रविदर्शनाह्वोमहो लोकांतमुरगदर्श
नात्समपातालदर्शनम् नानाविधभूताश्रितसमलोकदर्शनेपित्वा
मेवैकं सर्वलोकाश्रयेयश्यामीत्याह १५

रामकंठी टीका

किमित्याह ॥

हे देव परमेश्वर तव देहे सकलजगद्भावैकाग्र्यभूते स्मितप्रविदे
वादिबौकसस्तथात्यातपि चराचराणां भूतविशेषाणां प्राणपंतरा
णां सरस्वातिपश्यामीति देवादिप्राधान्येनैव हि कृणोति समस्ता
विश्वदर्शनं भगवद्विष्टं प्रतिपाद्यक्रमेणातद्विशेषदर्शनं प्रति
पादयितुमाह ब्रह्माण्डप्रजापतिमीशं प्रभुं कमलासनस्थं पुंड
रीकविष्टं संतिविष्टं पश्यामीत्यनेन ब्रह्मलोकांतमुत्सुवनदर्श
नमुक्तवान् ऊर्षीश्च सर्वान्यपश्यामीत्यनेन प्राधान्यापेक्षया ऊर्षि
जनोपलतितमथासलोकदर्शनमुक्तवान् उरगांश्च दीप्तान्यप
श्यामीत्यनेनानेतवासकिप्रभुविभजं गेहोपलतितपातालदर्शनं च
पवंतद्विष्टं विभजनं येलीनेपश्यामीति स्वानभवं प्रतिपादितवान् १५

किमिति अर्जुन उवाच ॥ लासिकी रत्न उगी टीका

हे देवजी शशी लेखर तव देहे सर्वे देवान् स्वारी तपश्चामि साक्षात्करो
मि पेश्वरूप समाधि संस्कारवैवशेषे तपश्चामि इति वर्तमान ते नोक्तिः
पवंसामात्येनोक्तविशेषतो निरूपयति तथा सर्वान् भूतविशेषाणां
चरवराणां प्राणिभेदानां समूहं च तेषां देवानामपि प्रभुं यथा सना
सीनम् ब्रह्माण्डमूर्धभवनवासिनं च तथा सर्वोदियानृषीन्मर्त्यलोक
वीसिनो वसिष्ठादीन् उरगांश्च दिव्यान् प्राकृतान् यो भवनवासिनो वा
सकि प्रमुखान् च तवैश्वरस्य व्यापके देहे तिले तैलमिव व्याप्य तमायत्रान्
पश्याम्युपलेभे यत्नेन भवनत्रयं तद्वपुषिलीने पश्यामीति सांत्तु भवं
प्रतिपादितवान् ॥ १५ ॥

पंचोली टीका

अर्जुनस्य भाषणाप्रकारमेव संजयग्राह पश्यामीति हे देव ग्रहं तव
देहे सर्वान् देवान् निद्रादीन् तथा भूतविशेषसंज्ञान् भूतविशेषाणां स्था
वरजंगमानां विचित्राकारविशिष्टानां संज्ञाः भूतविशेषसंज्ञास्तान्
ब्रह्माण्डवत् सर्वं ईशप्रजानां ईशितारं कमलासनस्थं पश्य मध्ये मे
रुक्मिणीकासनस्थं ऋषीन् वसिष्ठादीन् सर्पान् वासुकि प्रभृतीन् उरगा
न् दिव्यान् पश्यामि ॥ १५ ॥

राजीवसमिद्धो धिनी ॥

पश्यामीति हे देव तव देहे सर्वं अथ भूते सर्वान् देवान् निद्रादीन् तवैव प
श्याम्युपलेभे तथा भूतविशेषसंज्ञान् भूतविशेषाणां प्राणिविशे
षाणां च ये संज्ञास्तान्पि सर्वान् पश्यामि तथा च कमलासनस्थं
शं ब्रह्माण्डमपि पश्यामीत्येवं ब्रह्मलोकं तमुत्तमलोकदर्शनं
तथ धींश्च वसिष्ठादीन् पश्यामीति मध्यमलोकदर्शनं तथा सर्वा
न उरगांश्च पातालवासिनः पश्यामीत्यथ मलोकदर्शनं इति सर्व
व्याप्य व्यापकत्वं मुख्यत्वेन भगवद्विषयं प्रतिपादितं ॥ १५ ॥

सुभाष

५१
१५॥

भाषा अनुवाद

अब सज्जय सतह श्लोक में अर्जुन के कहे वचन कहते हैं कि
हे कृष्ण आप की शरीर में आदित्य और तावत् भूत समूह अर्थात्
जरायुज मनुष्य पशु और आउज यत्नी सर्प आदि और स्वर्गज
आमल्य प्रभृति तथा उद्भिज्ज लता वृक्ष आदि ये सब देवता
हैं और हे देव देवता सकल और नाभि कमल में ब्रह्मा बैठे
या ईश महादेव और दिव्य ऋषि वशिष्ठ आदि और उरग तत्त्व
आदिकों को देवता हैं पद्मासनस्थ ब्रह्मा किस प्रकार सो कह
ते हैं कि पृथिवी रूप नाभि से उठा जो कमलस्वरूप समस्त
गिरि तिस पर बैठे देखोहों १५

चौपई

लषों देवतव देवहिं देह त्यों सभ भूत विप्रोष हिं मेह ब्रह्मा
ईश कमलासनस्थित ऋषि सर्व अरु सर्प हिं दीप्त ॥ १५ ॥

अनेकवाहदरवक्रनेत्रे पश्यामि ता सर्व
तोऽनन्तरूपे नानेन मध्येन पुनस्तवा
दि पश्यामि विश्वेश्वर विश्वरूप १६

शाङ्ख्यभाष्यटीका १

किञ्च अनेकेति अनेकवाहदरवक्रनेत्रे अनेके वाहवउदरणि
वक्राणिनेत्राणि च यस्य तव सत्त्वमनेकवाहदरवक्रनेत्रसम
नेकवाहदरवक्रनेत्रे पश्यामि ता तां सर्वतः सर्वत्र अनन्त
रूपमनन्तानि रूपाणि अस्यानन्तरूपस्य अनन्तरूपे नान्
मन्तोऽवसाने न मध्ये मध्ये नामद्वयोः कोत्पोरन्तरे न पुन
स्तवादि तव देवस्य न अन्ते पश्यामि न मध्ये पश्यामि न पुन
गदि पश्यामि देविश्वेश्वर हे विश्वरूप १६

आनन्दगिरिकृतटीका २

यत्र भगवदेहे सर्वमिदं दृष्टे तमेव विशिनष्टि अनेकेति आदि
शब्देन मूलमुच्यते नाने न मध्यमित्यापि पश्यामीत्यस्य प्र
त्येकं सम्बन्धं सूचयति नाने पश्यामीति १६

स्वामिकृतटीका ३

किञ्च अनेकेति अनेकानिवाक्रादीनियस्य तादृशोत्तोपश्यामि अने
तानि रूपाण्यस्य तेषां सर्वतः पश्यामि तव तत्र ते मध्यमादि च
न पश्यामि सर्वगतात् १६

पैशाचभाष्यटीका ४

स्यार्थे १६ ॥

गमानुजभाष्यटीका ५

अनेकेति अनेकवाहदरवक्रनेत्रे अनेकतद्रूपेषां सर्वतः पश्यामि
विश्वेश्वरविश्वनियंतः विश्वरूपविश्वशरीरयतस्त्वमनेतः अतः
स्तवातेन मध्येन पुनस्तवादि न पश्यामि १६

अभिनवशुभकृतटीका ६

अनेकेतिः

संख्यार्थे ५

परमार्थप्रपाटी टीका ७

अथ विस्वरूपं वर्णयति द्वाभ्यां भो विस्वरूपे विस्वरूपं विस्वात्म
कं रूपं यद्वा विस्वरूपं विस्वरूपं द्वाभ्यां भो विस्वरूपं विस्वरूपं
शरीरे यस्य तस्या विंशतेति त्वां पप्रणामि किं भूते अनेकवाहूद
रवक्रनेत्रे अनेकेषां वाहूदरवक्रनेत्राणां एव वाहूदरवक्रनेत्राणां
यस्य सर्वतः समंततः अनेतरूपमसाद्यात् रूपं यत्सर्वं पप्रण
मि परतैतद्वितयनपप्रणामि किं ते अनेते पश्यन् वसाने मध्यस्थि
तिमवस्थाने प्रादिमा विर्भावै

वनमाती टीका ८

यत्र भगवदेहे सर्वमिदं दृष्टवान् तमेव विप्रि नष्टि अनेकेति वा
हूदरवक्राणि वक्राणि ते प्राणिवाते को नियस्य तमनेकवाहूदरव
क्रनेत्रे पप्रणमि त्वां सर्वतः सर्वज्ञानेता निरूपाण्येति ते तव तपु
न नो तमवस्थाने न मध्यनाद्यादि पप्रणमि सर्वगतत्वाद्देवि विस्व
रूपे विस्वरूपं संवोधनं ह्यमति संभ्रमात् रणस्य स्पष्ट परिच्छिन्ने
न दृश्यमानस्यावित्यशक्तेर्यापकत्वे स्पष्टमुक्तमिति भावः ५

रुसमवेनयनी टीका ५

पाथो यत्र भगवदेहे वादीन पप्रणमि मेव भगवद्विस्वात्मकं देहे वर्ण
यति अनेकवाहूदरवक्रनेत्रमिति हे विस्वस्वरविस्वनियतः अ
तिसम्भ्रमात् संवोधनं विस्वरूपं विस्वशरीरत्वात् तामेव सर्वतः सर्वत्र
दितु पप्रणमि प्रसन्नविस्वयीकरोमि कीदृशं अनेकवाहूदरवक्रनेत्रमने
कानि संख्यावच्छेदशून्यानि वाहूदरवक्राणि त्वयस्ते त
था पुनः अनेतरूपं अनेतमवधिरहितं निर्णय रहितं वा रूपं स्व
रूपं यस्य स तस्यात् अतएव विस्वरूपस्य तव अनेपादावस्थाने न प
प्रणमि मध्यकटिप्रदेशभागे न पप्रणमि पुनश्चादि शिरोभागे न पप्रण
मि इदमित्यमिति निर्णयपूर्वकं तातं तशः कोमीत्यर्थः ५

मधुसूदनी टीका १०

यत्र भगवद्देहे सर्वमिदं दृष्टवान् तमेव
विशिनष्टि वाहवश्च उदराणि वक्राणि नेत्राणि चानेकानि यस्य तमनेकबाहू

दरवक्रनेत्रे पश्यामि त्वात्वं सर्वतः सर्वत्र अनेतानि रूपानि य
स्येति ते तव तपुनर्न अंतमवसानेन मध्येनाप्यादि पश्यामि सर्वगतत्वात् हे विषे
श्वर हे विष्वक् त्रयसं बोधन दयमति संभ्रमात्

१६

सदानंदी टीका ११

वाहवश्चोदराणीह वक्राणि नयनानि च यस्यानेकानि तेत्वा
हे पश्यामि विष्वक् रूपिणं १ सर्वज्ञानेन रूपेणापरिच्छिन्नं महत्
रे नावसानेन मध्ये च नादि पश्याम्यहे तव २ हे विष्वक् त्रयसं
त्वात्म त्रितयेवं संभ्रमादह चः ३ १६

नीलकंठी टीका १२

अनेके अनेताः वाहवः उदराणि वक्राणि नेत्राणि च यस्मिंस्तद
नेकबाहू दरवक्रनेत्रे सर्वतश्च तर्हित उपर्यधश्च अनेतमप
रिच्छिन्नं रूपमस्य ते अनेतत्वे मेवाह नांतमिति दीक्षरज्वाहव
तवाद्येतौ देशिकौ न स्मरन्त्यर्थः १६

आनंदी टीका

विष्वक्प्रेक्षरो नित्यं ताविष्ठातिका र्याकाराणां आत्मकानि रूपानि य
स्य इदमेव च भवतो रूपं सर्वदा परिचितं प्रोवस्थितं भगवदनुग्रहा
त्परं ब्रह्म तेजो मयं पश्यामीत्याह १५ ॥

पवेदेवादि विविधरूपा धिष्ठितं भवनत्रयं रामकंठी टीका अनेपितामेवैकं सर्वाश्रये पश्यामीत्याह ॥

स्पष्टार्थः श्रीकः किंतु भवनत्रयगतानां भूतानां येनानाविधा जग
त्तदनुलोचनादयो वयवास्ते तथैव सर्वतो न वच्छिन्नमादात्म्यस्यैक
स्यावयवत्वेन पश्यामीत्यत्र तात्पर्यम्

गी
री. प.

लासिकी वसुमीटीका
किंच सर्वेषां प्राणिनामवयवास्तथैवावयवा इत्यवशिष्टत्वा मेकं यश्या
मि देविशेषश्च हे विस्वरूपेति संबोधन इयमट्टस्य पूर्वानुभूत्यभूतो
ज्ञातिवशात् १५ ॥

पंचोलीटीका

अनेकेति हे विस्वरूपेति संबोधनं अनेकवाहक इत्यनेक
वाहकः उदराणि वक्राणि नेत्राणि च यस्य सः सर्वतो न तस्येति सर्वतः
सर्वज्ञानं तानि रूपाणि यस्य तेषां यश्यामि च पुनः पुनरादिमध्ये अने
तेन यश्यामि सर्वगतत्वात् १६

सावीरसमिद्धोधिनी ॥

एवं त्रिभुवन दर्शनेपि भगवंतमेवैकं सर्वाश्रयत्वेन यश्या
मीत्याह अनेकेति गतार्थमेतच्छ्लोक इत्यम् १६ ॥

मधुभाष्य

यश्यात्परं यन्मदतो मदांतं यदेकमव्यक्तमनंतं रूपमिति
यजुर्वेदे अव्यक्तस्यानंतत्वादेव मदतो मदत्तेनापरिमेयत्वं
सिध्यति मदांतं वसमाहृत्य प्रथानं समुवस्थितं अनंतस्य
नतस्यांतः सख्यातं वापि विद्यत इत्यादित्युपरागे तानि च
केकानि रूपाण्यनंतानीति चेकत्र भवति असंख्याता ज्ञा
नकास्तस्य देहाः सर्वपरीक्षा मविवर्जिता सन्त्येव दखिते
यावान्वा प्रपमाकाशात्तावानेषांतर्हृदयशकाशः उभे

भाष्य अनुवाद

और अनेक बाहु अनेक उदर अनेक मुख अनेक नेत्र तम
को सर्वत्र मै देवता है परन्तु हे विश्वरूप तमारा आदि म
ध्य अन्त नहीं देवता है १६

चौपई

बाहुअनेकउदरमुखनेत्र लेखोंअनंततोदिरूपसर्वत्र"न
दि तबअंतमध्यअरुआदि लखोंसर्वविशेषाअनादि १६

५७

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
नमो भगवते वासुदेवाय नमो भगवते वासुदेवाय
नमो भगवते वासुदेवाय नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

किरीटिने गदिने चक्रिणञ्च तेजोराशिं
सर्वतोदीप्तिमन्ते पश्यामि त्वोऽर्निरी
त्ये समन्तादीमानलार्कयुतिमप्रमेये ७

शाङ्कुरभाष्यटीका १

किञ्च किरीटिनमिति किरीटिने किरीटोनामशिरोभूषणवि
शेषः तद्यस्यास्तीति सकिरीटी ते किरीटिने तथा गदिने गदा
यस्य विद्यतइति गदी ते गदिने तथा चक्रिणं चक्रमस्यास्ती
ति चक्रीते चक्रिणं च तेजोराशिं तेजःपुञ्जे सर्वतोदीप्तिमन्ते
सर्वतोदीप्तिमान्ते सर्वतोदीप्तिमन्ते पश्यामि त्वोऽर्निरीत्ये उःत्वे
न निरोत्तोऽर्निरीत्यस्ते समन्ततः सर्वत दीमानलार्कयुतिं अ
नलश्चार्कश्चानलार्को दीप्तौ अनलार्को दीमानलार्को तयोर्दी
मानलार्कयोऽयुतिरिव यु तिलेजोयस्यतव सत्त्वं दीमानलार्कयु
तिले त्वो दीमानलार्कयुतिं अप्रमेये न प्रमेयमप्रमेयमशक्यप
रिच्छेदमित्यर्थः ७

आनन्दगिरिकृतटीका २

विश्वरूपवन्ते भगवन्त मेव प्रकारान्तरेण प्रपञ्चयति कि
ञ्चित् परिच्छिन्नत्वे व्यावर्तयति सर्वत इति उर्निरीत्ये पश्या
मीत्यधिकारिभेदादविरुद्धं पुरतोवा पृष्ठतोवा पार्श्वतोवा ना
स्य दर्शने किन्तुसर्वत्रेत्याह समन्ततइति दीप्तिमन्ते दृष्टान्ते
न स्पष्टयति दीप्तेति ७

स्वामिकृतटीका ३

किञ्चकिरीटिनमिति किरीटिनेषु कटवेते गदिने गदावेतं चक्रि
णं चक्रवेतं च सर्वतोदीप्तिमन्ते तेजःपुञ्ज रूपे तथा उर्निरीत्ये दृष्टम
शक्यं तत्रदेतः दीप्तिमयोरनलार्कयोः युतिरिव क तिलेजोयस्य तं
अतएवाप्रमेये एवंभूतइति निश्चितमशक्यं त्वोऽसमेततः पश्यामि
७

पेशाचभाष्यटीका ४

+ पूर्वकमलासनस्य मितिपदेन सामान्यतो विष्णोः स्वरूपं यदृष्टमित्युक्तं तदेव गदाचक्रा
याद्युधोपलक्षणपथा पुराणेषु कृतमधूनप्याइदं विस्मयविक्रमेनैवथानिदये पदमिति
श्रुतिप्रतिपादितैत्रिविक्रमाकारेण दृष्टमित्याह ॥ +

श्री-
ती. टी.
प

स्यष्टार्थे १३

रमानुजभाष्यटीका. ५

किरीटिनमिति तेजोराशिं सर्वतो दीप्तिमं ते सर्वतोऽर्निरीक्ष्य दी
प्तानलार्कं पुनिमप्रमेये किरीटिनं गदिनं चक्रिणं च पश्यामि १३

श्रमिनवयुगमकृतटीका. ६

स्यष्टार्थे १३ ॥

परमार्थप्रपाटीटीका. ७

+ किरीटिमिति किरीटिनं सुकुटवेतं गदिनं गदायुक्तं चक्रि
णं सदृशं नवेतं पश्यामि अनेनोर्थदस्ताभ्यां क्रमेण गदाचक्रेत
थाथरदस्ताभ्यां पश्यामि विधा एवमेव च तर्जुने त्रिविक्रमरूपे
पश्यामीत्युक्तं तथा त्वं सर्वतस्तेजोराशिं तेजः समूहस्वरूपं दी
प्तिमं ते प्रसरत्प्रकाशं समं तादृर्निरीक्ष्य दृष्टमशक्यं दीप्तानलार्क
कं पुनि नन्ददग्निसूर्ययोर्दीप्तिर्यस्य प्रमेयं मनसा प्यतर्क्य
यमर्थः त्रिविक्रमरूपं तस्वरूपेणैव चरणवित्तेषु मात्रायां
अस्माकं कदाहंतादृशमपि तव देहं पश्यामि किं पुनरनन्त एत
देवमनसि निधाय मत्पराणेषु कृतं क्वाहं तमो महदहं चरा
मिवाभूः संवेष्टितोऽवदत्समुचितस्त्रिकाय इत्यादि १३

वनमाली टीका. ८

तमेवाचित्पश्यामि ते भगवंतं प्रकाशं तरेण विधितं किरी
टिनमिति किरीटिनं गदाचक्रधारिणं च सर्वतो दीप्तिमं ते तेजोरा
शिं च अतएव तर्जुनिरीक्ष्य भगवत्प्रसादसदृशं तेन दिव्येन चक्षु
षा विना निरीक्षितुमशक्यं सयकारणं तदुःशब्दोपद्रववचनः
अतिनिरीक्ष्य मितियावत् दीप्तयोरनलार्कयोर्पुनिरिव पुनिर्यस्य
तमप्रमेयमित्यमयमिति परिहृतुमशक्यमियत्तामृमत्तात् स
मेतात्सर्वतः पश्यामि दिव्येन चक्षुषा भगवत्प्रसादसद्भावासद्भा
वाभ्यां स निरीक्ष्य त्वे तर्जुनिरीक्ष्य त्वे कस्येव न विरुद्धमिति भावः १३

रुसमवेजयनीटीका. ९

प्रकाशं तरेण तमेव विश्वरूपकं विधितं किरीटिनमिति कि
रीटिनं किरीटोपलक्षितं कृष्णलकटककेयूरहारकदिसूत्रनूप

राद्यनेतस्त्वोचितभूषणवन्नमित्यर्थः यदिनेचक्रिणंगराचक्राभ्यामु
 पललितानेतविविधविविधसोचितदिव्यायुधवनेचकाराच्छेत्तवे
 श्पादिदिव्यवाद्यवन्नेतेजोराशि तेजः पुञ्जरूपेसर्वतः सर्वत्रोमके
 शानावदेतायुधाः लङ्कागादिषुदीप्तव पेवतपीतनीलरक्तहरिता ५२
 दियुतयोविद्येतेयस्यते अतएवउन्निरीतेदिव्यदृष्ट्यादिविनेतर
 दृष्ट्यानिरीतितमशकं सयकारपाटेउःशाहोनिषेधवाचीदिव्य
 दृष्ट्याप्यनिरीत्यमित्यर्थः ननुतःशाहस्यनिषेधवाचितेपश्यामी
 तिक्रियायाविरोधस्यादित्याशेकप्रमेयत्वेनपश्यामीत्याह संमेता
 त्सर्वतःस्वरूपावयवादेः अग्रमेयइत्यस्यमयमितिपरिच्छेत्तमशकं
 दिव्यदृष्ट्यापीयतावच्छेदरहितेनाहपश्याम्यतो नविरोधः कुतएव
 यतोदीप्तानलार्कयुतिदीप्तयोरनलार्कयोर्धुतिरिवधुतिर्यस्यसते
 अतिप्रबलप्रचेदप्रलयानिलोद्धतानलतत्कालीनातिप्रचणमा
 तेउसमदीप्तितेनातिसंभ्रमदिव्यदृष्टेः प्रसरणानवकाशात्तत्प्र
 मातमशकमत्सररूपेप्राप्त्याहिमेकोभवानुग्ररूपमिति वस
 माणात् तांविद्याकारेसर्वनियन्तारसर्वेश्वरमहपश्यामीत्ये ॥

तमेवविषय रूपेभगवन्तेप्रकारान्तरे मधुसूदनी टीका १०
 एतद्विशिनष्टि-किरीटगदाचक्रधारिणचसर्वतोदीप्तिमेतन्नेजोराशिचअतएवउ
 निरीत्यदिव्येनचतुषाविनानिरीतितेनशक्यसयकारपाटेउःशा
 होपद्रववचनः अनिरीत्यमितियावत् दीप्तयोरनलार्कयोर्धु
 तिरिवधुतिर्यस्यते अग्रमेयमित्यस्यमयमितिपरिच्छेत्तमशकंता
 समेतान् सर्वतःपश्यामिदिव्येनचतुषाश्रुतोधिकारिभेदाउनि
 रीत्येपश्यामीतिनविरोधः

सदानंदी टीका ॥
 तेप्रकारान्तरेणोशंविशिनष्टिविद्वये गदाकिरीटचक्रादिधारिणं
 तेजसोनिधिं १ सर्वतोदीप्तिमुक्तंचपश्यामीशानमडुते विनादिव्ये
 ननेत्रेणात्माशक्यंनिरीतिते २ सर्वतोदीप्तयोर्वैक्रिसूर्ययोरि
 वभायुते अमशक्यंपरिच्छेत्तमित्येवायमियानिति ३ ॥
 नीलकंठी टीका ॥

श्री.
गी टी.
प

किरीटगदाचक्रधारिणं दीप्तिमत्तादेवउत्तिरीत्यं दृष्टुमशक्यं समं
तात्सर्वतोयेदीप्ताश्रनलाश्रकीश्रतद्वत्पुतिर्यस्यतेसमंतादीमान
लार्कयुतिमितेकेपदे अतएवाप्रमेयंदृष्टुमशक्यंपरिच्छेदं १७

श्रानंदीटीका

सगमोर्थः

इदमेवचतेपुरःस्थितंरूपं तद्वत्प्रहात्परमेष्ठरते । रामकंठीटीका १७
जोमयंपश्यामीत्याह ॥ अवतरणिकयैवस्याख्याततात्पर्यमेतत्

किंवा- लासिकी वसुन्तीटीका
किरीटगदाचक्रफलंयपरिच्छिन्नेतामेववसुदेवात्मजमेवंविधंप
प्रणामि कीटशमित्याह सर्वतोदीप्तिमंतंतेजोराशिचपम् तथाउ
त्तिरीत्यंरूपंसादृष्टुमशक्यं सयकारपादेउःशब्दोपक्रमवचनः
अतिरीत्यमितियावत् तथासमंतादीप्तयोरनलार्कयोर्पुतिरिवयु
तिर्यस्यतम् अप्रमेयंप्रत्यक्षादिप्रमाणागोचरं एवंविधैस्वरयोगद
र्शनादि मनमिति १७ ॥

पंचोलीटीका

किरीटिनेरतिहेदेवग्रहंत्वांपवंविधंप्रणामिकथंभूतंत्वाकिरीटि
नंरत्नावचितमुक्तदाभराण्युक्तंगदिनंगदायुधविशेषयुक्तंचक्रि
णंचक्रायुधविशेषहस्तंतेजोराशिंतेजसांयुजयुक्तंसर्वतःसर्वा
सुदितादीप्तमंतंसदीप्तासर्वप्रकाशिसमेतादुत्तिरीत्यंदृष्टुमश
क्यंदीमानलार्कयुतिदीप्तयोरनलार्कयोः अमिसूर्ययोः पुतिरिव
युतिर्यस्यतेजोयस्यतंदीमानलार्कयुतिमप्रमेयंसकलप्रमाणागो
चरं १७

रागवीरसमिद्धोधिनी ॥

स्पष्टोर्थः १७ ॥

मधुभाष्य

भाष्य अनुवाच

और मुकुट गदा चक्र युक्त तथा तेजःपुञ्ज सर्वत्र प्रकाश
मान अति इतिरीत्य चहूँ और प्रदीप्त अनल अर्क के समा
न तम को मे देवता हूँ १७

चौपई

मुकुट गदा अरु चक्रधरं तेजराशिसभसंयुतिवंत
तौहिकरिनदृशसर्वदिदेवों अनलअर्कयुतिप्रप्रमेय वि
शेषों १७

56

महाराष्ट्र शासन
महाराष्ट्र शासन
महाराष्ट्र शासन
महाराष्ट्र शासन
महाराष्ट्र शासन

महाराष्ट्र

महाराष्ट्र शासन
महाराष्ट्र शासन
महाराष्ट्र शासन
महाराष्ट्र शासन
महाराष्ट्र शासन

लासिकी ~~रसगुनी~~ टीका

अवश्यं ज्ञेयं परममन्तरं ब्रह्मत्वमेवेश्वरः तथा स्पेदतावधार्यस्वविश्व
स्वपरं प्रधानाद्येतेनोक्तं निधानं परमाश्रयं तत्रैव तथा
वोक्तं यथा त्रयोधवीजस्यः शक्तिरूपो महात्मः तथा हृदयबीजस्य ज
गदेतत्सुखमिति तथा त्वमेव शाश्वतस्य नित्यस्य धर्मस्य चेतस्यापराय
णीयस्यादन्तरूपविसर्गाव्यस्य गोप्ता जीवतदशाया मपि पालकः तद्व्ये
तकः अतएवाव्ययः जीवतशाश्वतपि स्वरूपप्रच्युतिरूपविकाररहितः
तथा सनातनः अनादिः पुरुषः ह्रदस्य आत्मा च त्वमेवेश्वरो मया मतो
नुमातेन ज्ञातो सि १८ ॥

पंचोली टीका

यस्मादेवं तवातर्कमैश्वर्यं तस्मादेवं वितर्कयामित्वमिति हे भगवन् मु
मुक्षुभिः वेदितव्यं ज्ञेयं परममन्तरं अविनाशिनं ब्रह्मत्वमेवासि वि
षयजगतः परं निधानं परमाश्रयं त्वमेवासि अश्रयं नित्यं त्वं शाश्वत
स्य धर्मस्य गोप्ता पालकः सनातनः चिरंतन पुरुषः मेममत्वमेव मतः
अभिप्रेतः १८

रणवीरसमिद्धो धिनी ॥

भगवंस्त्वं तद्वत् तद्वत् त्वं स्वस्वरूपान्न व्यवृते इत्यन्तरं मायीयादितो
भरहितमित्यर्थः परमं प्रकृत्यदत्तं तदंकाररूपं त्वमेव वेदितव्य
मतोऽस्य विश्वरूपस्य परं निधानं परमं कारणं त्वमेवासि अतश्च त्वम
व्ययोनविकारमेतीत्यव्ययः शाश्वत धर्मगोप्ता शाश्वतं नित्योद्भवं
यत्त्वधर्मं तद्गोपायते इति शाश्वत धर्मगोप्ता त्वमेवासि इतीत्यंलक्ष
णो मे सनातनः पुरुषः पुराण पुरुषस्त्वमेतालक्षितो ज्ञातो सीत्यर्थः
१८ ॥

मधुभाष्य

भाष्य अनुवाद

जिस हेतु तमारा ऐश्वर्य ऐसा अविन्य है इस से तम अक्षर
जो परब्रह्म समुत्त लोको के जानने योग्य और तम इस वि
षय के निधान कहे परम आश्रय हो इस से तम निम्न औ नि
म्न धर्म के पालक औ अनादि पुरुष मेरे मत मेहो १५

वैपरी

परम अक्षर तं योग्य दिज्ञान तं इस विषय को परम निधान
तं अखंड धर्म प्रतिपालन मो मत मे तं पुरुष सनातन १६

515 171

對開開路 對開開路 對開開路 對開開路 對開開路 對開開路 對開開路 對開開路
 對開開路 對開開路 對開開路 對開開路 對開開路 對開開路 對開開路 對開開路
 對開開路 對開開路 對開開路 對開開路 對開開路 對開開路 對開開路 對開開路
 對開開路 對開開路 對開開路 對開開路 對開開路 對開開路 對開開路 對開開路

346

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

अनादिमध्यान्तमनन्तवीर्यमनन्तवाङ्मेश
शिसूर्यनेत्रे पश्यामि त्वोदीप्तद्रुताशव
के स्वतेजसा विश्वमिदं तपेत् ॥

शाङ्ख्यभाष्यटीका- १

किञ्च अनादीति अनादिमध्यान्तमादिषु मध्यं च अनश्च न वि
ध्यते यस्य सोऽयमनादिमध्यान्तस्त्वामनादिमध्यान्तमनन्तवी
र्यं न तव वीर्यस्यानोऽनोऽनन्तवीर्यस्ते त्वामनन्तवीर्यं तथा अ
नन्तवाङ्मनन्तावाहवो यस्य तव सत्वमनन्तवाङ्मस्ते त्वो अनन्त
वाङ्म शशिसूर्यनेत्रे शशिसूर्यो नेत्रे यस्य तव सः त्वं शशिसूर्यने
त्रे त्वं त्वो शशिसूर्यनेत्रे चन्द्रादिसनयने पश्यामि त्वो दीप्तद्रु
ताशवके दीप्तश्चासौ द्रुताशश्च तद्वत् वक्त्रं यस्य तव स त्वं
दीप्तद्रुताशवक्त्रः त्वं त्वो दीप्तद्रुताशवक्त्रे स्वतेजसा विश्वं सम
स्तमिदं तपेत् सन्नापयन् ॥

आनन्दगिरिकृतटीका- २

भगवन्नोरूपं विश्वरूपाख्यं रूपमेव पुनर्विज्ञाणोति किञ्चे
ति इतमश्नातीति इताशोवद्भिः ॥

स्वामिकृतटीका- ३

किञ्च अनादीति अनादिमध्यान्तमुत्पत्तिस्थितिप्रलयरहितं अने
ते वीर्यप्रभावायस्यते अनेता वीर्यवन्तो वाहवो यस्य तेशा शिसूर्यो
नेत्रे यस्य तादृशं त्वं पश्यामि तथा दीप्तो द्रुताशोऽपि वै केषु यस्य तस्य
तेजसा इदं विश्वं तपेत् सन्नापयन् तं पश्यामि ॥

पिशुनभाष्यटीका- ४

स्पष्टार्थे ॥

॥

॥

॥

रामानुजभाष्यटीका- ५

अनादीति अनादिमध्यान्तं आदिमध्यान्तं त्रिरहितं अनेत वीर्यं अन
वधिकानिशयवीर्यवीर्यशब्दः प्रदर्शनार्थः अनवधिकानिशय
ज्ञानवलेष्वर्यवीर्यशक्तिरित्यसौ निधानमित्यर्थः अनेत वाङ्म
संख्येयवाङ्मसोऽपि प्रदर्शनार्थः अनेत वाहदरवक्त्रादिकं शशि

श्री.
गी. टी.
प

सूर्यनेत्रं शशिवत्सूर्यवच्च प्रसादप्रतापयुक्ते सर्वनेत्रे देवादीन्
नुकूलानमस्कारादिकुर्वाणान् प्रसादेतद्विपरीतान् सुरराजसादी
न् प्रतिप्रतापः रत्नां सिंभीतानि दिशो द्रवेति सर्वे नमस्तुतिचमि
ह संवाहति हि वस्यते दीप्ताशवक्त्रं प्रदीप्तकालानलवत्सं
गनुगुणवक्त्रं स्वतेसा विष्मिदंतपंतं जः पराभिभवसामर्थ्ये
स्वकीयेन तेजसा विष्मिदंतपंतं तोषयामि एवं भूते सर्वस्य स
हारं सर्वाधारभूते पूर्वस्य प्रशासितारं सर्वस्य संहर्तारं तानाद्यपरि
मितगुणगणसागरे आदिमध्यांतरहितमेवं भूतं दिव्यदेहं ज्ञाय
योपदेशं सात्तात्करोमीत्यर्थः एकस्मिन् दिव्यदेहे अनेको दश
दिक्कणैश्च सुपपद्यते एकस्मात्कदि प्रदेशादेन तपरिमाणो
हं सुदगोता यथोदितो दशः अथ यथोदिता दिव्यपादाः तत्रैकस्मि
न्मुखेनेत्रद्वयमिति विरोधः

अभिनवगुप्तकृतटीका ॥

स्पष्टार्थे ॥

किं वस्वजनमात्रं हि सा भूया इत्यादि वृत्तेन कालरूपपर
मेस्वरदर्शनार्थं नयानविद्यते आदिमध्यान्तायस्य अनंतवीर्यमनंतशक्तिं
त्रैलोक्या हिंसापिमयेव वीर्यस्य शशिसूर्यनेत्रं सान्त्वितवर्तमानौ पूर्णचंद्रसूर्यौ नेत्रे य
कारिते निमग्नमानः पश्येयं यद्वा शशिसूर्ययोरपि नेत्रभूतं दीप्ताशवक्त्रं जगत्सं
ज्ञातापमनुवदत्राह स्म यद्वा शशिसूर्ययोरपि नेत्रभूतं दीप्ताशवक्त्रं जगत्सं
अनादीति ॥

अनेतावाह न विद्यते आदिमध्यान्तायस्य अनंतवीर्यमनंतशक्तिं अनेतावाह
वीर्यस्य शशिसूर्यनेत्रं सान्त्वितवर्तमानौ पूर्णचंद्रसूर्यौ नेत्रे य
स्य यद्वा शशिसूर्ययोरपि नेत्रभूतं दीप्ताशवक्त्रं जगत्सं
मिर्वक्त्रं मुखेयस्य स्वतेजसा द्रवेति संतपंतं संतापयंत जगत्सं
हारं कर्तुं मिव प्रवृत्तं पश्यामि ॥

वनमाती टीका ८

आदिरुपनिर्मथो स्थितिरंतो नाशस्तद्रहितं अनादिमध्यान्ते अ
नंतवीर्यप्रभावो यस्य ते अनेतावाह वीर्यस्य ते उपलक्षणमेतत्
मुखादीनां शशिसूर्यौ नेत्रे यस्य ते यद्वा शशिवत्सूर्यवच्च प्रसा
दप्रतापयुक्तानि नेत्राणि यस्य ते देवादीन् भक्तां नमस्कारादिकं
कुर्वतः प्रसादेतद्विपरीतान् राजसादीन् प्रतिप्रतापं रत्नां सिंभी
तानि दिशो द्रवेति सर्वे नमस्तुतिचमिह संवाहति वस्यति दी
प्ताशवक्त्रं यस्य दीप्ताशवक्त्रं यस्य ते स्वतेजसा
विष्मिदंतपंतं संतापयंतं तां पश्यामि ॥

रुसमं वै जयन्ती ॥

अनाद्युत्पत्त्यात् रत्नादि नदिप्रज्ञातामि
रत्नसू

किंच अनादिमध्यांतमिति नास्ति आदिरूपमिति मध्ये स्थिति रजो-
विनाशो यस्य स तथा ते अने तवीर्ये अने ता निवीर्याणि तडपल
लितानि समग्र गुण शक्ते सूर्याणि यस्य स तथा ते अने तवाहं
अने ता अगणिता वाहवस्तु डपललितानि शिरो जठरपादाद्यङ्गव
यवायस्य स तथा ते शशिसूर्यनेत्रेशशिसूर्योपमानि प्रसादकुर
रूपाणि नेत्राणि यस्य स तथा ते स्वभक्तदेवादिषु प्रसन्ननेत्रे अभक्ता
सुरात्तमादिषु कुरनेत्रे रत्नासिभीतानि ततो दिशो द्रवति सर्वेन
मस्येति वसिष्ठसंवाहति वत्समाणात् दीप्रज्जताशवक्त्रे दीप्रज्जता
शोपमानि संहारा नुगुणा निवक्राणि यस्य स तथा ते स्वतेजसा
विश्वमिदं तपेत्स्वकीयेन तेजसा पराभिभवसा मध्ये नेदं विश्वं
तपेत्स्वतेजसापयत्नमेवंभूतेन तौ पश्यामि अर्जनस्य वाक्यं क्वचि
त्न नरुक्तिस्तस्य विस्मया विष्टुतात्मान दोषाय भवति प्रमादे विस्म
यदर्थे हि सिद्धरुक्त्रहृषतीति वचनात् १५

सुप्रसूदनी टीका १५

किंच

अनादिमध्यांतमिति नास्ति आदिरूपमिति मध्ये स्थिति रजो-
विनाशः तद्वद्विनाशमनादिमध्यांतं अने तवीर्ये प्रभावो यस्य ते अने
ता वाहवो यस्य तडपललितानि मिदमुखादीनामपि शशिसूर्योनेत्रे
यस्य ते दीप्रज्जताशो वक्त्रे यस्य वक्त्रेषु यमेति वा ते स्वतेजसा विश्वमि
दं तपेत्स्वतेजसापयत्नमेवंभूतेन तौ पश्यामि

१५

सदीपनी टीका १६

आदिर्मध्यांतमध्यांतस्य तेनास्ति कर्दिचित् अपरिच्छिन्नवीर्यत्वाद
नेता यस्य वाहवः १ नेत्रे यस्येडसूर्यो प्रचेमपि समानने स्वतेजसा
साखिलं विश्वं तापयेत्तमिदं तथा २ ततो पश्यामि विश्वं शेषा मये
न जगत्रये १५

नीलकंठी टीका १६

एतदेवाह अनादीति देशतः कालतस्यादिमध्यांतदीनत्वादनादि
मध्यांतं दीप्रज्जताशो वक्त्रे यस्येति भास्वरदेवते व्यज्यते स्वतेजसा वै
तमस्योतिषा इदं विश्वं विश्वरूपं तपेत्प्रकाशयेत् अनादितादिम
र्वविशेषाणां विशिष्टं विश्वं तपि कमीभूते तापयेत्ततो परमोती रूपं
पश्यामि ज्ञानामि चित्रपटस्थानीये विश्वरूपे सकलकारकात्मकयो
वासनापेतेन येन ज्ञोतिषा प्रकाशते तदेव तमसोतिज्ञानामीति भावः १५

श्री.
गी. टी.
५

शानेरीटीका

स्फुरोर्षी.

१६॥

अतएव

रामकेटीटीका

अनेततादायेतमध्यरहिते अवच्छेद्यस्य हिवस्तुनश्रयादिविभागव
त्तमित्येजगत्ययेवविरचनसामर्थ्यवीर्यमनेतेनकदाचिन्नित्यस्य
तेतथासर्वतेजज्ञानोतत्रतत्क्रियासाधनभूतायेतत्वाद्वाहवसेन पार
मार्थिकस्येवकर्तुः परमेश्वरस्य संवधिनेत्यनेतवाद्वाहतेतथात्वेन
साशरीरेवत्तन्मयोनियतविषयप्रकाशनेक्रियुतइतिशशिसूर्येने
त्रत्वे तथाक्रियावद्विविधेयं तत्क्रियाविशेषैर्वैश्वानरोविश्वमूर्तिः
परमेश्वरयवैकसूर्यतेइतिस्येवदीप्तोद्गताशोपिर्वक्रमित्यक्तं त
थास्वतेजसासंविद्रूपेणतेजसाज्योतिषासर्वमिदंनपत्तिचोतयतीत्य
वेविधेविश्वान्मानेवापप्रणामीतिसंबंधः॥

लासिकी वसुधैटीटीका

किंच—आदिमथावसानरहितं सपरिच्छिन्नवीर्यमपरिच्छिन्नवाहं शशिसू
र्येनेत्रेयस्यते दीप्तोद्गताशोवक्त्रेयस्यते तथेदमिदंनावधार्यविश्वं
जगत्ययेतेविद्यात्माप्रकाशयते एवंविधेविराजंशुरुषंत्वामेवेष्व
रेपप्रणाम्यलभे १६॥

पंचोलीटीका

अनादीतिहेभगवनहंत्वामेवंविधेपप्रणामिकणंभूतंत्वाअनादि
मय्योतेनवियतेआदिर्मध्यमंतोयस्यसःउत्पत्तिस्थितिविनाशर
हितमनेतवीर्येयस्यसंस्तुअनेतवीर्यअनेतवाहअनेतावाहवोयस्य
संस्तुशशिसूर्योचंद्रादित्योनेत्रेयस्यसंस्तुदीप्तोद्गताशोवक्त्रेदीप्तोद्ग
ताशोअग्निर्वक्त्रेयस्यतेस्वतेजसास्वकीयेनतेजसादीप्ताइदंम
मंस्तुविधेतयेतंतापयते १७॥

भाषा अनुवाद

और अनादि मथाना कहे उसनि स्थिति लय रहित औ अन
न प्रभाव तथा अनन बाह्य औ चन्द्र सूर्य है नेत्र जिस के
ऐसे तम को हम देखते हैं और अग्नि जिस के मुख में जाल
लमान है ऐसे आप आयने तेज से इस विषय को सन्तान कर
ते हये तम को मैं देखों हों १५

वैयर्थ

आदिमय अंत विन वीर्य अनंत बाहु अनंत प्राणीर विनेत्र लसं
त लघों तोहि दीप्त प्रभिसम मुखको तेज दि सें निज इह ज
गत पतको १५

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥
 श्रीमद्भगवद्गीता ॥ अध्यायः प्रथमः ॥
 अर्जुनसंवादे ॥ १ ॥

महाराष्ट्र शासन, न्याय विभाग, मुंबई
 न्यायिक प्रशासन विभाग, मुंबई

यावाएथियोरिदमन्तरं हि व्याप्तं तयैकेन
दिशश्च सर्वाः दृष्टादुतं रूपमिदं तवोयं
लोकत्रयं प्रव्यथितं महात्मन् २

शाङ्करभाष्यटीका १

यावाएथियोरिति यावाएथियोरिदमन्तरं हि अन्तरितं वा
प्तं तयैकेन विस्मरूपधरेण दिशश्च सर्वव्याप्ताः दृष्टा उपल
ब्धं अदुतं विस्मरूपकं रूपमिदं तव उयं कुरुलोकत्रयं लोका
नां त्रयं लोकत्रयं प्रव्यथितं भीतं प्रचलितं वोहं महात्मन् अ
न्तरस्वभाव २

आनन्दगिरिकृतटीका २

प्रकृतभगवद्रूपस्य व्याप्तिं वनक्ति यावाएथियोरितीति तस्यै
व भयङ्करतमाचष्टे दृष्टेति २

स्वामिकृतटीका ३

किंच यावाएथियोरिति यावाएथियोरिदमन्तरमन्तरितं तयैके
न व्याप्तं दिशश्च सर्वा व्याप्ताः अदुतमदृष्टपूर्वतदीयमिदमयं चोरे
रूपे दृष्टालोकत्रयं प्रव्यथितमिति भीते पश्यामीति पूर्वस्यैवावुषंगः
२ ॥

पिशाचभाष्यटीका ५

स्पष्टार्थ २

पतंभुतेत्वा दृष्टा देवादयो हं च प्रव्यथि रामानुजभाष्यटीका ५ ताभवामउत्पाह ॥

यावेति शुशब्दः एथिवीशाब्दश्च उभा उपरितनानामयः स्थानाचलो
कानां प्रदर्शनार्थो यावाएथियोरन्तरमवकाशः यास्मिन् अवकाशे
सर्वे कांस्तिष्ठन्ति स सर्वो वयवश्च आकाशो दिशश्च सर्वास्तयैकेन व्या
प्ताः दृष्टादुतं रूपमुयं तवेदं अनेतायामविस्मरमदुतमसुयं च दृ
ष्टे दृष्टालोकत्रयं प्रव्यथितं पुडुदित्तयागतेषु ब्रह्मादिदेवासुरपि
तृणाणि सह गन्धर्वयत्तगन्तसेषु प्रतिकूलानुकूलमध्यस्थरूपे लोक
त्रयं सर्वं प्रव्यथितं अतन्तभीतं महात्मन् अपरिच्छेद्यमनो हन्ते एते
सामान्यजनस्यैव विश्वाश्रयरूपसात्तात्कारसाधने दिव्योच्चत्तर्भगव
तादत्ते किमर्थमिति चेत् अजिनायैष्यर्थं सर्वं प्रदर्शयितुमन्तरं

श्री.
गी. टी.
पे.

मुच्यते दृष्टेति २-

स्पष्टार्थे २-

अभिनवप्रसक्तटी. २

परमार्थप्रणटीका ३

यावाएथियोरिति यावाएथियोरंतरमेतरितेतयायकेनैवयासं
तथासर्वादिशस्ययासाः भोमहात्मन्विस्वरूपएवमेतादृशसु
तवरूपेदृष्टालोकत्रयेप्रयथितेप्रकर्षेणसंहारंयातमिवपश्चा
मि श्रुतिरपिवाजसनेयसंहितास परीत्यभूतानिपरीत्यलोकान्
परीत्यसर्वाःप्रदिशोदिशश्च उपस्थापयप्रथमजामृतस्यात्मनात्मा
नमभिसंविदेश भाष्ये ऋतस्यसत्यस्यपरब्रह्मणःप्रथमजोप्र
थमजानंशिवलत्वेनोपस्थितोतत्रेउपस्थापयिष्यायमात्मनास्व
रूपेणकृत्वाआत्मानेअभितःसंविशप्रविष्टवान् किंकृता भूतानि
एथियादीनिपरीत्यअभिवाप्यलोकान्भूतिध्रुवः स्वरादीर्भदिशः
प्रदिशोश्चेतिनदत्त २- वनमाली टीका. ५

रथस्यापिभगवदिग्रहस्यामिमाह यावेतिप्रावाएथियोरितमे
तरितोहियवतयेकेनयामदिशस्यसर्वाः यासाःदृष्टादुतममेतवि
स्यकरमिदमुग्रदुरधिगमेमहातेजस्वितातवरूपमुपलभ्यलो
कत्रयेप्रयथितेमुत्पन्न भीतेजानेदेमहात्मन्साधूनामभयदायकं
आत्तमहत्वायनतपरिमाणानांसा मावशापकत्रलोकेविरुद्धापि
भगवत्सर्विषयशक्त्यानविरुद्धः विवित्रशक्तिः प्ररुषःपुशान इति
क्रमाश्रान्तिचैवेविवित्राय यतिसूत्रेणवभगवत्सर्विषयशक्तैरु
क्तवान् नवास्तत्वेसंसारितादिकमुपविषयशक्त्यासमावेश्यतामि
तिवाच्यं अविरोधोपपादकैश्चर्चाविरोधिनामेवसमावेशांगीका
रात् अस्तत्वादीनामेवविरोधित्वात् २-

रुसमवैजयन्तीटीका. ५

अथविस्वरूपसभगवतोविषयामिरूपतेनामज्ञमदुतेतरूपमव
लोकसर्वे विस्मिताःसत्रःप्रयथिताभवतितथाःरमणीयादद्यावे
तिदशभिः यावाएथियोरिति यावाएथिवीभ्यामुपलक्षितानामु
पर्ययःस्थानांसादिपातालांतलोकानामंतरैयत्रमवैपिलोका
स्तिष्ठन्नितत्सर्वमेतरितमेकैवतया यामंतथासर्वाः पूर्वदक्षिण

पश्चिमोत्तरदिशश्चकारादग्मादिविदिशोपि व्याप्ताः तव विश्वरूपसे
 दंनियेतावच्छेदशून्यं उग्रं भयावहं अद्भुतमदृष्टपूर्वमनेतायामवि
 स्ताररूपे विश्वकारं दृष्टोपलभ्य देमहात्मन् अपरिच्छेद्यवाच्यो नो
 ह्यने यद्वा स्वजनाभयकर इतः परमिदमुपसंहारमप्रापयः लो
 कत्रये लोकानां सर्गादीनां त्रये विपरिमिते यद्वा लोकानां मित्रमि
 त्तोदासीनानां त्रयमव्ययितममं तपीते दृष्टोपनेनार्जुनस्येव स
 रासरगोपवीदीनामपि भगवदंतर्दिष्टा दृष्टितं सूचितं १-

प्रकृतस्य भगवद् रूपस्य व्याप्तिमाह ॥ मधुसूदनी टीका १-

यावाष्टिद्योति दमंतरमंतरितं हि पवत्यैवैकेन व्याप्तं दिश
 च सर्वाः व्याप्ताः दृष्टाद्भुतममेत विस्मयकरमिदमुग्रं उरधिगमं
 महातेजस्विता तव रूपमुपलभ्य लोकत्रये प्रव्यथितं प्रमेतं भी
 ते जाते देमहात्मन् साधूनामभयदायक इतः परमिदमुपसे
 हार इत्यभिप्रायः

२- सदानंदी टीका ११

विश्वरूपभूता व्याप्तं यावाभूमोर्ग्रं दंतरे दिशः सर्वास्तथैकेन व्या
 प्तान्ते रूपमीदृशं १ अतिविस्मापकं दृष्ट्वा महातेजस्वतस्तव उग्र
 रूपमिदं लोकत्रये भीतमतीव च २ साधूनामभये देहि तं तव
 महात्मतया हरे २-

नीलकंठी टीका १२

एवेत्येकत विश्वरूपदर्शनेन कृतकमोभूत्वा तदुपसंहारमि
 च्छनं स्तोति यावाष्टिद्योति हि देमहात्मन् हि प्रत्यक्षं तया य
 केन ह दे यावाष्टिद्योति रंतरे मध्ये सर्वाः दिशश्च व्याप्ताः अतस्तवे
 दं अद्भुतं उग्रं रूपं दृष्ट्वा लोकत्रये प्रकर्षेण व्यथितं अतः परमिद
 मुपसंहरेत्यभिप्रायः २-

शानंदी टीका

सर्वसर्वव्यापकं परमेश्वरस्य रूपं निरूप्य ऊरुसंहारकं चोरं
 कालरूपं दृष्ट्वा २ ॥

रामकंठी टीका

अथ सर्वशक्तेः परमेश्वरस्य प्राक्तनं सैन्यं स
 हारप्रसूतकुलावशक्तियुक्तत्वाद्भारतविशि
 ष्टरूपं वर्णयिष्यामि महातारुण्यगगनभूम्यन्तर्गतं सर्वशुक्रं भस्मयैकेन व्याप्ताः
 तमाह ॥ हरितास्तदिदमीदृशियंतव चोरं रूपं दृष्ट्वा लोकत्रये त्रैलोक्यनिवासितं द

एतद्योग्यदेवादिह्येप्रवृत्तितेप्रकर्षेणाभीतमेवंमहात्मत्रितिरूपम
हत्वापेक्षामात्रं

तथा चावापृथिव्योरिदमंतरमंतरितम् तथा सर्वादिशस्त्रतयेकेनेश्वरे
गाविशदत्तमापन्नेन व्याप्तम् यजुक्तम् यस्याग्निशस्यो मूर्ध्नि खेना
भिस्मरणोत्तिनिः सूर्यश्चतुर्दिशः शोत्रे तस्मै लोकात्मने नमः प
वमिहैकस्थमिति विषाया प्रतिज्ञाते भगवतो पवर्ग्य अपुनायज्ञा
त्पट्टमिच्छसीति प्रतिज्ञाते तदेव सर्वशक्तेः परमेश्वरस्य ऊरुसं
नसंहारप्रसृतं कालाख्यं चोरेरूपमनुभूतं चरं वर्गायितमाह द
ष्टेति अद्भुतं विस्मायकमिदं दृष्टुं सर्वमपि अथ नापि पुनः स्फुर
दिवतवचोरेरूपं दृष्ट्वा साक्षात्कृत्य लोकत्रयं प्रवक्ष्यितमतिभीतं प
श्यामीति पूर्वगोवा न संगः हेमहात्मविश्वरूप २१ ॥ ॥

प्रकृतस्य भगवदुपस्य प्राप्तिमाह यावेति हे महान्मन्त्रहियस्मा
त् यावाष्टयिवोरिदमन्तरं अन्तरिक्षं मया भागः त्वया एकेन वि-
ष्टरूपेण व्याप्तं तस्या सर्वादिशस्त्रव्याप्तास्तव इदमुपेक्ष्यं अद्भुतं
विस्मयकरं रूपं दृष्ट्वा लोकत्रयं प्रव्यथितं भीतं चलितं च २०

अथ भगवतो द्यौरतरं रूपं वर्णयति यावेति यावा एयिव्योरिदं
यदंतरमवकाशस्तदवत्वैकेन सता सर्वतः केवलं न व्याप्तम
पित्तसर्वाश्च दिप्रोवकाश मयीदा अय्येकत्वेनैव व्याप्ता इति सर्व
व्याप्यव्यापकत्वलक्षणविशिष्टमिदमद्भुतमलौकिकवस्तु
संयन्त्रं तद्योयं द्यौरतरमधिंति तद्वृष्टमत्पवातिष्ठमपि ह्यं दृ
ष्ट्वा लोकत्रयं प्रच्ययिते प्रकर्षणाभयचलितं भवतीत्यर्थः २॥

रागवीरसमिद्धेयिनी॥

किंचानादिमध्यांतमनवच्छिन्नमदिमत्वादतयवानंतवीर्यमनं
तमविनाशिवीर्यं विष्ववीजाख्यं सामर्थ्यं यस्य शक्तिमत्त्वात्तथानं
तबाहुमनंतामर्थाद्वरदिताबाह्वोविष्वचनात्मका यस्य तमनं
तबाहुं शशिसूर्यनेत्रं ताभ्यामेव विगृह्यस्वहृयस्य चक्षुषात्वात्
दीप्तदुताशवक्रं दीप्तदुताशः प्रहृतवैशानरस्तद्वत्प्रदीप्तं वक्रं य
स्य तं तथेदं देहं द्रियादिसंवातात्मकं विष्वहृपं यतदपि स्वतेजसा
स्वप्रकाशेन तपंतं प्रकाशयंतमेतादृक्स्वहृपेराविष्वात्मानं त्वामि
दानीं यष्यामि साक्षात्करोमीत्यर्थः १५ ॥

मधुभाष्य

65/2

विषय सूची

प्रस्तावना

प्रथम अध्याय

द्वितीय अध्याय

तृतीय अध्याय

चतुर्थ अध्याय

पंचम अध्याय

षष्ठ अध्याय

सप्तम अध्याय

अष्टम अध्याय

नवम अध्याय

दशम अध्याय

अंश

प्रस्तावना

तमत्तरं परमे वेदितव्यं तमस्य विश्वस्य परं
निधाने तमव्ययः शाश्वतधर्मगोप्ता स
नातनस्त्वं पुरुषो मतो मे १५ ॥

शाङ्ख्यभाष्यटीका १

इतएव ते योगशक्तिदर्शनादनुमिनोमि तमिति तमत्तरं न तरती
ति परमे परं ब्रह्म वेदितव्यं ज्ञातव्यं मुमुक्षुभिः तमस्य विश्वस्य
मलस्य जगतः परं प्रकृष्टं निधाने निधीयते अस्मिन्निति निधाने प
रमाश्रय इत्यर्थः किञ्च तमव्ययो न च तव व्ययो वियत इति अव्ययः
शाश्वतधर्मगोप्ता शाश्वद्भवः शाश्वतो नित्यो धर्मस्तस्य गोप्ता शा
श्वतधर्मगोप्ता सनातनश्चिरन्तनस्त्वं पुरुषः परोमतोः भिद्येतो मे
मम १५

आनन्दगिरिकृतटीका २

सप्रपञ्चे भगवद्रूपे प्रकृते प्रकरणविरुद्धतमत्तरमित्यादि निरु
पाधिकवचनमित्याशङ्काद् इतएवेति योगशक्तिरैश्वर्यातिशयः
नत्तरतीति निःप्रपञ्चत्वमुच्यते परमपुरुषार्थत्वात् परमार्थत्वाच्च
ज्ञातव्यत्वे यस्मिन् योः पृथिवीत्यादौ प्रपञ्चायतनस्यैव ततो निरु
ष्टस्य ज्ञातव्यत्वप्रवणत्वात् कुतो ब्रह्मणो ज्ञातव्यत्वं तत्राह तमस्येति
निःप्रपञ्चस्य ब्रह्मणो ज्ञेयत्वे हेतुन नरमाह किञ्चेति अविनाशि
त्वात्तदेव ज्ञातव्यतातिरिक्तस्य नाशित्वेन हेयत्वादित्यर्थः ज्ञानकर्मा
त्मनो धर्मस्य निमित्ते वेदप्रमाणकत्वे धर्मस्यापनयनार्थाय सभ
वामीत्युक्तत्वाद्भेदात्तस्मिन् १५

स्वामिकृतटीका ३

यस्मादेवं तवा तर्कमैश्वर्यं तस्मात् तमत्तरमिति तमेवात्तरं परमे ब्रह्म
कथं भूतं वेदितव्यं मुमुक्षुभिर्ज्ञातव्यं तमेवास्य विश्वस्य परं निधाने नि
धीयते स्मिन्निति निधाने प्रकृष्टाश्रयः अतएव तमव्ययोनित्यः
नित्यस्य शाश्वतस्य धर्मस्य गोप्तापालकः सनातनश्चिरन्तनः पुरुषो मम स
तोमि १५

पेशाचभाष्यटीका ४

श्री
मी. टी.
प

स्यष्टार्थ १५

रामानुजभाष्यटीका. ५

तमिति उपनिषत्संदेहवेदितव्ये विद्येत्यादिषु वेदितव्यतया निर्दिष्टं पर
ममत्तरं तमेव विषयस्य परं निधानं विषयस्यास्य परमाधारभूतस्त्वमेव त
मव्यर्थे चरितः यत्स्वरूपो यत्तुणो यद्विभवस्य त्वेतेनैव रूपेण सर्वदा
वतिष्ठुं स्यात्तथर्मगोप्ता स्यात्तस्य नित्यस्य वैदिकस्य धर्मस्यैवमादि
भिरवतारैस्त्वमेव गोप्ता सनातनस्त्वं पुरुषो मतो मेवेदाह मे तं पुरुषं म
होते परात्परं पुरुषमिमादिष्टादितः सनातनः पुरुषस्त्वमेवेति मेमतः
यत्कुलनित्यकस्त्वमेवेभूतैरिदानीं साक्षात्कृतो मयं तथैः १५

अभिनवग्रन्थतटीका. ६

यत्संक्रियाज्ञानयोरुभयोरपि भेदापत्तिभासात्मकं परमगुरौ महा
देवेर्पातं तथा सनातनं प्रकाशरूपं शीले सतत्त्वे विद्यते येषां तेषां
त्वाः तेषां धर्मो न वरतग्रहणं स्यात्तत्परत्वात् तद्विस्तारविषयः
सकलमार्गोत्तीर्णसंगोपायते यत्तदेवात्राध्यायैरहस्यं प्रायशो देवी
स्तोत्रविहृतौ मया प्रकाशितं तत्संस्तुतव्यैः सोपदेशैः स्वयमेवावगम्य
ते इति किंपुनः पुनः स्फुटतरप्रकाशनवाचालतया १६

परमार्थश्रवणटीका. ७

अथायमेव तमेवाह तमत्तरमिति न तत्तरतीत्यतरेपरं ब्रह्म तमे
व परममासेति के वेदितव्यं मुमुक्षुभिर्ज्ञातव्यं यस्मिन् ज्ञाते सर्वमि
दं विज्ञाते भवतीत्यर्थः तमस्य दर्शमानस्य विषयस्य परं उत्कृष्टं निधा
नं निधीयते यस्मिन् पुरुषस्य श्रयः श्रय्यो नित्यः शाश्वता ये सो
एवं विधस्त्वं पुरुषः पुरुषो ज्ञातो मम मृतः किं वस्त्वं ज्ञातमात्रं हि सा भया
दृष्टान्निवृत्तेन कालरूपपरमेष्ठिनं दर्शयति प्रार्थनं प्रार्थनं पात्रैर्लोक्य
हिंसापिमप्येवकारितेनिसममानः पश्चात्तापमनुवदन्नाह अनादी
ति १७

वनमालीटीका. ८

सकलकृति सर्वसंतमेवेत्याह तमिति तमेवात्तरं न तत्तरति स्वरू
पतो धर्मतो देह तस्य नाशादिविकाररहितं परमं वेदितव्यं मुमुक्षु
भिर्वेदातश्रवणादिना तमेवास्मिन् विषयस्य परमुत्कृष्टं निधीयते सि

वित्तिनिधानमाश्रयः त्वमवयः सदैकाकारः शास्त्रतत्त्वानि सवेदप्रति
पाद्यतयास्य धर्मस्य गोप्तापालयिता अतएव सनातनश्चिरंतनः पुरु
षोत्तयोमीश्वरानेन गुणोयः परमात्मा स एव त्वं वसुदेव तनय एव भू
तो मे स मायमतो विदितोसि १८

रुसुमवैजयन्तीटीका ५

एवमविद्यानेता तर्कमहिमत्वेन परमेश्वराधारणेन गुणेन भग
वन्ते निश्चिन्नाद त्वमन्तरमिति अथ परमया तदन्तरमधिगम्य
ते यत्तदृशेपदे विद्ये वेदितव्ये इत्यादि वेदान्तवाक्यैर्मुमुक्षुभिर्वेदित
व्ये ज्ञातव्ये परमं सर्वपरं यदा परा सर्वोत्कृष्टा मालंस्त्रीशोभाविद्य
ते यस्य तत् अन्तरे नित्यं ब्रह्मस्वरूप त्वमेवासि प्रत्यक्षे तनाचेतनात्म
कस्य विश्वस्य परंप्रकृष्टनिधाने निधीयते स्मिति विधानमाश्रयः
त्वमेवासि अतएव अययः व्यपारहितस्वरूपगुणाशक्तिविभवा
त्वमेव शास्त्रतत्त्वानि सवेदोक्तधर्मस्य गोप्ता एव मादिभिरवता
रैः पालयिता त्वमेव यदा देशास्ते नित्येति संबोधने सनातनश्चिरं
तनः पुरुषोयः परमात्मा स इदानीय उक्तलोभो धिजातोऽराजत्वमेव
मे स मायमतो विदितोसि १८

एवं तवा तर्कणीय निरतिशये श्रयद स मुसुदनीटीका १० श्रीनाद उमिनोमि ॥
तमेव अन्तरे परमं ब्रह्म वेदितव्यं मुमुक्षुभिर्वेदोत्तश्रवणादिना त्वमे
वास्य विश्वस्य परंप्रकृष्टं निधीयते स्मिति विधानमाश्रयः अतए
व त्वमवयोनित्यशास्त्रतत्त्वानि सवेद्यप्रतिपाद्यतयास्य धर्मस्य गो
प्तापालयिता शास्त्रेति संबोधने तवा तस्मिन् त्वमेवो विनाशिरहि
तः अतएव सनातनः चिरंतनः पुरुषोयः परमात्मा स एव त्वं मे
मतो विदितोसि १८

॥ सदा तं दी टीका ११

एवं तवा तर्कणीयते जपे श्रयदशानात् इत्यंशासोऽप्यावुद्या
सम्पगनुमिनोम्यहं १ त्वमन्तरे परं ब्रह्म वेदितव्यं मुमुक्षुभिः वेदा
द्यादिषु तैः सम्पवेदोत्तश्रवणादिना २ विश्वस्यास्य समस्तस्य परो
त्कृष्टत्वमाश्रयः अतएवास्मिन्नित्यं शास्त्रास्य ताथम्यं रतकः ३ धर्म
स्य नित्यवेदेन प्रतिपाद्यतयास्य त्वं हि पालयिता नाशमूल
स्माच्चिरंतनः ४ परमात्मासि पुरुषो विदितो मे परात्परः ५ १८
नीलकंठी टीका १२

श्री.
मो. टी.
टी.

एवं तव योगैश्चर्यदर्शनात्त्वामेव मेवमीति वदन्न प्रमेयत्वमेव विवृ-
णोति त्वमिति परमं अतरे अतरे अस्मत्तादिलक्षणं अतरे ब्रह्मप-
रममित्यत्र प्रागुक्तं निष्कलत्रत्वात् तदेव त्वमसि एतेन सगुणरूपस्य
निर्गुणत्वापकत्वमुक्तं शाखाप्रसवे चैव ज्ञापकत्वं अतएव वेदित-
व्यं वेदात्तप्रमाणेन ज्ञातव्यं योऽस्य न तूपासनीयं सगुणं ब्रह्मापि त्वमेव
त्याह त्वमस्येति निधानेन तस्य स्थाने एतेन कारणत्वमुक्तं अथायः
अमृतः देवतात् शाश्वतस्य वेदिकस्य धर्मस्य गोप्तृत्वं न कारयेत्
लभूतस्तिरूपगर्भरूपत्वमुक्तं सनातनस्थिरतनोनादि पुरुषो-
जीवात्मा सोऽपि त्वमेव मे मममतः एवं विश्वरूपदर्शने जीवब्रह्म
णोरैक्यं शाखाव्याचरेद्वाधिगम्यत इत्युक्तं १८

यथा कश्चित् तदेव प्रत्यक्षीकृत्याह ॥

ग्रान्दीरीका

तत्सदिति निर्देशादतिवत्प्रमाणोक्तेः सदिति ब्रह्मनामतद्विद्यते यस्य
त्रितिसत्त्वात् परमेश्वरः स देवतायेषां तस्मात्तताः ब्रह्म विरेकेषोऽथ
र्मस्य ज्ञानकर्मसमश्च यावत्तुष्टानस्य गोप्ता मतो मेऽति यत्त्वया तौ दि-
यं व्याख्याते तदयं सर्वं मया प्रत्यक्षीकृतमित्यर्थः १८

अतएव परमेश्वरप्रतिपादकानि विशेषाणां

रामकंठीरीका

नित्यरूपस्य प्रतिपादयितुमाह ॥

अतरे स्वरूपप्रच्युतिलक्षणलोभरहितं यत्परमं निरुत्तरं वेद्यं ज्ञेयं
तत्तद्वाच्यं तथा स्थानेन तत्प्रपञ्चस्य जगतः प्रकृष्टं निधानं तस्यैव सर्वं त-
जगन्निविष्टं न त्वं स्ति जगतो निधानं प्रधातव्यं तत्तत्प्रलये निधीयते
सत्यमस्ति तत् प्रधाने तदपि परमकारणो भगवति निधीयते तत्तत्प-
चप्रभवतीति प्रधानस्यापि निधानत्वात् परमं निधानं जगतः इत्युक्तं
तथा कालावच्छेदाविषयतादव्ययोल्लयः सात्त्वतयर्मगोप्ता तसदि-
ति ब्रह्मनाम यद्व्यतिष्ठेत् तत्सदिति निर्देशो ब्रह्मणास्ति विधः स्मृत इति
तद्विद्यते यस्य सत्तात्पर्यं परमेश्वरः परं ब्रह्म स देवतायेषां तस्मात्तताः ब्रह्म वि-
रेकेषोऽथ मर्मो यथा प्रतिपादितं ज्ञानक्रियासमश्च यावत्तुष्टानरूपः सदा वा-
रस्तस्य गोप्ता कालापचयवशात् तिरो भवतः पुनः पुनः प्राणायनात्त-
दायकविज्ञविचरणादूरसिता त्वमेव ॥

मधुभाष्य

अस्मिन्वावापि वीप्रंतरेव समाहिते उभावपि श्रवायु
श्रुत्योचंद्रमसावुभाविति कृत्स्नस्य गभजगतोभिभुव
सन्नयासिप्रद्वयविरुग्गाफणातपत्रमिति वभागवते
नवेतदयुक्तं अविन्यशक्तिवादी चरस्य अविन्याखलुय
भावानतांस्तर्कैरायोजयेत् इति च श्रीविष्णुपुराणे नैषा
तर्कैरामतिरायनेयेति वस्तुतिः अतिप्रसंगस्तु मदाताय
यवशाहुक्यबलाच्चायनेयः नदिचटवत्कश्चिदपि पदा।
यो नदृष्ट इत्येतावता प्रयाणदृष्टः सति रात्रियते केषु वि
त्यदोषेषु वाक्यवस्था अविन्यशक्तिवाभावादंगीकीयते
गुणाः शुताः सुविकृष्टाश्च देवसंस्तुता अपि नैवात्र प्रांका
विन्या अविन्याश्च तथैव दोषाः शुताश्च नैर्दितया प्रती
ताः एवं चैत्यश्च शुताश्च तानां गुणा गुणानां च क्रमाद्यवस्थे
ति जावालविलेपु उपाचारतपरिदरायतमध्यमिति
अन्यथाः यताभावेनैव तत्सिद्धेः विषयद्वयः पूर्णद्वयः स
विषयद्वयोऽनूनद्वयो यतोयं सो नंतो नदिनाशो क्तितस्येति
प्रादित्यशक्त्योऽं अनलार्कमुतिः मितप्रांका मया करं
ति अप्रमेयमिति प्राशिसूर्यनेत्रमित्यप्यदेकतुदित्यादि
वत् तदंगजाः सर्वसरादयो पितस्मात्तदंगेष्टु विभिन्नता
स्तद्व्यवेदविलेपु चंद्रमा मनसोजातश्च दोः सूर्योऽप्रजा
यतेति च बहुद्वयत्वात् बहुश्रुतं च तेषां युक्तं मातापित्रो
रंतरंगः सपथ एकद्वयेरावायैः सर्वगतः सपथ इति
वारुणश्रुतेः एकैनेव द्वयेरावावापि व्यो रंतरव्याप्तो भ
वति पथपमेपार्थद्वयाणि इति बहु निद्वयाणि प्रतिज्ञातानि
मातापितरोऽपि वीद्यावो मनोमता एधि वीडमतीयात् स
ध्वोरस्तनः पितेत्यादिप्रयोगात् ननु नियमतो भयप्रदंत

65/3
स्वरूपं नारदस्य तदभावात् केवां वितथादर्शयति भगवा
नृर्मायंतिके वितस्य दृष्टौ विभेति कश्चिदभ्यसे सर्वत
मिति वा रुपाणां वा न तत्सर्वं यथं प्रति अदृष्टा पि
तन्निद्रूपभये दृष्टया प्रतिभाति तथा च गौतमविलेख
दृष्टा देवं मोदमाना अदृष्टा पतद्भयादिभ्यो दृष्टवते य
थं प्रति तस्य स्वस्वमुखात् तस्मिन्नेव ते मनसो गतत्वा
दिति यमोतरज्ञानार्थमेव को भवानिति पृच्छति यथा क
श्चि किं विज्ञानादिकं ज्ञानत्रयि जातिज्ञानार्थं पृच्छति
कस्मिन्मिति यदि तदेव न जानाति तर्हि विस्वाविति संबोधनं
स्यात् तमक्षरमित्यादि च ॥ २० ॥

भाषा अनुवाद

और हे महात्मन् स्वर्ग औ पृथिवी तथा अन्तरित और सकल
दिशा एक आपसे व्याप्त हैं सो यह उग्र रूप आपका देखिके
त्रैलोक्य भय खाता है २-

वैयर्थ

भूमि प्रकाश दोउ अभिन्नतर एक तो सें सभ व्याप दिशंतर
तवि प्रसर्व रूप तव पर हरि भय देखी लोक नय जेहा २-

65

अमीहितोसरसेचाविशानि केचिद्गीताः प्रा
ज्जलयोगटणानि स्वस्तीसुक्तामहर्षि
सिद्धसेचा वीतने त्वोस्तुतिभिः पुष्कलाभिः

२१

प्रादुरभाषटीका. १

अथाधुना पुरा यद्वा ज्ञेयम् यदि वानोजये पुरिति अर्जनस्य से
शयप्रासीत् तत्रिणियाय पाण्डवजयमेकान्तिकं दर्शयामीति
प्रहृतोभगवान् ते पश्यन्नाह अमी हीति किञ्च अमीहि पुष्पमा
नायोधारस्तो सरसेचा येन भूभारावतारायावतीर्णा वस्त्रादिदे
वसेचामनुष्णसेस्यातां विशानि प्रविशन्तोदृश्यन्ते तत्र केचिद्गी
ताः प्राज्जलयः सन्तोदणानि स्तवन्ति तामसे यत्तायनेष्यताः
सन्तोपुडै प्रत्ययस्थिते उमातादिनिमित्तास्यतस्य स्वस्त्वजग
तस्तुक्ता महर्षिसिद्धसेचाः महर्षीणाञ्च सिद्धानाञ्च सेचाः स्त
वन्ति त्वोस्तुतिभिः पुष्कलाभिः सम्पूर्णभिः २१

आनन्दगिरिकृतटीका. २

अमीहीत्यादि समनन्तरग्रन्थस्य तात्पर्यमाह अथेति तं भगव
न्ते पाण्डवजयमेकान्तिकं दर्शयन्ते पश्यन्नेनोब्रवीतीत्याह ते
पश्यन्ति विस्वरूपस्यैव प्रपञ्चनार्थमनन्तरग्रन्थजातमिति द
र्शयति किञ्चेति असरसेचाइति पदं स्थित्वा भूभारभूताउद्योध
नादयस्तां विशन्तीत्यपि च वक्तव्यं उभयोरपिसनयोरवस्थिते
षु योशुकामेष्वान्नरविशेषमाह अथेति समरभूमौ समागतानो
षु दृष्टकामानो नारद प्रभृतीनां विस्वविनाशमाशङ्कमानानां ते प
रिनिर्हीयतां स्तुतिपदेषु भगवद्विषयेषु प्रहृतिप्रकारं दर्शयति
पुडइति २१

स्वामिकृतटीका. ३

किञ्च अमीहीति अमीसरसेचाभीताः संतस्तां विशन्ति शरणां प्रविशं
ति तेषामप्येकेचिदतिभीताश्चरतएवस्थिताः कृतसंपुटकरपुग
लाः संतोदणानि जयजयरत्नरत्नेति प्रार्थयेते स्पष्टमन्यत किञ्च

विशाचभाषटीका. ४

श्री
गी.टी.
प

स्पष्टार्थे २१

अमीहीति अमीसर संचाउते कृष्णां विष्णां प्रयमवलोक्य रूपं
मनसस्ततसमीपं विशंति तेष्टेव केचिदमदुतं चतवाकारमवलोक्य
काभीताः प्रोक्तलयास्तानां गुणं स्तुतिपूजाणि वाक्यानि गुणानि उ
च्चारयेति अथ परमहर्षि संचाउते परावरतज्याणां त्पविदः स्वस्तीत्य
लापकलाभिर्भगवदनुत्तरीभिस्तुतिभिः स्तुवंति २१

स्पष्टार्थे २१

अभिनवगुप्तकृतटीका २

परमार्थप्रपाटीका ७

तदेवाह अमीहीति सरसंचादेव समूहात्स्वामिभीषणं टस्मा
रतः परं कर्तव्यमिति याकुलचित्तास्वामिव प्रविशंति तथार्ये
भीताः संतः प्रवेष्टमशक्तास्तद्भवद्वानलिपुटाग्रस्मान् रत्तरत्ने
तिसकरुणोत्पत्तिं तथामहर्षयस्सिद्धसंचागंधर्वचारणादय
स्त्वानिलोकीप्रभुमत्वास्वस्तीत्याशीवेवनमुक्तात्तं पुष्कलाभिर्हीतो
भिः स्तुतिभिः स्तुवंति एतदर्थे नौधसं समास्ति तेषां दस्समष्टौषह
वसोर्मंदानमंथसः अभिवत्स काससरेषु धेनव इंद्रेगीभिर्नवा
मरुदिति भाष्ये नौधाऋषिः इंद्रे परमात्मानं स्तोति देवतिर्यज
मानं दस्संदर्शनो यैऋषीषहं ऋषीषावाधकास्तेषामभिभविता
रे पुनः कीदृशं वसोर्दुःखसत्वा सपितारमाह्लादके तथार्थं धसः
सोमलक्षणास्त्रस्य पादो नमंदानं मोदमानं तादृशमिंद्रेगीभिः
स्तुतिलक्षणाभिर्हीति अभिनवामदेष्टुमिष्टुमः अभितः प्राह्वयामः
कुत्र स्वसरेषु दिवसेषु वपमभिष्टुमः तत्र दृष्टानः वत्स यथानवप्र
स्तुतिकायेन वः स्वसरेषु सष्टु अस्ते प्रीयेते गावो जेति स्वसराणि गो
ष्ठानि तेषु वत्समभिलक्षणाहं पतितहृत्परमं प्रमास्य देतामि त्यर्थः ॥ २१

वनमाली टीका ८

अथुना भूभावावत रणमात्मनः प्रकटयेते भगवन्ते पश्यन्नाह अमी
हीति अमी हि सरसंचावस्वादिदेवगणा भूभावावतारार्थं मनुष्य
रूपेणावतीर्णा पुष्टमानाः संतस्ता तां विशंति प्रविशंती दृश्यते
एवमसरसंचा इति पदद्वयेन भूभावरभूता उच्येदनादयस्त्वविशं

नीत्यपिवाचं एवमुभयोरपिसेनयोः केचिद्दीताः पलायनेषुशक्ताः से
नः प्रोजलयो गतं तिस्रवन्ति तं एवं प्रसपस्थिते पुद्गे उत्पत्तादिनि
मितासु पलस्य स्वस्त्वसर्वे सजगत इत्युक्ता महर्षिसिद्धसेवानारदा
या पुद्गदर्शनाय मागता विश्वविनाशपरिहाराय सुवन्ति तस्मिन्
भिर्गुणोक्तं कर्मप्रतिपादिकाभिः पुष्कलाभिः परिपूर्णार्थाभिः २१

रुसमवेनयन्तीटीका १५

भूभारसंहारार्थं मुच्यते विश्वाश्रये भगवन्तमवलोक्य सभयः सत्राह १
अमीहीति अमीये पुद्गदिदृश्यागताः स्वस्वलोके पवास्थिता वा भगव
त्स्वरूपस्यावाप्येयोरित्युक्तप्रकारेण सर्वलोकव्याप्तिना तसुरसे
वात्रमिश्रोद्वादिदेवसमूहाः असुरसंघा इति पदद्वये प्रत्यादवलिप्र
भृतिका सुरगणाः हि शब्दानुनिमानवादयस्त्वा सर्वोक्तं विश्वाश्र
यमूर्तिनामवलोक्या हि हर्षमनसः सतो विश्वसि तच्छरणं प्रविश
निकेचितेष्टो मध्ये तत्स्वरूपप्रवृत्तिकारणानभिज्ञाः भीताः अथैववि
स्रप्रलयो भवतीति मंसकम्भययुक्तः पलायनेषु नवायावसराः
प्रोजलयः कृतसेपुटकरयुगलाः संतो गतं तिपादिपादिप्रभो विश्व
मिति प्रार्थयन् इत्युच्चारयन्नि विश्वविनाशनिमित्तामवलोक्य सर्वस्य
जगतस्वस्त्वस्मिन् सकाम महर्षिसिद्धसेवाः महर्षयो ये देवर्षिब्रह्मर्षि
राजर्षादयः सिद्धा ये च यर्मपुत्रकपिलासुरवोदयश्च शिवा दयस्तेषां
महर्षिसिद्धानां संघास्समूहास्ते पुष्कलाभिः परिपूर्णमिस्त्रुतिभि
र्भगवदनु रूपगुणोक्तार्थाभिर्वाग्भिर्वा विश्वाश्रये सुवन्ति २१

अधुना भूभारसंहारकारित्वमात्मनः सधुसूदनीटीका १५ प्रकटयन्ते भगवन्तं पश्यन्नाह ॥

अमीहिसुरसंघावस्वादिदेवगणाः भूभारावतारार्थं मनुष्यरूपेण
वतीर्णाः युष्मानाः संतः त्वं विश्वेति प्रविशे तो दृश्यं त एवमुक्तं प्र
कारेण असुरसंघा इति पदद्वये देन भूभारभूता उयोथनादयः त्वं
शान्तीत्यपि वक्तव्यं एवमुभयोरपि सेनयोः केचिद्दीताः पलायनेषु
शक्ताः संतः प्रोजलयो गतं तिस्रवन्ति तं एवं प्रसपस्थिते पुद्गे उत्प
त्तादिनिमित्तासु पलस्य स्वस्त्वसर्वे सजगत इत्युक्ता महर्षिसिद्ध
सेवाः नारदप्रभृतयो पुद्गदर्शनाय मागताः विश्वविनाशपरि
हाराय सुवन्ति तस्मिन् तिभिर्गुणोक्तं कर्मप्रतिपादिकाभिः
परिपूर्णार्थाभिः २१

सदानेदीटीका १५

श्री-
गीटी-
पे

अथ भूभारसंहारकारिवेत्तात्मनः परंपश्यन्कटयंतं श्रीभगवंतमु
वाचर १ भुवोभारावताराद्यं देवसंवाः सहस्रशः नृदूषेणावतीर्णा
मेषु ध्यमाना विशंतिते २ त्वामेवा सुरसंवाः सुडर्वो यनमुत्वा नृपाः
दृष्टंते प्रविशंतो जभीताः प्रोजलयो विभुस्त्विति वापरे शाक्ताः संतो
पुत्रपलायने उपातादिनिमित्तानि सुपलभ्य महारणे स्वस्त्व
सर्वभूतेभ्यः सुचार्यपुनः पुनः महं धीर्लोचसिद्धानो समूहास्त्व
वेति च स्तुतिभिः परिपूर्णाभिर्गुणैरेष्येवोयं कैः २१

यथा मेवाह श्रीमती निलकेटी टीका १२
उद्योयनादयः कायतेगाः पावकमिव अट्टपूरिताः विशंतितम
ण्येस्यः केचिद्भीताः प्रोजलयो वहां जलयो गतानि स्त्विति २१

ग्रानंदरीटीका उपक्रमं २१ लोकत्रयस्य यथा मेवाह ॥

नेषां देव ज्योरा नो तथा विधिरूपदर्शनं भगवन्कटीटीका येन त्रैलोक्याः प्रतिपादयितुमाह ॥
श्रीमद्यस्मात्तुष्टलयाया विहृतदारुणाकारं शक्रादिदेवसमूहा विशं
तितये वलीयंते केचिद्भीताः संवस्ताः संतो विरवितकरं पुष्टां गति
स्तुतौः पठन्ति अतश्च महर्षि संवा मुनिप्रवरसार्था जगत्ते मायस्त्विति
शब्दमुच्चार्य प्रकलाभिर्मूर्त्यार्थात्संवहाभिः स्तुतिभिस्तत्त्वरितो
दीर्गोक्तोक्तं वेति प्रशंसंति किंच २१

लासिकी **दशरूपरीटीका**

तथाहि श्रीमत्प्रत्यक्षं भासमानाः सुरसंवाः समाया नयनास्त्वो विशंतिसमा
वेशेनासादयति तत्सम्येपि केचिद्भीताः संतः प्रोजलयो वहां जलय
स्त्वो कालं दृष्टं गतिं जयजय रत्नं वेति प्रार्थयन्ते तथा महर्षीणां
मारदादीनां सिद्धानां कपिलारीनां च समूहाः स्वस्त्वस्तु जगत् इति उ
क्ता प्रकलाभिः श्रेष्ठाभिः स्तुतिभिस्तत्त्वरितो दीर्गोक्तो प्रशंसंति २१

पंचोलीटीका

इदानीं पूर्वयदि वा जयेम यदि वा नो जयेयुरित्यर्जनं न स्पृज्या जयसः
शायविषयवचनं तत्र निर्णयाय पांडवेश्वर्येकां जयं दर्शयंतं भगवं

तेष्वनर्जुनघातः श्रीहीतिहियस्मादमीमुद्यमानाः योथाः
 सरसंघावस्वादिसमूहाभूभा रावता रायमनुष्यरूपेणावतीर्णाः
 त्वाविशानित्वयिप्रविशंतो दृश्यंते तेषां मध्ये केचिद्भीताः प्रांजलयो
 यृणोति महर्षिसिद्धसंघाः महर्षीणां भृगवादीनां सिद्धानां कपिला
 दीनां संघाः समूहा उत्पातादिनिमित्तामुपलक्ष्य जगतो विस्मया
 कल्याणप्रेमवः स्वस्तीमुत्काशकलाभिः संपूर्णाभिस्त्वहुणा की
 र्त्तनलक्षणाभिः स्तुतिभिः स्तुतुर्वेति २१

रागवीरसमिद्धोधिनी॥

अथ भगवतो ह्योरूपस्य दैवी स्तुतिं विवक्षोरर्जुनस्य प्रार्थनामाह
 श्रीमीति श्रीसरसंघादंशदयोपि द्विषाद्वा प्रसिद्धे यत्तद्द्वोरतरं
 दृष्टं दृष्ट्वा विप्रंति त्वजे जसि प्रविशंतो दृश्यंते तत्र केचित्सरा
 भीताः प्रांजलयः पलायने समर्थत्वात् त्वामेव दृष्टुं तिष्ठन्वेति त
 या महर्षयः सिद्धसंघाश्चैतद्द्वोरतरं रूपदर्शनेन भीता इव जग
 तो र्यस्वस्तीति स्वस्त्ययनमुक्ताश्चारयित्वेति स्वस्त्ययनपूर्वाभिः
 पुष्कलाभिः संपूर्णाभिः स्तुत्यार्थं प्रतिपादिकाभिरुक्तांस्तुवन्ति तत्र
 स्वरूपलक्षणा निप्रतिपादयन्तीति भावः २१॥

मधुभाष्य

1. The first part of the text discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions, including sales, purchases, and expenses. It emphasizes the need for regular audits and the use of standardized accounting practices to ensure the reliability of the financial data.

2. The second part of the text focuses on the role of the accounting department in providing timely and accurate financial information to management. It highlights the importance of clear communication and collaboration between the accounting team and other departments to ensure that all financial data is properly recorded and reported.

3. The third part of the text discusses the impact of technology on accounting. It notes that the use of accounting software and digital tools has significantly improved the efficiency and accuracy of financial reporting. However, it also emphasizes the need for ongoing training and education to ensure that accounting professionals are up-to-date with the latest technological advancements.

4. The fourth part of the text addresses the challenges faced by accounting professionals in the current business environment. It notes that the increasing complexity of financial transactions and the need for real-time reporting have made the accounting function more demanding than ever. It suggests that accounting professionals should focus on developing strong analytical skills and maintaining a high level of integrity in their work.

5. The fifth part of the text discusses the future of accounting. It predicts that the continued use of technology and the growing importance of data analytics will shape the future of the profession. It suggests that accounting professionals should embrace these changes and focus on providing value-added services to their organizations.

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

[The text in this block is extremely faded and illegible.]

भाष्य अनुवाद

और ये सम्पूर्ण देवता भय पाय तमारे शरणागत है और
कोई शक्ति भीत होय हूर लड़े कर जोड़े जय जय रत्न रत्न
पुकार प्रार्थना करते हैं और महर्षि तथा सिद्ध संच तम को
देवते स्वस्ति वचन उ चारते हूये सम्पूर्ण स्तुति में स्तुति कर
ते हैं २१

चौपई

सुरसमूह यदतोदि प्रवेसें कोइक वस्तु कर जोउ विप्रोसें कहे
स्वस्तिमहाऋषि सिद्धसमूह स्तुतहि तोहि सुभस्त्विति करजूह
२॥

70

[Faint, illegible handwritten text]

30/01/2017

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

रुद्रादित्यावसवो ये च साध्याविश्वेऽश्विनौ
मरुतश्चोष्मणाश्च गन्धर्वयतासरसिद्धसे
चावीतन्ते तौ विस्मितास्तैव सर्वे २१

शाङ्ख्यभाष्यटीका १

किञ्चात्मन् रुद्रेति रुद्रादित्यावसवो ये च साध्यारुद्रादयोगाणाः
विश्वेऽश्विनौ विश्वेदेवाः अश्विनौ च देवौ मरुतश्च वायवउष्मणा
श्च पितरोगन्धर्वयतासरसिद्धसेचाः गन्धर्वाहोहाहूहूप्रभृतये
यताः कुबेरप्रभृतयः असुराविरोचनप्रभृतयः सिद्धाः कपिला
दयस्तेषां सेवाः गन्धर्वयतासरसिद्धसेचास्ते वीतन्ते पश्यन्ति
ता तौ विस्मिताः विस्मयमापन्नाः सन्ततयव सर्वे २१

आनेदमिदिकृतटीका २

दृश्यमानस्य भगवदप्यस्य विस्मयकरते हेतुनरमाह किञ्चेति
त एवोक्तारुद्रादयः सर्वे विस्मयमापन्नास्तौ पश्यन्तीति सम्ब
न्धः २१

स्वामिकृतटीका ३

रुद्रेति रुद्राश्चादित्याश्चवसवश्चयेचसाध्यानामदेवाविश्वेदेवाश्च
श्विनौदेवौमरुतस्तमरुद्गणाः उष्मणोपिवेतीति उष्मणाः पित
रः उष्मभागादिपितर इति श्रुतेः सृष्टिश्च यावउष्मा भवेदन्नेया
वदन्ति वाग्यताः पितरस्तावदन्ति यावन्माताहविर्गुणा इति
स्यता गन्धर्वोष्मसराश्चविरोचनादयः सिद्धानोसेचाश्चतेसर्वे
वह्निविस्मिताः संतस्तावीतन्त इत्यन्वयः २१

पिशाचभाष्यटीका ४

रुद्रादित्येति विश्वेदिविश्वेदेवाः उष्मणाः पितरः २१

गमाचुजभाष्यटीका ५

रुद्रेति उष्मणाः पितरः उष्मभागादिपितर इति श्रुतेः एते सर्वे
विस्मयमापन्नास्तौ वीतन्ते २१

अभिनवगुप्तकृतटीका ६

स्पष्टार्थ २१

श्री-
गीटी-
ये

अथ केचन च कितने न लो परमार्थ प्रपाटी का ७ तम शब्दात् स्त्री तस्यु रित्याह ॥
रुद्रादिमा इति रुद्रा एकादश आदित्या दश वसवोष्टोमे च साध्या
विश्वे देवा अश्विनौ मरु रुद्राः दुष्पापि वेति ते दुष्पापाः पितरः
तः गंधर्वे यक्षा स्रगा सरसि हस्तं यश्च तदर्शनादि स्मिताः सेत
स्त्वोवी संते तू स्त्री मवलो क्य स्थिताः

वनमाली टीका. ६

रुद्रा आदित्याश्च वसवो ये च साध्या नाम देवगणा विश्वे तस्य विभ
क्तिक विश्वदेव शब्दाभ्या मुच्यमाना देवगणा अश्विनौ द्वौ मरुत
एकोनपंचाशदेवगणाः दुष्पापाश्च पितरः गंधर्वाणां यक्षाणां
मस्रगाणां सिद्धानां संचः समूहा वी संते पश्यंति तात्तां दृष्ट्वा दु
तदर्शनात्ते सर्वे सर्व एव विस्मिताश्च विस्मयमलौकिक चम
त्कारविशेषमापद्यंते च २२

रुसमवेनयन्ती टीका. ६

किंच रुद्रादिमा वसव इति ये रुद्रा एकादश रुद्रगणा आदित्या द्वाद
श स्रगाणाः वसवोष्टो वसुगणा ये च साध्याः साध्या नाम देवगणाः
ये च विश्वे सम विभक्तिक विश्वदेव शब्दाभ्या मुच्यमाना देवगणाः
यो चाश्विनौ नाम सप्तदशौ मरुता ये चैकोनपंचाशदेवगणाः ये चो
ष्पापाः पितृगणा दुष्पाभागा हि पितर इति श्रुतेः यावत्संभवे दत्रेता
वदंति वाग्यताः पितरस्तावदंति यावत्त्रोक्ता हविर्गुणा इत्या
दिस्ते श्रुते गंधर्वे यक्षा सरसि हस्तं संचाः ये च गंधर्वाणां यक्षाणां मस्र
गाणां विरोचनादीनां सिद्धानां संचा समूहा पते सर्वे एव त्वोवी संते
पश्यंति च पुनस्तदाश्च दृष्ट्वा विस्मिता विस्मयमलौकिक चमत्का
रविशेषमापद्यंते २२

मधुसूदनी टीका. १-

किंचान्यत् ॥ रुद्रा आदित्याश्च वसवश्च ये च साध्या नाम देवगणाः विश्वे तस्य वि
भक्तिक विश्वदेव शब्दाभ्या मुच्यमाना देवगणाः अश्विनौ नाम सप्त
दशौ मरुतः एकोनपंचाशदेवगणाः दुष्पापाश्च पितरः गंधर्वा
णां यक्षाणां मस्रगाणां सिद्धानां वजातिभेदानां संचाः समूहाः वी
संते पश्यंति तात्तां तादृष्ट्वा दुतदर्शनात्ते सर्वे एव विस्मिताश्च विस्म

यमलौकिकचमत्कारविशेषमापयंते

२२

सदानेदीटीका ११

रुद्रावसवश्चादित्याः साध्याविश्वेऽश्विनौतथामरुतः पितरश्चैते गंधर्वाणां समूहकाः १ यत्ताणामसुराणांच सिद्धानां ये ब्रजालया नपते विस्मिताः संतस्तादृशाद्भुतदर्शने २ पश्यंति त्वामदृष्टं तेष्विष्य रूपमलौकिकं अलौकिकचमत्कारमापयंते विलाशः पि २२

नीलकंठीटीका १२

किंच येन दनुर्गृहीताः रुद्रादयस्तेऽपि विस्मिताः संतः सर्वे त्वं वीक्षन्ते इत्याह रुद्रादित्या इति साध्याः विश्वे च देवगणविशेषो रुद्रादित्यवत्सैवो दुष्मपाः पितरः गंधर्वाणामसुराणां सिद्धानां जातिभेदा मो संवाः समूहाः शेषे स्पष्टं २२

आनेदीटीका

दुष्मपाः पितरः अद्भुतदर्शनाद्विस्मिताः साश्चर्यास्तस्माच्च

२२

रामकंठीटीका

किंच रुद्रादयो देवविशेषा व्याख्याताः दुष्मपाः पितरः गंधर्वादयः प्रसिद्धा पते सर्वदेवो नितान्तविशेषसंभवे सति त्वं वीक्षन्ते चो रत्नादृष्टवत् पश्यं

लासिकी वसुशमीटीका

किंच रुद्राश्चादित्याश्च वसवश्च ये च साध्या नाम देवा विश्वे देवा मरुतोऽप्येकोनपंचाशद्देवगणा दुष्मपाश्च पितरः गंधर्वाश्च यत्ताश्च राश्च विरोचनादयः सिद्धानां संवास्तस्मात्मीश्वरं कालरूपं वीक्षन्ते साक्षात्त ऊर्वन्ति तथा ते सर्वपव विस्मिताश्च योगोपलक्षणाभूतविस्मयमापन्नाश्च २३॥

पंचोलीटीका

रुद्राशंकरप्रभृतयः पकादशा आदित्याद्वादशवसवोष्टौ साधनाः
मदेवाद्वादशविश्वदेवाः त्रयोदशअश्विनौ द्वौ मरुतपैकोनपंचाश
तः ऋष्याणां पितृतेजः ऋष्याः पितरः गंधर्वाः हाहाहू प्रभृतयः य
हा ऊवेरप्रभृतयः असुरा विरोचनप्रभृतयः सिद्धाः कपिलादयः
तेषां संज्ञाः विस्मयाः पत्राः सर्वे त्वां स्तुवंति २१

रणावीरसमिद्धोधिनी॥

किंच ये चादित्यादयोगाणां ये च साध्या वातरथानां ऋषयोऽ
पतयोन्ये च विश्वदेवाः कव्यपतयोऽश्विनौ मरुतश्च मरुत्नामा
नो देवगणाः ऋष्या ये ऋष्यसूषमदितसन्नं पितृतेजः ऋष्याः
तन्नामानः पितरस्ते च तथा च गंधर्वयक्षासुरसिद्धसंज्ञा पते
सर्वे पतद्गौरवपट्टाविस्मितास्त्वां वीक्ष्य त्वां प्रतिदृष्टिं दधंतो
निस्यंदाश्चिरितश्च दृश्यंते इति महदाश्चर्यमिति २२॥

मधुभाष्य

भाष्य अनुवाद

और रुद्रगण आदित्यगण वसुगण औ साध्यगण तथा विश्वे
 देवा अग्निनीकुमार औ मरुतगण पितृगण उषा इत्युपान
 करनेवाले पितृगण धर्मशास्त्र औ श्रुति में ऐसे कहा है कि
 पितृगण जब तक मोन भोजन करते जब तक अन्न उषादे
 और यावत् पितृ उद्देश करि दिये हय अन्नका गुण वर्णन क
 म मधु वातादि वैदिक मन्त्र पाठ समाप्त न होय जावत् पितर
 अन्न खाते हैं और गन्धर्वगण यक्षगण और विरोचन प्रभृति
 असुरगण औ सिद्धगण ये सकल विस्मययुक्त होके तम को
 खड़े देखते हैं २२

वैपरी

रुद्र रविवसु साध्य दिजो दे विश्वे अन्न मरुत पितृ सो दे
 गन्धर्व यक्ष असुर सिद्धवाता तोही लखिं सभ विस्मय जाता २२

1. The first part of the document is a list of names and titles, including "The Hon. Mr. Justice" and "The Hon. Mr. Justice".
 2. The second part of the document is a list of names and titles, including "The Hon. Mr. Justice" and "The Hon. Mr. Justice".
 3. The third part of the document is a list of names and titles, including "The Hon. Mr. Justice" and "The Hon. Mr. Justice".
 4. The fourth part of the document is a list of names and titles, including "The Hon. Mr. Justice" and "The Hon. Mr. Justice".
 5. The fifth part of the document is a list of names and titles, including "The Hon. Mr. Justice" and "The Hon. Mr. Justice".
 6. The sixth part of the document is a list of names and titles, including "The Hon. Mr. Justice" and "The Hon. Mr. Justice".
 7. The seventh part of the document is a list of names and titles, including "The Hon. Mr. Justice" and "The Hon. Mr. Justice".
 8. The eighth part of the document is a list of names and titles, including "The Hon. Mr. Justice" and "The Hon. Mr. Justice".
 9. The ninth part of the document is a list of names and titles, including "The Hon. Mr. Justice" and "The Hon. Mr. Justice".
 10. The tenth part of the document is a list of names and titles, including "The Hon. Mr. Justice" and "The Hon. Mr. Justice".

रूपे महते वज्रवज्रनेत्रे महाबाहो बह्वा
ह्रुपादे बह्दरे बज्रदेष्टाकराले दृष्टा
लोकाः प्रव्यथितास्तथादे २१

शाङ्ख्यभाष्यटीका १

यस्मात् रूपमिति रूपं महदतिप्रमाणं ते तव बज्रवज्रनेत्रे
बह्वनि वज्राणि सुखानि नेत्राणि चक्षुषि च यस्मिन् रूपे बह्व
वज्रनेत्रे हे महाबाहो बज्रवाहकपादे बह्वोवाहवः ऊरवः पा
दाश्च यस्मिन् रूपे तद्वज्रवाहकपादे किञ्च बह्दरे बह्वनि उद
राणि यस्मिन्निति तत् बह्दरे बज्रदेष्टाकराले वहीभिः दृष्टा
भिः कराले विह्वले तद्वज्रदेष्टाकराले दृष्टा रूपमीदृशं लोकाः
लौकिकाः प्राणिनः प्रव्यथिताः प्रचलिता भयेन तथादे २१

शान्तद्विगिरिकृतटीका २

लोकत्रयं प्रव्यथितमिह सुखमुपसंदरति यस्मादिति ईदृशं य
स्मात्ते रूपे तस्मात्तं दृष्टुं नि योजना भयेन लौकिकवददमपि
व्यथितो व्यथो पीडो देहेन्द्रियप्रचलने प्राप्नोसीत्याह तथेति २१

स्वामिकृतटीका ३

किञ्च दृष्टमिति हे महाबाहो महदहर्नि ते तव रूपं दृष्टुं लोकाः स
र्वे प्रव्यथिता अनिभीताः तथा हे च प्रव्यथितोस्मि कीदृशं रूपं दृष्टुं
बह्वनि वज्राणि नेत्राणि च यस्मिन् रूपे बह्वोवाहवः ऊरवः पादाश्च
यस्मिन् रूपे बह्वुदराणि यस्मिन् रूपे बह्वीभिर्देष्टाभिः कराले वि
ह्वले रौद्रमिसर्पः २१ पिशाचभाष्यटीका ४

स्पष्टार्थे २१

रामानुजभाष्यटीका ५

रूपमिति वहीभिर्देष्टाभिरतिभीषणाकारं लोकाः पूर्वोक्ता प्रतिकू
लानुकूलमयस्यासि विधाः सर्वपदादे च तवेदमीदृशं रूपं दृष्टुं
व्यथिता भवामः २१

अभिनवगुप्तकृतटीका ६

स्पष्टार्थे २१

॥

॥

॥

एवंस्थितिरूपेण विस्वरूपे दर्शयन् इदानीं संहाररूपेण संप्रपूति प्रतिभयानकरूपद
र्शनेन तदुत्तरवर्तिनां लोकाणां सस्यवभयनादपति ॥

श्री.
गी. टी.
प

परमार्थप्रणटी टीका. ७

रूपमिति तेन वरूपे कालमकृष्टाणो दृष्टा लोकाः कौरवसैनिकाः
चूर्णीकृतैरुज्जमांगैरित्यादिवत्प्रमाणवाक्यैः प्रव्यथिताः नाश
पर्यवसिता इति च दृष्ट्वा एते देवा लक्षणपरे तमपात्तात्रयमप्र
तिष्ठापकजगद्गुरुवाक्यमविगणप्यवर्ण्य संग्रामादपरतमिसर
मपि प्रव्यथितोस्मीत्यर्थः २३

वनमाली टीका. ८

हे महाबाहो तेन वरूपे दृष्टा लोकाः सर्वे प्राणिनः प्रव्यथितास्तथा हे
प्रव्यथितोभयेन कीदृशं रूपं महत् प्रतिप्रमाणं वह्निवज्रा
णिनेत्राणि च यस्मिन् तेन वहवो वाहव उरवः पादाश्च यस्मिन् तत
त वह्नुदराणि यस्मिन् तत वह्नेर्दृष्टाभिः कालमतिभयान
कंदेष्टुवमसहिताः सर्वे लोकाभयपीडिता इत्यर्थः २३

ऊसमवैजयन्ती टीका. ९

लोकत्रयं प्रव्यथितं महात्मवित्तकमुपसंहरन्नादरूपं महदिति हे
महाबाहो महो तो निरतिशयदोषेपीनावाहवो यस्य स तथा हे महा
बाहो देवि स्वरूपे तेन वमहत् निरतिशयसाम्प्रत्यमतिवृद्धं
विष्ठाकारं दृष्ट्वाऽवलोक्यानुकूलप्रतिकूलमध्यस्थरूपाः पूर्वोक्ताः
सर्वे लोकाः सिविधाः प्राणिनः प्रव्यथिताः प्रतिभीषणाकारदर्शन
जमभयेनातिपीडिता भवेति तथाऽहमपि प्रव्यथितो भवामि ननु
यस्मान्नोकास्तव सर्वं रूपं प्रव्यथिता भवणतत्तमरूपं कीदृशमित्य
पेतायामाह वह्निवज्रनेत्रमित्यादिवत्तमिर्विशेषणैः वह्निवज्रा
णिनेत्राणि च यस्मिन् तत वहवो वाहव उरवः पादाश्च यस्मिन् तत
त वह्नुदराणि यस्मिन् तत वह्नेर्दृष्टाभिः कालमतिभया
नकाकारमीदृशं रूपं दृष्ट्वा सर्वे वयं प्रव्यथिता भवाम इत्यर्थः २३

लोकत्रयं प्रव्यथितमित्युक्तमुपसं मधुसूदनी टीका. १-

हरति ॥ हे महाबाहो तेन वरूपे दृष्टा लोकाः सर्वे प्राणिनः प्रव्यथिताः त
थाहं प्रव्यथितोभयेन कीदृशं रूपं महत् प्रतिप्रमाणं वह्निवज्राणिनेत्रा
णि च यस्मिन् तत वहवो वाहव उरवः पादाश्च यस्मिन् तत वह्नुद
राणि यस्मिन् तत वह्नेर्दृष्टाभिः कालमतिभयानकंदेष्टुवम
तसहिताः सर्वे लोकाभयेन पीडिता इत्यर्थः भयानकतमेव प्रप
चयति २३

सदानंदीटीका ११

अतिप्रमाणेतेरूपेवर्जनेत्रमुखात्तितं वहवोवाहवोयस्मिमादा
संतितथोरवः १ उदराणिवहूमेववर्जदेष्टाभिरुग्रकं तथात्र
पममीलोकाट्टाभीताअहंतथा २३

नीलकंठीटीका १२

पुनर्लोकानामात्मनश्चयथासाह रूपमिति महत्तथादिमथां
तहीनं हेमदावाहो तेतवकरालेमहारूपेष्टालोकाः यथि
तासुथारुचयथितइतियोजना २३

आनंदीटीका

अत्रविशेषतःस्वामवस्थामाह ॥

करालमतिभयानकरूपेष्टासर्वेवलोकस्यां प्राणिनः अहंचप्रवृथि
ताः प्रकर्षगाव्यथां प्राप्ताः २३

विस्मयाविष्टायादृशंरूपंष्टातएवंविधाः रमकंठीटीका संहतास्तद्वर्णयितमाह ॥

स्पष्टार्थः श्लोकः २३

तदेवंकालरूपंविशिनष्टि ॥ लासिकी ~~रामकंठीटीका~~

एवंविधंतवरूपेष्टालोकाऽक्तप्रायः सर्वप्रवृथिताअतिभीताः तथात्त
तेनैश्वररूपसाक्षात्कारेसत्यपि लोकवदेवाहंयुक्तानेतिभीतोस्मिन्तय
रंभीतपवापित २३

पंचोलीटीका

विस्मयहेतुमाह रूपमिति हेमदावाहो तेतववर्जचनेत्रं चवर्जवाह
रुपादंवहूदरं वर्जदेष्टाभिः कराले विकृतं महत्परिमाणातीतं प
वंवियेत्तदीयंरूपेष्टाभयेन सर्वलोकाः प्रवृथिताः तथाहम
पिप्रवृथितः चलितोभीतः २३

रागवीरसमिद्धोथिनी ॥

किंचरूपमिति निगदव्याख्यातमेतल्लोकम् २३॥

मधुभाष्य

भाषा अनुवाद

और हे महाबाहो यह महान् तमारा रूप जिसमे बहुत मुख
नेत्र बाहु उरु पाद उदर हैं और जो बहुतों के दातो से अति कृपा
ल कहे भयानक है इसको देव के सकल लोक अर्पित हैं औ
र मे भी पीडित हों २३

चौपई

रूपमहत तव मुख बहु नयना महाबाहु बहुबाहु उरु चरना ॥
बहुत उदर बहु दाढ़ कण्ठा लोक उरित लषि अरु मेहुं क
याला २३॥

[Faint, illegible handwritten text]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

नमः सृष्टो दीप्तमनेकवर्णं व्याप्तानने दीप्त
विशानेत्रे दृष्टा हितो प्रव्यथितानरा
त्मा धृतिं न विन्दामि शमञ्च विस्मो २५

शाङ्करभाष्यटीका २

तत्रेदं कारणं नमः सृष्टमिति नमः सृष्टो युस्पर्शमित्यर्थः दीप्तं
प्रज्वलितं अनेकवर्णं अनेकवर्णभयङ्करानानासंस्थानायस्मिन्
यि ते त्वामनेकवर्णं व्याप्तानि विहृतानि आननानि सुखानि य
स्मिन् तयि ते व्याप्तानने दीप्तविशालनेत्रे दीप्तानि प्रज्वलितानि
विशालानि विस्मोर्णानि नेत्राणि यस्मिन् तयि ते त्वो दीप्तविशाल
नेत्रे दृष्टा हितो प्रव्यथितानरात्मा प्रव्यथितः प्रभीतोः नरात्मा
मनोयस्य मम सोहं प्रव्यथितानरात्मा सन् धृतिं येर्ये न विन्दा
मि न तमे शमञ्चापशमं मनस्तुष्टिं हे विस्मो २५

आनन्दगिरिकृतटीका २

अज्जीनस्य विश्वरूपदर्शनेन व्यथितत्वे देवमाह तत्रेति २५

स्वामिकृतटीका १

न केवलं भीतो हमित्येतावदेव अपितु नमः सृष्टमिति नमः सृष्ट
तीति नमः सकृत्तमंतरितव्यापिनमित्यर्थः दीप्तनेत्रो युक्तं यस्य ते
व्याप्तानि विहृतानि विहृतानि आननानि यस्य ते दीप्तानि विशालानि
नेत्राणि यस्य ते एवेभूते हितो दृष्टा प्रव्यथितो नरात्मा मनोयस्य सोहं
धृतिं येर्यमुपशमं च न तमे २५

पिशाचभाष्यटीका ५

नम इति व्याप्तानने व्याप्तानि विहृतानि आननानि यस्यासौ व्याप्तन
ने शमं सखे २५

रामानुजभाष्यटीका ५

नम इति नमः शब्दः तदन्तरे परमेष्ठो मेतमसः परस्तात्तयंतमस्य
रजसः परं कियो अस्या अक्षः परमेष्ठो मनिषादिश्रुतिमिदं विगु
णप्रकृतिपती न परमेष्ठो मवाची सविकारस्य प्रकृति तत्तस्य
रुषस्य च सर्वावस्थस्य कृत्स्नस्याश्रयतया वर्तमानस्य नमः सृष्ट
मिति वचनात् यावा एषि योरिदं मेतरं हि व्याप्तमिति पूर्वोक्तत्वात्

श्री.
ती. टी.
प

दीप्तमनेकवर्णव्याप्ताननेदीप्तविशालनेत्रं त्वं दृष्ट्वा प्रव्यथितो त रात्मा
अनेतभीतमना भूतिन विदामि देहस्य धारणेन लभे मनसं श्रेष्ठिया
एतच्च शमेन लभे विसो व्यापिन् प्रतिमात्रमप्यदुतमतिचोरे च त्वं दृ
ष्ट्वा प्रव्यथितसर्वावयवो व्याकुलैरियश्च भवामीत्यर्थः २५

सप्तमं २५

अभिनवशुभकृतटीका. ६

परमार्थप्रपाटीका टी. ७

किंचन भूति न भोतरिलेष्टशतीति न भूय कतेन भूयस्पर्श दीप्ते
ज्वलिते अनेकवर्ण व्याप्ते प्रसारितमानने येनेति दीप्तानि प्रज्वलि
तानि विशानि नेत्राणि यस्य विसो व्यापक एव विधे त्वं दृष्ट्वा प्रव्य
थितो त रात्मा मनो यस्यैव विधे दृष्ट्वा धृतिर्ये धमुपशमं वाने विदामि
२५ ॥ ॥ ॥

वनमात्मीटीका. ८

भयानकत्वं विद्वतोति न भूतिन केवलं प्रव्यथित एवाहं त्वं दृष्ट्वा
किंच प्रव्यथितो त रात्मा मनो यस्यैव विधे दृष्ट्वा धृतिर्ये धमुपशमं वाने विदामि
मर्षो शमे च मनः प्रसादेन विदामि न लभे दे विसो त्वो कीदृशेन भः
स्पर्शमेतदित व्यापिने दीप्ते प्रज्वलितम् अनेकवर्ण भये करनाना
संस्थान युक्तं व्याप्तानने विद्वतमुत्तमम् दीप्तविशालनेत्रम् प्रज्वलि
तविस्तीर्णचक्षुषम् त्वं दृष्ट्वा हि एवं प्रव्यथितो त रात्मा धृतिशमे
च न विदामीत्यर्थः २५

ऊसुमवैजयन्तीटीका. ९

अथ तस्य करालत्वं प्रवेक्ष्य त्वस्य देहत्वं प्रकाशयति द्वाभ्यां न भूय
शामिति न भोः त्वं परमव्योमादिशब्दवाच्यं विस्मयं दृष्ट्वा ति व्या
प्तो तीति तथाते कार्यकारणवस्थावस्थितस्य स्थूलसूक्ष्मविश्य
स्याश्रयतया वर्तमानमित्यर्थः तदन्तरपरमेव्योमनूतमसः पर
स्नानतयंतमस्परजतः परार्कयोः स्थाप्यतः परमेव्योमनित्यादि
श्रुतिभ्यः यावा एषिव्यारिदमेतरे हि व्याप्तमित्युक्तत्वाच्च दीप्ते प्रज्व
लिते अनेकवर्णैस्तेतपीता अनेकवर्ण विशिष्टावयव संस्थान युक्त
मतिभये करमित्यर्थः व्याप्तानने विद्वतमुत्तमं दीप्तविशालनेत्रं ॥
अतिप्रज्वलितविस्तीर्णलोचने एव विधे त्वं मतिभयानकं त्रिषा
हो वधारणे दृष्ट्वा दे विसो व्यापनसंभाव प्रव्यथितो त रात्मा प्रव्य
थितो त रात्मा प्रव्यथितो निरतिशय पीरितो त रात्मा मनो यस्य त

भाषा अनुवाद

और जो कहा कि अमर जो भावी पराजय दे सो भी इस मेरी
शरीर मे देखो सोई देखि अब अर्जन पांच श्लोक से कहते हैं कि
जयद्रथ प्रभृति राजगण समेत ये धृतराष्ट्र के पुत्र उद्योतना
दि तमारे सुख मे प्रवेश करते हैं और भीष्म द्रोण औ सुतपुत्र
कर्ण ये भी तमारे सुख मे प्रवेश करते हैं और यही सब नहीं
प्रवेश करते हैं वल प्रतियोधा अर्थात् हमारे पक्ष के भी शिव
औ धृष्टद्युम्न प्रभृति कौ के समेत वे प्रवेश करते हैं २६

चौथी

यद धृतराष्ट्र सततोदि प्रवेशों सर्व अवनिपति संग विशेषों
भीष्म द्रोण कर्ण पुन तैसैं योथे हमरे मुख्य दि जैसैं २६

शासोऽहं धृतिं देहे दिद्यपाणादिधारणसामर्थ्यरूपे धेयेन वि
 द्यामिनलभेच पुनः शमं मनः प्रसादेन लभे अत्र व्याजाननादि
 कालरूपदर्शने विभावो मनसो यथाऽनुभावो धेयसमादिभि
 वः पुनैर्देहादिभिः पुष्टो भयस्यायी भयानकरसः स्वसोक्तसुखा
 हिते त्रैवोक्तं व्याघादिभिर्विभावे स्तवे पिताय नुभावभूत भावे
 मोहादिभिर्भुक्तो यस्यायी भयानकर इति २५

मधुसूदनी टीका १-

न केवलं प्रव्यथितपवादे तां दृष्ट्वा किं तत्र प्रव्यथितः अंतरात्मा म
 नो यस्य सोऽहं धृतिं धेये देहे दिद्यादिधारणसामर्थ्यं शमं च मनः
 प्रसादेन विदामिनलभे हे विसोक्तो कीदृशेन भः स्पृशंश्चेतरि
 से व्यापिने दीपं प्रज्वलिते अनेक वर्णं भयं करुनाता संस्थानपुक्तं
 व्याप्तानने विद्यतमुत्वं दीपविशालनेत्रं प्रज्वलितविस्तीर्णचक्षु
 र्वेता दृष्ट्वा हि एव प्रव्यथितो तदात्मा देधृतिं शमं च न विदामी
 तत्त्वयः २५

सदानंदी टीका ११

न भो व्यापिनमस्य तं प्रज्वलनेन समंततः नाना संस्थान संयुक्तं भी
 षणं विद्यमानं १ दीपविस्तीर्णनेत्रं तां दृष्ट्वा भीते मनो मम ना
 पि धेये लभे विसो न शोति मत्सोलभे २५

नीलकंठी टीका १२

करालत्वप्रपंचनेन स्वव्यापामेवाह न भ इति न भः स्पृशंश्चो
 म व्यापिने दीपं प्रज्वलितसमानं व्याप्तानने विस्तीर्णमुत्वं
 दीपविशालनेत्रं रक्तनेत्रमिष्यः हि प्रसूते तां तां दृष्ट्वा प्रव्यथि
 तो तदात्मा प्रकर्षणव्यथितचित्तः धृतिं धेयेन विदामिनलभे शमं
 च शोति स्वास्त्वं च लभे हे विसो व्यापक भयानकं तदाक्रोते देशं
 तत्कामत्रगोतमशक्तवव्यापकत्वादिति भावः २५ कालान
 नः प्रत्यक्षमिति तस्यानि महीदमस्य नः स्वदेभयेन यः २५

ग्रानंदी टीका

भयानकत्वमेवाह ॥
 धृतिं न विदामि विज्ञानवस्थानादनाकुलतां भजामि शमं न विदामि म
 नोज्वलति २५

रामकंठी टीका

तद्रूपदर्शनेन विशेषतः स्वामवस्थां दर्शयितुमाह ॥

दृशं चो मया
 पथललः
 न भः स्पृशंश्चो
 नः

न

श्री
गी. टी.
ए.

अयमपि श्लोको गतार्थ एव किंतु दिव्यवत्तरीनलत्तागभगवद
नुग्रहतोदृष्टादिव्यज्ञानेनानुभूयाधनामर्त्यधर्मीवेशोसतितदुपे
स्मरन्भीतवित्तः सन्नेयंतिराजलवित्तं न प्राप्नोमीत्यतो दर्शनको
लपवनभयादीनां संभवो वेदितव्यः अन्तर्वापि वर्तमानाख्यातप्र
योगे पूर्वदृष्टस्मरणं करणत्वेन बोद्धव्यं २४

न परं भीतपवापित ॥ लासिकी दसुसौरीका

विव्यापिनं दीप्रमनेकवर्णं विहतास्यं दीप्तविशालनेत्रमेवंविधं तार
कालरूपं समाधिकाले दृष्टुं शक्यं नो युक्तानेति भीतमना प्रतिरतिंश
संभावंचनलेभे हे विसो व्यापक २५

पंचोलीदीका

लोकानामात्मनश्च प्रव्यथितत्वे कारणमाह नभ इति हे
विसो अहंत्वा मेवंविधं दृष्ट्वा प्रव्यथितो तरात्मा मनो यस्य सः
अहं प्रतिधेयं न विंदामि अथ तं शममनः तद्धि न लभे कथं भू
तं त्वानभः स्पृशं दीप्तं ज्वलितमनेकवर्णं अनेकाभयं कराः वा
णीश्राकारायस्मिन्तव्याना नने विहृतमुत्वं दीप्तविशालनेत्रं
ज्वलितविस्तीर्णलोचने २६

रागवीरसमिद्धोधिनी

नभः स्पृशमिति नभः स्पृशं नो भव्यापिनं दीप्तं प्रवृत्तद्वयमनेकव
र्णं नैको वर्णो यस्य तं लोहितं शुक्लं कृष्णं प्रतिभेदात् व्याजाननं
व्याजानि व्यावृत्तान्याना निमुखा निधस्यतं दीप्तविशालनेत्रं
दीप्तानि विशालानि विस्तीर्णानि नैकाणि यस्यानेकवर्णत्वादित्ये
तादृशि शिष्टवोरतराकारं त्वं दृष्टुं शक्यं नो मेव प्रव्यथितो तरात्मा
प्रव्यथितोति भयवकिं तो तरात्मा मनो यस्य संमूढता सो दमेता
२. एतु हि तादृतिं मनसो धेयं न विंदामि न लभे किं पुनः प्रमं
विंदामीति वाच्यमिति २७ ॥

मधुभाष्य

भाष्य अनुवाद
 और मैं ही केवल उरा हूँ यह नहीं ऐसा आकाशको परसकर
 ने वाला अर्थात् मृगयापी तेजयुक्त नाना वर्ण विशिष्ट विस्फा
 र को प्राप्त औ जलजलाते हैं विशाल कदं वड़े नेत्र जिस के
 ऐसे तम को अवलोकन करि दे विसो हमारा अनुसारात्मा व्य
 षा युक्त है और मैं इस रूप को देखते ज्ये शान्ति तथा भीर
 न नहीं थर सकता हूँ २५

चौपई

स्पर्शदिनभदीपें बहुवर्णा विवृतमुख दिपें वड़े नेत्रदिप्रकरण"
 देवित तो दिमन व्यथा हमारे धैर्य नथरें अरु प्राप्ति मुरारे २५

[Faint, illegible text from bleed-through]

महाराष्ट्र शासन
महाराष्ट्र विधानमंडल

देष्टाकगलानिच ते सुखानि दृष्ट्वैवकालानल
सन्निभानि दिशोनजानेनलभेचशर्म प्र
सीद देवेशजगन्निवास २५

शाङ्ख्यभाष्यटीका १

कस्मात् देष्टाकगलानीति देष्टाकगलानि देष्टाभिः कगलानि वि
कृतानि ते तव सुखानि दृष्ट्वै वोपलभ्य कालानलसन्निभानिप्र
लयकाले लोकानो दारकोऽग्निः कालानलसन्निभानि कालानल
सदृशानि दृष्ट्वैतेतदिशः पूर्वापरविवेकेन न जाने दिङ् मूर्खोऽस्य
तो न लभे न चोपलभे च शर्म सखमतः प्रसीदप्रसन्नो भवे
देवेश जगन्निवास २५ ज्ञानदगिरिकृतटीका २

दृष्टमानेपि भगवद्देहे परितोषायभावे कारणान्नरे मश्रुपूर्व
कमार कस्मादिति दृष्ट्वैवैवकारेणप्राप्तिर्वावर्त्तते २५

स्वामिकृतटीका ३

किंचदंष्ट्रेति भोदेवेशतवसुखानिदृष्ट्वाभयावेशोनदिशोननानानि
शर्मचसखेनलभेभोजगन्निवासप्रसन्नोभवकीदृशानिसुखानि
देष्टाभिःकगलानिकालानलसन्निभानिकालानलःप्रलयाभिस्त
सदृशानि २५ पिशाचभाष्यटीका ४

स्पष्टार्थे २५

॥ समानुजभाष्यटीका ५ ॥

न२ दंष्ट्रेति युगोत्कालानलवत्सर्वसंदारेप्रवृत्तामतिवोगानितवसुखानिद
ष्टादिशोनलभेजानेसखेनलभेजगन्निवासदेवेशजगन्निवासीनामीश्वरा
णामपिपरममहेश्वरमाप्रतिप्रसन्नोभवयथाहंप्रकृतिगतोभवामित
थाकृत्वित्यर्थः एवंसर्वसजगतःस्वायत्तस्थितिप्रवृत्तित्वदर्शयन्पार्थ
सारथिः राजवेषच्छमनावस्थितादित्येतादर्थानांयार्तगष्टादीनांयोथिदि
रेषुनुप्रविष्टानांवासरंशानांसंदारेणभूभागावतारानांस्वमनीषिते
स्वैवैवकरिष्यमाणं पाणीयदर्शयामासं सचपार्थोभगवतः श्रेष्ठता
दिकंसर्वं पार्थ सातातकृतस्मिन्नेवभगवतिसर्वात्मनियार्तगष्टा

श्री.
गी. टी.
प

दीनोऽपसेहारमनागतमपितत्सादलद्येनदिव्येनचतुषापप्रभिदे
प्रोवाच २५

अभिनवगुप्तकृतटीका. ६

परमार्थप्रणादीकाटी ७

अथभयातिशयेनस्वसकोदिशीकृतमनुवदति दंष्ट्रति दंष्ट्राक
रालानिभयानकाति कालानलः संकषणमुत्खानलस्तत्सदृशानि
नेमुत्खानितदृष्टा अदे दिशोनजानेप्रागपरादिविभागेनदिशोज्ञाने
सूर्येणकृताभवतिसोपितवनेत्रोभूतोस्मोत्पथः तथाइतः परंकिं
भविष्यतीतिव्याकुलचित्तनेत्रनशर्मविश्रामेनलभेत् अथभूयोपश
मस्त्वयैवविधेयइत्याह प्रसीदेतिसृष्टे २५

वनमाली टीका ८

दंष्ट्राभिःकरालानिविकृततेनभयंकराणिप्रलयकालानलसदृ
शानिचतेमुत्खानितदृष्टेवनततानिप्राप्यभयवशेनदिशः पूर्वाप
रादिविवेकेननजाने अतो नलभेत् शर्मसखेत्तद्वपदशनेपतोदे
देवेशदेजगन्निवासप्रसीदप्रसन्नोभवमोप्रति यथायथाभयाभा
वेनतददर्शननेसखेप्राप्तयामितिशेषः २५

ऊसमवेजयन्तीटीका. ९

किंचदंष्ट्राकरालानीतिदंष्ट्राभिः अतितीक्ष्णदीर्घह्रस्ववक्रविरलपंक्ति
भिःकरालान्यतिविकृततेनभयंकराणिचपुनःकालानलसन्निभा
निमहाप्रलयाग्निसदृशानिमुत्खानितवदनानिदृष्टेवपवकारेण
नततानिस्फुट्टा प्राप्यवाभयभीतोः स्मिर्किंतमुत्खानोर्देशनमात्रेण
वेतिसूचितं दिशः पूर्वापरादिदिग्विभागान् विवेकेनाहंनजानेन
वेति अतोहेतोः शर्मचखेत् नलभेयशापूर्वेतवपूणेननिभमनिसं
दरसमकुंदकण्ठलराजितत्परदनैवदनैदृष्टाः हेसखेप्राप्तवेत
शाधुनानप्राप्तयंतस्मादेजगन्निवासजगदाश्रयहे देवेशदेवानोके
शशेषसुरेशादीनामीशानियंतः प्रसीदप्रसन्नोभवतदेवानिसौंदर्या
दिगुणयुक्तेरूपेमेदर्शयेतिभावः २५

दंष्ट्राभिःकरालानिविकृततेनभयंकराणिप्रलयकालानलसन्नि
भानिप्रलयकालवक्रिसदृशानिचतेमुत्खानितदृष्टेवनततानिप्रा

अभयवशेनदिशः पूर्वापरदिविवेकेननजानेशतोतलभेच
 शर्मसुखेनद्रुपदर्शनेपिदेदेवेशदेजगन्निवासप्रसीदप्रसन्नो
 भवमोप्रति यथाभयाभावेनतद्दर्शनजसखेप्रामुख्यमिति
 षः

सदानेदीटीका ११

भयेकराणिदेष्टाभिर्विकृततात्त्विकानि प्रलयानलतत्त्वानि
 दृष्टेवानिभयाहतः १ पूर्वापरदिविवेकेननजानेदिशोभ्रमा
 त नलभेदेसखेस्वामिस्तद्रुपस्यापिदर्शने प्रसन्नोभवदेवेश
 जगदाधारमोप्रति यथादेतिभयोभूतातद्दर्शनसखेनभ २५
 नीलकंठीटीका १२

कालानलःप्रलयाग्निसमस्यानि प्रसीदप्रसन्नःसखेदोभवे
 तथैः २५

शानेदीटीका सप्तार्थ २५

रामकंठीटीका

किंच स्फुरार्थमेतदाकां किंतुभगवतोदेष्टाकरालवज्रसुखेसंसारप्रवृ
 त्तवज्रविकृतकृतोतपुरुषावेशात्

लासिकी दसलीटीका

किंच तवकालरूपसंदेष्टाभिःकरालानिविकृतत्वेनभयानकानि प्रलय
 कालाग्निसदृशानिमात्वादिदृष्टेव समाधिकालेसात्तात्त्विकेवदिशः
 पूर्वापरदिविभागेनेरानीयुक्तानेसमाधिसंस्कारकृतज्ञानेसखे
 चेतोपलभे देदेवेशकालादिदेवनियंतः देजगन्निवासजगदाश्र
 येतिसाकृतमामंत्राह्वयम् तंप्रसन्नोभवजगद्रक्षाप्रति २५

पंचोलीटीका

गो.
टी.
प.

धृतिशमयोरलाभेकारणोत्तरमाह दंष्ट्रेति वपुनःदंष्ट्राकरा
लानिविकृतानिकालानलसंनिभानिप्रलयाऽग्निसदृशानि
तेतवमुखादिदंष्ट्रेवग्रहंपूर्वापरविभागेनदिशोनजानेदिग्
मूकोस्मिचपुनःशर्मसाखनलभेहेदेशजगन्निवासप्रसीदप्र
सादंऊरुप्रसन्नोभव २५

परावीरसमिद्धोधिनी॥

कालानलसन्निभानि कालाग्निरुद्रतूपाणीव दंष्ट्राकराला
नितेमुखानिदंष्ट्रेवतत्समकालंभीतत्वाचलितं प्रवृत्तोपि
दिशोदेशविभागामूर्वापरान्नजानेर्थादिभ्रमदतोस्य
तपवनलभेचशर्मसि सर्वथा पराष्टंमां प्रत्यधुनाजगन्निवा
सत्वात्प्रसीद येनाहं सखितोभवामीत्यभिप्रायः २५॥

मधुभाष

२५॥

भाष्य अनुवाद
और हे देवेश तमारा मुख देखि उरके मारे हमें दिशा भूलि
गई और मुख पावने नहीं हे जगनिवास अब प्रसन्न होउ के
सा मुख देखि उर भाया सो कहते कि वडे कराल होती से भ
यानक जो प्रलयाग्नि के समान हैं २५

चौपई
दंत कराल तोरे मुख नाना देखि कालानल हि समाना
भासैं दिशा दिन लखें मुख लेशा हो प्रसन्न जगवास सुरेशा
२५॥

Handwritten text in Devanagari script, likely a title or header section.

Handwritten text in Devanagari script, likely a title or header section.

Handwritten text in Devanagari script, likely a title or header section.

Handwritten text in Devanagari script, likely a title or header section.

Handwritten text in Devanagari script, likely a title or header section.

Handwritten text in Devanagari script, likely a title or header section.

Handwritten text in Devanagari script, likely a title or header section.

Handwritten text in Devanagari script, likely a title or header section.

अमीवत्तोऽत राष्ट्रस्य पुत्राः सर्वे सदैवाव
निपालसंवैः भीष्मोद्दोणः सूतपुत्रस्तथा
सौसहासदीयैरपियोधमुख्यैः २६

शाङ्ककरभाष्यटीका १

येभ्योमम पराजयशाङ्का प्रागेव आसीत्सा चापगता यतः
अमी चेति अमी वत्तोऽत राष्ट्रस्य पुत्राः सर्वे सदैव संहताः अवनिपाल
शान्तीति व्यवहितेन संवन्धः सर्वे सदैव संहताः अवनिपाल
संवैः अवनिष्ठौ पालयन्तीत्यवनिपालास्तेषां संवैः किञ्च भीष्मोद्दो
णः सूतपुत्रः कर्णस्तथासौ सहासदीयैरपि पृष्ठयुग्म प्रभृतिभि
र्योधमुख्यैः योधानां मुख्यैः प्रधानैः सह २६

आनन्दगिरिकृतटीका २

अस्माकं जयं परेषां पराजयश्चदिदृत्तत्वे पश्यामीत्याह येभ्य इति
तत्र देवतेन स्माकमवतारयति यत इति २६

स्वामिकृतटीका ३

यद्यप्यष्टमिच्छासिद्धयनेनास्मिन्संग्रामे भाविजयपराजयारिकेव
ममदेहेयश्चेति यद्गवतोक्तं तदिदानीं पश्यन्नाह अमी चेति पं
चभिः अमीऽत राष्ट्रस्य पुत्राः सर्वे वत्तिपालानां जय
यादीनां राज्ञां संवैः सदैव तव वक्राणि विशेषीत्युत्तरेणैवात्ययः त
थाभीष्मोद्दोणः सौसूतपुत्रः कर्णश्चन केवलेनैव विप्रंति अ
पितप्रतियोद्धारयेस्मदीयायोधमुख्या शिविदिष्टैश्च दयस्तेः
सह २६

विष्णवभाष्यटीका ४

स्यष्टार्थे २६

रामानुजभाष्यटीका ५

अमी चेति वक्राणीति अमीऽत राष्ट्रस्य पुत्राः सर्वे भीष्मो
द्दोणः सूतपुत्रः कर्णश्चन केवलेनैव विप्रंति अ
पितप्रतियोद्धारयेस्मदीयायोधमुख्यैः २६ अभिनवगुप्तकृतटीका ६

सह ५

स्यष्टार्थे २६

५ सचपार्थो भगवतः प्रहृत्वादिकं सर्वे स्यष्टार्थास्तत्त्वतस्मिन्नेव भगवति सर्वात्मनि धार्तराष्ट्रादीनां
उपसंहारमनागतमपि तत्त्वसादलेन नदिद्येन च तत्त्वसापश्यादिदं प्रोवाच ॥

श्री.
मी टी.
पे

परमार्थप्रपाटीका. ७

अथाप्यदसर्वेषाममीत्याह अमीचेतिपेवभिः तत्ररणेमरिष्यमा
णानांभक्तानामभक्तानांचभावितोदृष्टमाणांगतिप्रथमतो निरूप
यति तत्रभीष्मोद्गोणःसूतपुत्रःकर्णःतथर्मपुत्रकर्तारोभगवद्
काश्यपतथाविधैरेवासदीयैर्योथसुखैः शिवेदिभृष्टयुम्नादिभिः
हृष्टपुनर्भवप्रदसंतोविशंति तथाअमीकूटकारित्वेनाततायित्वे
नचनामेवप्रसिद्धाभूतराष्ट्रस्यपुत्राड्योथनडः शासनादयपकोर
तरशातंतथाविधैरेवावनिपालानांसंचैःसहत्वरमाणाःपातना
र्थेवेगवत्तरास्त्वववजाणिविशंति २६

वनमाली टीका. ८

पोडवानोजयमन्येषोचपराजयंसर्वदादृष्टमिष्टं पश्यममदेहेगुम
केशयद्यामदृष्टमिष्टसीतिभगवदादिष्टमभुनापश्यामीत्याह
अमीचेति पंचभिःअमीवभूतराष्ट्रस्यपुत्राड्योथनादयःशातंतु
उत्संविनासर्वतोत्तरमाणाविशंतीत्यभिमेणान्वयः अतिशयसूच
कत्वेनक्रियापदसूच्यत्वेगुणयव सहैवावनिपालानांशास्पादीनां
संचैःतांविशंति नकेवलंड्योथनादयपवविशंति किंतुनेयत्वे
नसर्वसंभावितोभीष्मोद्गोणःसूतपुत्रःकर्णस्तथासौसहासदी
यैः परकीयैरिवासदीयैः परकीयैरिवासदीयैः भृष्टयुम्नादिभि
र्योथसुखैःसहतांविशंतीतिमंचेयः २६

सादराः

रुसमवेनयनीटीका. ५

एवमतिलचेतनाचेतनात्मकस्यविस्मयभगवदधीनस्थिति
प्रवृत्तितमर्जनेनभगवदेहेपवदृष्टमित्सकमभुनाराजवेषो
पथिनोभयोःसनयोःस्थितानांसरासराणांसंदररूपभूभागाव
तारणामनागतमपिभगवद्वदित्वेनचत्तुषाविष्ठाकारेभगव
द्रूपेएवदृष्टपाथोःतिव्याकुलमनास्सस्त्रमेवभगवत्तमादपञ्च
भिः अपीचेतिभूतराष्ट्रस्यभूतोराष्ट्रायेनसतस्येतनेनाथर्मेणयेन
व्याकुलमनास्सस्त्रमेवभगवत्तमादपञ्चभिः अपीचेतिभूतराष्ट्र
स्यभूतोराष्ट्रायेनसतस्येतनेनाथर्मेणयेनयत्किंचित्कालराज्यंतथ
पुत्राःपालितास्तस्यतदास्यतेषांपुत्राणांचांतकालोदृश्यतेइतिसूचि

तम् पुत्रापकोनशतेड्योथनादयः सहोदराः श्रीयेपाणवे
 भ्योः सपुत्रे सुपुत्रयास्वे संमरणमविगणयस्थिताः इत्येनून
 स्वेष्टोयुथिरादिपंचानोकृपाचार्यास्त्यामप्रभतीनोचपुत्रे
 मरणाभावत्वे सूचितम् तथाभीष्मदोणश्च तथासौसूतपुत्रः
 कर्णः असावित्येननतस्यस्वविदेष्टुत्वेद्योतितम् चशहादस्मा
 केयुथिष्टिरादीनामपिप्रतिविन्धत्तदोक्तवाभिमत्सुप्रभतयः
 सर्वपतेअवनिपालैः सर्वैः शल्यजयद्रथादीनामवनिपालानां
 राज्ञां संचैः समूहेः सह केवलंतपव किंतु सहासदीयैरपि
 केविदसदीयैः परकीयैर्योथसुखेष्टुष्टुमेविगटादिभिः स
 हत्वाविष्ठाप्रयमतिभयेकरेविशंतीत्यथाहारः अत्रभयसूच
 कत्वेनक्रियापदस्यसूतत्वेगुणपवनतदोषोभवतीत्यर्थः ये
 स्मादीयाष्टष्टुम्नादयस्तेपिप्रविशंतीतिसहोक्तिरलङ्कारः २६

मधुसूदनी टीका १-

श्रीचतुतराष्ट्रस्यपुत्राड्योथनप्रभतयः शतेसोदराः सुपु-
 त्रे विना सर्वे तौतरमाणा विंशतीत्येतात्वयः अतिभयसू-
 चकत्वेनक्रियापदस्यसूतत्वं तत्रगुणपवसंहैवावनिपालानां
 शल्यादीनाराज्ञां संचैः तौविशंतिनकेवलं ड्योथनादयः
 वविशंति किंतु अनेयत्वेन सर्वैः संभावितोपिभीष्मदोणः
 सूतपुत्रः कर्णः तथासौसर्वदाममूहेष्टु सहासदीयैरपिपर
 कीयैरिवट्टष्टुष्टुमप्रभतिभिर्योथसुखेस्त्वाविशंतीतिसर्वे
 यः २६

सदानंदी टीका ११

येभ्यः पराजयाशंकासमासीतेतत्प्राश्रीड्योथनप्रभतयो
 चतुतराष्ट्रसुताः शते १ शल्यादीनामहीणानां समूहे सहते
 विलाः तौविशंति तथाभीष्मदोणकर्णदयोपमी २ अनेय
 त्वेनयेत्तोकेशूराः संभावितारहिते अस्मादीयैः सदानंदैर्केष्टु
 ष्टुष्टुम्नादिभिरुपया योथसुखेविशंतितामिसनेनात्वयोस्य
 च २६

नीलकंठी टीका १२

श्रीतौविशंतीत्यापुमस्योकादपकृष्यते २६

गी.
टी.
५.

शान्तेदीटीका स्पष्टार्थम् २६

रुषाकांतानां ऊर्वादीनां चेष्टितं वणिचि तमाह ॥
रामकंडीटीका स्पष्टार्थम् २६ तपवक्तुतातप्र
लासिकी वसुन्नीटीका

किंच-अमीधुतराष्ट्रस्य पुत्रा इर्योयनादयः सर्वशतं सहजाः अवनिपाला
नां शल्यजय इयप्रभृतीनां रातां समूहैस्सहेवतां कालरूपं विशां
तीत्यतरेण संवेधः पेश्वरूपमाताकारवैवशेनावभतवरस्यापि
दृत्रस्याविशंतीति वर्तमानतेतोक्तिः पवसुत्रत्र तथाभीष्मोदोणः
सूतपुत्रोसौकर्णः अस्मदीयेस्तेषां प्रतियोहृभिर्धृष्टकृतादिभिः स
हते सर्वे विशंति २५

पंचोलीटीका

येभ्योममपराजयशंकाप्रागासीत्साचापगता इत्याह अमीचे
तिपंचभिः वपुनः अमीधुतराष्ट्रस्य पुत्राः इर्योयनप्रभृतयः त
थाभीष्मोदोणः असौसूतपुत्रः कर्णः अवनिपालसंघैः रातां
समूहैः वास्मदीयेरपि धृष्टयुम्नप्रभृतिभिः योयमुखैः सह त
रमाणाः त्वोविशंति तेतवत्वरमाणाः दंष्ट्राकरालानि दंष्ट्राभिः
विकृतानि भयानकानि भयंकरानि वक्राणि विशंतितवमुखे
प्रविष्टानामध्ये केचित्क्षणीकृतैरुतमोगैः शिरोभिः दशनो
तरेषु दंतविवरेषु विलयां मोसणकला इव दृश्यंते २६

रणवीरसमिद्धोधिनी ॥

अमीचेति अमीधुतराष्ट्रस्य पुत्रा इर्योयनादयो वनिपालसंगैः
सह सर्वे तथाभीष्मोदोणोसौसूतपुत्रश्च कर्ण इत्येते वास्मदी
ये धृष्टयुम्नादिभिर्योयमुखैरपि सह सर्वे तेतवदंष्ट्राकरालान्य
तपवभयानकानि वक्राणि दंष्ट्रातरमाणाः समंभ्रमास्तां
विशंत्यर्थात्तेजस्यं तर्दिता भवतीति तत्र केचित् वदशानांतरे
षु दशनानां दंतानां यान्यतराणि संधिच्छिद्राणि तेषु विलयां वि

लीनाः संदृष्टपंते उपलक्ष्यंते तत्रोपलक्षणात् तद्वृत्तिरिति तद्वृत्ति
तैः क्षणेभिरुत्तमांगैः शिरोभिरुपलक्षणाभूतैरेव तत्संयविली
ना उपलक्ष्यंते न त्वन्यावयवैरित्यर्थः २६॥

मधुभाष्य

२६॥

✓ 18

वक्राणि ते त्वरमाणा विशानि दंष्ट्राकराला
निभयानकानि केचिद्विलग्नादशनान्तर
रेषु संदृश्यन्ते चूर्णितैरुत्तमोद्गैः २७

शाङ्खभाष्यटीका १

किञ्च वक्राणीति वक्राणि सुखानि ते त्व त्वरमाणास्त्वरायु
क्ताः सन्ती विशानि किं विशिष्टानि दंष्ट्राकरालानि सुखानि भ
यानकानि भयङ्कराणि किञ्च केचिन्सुखानि प्रविष्टानां मध्ये
विलग्नादशनान्तरेषु संसमिव भूतितं संदृश्यन्ते उपलभ्यन्ते च
र्णितैश्चूर्णीकृतैरुत्तमोद्गैः शिरोभिः २७

श्रान्तगिरिकृतटीका २

न केवलं इयौ धनादीनामेव पराजयः किञ्च भीष्मादीनाम
पीत्याह किञ्चेति भगवद्दूयस्याकृतैरेतन्नरमाह किञ्चेति प्र
विष्टानां मध्ये केचिदिति सम्बन्धः २७

स्वामिकृतटीका ३

वक्राणीति एते सर्वे त्वरमाणा धावन्तस्त्वदंष्ट्राभिर्विकृतानि भ
यंकराणि वक्राणि विशन्ति तेषां मध्ये केचिच्चूर्णीकृतैः शिरोभि
रुपलसिता दन्तसंधिषु संस्रिष्टा दृश्यन्ते २७

पिशाचभाष्यटीका ४

संक्षेपार्थ २७

रामानुजभाष्यटीका ५

त्वरमाणा दंष्ट्राकरालानि भयानकानि त्ववक्राणि विशन्ति
तत्र केचिच्चूर्णितैरुत्तमोद्गैर्दशनान्तरेषु विलग्नाः संदृश्यन्ते २७

अभिनवगुप्तकृतटीका ६

संक्षेपार्थ २७

परमार्थप्रपाटीटीका ७

किं भूतानि वक्राणि दंष्ट्राकरालानि अतएव भयानकानि तत्र के
चित्दुष्कृतिनश्चूर्णीकृतैरुत्तमोद्गैः शिरोभिर्दशनान्तरेषु दन्तसं
धिषु विलग्नाः संस्रिष्टाः दृश्यन्ते २७

वनमालीटीका ८

श्री.
गी टी.
प

श्रीमद्भूतराष्ट्रस्यपुत्रायाः सर्वे ते तव दंष्ट्रा कराला निभयानका
निवक्राणि त्वरमाणविशंति तत्र केचित् चूर्णितैरुत्तमोगैः शिरोभिर्वि
शिष्टादशानां तरेषु विलग्नविशेषेण संलग्ना दृश्यन्ते मया सम्पगमे
देहेन २१

रुसमवेजयनी टीका. ५

किंच वक्राणीति पूर्वोक्तास्ते सर्वे त्वरमाणप्रतिवेगयुक्तास्ते तस्तेन
ववक्राणिकालानलसन्निभानि शुक्लानि विशन्ति प्रविशन्ति कीदृशा
निदंष्ट्रा कराला निदंष्ट्रा करालाभयं करायेषु तानि अतएव भया-
नकानि रतिशयभयरूपाणि तेषां मध्ये केचित् कतिचित् वीराश्च
र्णितैः शकलीभूतैरुत्तमोगैर्मलकैस्सहिताः दशानां तरेषु तव दं
तसंघेषु विलग्नसंस्मिताः संदृश्यन्ते मये विशेषः २१

मधुसूदनी टीका. १०

श्रीमद्भूतराष्ट्रस्यपुत्रप्रभृतयः सर्वे पिते तव दंष्ट्रा कराला निभया
नकानि वक्राणि त्वरमाणविशंति तत्र केचित् चूर्णितैरुत्त
मोगैः शिरोभिर्विशिष्टादशानां तरेषु विलग्नविशेषेण संलग्ना दृ
श्यन्ते मया सम्पगमे देहेन २१

सदानंदी टीका. ११

तव दंष्ट्रा कराला निवक्राणि त्वराविताः विशंति भीषणा मे ते
सर्वे उर्यो यनादयः १ तत्र चूर्णीकृतैः केचित् शिरोभिः संयुता भटाः
दंतां तरेषु संलग्ना दृश्यन्ते मया स्फुटे २१

नीलकंठी टीका. १२

ते भीष्मादयः उत्तमोगैः शिरोभिः शयंभावः भूतराष्ट्रस्यपुत्राः पा
पिष्टाः भवेत्तमेव त्रैलोक्यशरीरे विशंति पापात्ररूपे तस्य पापुष्पा
नस्थितान् नरकानेव गच्छंतीति तत्र सौ विशंतीत्येवोक्तं भी
ष्मादयस्तु भक्त्या यतो मित्रास्तेषां वेदाश्च प्रसूतास्तद्गवतो मुखे प्र
विशंतीति वैषम्यमिति सूचनार्थं त्वं भूतराष्ट्रस्यपुत्रा विशंति भीष्मा
दयस्ते वक्राणि विशंतीति विभागादर्शने युक्तमिति २१

आनेरीटीका

२७

रामकवीटीका

नानादृष्टैः पुरुषैर्विद्यमानाविश्रान्तिवक्रमवित्पद्वयम् यौधिष्ठिरा
धातराष्ट्रास्रयोधाः शस्त्रैः कृताविविधैः सर्वपव तत्रैजसानिरुतामून
मेवतथाहीमेतवच्छरीरं प्रविष्टाः २७

लासिकी दत्तजतीटीका

किंच श्रीमद्वैद्यनादयोदंष्ट्राभिर्विकृतातिभयंकराणि तववक्राणि धावं
तोविश्रान्ति तन्मयेकेविद्योधास्रुतिनैः शिरोभिर्विशिष्टादंतसंधिषु
संश्लिष्टादृश्यन्ते २७

पंचोलीटीका

स्यष्टार्थ २७

रामवीरसमिद्धोधिनी॥

स्यष्टार्थः २७॥

मधुभाष्य

२७॥

सिद्धिस्थितिः १९५५

陈鹤琴

1. The first group of people who are interested in the study of the history of the United States are the people who are interested in the history of the United States.

1949年12月15日

1875

भाषा अनुवाद

और ये उद्योगनादिक धावते हूँ तुम्हारे विकट दन्त लाल
मुखमें प्रवेश करते हैं और तिनके बीच कोई कोई छोड़ा म
लक चूर्ण हूँ तुम्हारे दाँतों के मध्य सन्धिमें लपटे से देव
पड़ते हैं २७

चौपई

तो मुखमांदि परदि यह सहसा दंतकराल भयानक सहसा
कोईक दंतनमांदि लगे दे देखि प चूर्णित पीस किते दे २७

ਸਤਿਨਾਮੁ ਸਤਿਨਾਮੁ

ਕਾਹਲੁ ਨਰੁ ਤਰਹੀ ਭੀਖੁ ਭੰਗੁ ਸੰਤਾਪੁ ਨਹੀ ਭਾਖੀਐ ਜੇ ਭੰਗੁ
ਏ ਭਾਉ ਭੰਗੁ ਭੰਗੁ ਭੰਗੁ ਭੰਗੁ ਭੰਗੁ ਭੰਗੁ ਭੰਗੁ ਭੰਗੁ ਭੰਗੁ
ਭੰਗੁ ਭੰਗੁ ਭੰਗੁ ਭੰਗੁ ਭੰਗੁ ਭੰਗੁ ਭੰਗੁ ਭੰਗੁ ਭੰਗੁ ਭੰਗੁ
ਭੰਗੁ ਭੰਗੁ ਭੰਗੁ ਭੰਗੁ ਭੰਗੁ ਭੰਗੁ ਭੰਗੁ ਭੰਗੁ ਭੰਗੁ ਭੰਗੁ

ਸਤਿਨਾਮੁ

ਸਤਿਨਾਮੁ ਸਤਿਨਾਮੁ ਸਤਿਨਾਮੁ ਸਤਿਨਾਮੁ ਸਤਿਨਾਮੁ ਸਤਿਨਾਮੁ
ਸਤਿਨਾਮੁ ਸਤਿਨਾਮੁ ਸਤਿਨਾਮੁ ਸਤਿਨਾਮੁ ਸਤਿਨਾਮੁ ਸਤਿਨਾਮੁ

यथा नदीनां वहवोऽसुवेगाः समुद्रमेवा
भिमुखा इवन्ति तथा तवामी नरलो
कवीरा विशन्ति वक्राण्यभितोज्ज्वलन्ति

२८

शाङ्ख्यभाष्यटीका १

कथं प्रविशन्ति मुखा नीत्याह यथा नदीनामिति यथा नदी
नां सवन्तीनां वहवोऽनेकेऽसूनां वेगाः समुद्रमेवास्त्वराविशेषाः
समुद्रमेवाभिमुखाः प्रतिमुखाः इवन्ति प्रविशन्ति तथा त
द्वत्तव श्री भीष्मादयो नरलोकवीरा मनुष्यलोकपाला विशन्ति
वक्राण्यभितोज्ज्वलन्ति प्रकाशमानानि २८

आनन्दगिरिकृतटीका २

उभयोरपि सेनयोरवस्थितानां राज्ञो भगवन्मात्रप्रवेशानं नि
दर्शनेन विशदयति कथमित्यादिना २८

स्वामिकृतटीका ३

अवशाप्रवेशमेव दृष्टोतेनाह यथेति नदीनामनेकमार्गप्रवृत्ता
नां वहवोऽसूनां वारीणां वेगाः प्रवाहाः समुद्राभिमुखाः संतोय
णा समुद्रमेव इवन्ति प्रविशन्ति तथा मीय नरलोकवीरास्तेभितो
विज्वलन्ति सवन्तः प्रदीप्यमानानि तव वक्राणि प्रविशन्ति २८

विशाखभाष्यटीका ४

सप्तम्यर्थे २८

रामानुजभाष्यटीका ५

यथेति एते राजलोका वहवो नदीनामैव प्रवाहः २८ समुद्रमिव

अभिनवगुप्तकृतटीका ६

सप्तम्यर्थे २८

परमार्थप्रणटीका ७

वृत्त

यथा नदीनामैव इति तमाह यथेति यथा वहवो नदीनामार्गप्रवृत्ताः
नदीनामैव वेगाः प्रवाहाः समुद्रमेव इवन्ति प्रविशन्ति प्रविशन्ति
समुद्राकारमिवेति तथा तवामी नरलोका वीराः
त्साह शालिनो भीष्मादयो ह्यस्त्वा विशन्ति २८

श्री.
दी.गी.
प

वनमालीटीका ८

राज्ञां भगवन् सुखप्रवेशनेति दर्शनमाह यथेति यथानदीना
मनेकमार्गप्रवृत्तानां वहवो बृनोजलानां वेगावेगवेतः प्रवाहाः
समुद्राभिमुखाः संतः समुद्रमेव द्रव्येति विशंतितथा तवासीन
रलोकवीराविशंति वक्राण्यभितः सर्वतो विज्वलेति २८

ऊसमवेजयतीति ९

राज्ञवीराणां विश्वरूपसुखप्रवेशने दृष्टान्तमाह यथानदीनामि
ति यथेति दृष्टेतेन दीनानां दनदीनां वहवोः नेतां ब्रुवेगाः अ
हनां नीराणां वेगाः वेगवेतः प्रवाहाः अभिमुखाः समुद्रास्संतः
समुद्रमेव द्रव्येति विशंतितथेति दृष्टेते असीनरलोकवीराः न
ररूपेण नरलोकवर्तिनः सरासरांशो मेतावीराः शूरास्त्वविश्वरू
पस्याभिविज्वलेति अभिसर्वतो विज्वलेति प्रदीपमानानि वक्राणि
सुखानि विशंति विशंति अत्रावशतेः ज्ञानपूर्वकत्वे दृष्टान्तो
वोध्यः २८

राज्ञां भगवन् सुखप्रवेशनेति दर्शन
माह

मधुसूदनी टीका १०

यथानदीनामनेकमार्गप्रवृत्तानां वहवः बृनोजलानां वेगाः प्र
वाहाः समुद्राभिमुखाः संतः समुद्रमेव द्रव्येति विशंति तथा तवा
सीनरलोकवीराविशंति वक्राण्यभितः सर्वतो ज्वलेति अभिविज्व
लेतीति वापाठः

२८

सदानंदी टीका ११

कथंते प्रविशंते ते दृष्टान्ताभ्यां निदर्शयते वक्रमार्गप्रवृत्तानां
दीनां वहवोऽप्येषां वेगवेतः प्रवाहा वै समुद्राभिमुखा यथा स
मुद्रं प्रविशंते वंदनं वीरमहत्तराः भीष्मराणादयः सर्वे तव
वक्राणि सर्वतः प्रविशंति ज्वलेत्येते महाकालेन योजिताः २८

नीलकंठी टीका १२

इदमेव सदृष्टं तमाह यथेति तव वक्राणि विशंतीति संवेधः
अभिविज्वलेति सर्वतः ज्ञानज्वलमानानि २८

आनंदीटीका सप्तमं २८॥ राजाकालमुखप्रवेशनिदर्शनमाह॥

रामकेटीटीका सप्तमं २८

लासिकी २२२२टीटीका

प्रवेशोत्तरयाहृष्टं तमाह ॥

यथावज्रमार्गप्रवहेतीनां नदीनां जलप्रवाहः समुद्राभिमुखाः
समुद्रमेव द्रवंति प्रविशन्ति तथा मीनरलोकवीराः सर्वतोदीप
गितवसुवातिविशन्ति

२८

पंचोलीटीका

भगवान्मुखे प्रवेशं दृष्टं तेन योजयति यथेति यथा नदीनां
बहवश्चनेकाश्चुवेगाः समुद्रमेवाभिमुखा द्रवंति विशन्ति तथा
तद्वत् मीभीष्मादयो नरलोकवीराः मनुष्यलोकभूषाः तव
भिविज्वलन्ति प्रकाशमानानि वक्राणि प्रविशन्ति २८

रणवीरसमिद्धोत्थिनी॥

अथ पुनरमुमेवार्थं निदर्शयति यथेति नदीनां बहवो चुवे
गा जलप्रवाहाभिमुखा अभितः सर्वतो मुखगतिर्धृष्टानेभि
मुखानि र्गलगतिका अपि यथा समुद्रमेव गच्छन्ति तथा
मीनरलोकवीरा नरलोको मनुष्यलोकस्य अपि ये वीरा वीर
पुरुषास्ते पितवा भिविज्वलन्ति प्रज्वलन् रूपाणि वक्राणि विशं
तीति २८॥

मधुभाष

२८

1171195135072

1911

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

[Faint, illegible text from bleed-through]

भाष्य अनुवाद

अब उनके प्रवेश विषय में टिप्पणी करते हैं कि जैसे अनेक
अनेक मार्ग से नदियों के द्वारा प्रवाह समुद्र के अभिसृष्टि की
ये भये जायकर समुद्र में प्रवेश करते हैं तैसे ही ये नरलोक के
वीर सकल जाज्वलमान तमारे मुख में पैठे जाते हैं २५

चौथी

जैसे नदी के बड़े जल वेग दि सागर समुद्र यद्भवतः
तिमि यद्भूमिलोक के वीर तव मुख जलित प्रवेश मथीर २६

यथाप्रदीपं ज्वलनं पतद्भूषणविशानिनाशा
यसमृद्धवेगाः तथैव नाशाय विशानि
लोकास्तवापि वक्राणि समृद्धवेगाः २५

शाङ्करभाष्यटीका १

ते किमर्थं प्रविशन्ति कथञ्चेत्याह यथेति यथा प्रदीपं ज्व-
लने अग्निं पतद्भूषणः पतितो विशानि नाशाय विनाशाय समृद्ध-
वेगाः समृद्धः उद्धतो वेगो गतिर्येषां ते समृद्धवेगाः तथैव ना-
शाय विशानः लोकाः प्राणिनस्तवापि वक्राणि समृद्धवेगाः २५

आनन्दगिरिकृतटीका २

प्रवेशप्रयोजनं तत्प्रकारविशेषञ्चोदाहरणानुरेण स्फुरयति
ते किमर्थमित्यादिना २५

स्वामिकृतटीका ३

अवशान्तेन प्रवेशेन दीवेगं दृष्ट्वा तत्तुः बुद्धिपूर्वकप्रवेशो दृष्टो
तस्माद् यथेति प्रदीपं ज्वलनमग्निपतेगाः शलभा बुद्धिपूर्वकं स-
मृद्धो वेगो येषां ते यथानाशायमरणायैव विशन्ति तथैव लोका-
न्तेजना अपि तव सुखानि प्रविशन्ति २५

पिशुनभाष्यटीका ४

स्पष्टार्थे २५

रामानुजभाष्यटीका ५

प्रदीपं ज्वलनमिव च शलभास्तव वक्राण्यभिज्वलन्ति
स्वयमेव त्वरमाणाः आत्मनाशाय विशन्ति २५

अभिनवगुप्तकृतटीका ६

स्पष्टार्थे २५

परमार्थप्रणालीटीका ७

तथा येन अभिज्वलन्ति अभितोजात् त्वमानानि वक्राणि विशन्ति ते यथा
बुद्धिपूर्वकं समृद्धो वेगो येषां तेशलभाः पतेगानाशायमरणवे-
दीपे ज्वलने विशन्ति तथैव लोकास्तदनुवर्तिनोऽपि तव वक्राणि वि-
शन्ति २५

वनमालीटीका ८

अबुद्धिपूर्वकप्रवेशेन दीवेगं दृष्ट्वा तत्तुः बुद्धिपूर्वकप्रवेशो दृष्टो त

श्री.
गीटी.
प

माह यथेति यथापतेगाः शलभाः समृद्धवेगाः संतो बुद्धिपूर्वकं
प्रदीपं ज्वलने विशंति नाशाय मरणायैव तथैवेते लोका उर्यो य
नादयः नाशाय विशंति सर्वे पि नाशाय विशंति सर्वे पि नाशाय त
ववक्राणि समृद्धवेगाः बुद्धिपूर्वकप्रवाहेण विशंति २५

रुसमवेनयनीटी ५

किंवात्रट्टांतमाह यथाप्रदीपमिति यथानाशायतामविनाशा
यैव समृद्धवेगाः समृद्धः समृद्धो वेगो येषां ते तथा संतः पतेगाः
शलभाः प्रदीपं ज्वलितं ज्वलनमनले विशंति तथा त्मविनाशायै
व समृद्धवेगाः लोका उर्यो यन प्रभृतयः सर्वे ये ते जनास्तु व विश्वा
कारस्पवक्राणि सुखानि प्रविशंति अत्र स्ववेशनज्ञानपूर्वकप्रवेश
नेट्टाते बोध्यः २५

अबुद्धिपूर्वकप्रवेशनदीनां वेगं दृष्टांतमुक्ताव
माह

मधुसूदनीटीका. १० द्विपूर्वकप्रवेशोदृष्टांत

यथापतेगाः शलभाः समृद्धवेगाः संतो बुद्धिपूर्वकं प्रदीपं ज्वलने
विशंति नाशाय मरणायैव तथैव नाशाय विशंति लोका पतेउ
र्यो यन प्रभृतयः सर्वे पितववक्राणि समृद्धवेगा बुद्धिपूर्वमना
यत्मा

२५

सदानेदी टीका. ११

यथापतेगा उद्भूतवेगास्तु बुद्धिपूर्वकं विशंत्यपि ज्वलते च स्वना
शाय तथैव ते उर्यो यनादयः सर्वे वेगवेतो सुखानिते मरण
यविशंती मे बुद्धिपूर्वप्रवाहतः २५

नीलकंठी टीका. १२

बुद्धिपूर्वकमेव ते तद्वक्राणि प्रविशंतीति सदृष्टांतमाह यथाप्र
दीपमिति २५

शान्तेदीटीका स्पष्टार्थम् २६

रामकंठीटीका

एतल्लोकपंचकेति गरितव्याख्यातप्रायं किंतु तववक्राणि विशंतीति
वद्भवनेन रंष्टाकरालानीत्यारिविशेषणाविशिष्टानिवक्राण्युपक्रम्य
विंशत्येव जेतवविशंति इति यउक्तं तत्रकालपुरुषसंबधित्येवारा

कृतिविशेषरूपानानाविधशक्तयपकस्योत्तरीयायोपरस्योसामान्यश
 त्तोपरिगामंति इतिभगवतः सर्वशक्त्याश्रयत्वप्रतिपादनपरंबोद्धव्यम्
 यतपकवक्रशब्देनप्रतिपादितायाः सामान्यशक्तैरव्यपदेशत्वादवित्य
 रूपत्वेनविशेषणमुक्तम् तथाहि इमेतच्छरीरस्यतेनतदेवस्फुटीकृतं
 अत्रश्लोकपंचकेसार्थेनानाश्रूयैरित्यादितच्छरीरं प्रविष्टा इत्यंतं सौ।
 कसार्थकंश्लोकसाम्प्रार्थनपठेति केचित् कश्चित्तवरेणसातिहृतानून
 मित्यादिश्लोकाधमनेनाभिप्रायेणानपठेतीह तवद्रूपस्तकदर्शनाद्वा
 रतेच तत्रसार्थश्लोकप्रणयनाद्या समुनेः श्लोकपंचकं सार्थमेवपठि
 तं

लौकिकी ~~पञ्चलीटीका~~ ~~स्यार्थः~~ ~~२५~~ देवशेषेन प्रवेशेन दीवेगं दृष्टोत
 युक्तास्मांतं त्रेण के वा विद्यो यथा
 पंचोलीटीका नो प्रवेशे दृष्टोत माह ॥

अवश्यत्वेन प्रवेशेन दीशशब्दे वेगदृष्टोत उक्तः बुद्धिपूर्वक प्रवेशे
 सप्रयोजनदृष्टोत माह यथा प्रदीपमिति यथा समुद्रवेगाः अ
 तिरहसा युक्ताः पतंगाशलभाप्रदीपं ज्वलनमग्निं नाशाय विशं
 तितथैव लोकाः प्राणिनः नाशाय समुद्रवेगाः तव वक्राणि विशं
 ति २५

रणावीरसमिद्धे धिनी ॥

यथेति यथा प्राज्ञो निदर्शने प्रदीपं जाज्वल्यमानं ज्वलनं शि
 खावंतं पतंगाः पक्षिविशेषाः समुद्रवेगा अपि नाशाय स्वा
 त्मानं स्वयमेव नाशयितुं यथा विशंति तथैव लोकाः समुद्रवे
 गाः प्रवला अपि तव वक्राणि नाशाय विशंतीति २५ ॥

मधुभाष्य

भाष्य अनुवाद

वेवश रूप प्रवेश मे नदी का दृष्टान्त कहि कर अब बुद्धि
वैक प्रवेश करने मे दृष्टान्त कहते हैं कि जैसे बड़े वेग से
उत्साह से पतङ्ग जो पोखी ले नाशके निमित्त दीप शिखामे जा
य गिरते औ मरते हैं तैसेही अति वेगसे ये सब वीर मनुष्य
नाशके अर्थ तमारे मुख मे आय कर प्रवेश करते हैं २५

चौथै

ज्वलित अग्नि मे सलभ प्रवेशों नाशदि को निज जव युत जैसे
तिमि सम मुखत वमादिसमादि बहुत वेग कर लोक दि
जादि २६ ॥

9735 23/13

64

[Faint, illegible handwritten text]

384

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

लेलिखसेप्रसमानः समन्ताल्लोकान् सम
 ग्रान् वदनेर्ज्वलद्भिः तेजोभिर्गार्ह्यजगत्
 मयेभासस्तवोग्राः प्रतपन्ति विष्णो १-

शाङ्ख्यभाष्यटीका १

ते पुनः लेलिखसे इति लेलिखसे आस्तादयसि प्रसमानोऽनः प्र
 वेशयन् समन्तात् समन्ततो लोकान् समग्रान् समस्तान् व
 दनेर्बलैर्ज्वलद्भिर्दोषमानैस्ते ज्योभिर्गार्ह्यं संख्याय जगत् सम
 ग्रं सहायेण समस्तमितेतत् किञ्च भासोदीप्तयस्तवोग्राः कू
 राः प्रतपन्ति प्रतापं कुर्वन्ति हे विष्णो व्यापनशील १-

न श्रान्दगिरिकृतटीका २

योद्धुकामानां राक्षो भगवन्मुत्प्रवेशप्रकारं प्रदर्शय तस्योद
 शाया भगवत्सङ्गसाञ्च प्रवृत्ति प्रकारं प्रत्याययति ते पुन
 रिति भगवत्प्रवृत्तिमेव प्रत्याय तदीयभासो प्रवृत्ति प्रकटय
 ति किञ्चेति १-

स्वामिकृतटीका ३

ततः किमतश्चाह लेलिखस इति प्रसमानो गिलन् समग्रं लोका
 न् सर्वा नेतान् वीरान् समन्तात् सर्वतो लेलिखसे ति शयेन भक्तय
 सिंकेर्ज्वलद्भिर्वदनेः किञ्च हे विष्णो तव भासो दीप्तयस्ते ज्योभिः वि
 स्फुरणैः समस्तजगत् व्याप्यतीव्राः समः प्रतपयेति संतापयेति १-

पिशुनभाष्यटीका ४

लेलिखसेत्यर्थमास्तादयसि १-

रामानुजभाष्यटीका ५

लेलिखस इति राजलोकान् समग्रान् ज्वलद्भिर्वदनेः समेततः को
 पवेगेन प्रसमातः तदुपि रासक्तमोष्टुपुटादिकं लेलिखसे पुनः प्र
 नर्लेदने करोषि तवानिचोराभासोरश्मयः तेजोभिः स्वकीयेः प्र
 काशैर्जगत् समग्रमापूर्य प्रतपेति १-

शमिनवगुप्तकृतटीका ६

सप्तार्थ १-

१ श्री
नीटी.
प

०५

परमार्थप्रपाटीका ३

लेलिखस इति समग्रान् लोकान् समंततो वदनेर्वलवद्भिः प्रस-
मानः गितन सन् पुनरुत्तरो लेलिखसे इति तृतीयां सदृशसिभो वि-
स्मोवापनशीलतवभासो दीप्तयस्ते जाभिः स्फुरतोः समस्तजगत्वा-
पतीन्द्राः संतः प्रतपन्ति तापयन्ति अत्र पूर्वोपक्रान्ताः ऋग्वेदेषु ति-
रपि रत्नोद्धारो वाजिनमाजिचर्मिभिर्विप्रविष्टसु पणामिशमेषा-
शानोभिः क्रतुभिः समिद्धः सन्नो दिवा सरिषः पातनकं १ अथो-
दयो अर्चिषा यातयानानुपस्पृशन्नातवेदः समिद्धः आजिह्या-
मूरदेवान् रभसकृत्वा दोहं कृत्वा पियत्स्वसन् २ भाष्ये रत्नोद्धारो-
मिति पंचविंशत्येव सूक्तं - - भरद्वाजऋषिः अनुक्रान्ते चर-
त्तोद्धारो - पंचाधिका विंशतिः संहाराभिहरणे परित्यागे रित्येषा-
जयेति सर्वानुक्रमः तत्र प्रथमारत्नोद्धारमिति रत्नोद्धारो रत्नसो-
दहारो वाजिनं वलवंतं वा प्रिमाजिचर्मि - - - अग्निं वैष्णवानां
विष्वक् रूपं मे श्वरं आजिचर्मि च तेन जहो मि प्रदीप्ते तीक्ष्णकृते
मित्यर्थः किंच मित्रं भजतामनुकूलं प्रविष्टं पृथुतरं व्यापकं शर्म-
शरणं सुपयामि सोयमग्निः शिशानो ज्वालाभिलीक्षणीभूतः क्रतु-
भिः कर्मपदैः पुरुषैः प्रज्वालितः किंच सोमिर्नो स्मान् दिवा अहनि रि-
षो हिं सका इतसः सकाशात्पातरसत अथ द्वितीया हेजातवेदः
वैष्णवरेष्वरत्नं समिद्धः सत्पदीपः अथोदेषः लोहशलाकावती-
त्तादंष्ट्रः सन् यातयानान् अर्चिषा ज्वालयानुपस्पृशन्नातवेदः
किंच ते मूरदेवान् मूलदेवान् रासस्मान् जिह्वा ज्वालयारभस-
मारयेत्यर्थः मारयित्वा च कृत्वा दोहं मासभक्तकान् वेत्ति स्थिता आश-
न आसेपियत्स्व आच्छादय

वनमालीटीका ६

भगवत्सुखासोत्तुप्रवृत्तिप्रकारमाह लेलिखस इति पदेवेगेन-
प्रविशतो लोकोर्दुर्याथनादी समग्रान् लोकान् प्रसमानोतः प्रवेशय-
न्नलद्विर्वदतैः समंतात्सर्वतस्त्वेलेलिखसे आस्तादयसि ते जाभि-
र्भाभिराष्टयजगत्समये यस्मात्ते भाभिर्जगदाहरयसि तस्मात्त-
वो जालीन्द्राभासो दीप्तयः प्रज्वलतो ज्वलनस्यैव प्रतपन्ति संतापन

येति हे विसो सर्व व्यापक १-

रुसमं वेनय नो दीका ५

एवे यो हृणो गतो भगवन्सुख प्रवेश प्रकारमाह इदानीं भगव
तो भगवद्वाशो च तत्र प्रवृत्ति प्रकारमाह लेलिमस इति ज्व
लदिः प्रजा ज्वलमानैर्वदनैः समंतात्कोपावेशेन सर्वतः स
मग्रान् समस्तान् लोकान् अतिवेगेन तन्मुखा निप्रविशतो
इयो धनादियो हूज नान् ग्रसमानो गिलन सन् लेलिमसे रु
थिरो तितारुणाथ गदिकं तेषु नः पुनर्लेलि हे विसो व्यापन
शील ते जो भिरा पूर्य यत्समं यस्मात्ते जा भिर्दीप्ति भित्त्वे स
पुनर्गदा पूर्य स्थितो सितस्मात्ते वोया अति चोराः भासो दीप्त
यः प्रतपेति प्रज्वलतो ज्वलन सेव सत्रापे जनयन्नि यद्वा हे
विसो तवोयाः अतितीव्रा दीप्तयस्ते जो भिः स्वकीयेर्मरीचिभि
र्जगदा पूर्य परिपूर्णं कृत्वा प्रतपेति स्वयमेव प्रकाशते १-

योडकामानो गतो भगवन्सुख प्रवे मधुसूदी दीका १- शप्रकार उक्ता तदा भगवत्सद्वाशो च प्रवृत्ति प्रकार

माह- एवे वेगेन प्रविशतो लोकान् धुर्यो धनादीन् समग्रान् सर्वान्
लोकान् सर्वान् ग्रसमानः अतः प्रवेशयन् ज्वलदिवदनैः
समंतात् सर्वं तस्मै लेलिमसे ज्वलन सेव प्रतपेति सतापे
जनयेति हे विसो व्यापनशील १-

सदाने दी दीका ११

रुपाणो मुडकामानो श्रीमद्भगवतो मुखे प्रवेश प्रकारं प्रोच्य
तदा भगवतोदरैः १ तद्वाशो संप्रवृत्तेषु प्रकारे प्राह पंडितः
आस्तादयसितात्सर्वी लुर्यो धनमुखा रूपान् २ ग्रसमानो निवे
गेन विशतस्त्रसमेततः अतः प्रवेशयन् त्रैः प्रज्वलदिः य
तस्मै वदीप्तयस्तीव्रवद्वा भाः सतापे जनयेत्समूः ५ १-

नीलकंठी दीका १२

येव यने तस्मै स्वे करुणावानपि नवारथे सिप्रसन्नयसितमि
च्छेत्सेवेत्याह लेलिमसे भूयो भूयो ति शयेन वा स्वादयसि की
दृष्टास्त्रं समंतात् ज्वलदिवदनैर्लोकान् समग्रान् ग्रसमानः
एवे निर्वृत्ता स्थापितवते जातहीयते प्रसन्नवर्द्धत एवेत्याह
ते जो भिरिति हे विसो व्यापनशील समग्रं जगत्ते जो भिरा

आस्तादयसि ते जो भिर्भाभि
रा पूर्य जगत्समं यस्मात्ते
भाभिर्जगदा पूर्यसि तस्मा
त्तव उग्र तीव्रा भासो दीप्त
यः प्रज्वलतो

नुभिक

श्री.
गी. टी.
५

सूर्यतवउयाः स्रष्टुमशकाभासोदीप्तयः प्रतयेतीति योज
ना पदार्थः स्रष्टुः १-

आनंदीटीका स्पष्टार्थम् ३

रामकंदीटीका स्पष्टार्थम् २

अथ तथाविधां चोररूपं भगवतः शक्तिं दृष्ट्वा तत्तत्त्वजिज्ञासार्थमिदमाह ३॥

लासिकी वसुज्जीटीका

किंच- ज्वलद्भिर्वदनैः सर्वलोकात्समंताद्भुसमानो भक्तयन् लेखमिवा
नायासेन निगिरमि हेविस्मो व्यापक तव कालरूपस्य दीप्तयः
संहारकारणीभूतास्तेजोभिर्विस्फुरणैः समग्रं जगदाप्योयासी
वाङ्महाः प्रतपन्तिः आध्यात्मिकादितापत्रयपरिणामेन प्रति
कल्पयच्छंतीत्यर्थः ३॥

पंचोलीटीका

भगवतस्तेजोमहा लेखिसस इति हेविस्मो त्वेज्वलद्भिर्वद
णमानैः वदनैः समग्रं लोकात्समंतात्प्रसमानः अतः प्र
वेशयेत्तेजोमहा लेखिसस इति तव उयाः कुराः भासो दीप्तयः
स्तेजोभिः समग्रं जगदाप्युपप्रतपन्ति संतापयन्ति ३॥

इरावीरसमिहोधिनी॥

इदानीं तद्भुसंती मूर्तिस्तोषति लेखिससे इति विस्मो त्वमेव
समग्रं लोकात्समंतात्सर्ववयवतो ज्वलद्भिर्वदनैर्प्रसमा
नः संलेखिससे आस्वादयामि अथ च तवोया चोराभासश्च
समग्रं सकलमिदं जगत्स्वतेजोभिरासूर्यप्रतपन्ति संताप
यन्ति चेति ३॥

मधुभाष्य

॥ ३॥

भाषा अनुवाद
और प्रवेश के अनन्तर फेरि का हाता सो कहने हैं कि तम
भी अति भयानक जिह्वा लहलहाते द्रव्य मानो त्रैलोक्य लील
वे को रसना पसारी हैं अर्पण तेजसे समग्र जगत को सन्तम क
रते भये उन सब वीरों को शास कहे भक्षण करने की इच्छा क
रते हो ३-

वैपरी

चार तरफ से प्रसन्न करुणा दत्त मुख प्रदीप्त से सभ लोक दिखा
दत्त तेज दिसें जग पूर्ण कृत्ता तेरे तेज तपावें कृत्ता ३॥

आद्यादि मेकोभवानुग्रहो नमोःस्तते देव
वरप्रसीद विज्ञातमिच्छामि भवन्नमाद्यं
नहि प्रजानामितव प्रवृत्तिं १॥

शाङ्करभाष्यटीका १

यत एवमुग्रहभावोऽतः आद्याहीति आद्यादि कथयमे महो
कोभवानेवमुग्रहः अतिक्रमकारो नमोःस्तते तभ्यं दे देव
र देवानो प्रधान प्रसीद प्रसीदं कुरु विज्ञाते विशेषेण ज्ञात
मिच्छामि भवन्नमाद्यमादौ भवमाद्यं न हि यस्मात् प्रजानामि त
व तदीयां प्रवृत्तिं चेष्टां १॥

आनिरुक्तटीका २

भगवद्गुणस्यार्जनेन दृष्टपूर्वत्वात् तस्मिन्नजिज्ञासेत्याशङ्का
ह यत इति उपदेशो मुमुक्षुमात्रेणोपदेशकर्तुः प्रहो भवने क
र्तव्यमिति सूचयति नमोऽस्त्विति क्रोड्यत्वात् समर्थयते प्रसादमि
ति तमेवमो जानीषे किमर्थमिष्टमिदानीमर्थयसे मदीयां चे
ष्टां दृष्ट्वा तथैव प्रतिययस्वेत्याशङ्काह न हीति १॥

स्वामिकृतटीका ३

यत एवेतस्मात् आद्याहीति भवानुग्रहः क इत्याद्यादि कथय
तभ्यं नमोःस्तते देव वरप्रसीद भवन्नमाद्यं पुरुषं विशेषेण
ज्ञातमिच्छामि यतस्तव प्रवृत्तिं चेष्टां किमर्थमेव प्रवृत्तोसीति न
जानामि एवंभूतस्य तव प्रवृत्तिं वार्तामपि न जानामीति वा १॥

विशाखभाष्यटीका ४

स्यार्थं १॥

गमात्रभाष्यटीका ५

आद्याहीति दर्शयात्मानमवयमिति तवेष्टं निरेकुशं सात्तात्
कर्तृप्रार्थितेन भवता निरेकुशं मेष्टं दर्शयता निचोरूपमिदमा
विष्कृते अतिचोरूपः को भवान् किं कर्तुं प्रवृत्त इति भवत्तं ज्ञातुं
मिच्छामि तवाभिमतं प्रवृत्तिं न जानामि यत आद्यादि मे नमोःस्त
ते देव वरप्रसीद नमस्तु सर्वेष्वप्येव कर्तुं मत्तनाभिप्रायेणोदं नमः
हर्तृरूपमाविष्कृतमित्युक्ता प्रसन्नं भव आश्रितवात्स्यातिरेके

श्री.
गी. टी.
प

३१ नविश्वेऽर्थदर्शयतो भगवतोऽक्षररूपा विष्कारे को भिप्राय इति पृष्ठो
भगवान् पार्थ सारथिः स्वाभिप्रायमाह पार्थ योगेन विनापि ध्याते
राष्ट्रप्रभुत्वशेषं राजलोकं निहतमहमेव प्रवृत्त इति ज्ञापनाय म
मोक्षरूपा विष्कारः तच्च सापने पार्थ सुयोजयति

अभिनवगुप्तकतटीका ६

तव प्रवृत्तिं न वेमिकेनाशयेनेदृशीय सुप्रतेतितदत्र भवतोत्तरं न
गतो विद्याविद्यात्मनः शुद्धाशुद्धमिश्रसंविद्वत्प्रसेकरणादभिधी
यत इति प्रायशः सूचितमत्राप्यायेरहस्येऽहं कितमात्रसंविद्वत्सम
र्थेभ्योऽस्तु कियत्संक्लितेनार्थसंदोः स्थितमालम्भे महि अत्र यदु
क्तं मया हतेषु ते निमित्ते यशोसी भवेति भगवता तत्प्रत्यक्षं प्रागर्ज
नेन न चेतद्विद्मः कतरदितादि ३१

अथ भविष्यदर्थदर्शनादाश्च परमार्थपटीका टीका ७ र्थवान् पुनः एवमिति आख्याहीति ॥
उपरूपो भवान् इति मे आख्याहिकथयस्व ते तभ्यं न मोक्षदे देवव
रप्रसन्नो भव भवंतमाद्यं पुरुषं विशेषेण ज्ञातुमिच्छामि यतो ह
ष्टेऽपि रूपेण तव प्रवृत्तिं किमर्थं प्रवृत्तोऽसीति तव चेष्टानजानामि ३१

वनमालोटीका ८

अतिभीतः संप्रसादाह आख्याहीति एवमुपरूपोति कृगकारः को भ
वान् वासदेव सर्वेश्वरं जगदुदयादिकर्तारं च तर्भुजं सर्वदा जानाम्यय
मेश्वर्यविशेषस्तथा विष्कृतो मया कदाचिदप्यहं एवमाख्याहिकथय
मेमत्समसंतापुहाय अतएव तस्मात्स्ते तभ्यं सर्वगुरवे देववरप्रसी
द विज्ञाते विशेषेण ज्ञातुमिच्छामि भवतमाद्यं सर्वकाराण्यद्वियतस्त
व प्रवृत्तिमभिप्रायं न जानामि मया ज्ञेयं सर्वदर्शयितुं भवता त्वसर्व
लोकसंहारकमतितीव्रानंतं धर्मविशिष्टं प्रकटितं प्रलयकालस्येदा
नो मभावा किमर्थं प्रकटितमिति भावः ३१

कुसुमवैजयन्तीटीका ५

दर्शयामास मययमित्यादिना तव निरंक्रुष्यैः सर्वं विस्तरपट्टं म
या तं पार्थितोऽसि न तमहाक्षरमिदं दृष्टं तस्माद्यदिदं तया धृतं तत्सु
पेतद्वाराण्यप्रयोजने च ज्ञातुमहमिच्छामि मयाह आख्याहीति ईदृशा उ
परूपः कृगकारो भवान् को भवति मेमत्समं तदाख्याहितं कथय दे
देववर सर्वेश्वरं तभ्यं सर्वगुरवे नमः प्रणामोऽस्तु प्रसीदद्यौरूपं तया

गं प्रसादं तं कुरु हि यस्मात्तव प्रवृत्तिं श्रुत्वा प्रयोजनाय प्रवृत्तोऽस्मी
त्यभिप्रायसद्वृत्तौ चेष्टो न प्रजानामितव सत्त्वापि सन्नरे न वेदितस्मा
दाद्यं कारणं भवते सर्वं चरे विज्ञातं विशेषेण ज्ञातमिच्छामि सर्वमेत
दाख्याहि ३१

यस्मादेवं
तस्मात्

मधुसूदनी टीका १०

एवमुग्ररूपः क्रूरकारः को भवानित्याख्यादिकथय मे मत्प्रमत्ता
नुशास्ययस्तपवनमोक्षते तभ्यं सर्वगुरुवे हे देव वरप्रसीद प्रसा
दं कौर्यस्यागं कुरु विज्ञातं विशेषेण ज्ञातमिच्छामि भवत माद्यं सर्व
कारणं न हि यस्मात्तव सत्त्वापि सन्नप्रजानामितव प्रवृत्तिं चेष्टो

३१

॥ सदानदी टीका ११ ॥

को भवानुग्ररूपं सत्कथय सद्गुरो अत एव न मत्प्रमत्ता मत्प्रसन्नं सर्व
शराय च १ प्रसन्नो भव भक्तायानुशास्ययादि देव त भवे तं ता
तमिच्छामि सर्वदेते विशेषतः २ तव चेष्टो न जानामि यस्मात्तव
सत्त्वापि सन्न ३ ३१ नीलकंठी टीका १२

एवं दीप्याकुली भूतोर्जनो भगवानयमिति विस्मयाद् आख्या
हीति एवमुग्ररूपः क्रूरकर्मा भवान्कोसीत्याख्यादि प्रसन्नो
स्मीति कथय प्रसीद शो तो भव त्वा मदे विज्ञातमिच्छामि यत
स्त्वव प्रवृत्तिं चेष्टो न जानामि ३१ ॥

आनेरी टीका

प्रसीद क्रूरमाकारे तत्ता को भवानुग्ररूप इत्याख्याहि

॥

रामकंठी टीका

इमांस्तमंशं लोकांस्तमंतात्सर्वतो ज्वलद्भिर्वदने स्नानले मूर्ध्वैर्ग्रसमा
तः कवलवले लिप्ये मभीक्षो ले ह्यास्वादयस्य एव तवोग्राभा सो चोर
दीप्यः समस्तो विश्वे ते जो भिर्याप्य प्रतप दे दे दीप्ये ते यत पवं परम प्र
शान्त विन्मात्र सभाव स्य तव चोरे रूपा पश्यामि ततो देव वरस्वरो ज्ञमतः
भ्ये नमः प्रसारे कुरु को भवानुग्ररूपः संवृत्त इति मत्प्रमा च त्वयस्मात्त्रैवे

श्री.
जी.टी.
ए

वैविध्योपरूपप्रहरीप्रवृत्तिप्रसरंनजानामितत्ततोनावगच्छाम्य
तथायंपरमकारणंभवंतंज्ञातुंविशेषेणावेहमिच्छामि

लासिकी दसप्रतीटीका

यतपवंतस्मात्वेकुराकारःकुरत्याख्यादिकथय तेतुभ्यंनमोस्तु हे
देववरप्रसीदप्रसन्नोभव आद्यंमनातनमोप्रवरंविज्ञातुंविशेषेणा
सामान्याकारतयावेदितमिच्छामि यतस्तुवैश्वरस्येवंविधमिति
कौर्यफलोसाक्षात्क्रियमाणांप्रवृत्तिप्रसरंकिमर्थमेवंप्रवृत्तौसीतिन
प्रजानामि

३१ ॥

पंचोलीटीका

यतपवमुपसृष्टभावस्त्वेततःस्वस्वरूपंकथयेत्याह आख्याहीति
हेदेववरमेमसंआख्याहिउग्रहपःकुराकारोभावान्कःतेतुभ्यंन
मोस्तुप्रसीदभवंतंत्वांआद्यंविज्ञातुमिच्छामिहियस्मात्तवप्रवृ
त्तिंवेष्टोनजानामि ३१

रागवीरसमिद्धेयिनी

अथ पुनरपिप्रार्थनां करोति आख्याहीति देववरनमोस्तु ते
प्रसीदेति अथमंभगवंतंप्रसादानंतरंप्रार्थनापूर्वकंपृच्छति
उग्रहपोभवान्कोसीतिमेमसमाख्यादि प्रसूहीति यतश्चाहं
भवंतमादिमादिकारणंविज्ञातुमिच्छामीति ननुकिंमांप्रार्थ
यमेस्वयमेवजानीषेइत्याशंक्यादनहीति तवप्रवृत्तिंप्रसरंय
तो नजानाम्यनादितादतपवभवंतंपृच्छामीतिभावः ३१॥

मधुभाष्य

३१॥

भाषा अनुवाद

हे महाराज जिससे तुमारा ऐसा उग्ररूप है इससे आय कौही
सो कही और हम तुमको प्रणाम करने हैं हे देव अथ तुम
मेरे पर प्रसन्न होउ और आदिपुरुष जो तुम सो तुम को मैं
जाना चाहता हूँ और एवं भूत जो तुम तुमारी प्रशंसा करे
वार्ता कुछ भी हम नहीं जान सकते हैं ३१

चौथी

कोतम उग्ररूप मोडक दंड तो दिन मोरु देववर इवदं
तो को आदि दि जानत चहदों माया तव नदि हूकत अद
हों ३१

[Faint, illegible handwritten text]

[Faint, illegible text from bleed-through]

श्रीभगवानुवाच कालोस्मिलोकलयकृत्य
लोकोकान् समारुहन्मिदप्रवृत्तः अनेपि तां
नभविष्यन्ति सर्वे येऽवस्थिताः प्रपत्नीकेषु
योधाः ३२ शाङ्खभाष्यटीका.

कालोस्मीति कालोस्मि लोकलयकृत्य लोकानां लयं करोतीति लो
कलयकृत्य प्रवृद्धो हृदि गतो यदर्थे प्रवृद्धस्तच्छृणु लोकान् समा
रुहन् इदं अस्मिन् काले प्रवृत्तः अनेपि विनापि तां न भविष्य
न्ति भीष्मदोषा कर्णप्रभृतयः सर्वे ये भवन्तवाशङ्का येवस्थिताः प्र
पत्नीकेषु प्रपत्नीकमनीके प्रति प्रपत्नीकेषु प्रतिपत्तभूतेषु प्रपत्नीके
षु योधापव योद्धारः ३२

आनन्दगिरिकृतटीका. २

यदर्था च स्वप्रवृत्तिः तत्सर्वं भगवानुक्त्वानित्याह भगवानिति
कालः क्रियाशक्त्युपहितः परमेश्वरः अस्मिन्निति वर्तमानबुद्धौ
पललितत्वं कालस्य विवर्तितं लोकसंहारार्थं तत्प्रवृत्तावपि
नासावर्षवती प्रतिपत्ताणां भीष्मादीनां मत्प्रवृत्तिं विनापि संद
र्भमशक्यत्वादित्याशङ्काद अनेपीति ३२

स्वामिकृतटीका ३

पदंप्रार्थितः सन् श्रीभगवानुवाच कालोस्मीति विभिः लोकानां त
यकर्ता प्रवृद्धो हृदयः कालोस्मिलोकाग्राणि नः संदर्भे इदं लोके प्र
वृत्तोस्मिन्नत अनेपि ता इति तां देतां विनापि न भविष्यन्ति तन्नीवि
ष्यतिकेते प्रपत्नीकेषु अनेकान्यनेकानि प्रतिभीष्मदोषादीनां स
र्वसमेनास्ये योद्धारो वस्थिताः ते सर्वेपि ३२

पिपाचभाष्यटीका. ४

अनेन सवचनेन कृतान्तस्यान्तरं श्रीभगवानुवाच कालोस्मीति लो
कानि ह मच्छरीरे समाहृतं पिङ्गीकृतं वृत्तः अनेपि ता अन्तरेणापि
न भविष्यन्ति ३२

रामानुजभाष्यटीका.

श्रीभगवानुवाच कालोस्मीति कलयति गणयतीति कालः सर्वेषां

श्री.
गी. टी.
प

धार्तराष्ट्रप्रमुखाणां रात्रलोकानामवसानं गणयन् हंत तत्तयं कृतं
द्यौरनूयेण प्रवृद्धो रात्रलोकान् समाहृतं माभिमुखिन संहरतं मिदं
प्रवृत्तोस्मि अतो मत्संकल्पादेव तास्तने पितु उद्योगादनेपि पते
धार्तराष्ट्रप्रमुखास्तव प्रपत्नीकेषु येव स्थिता योथास्ते सर्वे न भवि
ष्यन्ति ३२

सप्तमोऽर्थः ३२

अभिनवगुप्तकृतटीका. ६

परमार्थप्रपाटीटीका. ७

एवं प्रार्थितः सन् भगवानाह काल इति प्रकर्षेण ब्रह्मोद्वादिं प्रा
प्तो लोकतय कृत्वा गुरुतः कालः सन् लोकान् समाहृतं मेव प्रवृत्तो
स्मितदेवाद्ये प्रपत्नीकेषु अतो काम्यनीकानि प्रतिप्रमकभूयते स
नासु ये अवस्थिताः सन्मूर्खीभूता योथाः सन्मूर्खस्ते सर्वे न भविष्यन्ति
न जीविष्यन्ति तर्हि मम गतिः कस्याह तादृतितास्तने त्वं विना न मे
भक्तः प्रणश्यतीत्युक्त्वा ३२

वतमालीटीका. ८

कलयतीति कालः जगत्कलयन् ससंस्थानस्योपतिलयादेश्च कर्त्तुं
प्रकर्षेण ब्रह्मः परिपूर्णः अनादिर्निर्गोवालोकां तय कृतं सदा त
य कर्त्ता पीडा नीयुगपद्ब्रह्म न उर्योथनादीन् प्रपत्नीकेण संहरतं मिदं प्रवृ
त्तः उग्ररूपः किमर्थमिति प्रश्नपरिहारायोक्तं लोकतय कृत्वा सुकृत्वा
प्रपादयति अनेपीति अपि पदान्ते प्राज्ञादीनपि विनेत्यर्थः प्रष्टाद
शास्त्रोद्वादिनीरूपेषु प्रपत्नीकेषु प्रतिपत्तभूतेषु नीकेषु सैमेषु येव स्थि
तास्ते सर्वेपि न भविष्यन्ति न स्यास्यन्ति किंतु मरिष्यन्तीत्यर्थः ३२

रुसमवेजयेतीटीका. ९

एवमर्जनेन पृष्टः पार्थसारथिर्भगवान् स्वरूपं तद्वारणप्रयोजने वाह
विभिः कालोस्मीति यस्य ब्रह्मवत्तत्रैव उभे भवत आदने सत्यं
स्योपसेवनं कस्यावेदयत्र सस्यादिश्रुतिप्रतिपादितो यः कालः क
लयति सर्वेषां उर्योथनादिभूभुजासंवसानं गणयतीति तथा स
अहमस्मि अहं भवामि लोकतय कृतं लोकानां ब्रह्मादि स्यादराज्ञा
नां सर्वेषां जनानां तत्तथा वानो वत्तय कृत्वा नाशकरः प्रवृद्धः प्रयुता
तिद्यौररूपेण ब्रह्मिगतः सर्वव्यापीत्यर्थः काल इत्यादिपदत्रयेण को भ
वात्प्रवृत्तपदस्योत्तरश्रुतिमिदानीं तव प्रवृत्तिं न जानामीत्यस्योत्तर

न

नरमाहलोकानिति इहास्मिन्कुरुतेत्रेसमयेवालोकादुर्योधनादीना
 माहर्तसमगाहर्तभस्तिनेप्रवृत्ततोस्मिपूर्वमेवातिचोराकारदर्श
 नादतिभयशुक्तेपुनःसर्वलोकान्भस्तीतीति तडुक्तिप्रवणनस्वप्ना
 पिनाशोमानयेतंशुक्लवदनमर्जनमवलोक्यतोविहायेतरान्सर्वा
 न्भस्तीमीमाहर्ततेपितृमिति तंसावायंभक्तंअपिशाहेनशुधि
 शिगदीनर्ततेविनाप्रमनीकेषुप्रमनीकोपललितसपत्तप्रतिपत्त
 सेमेधित्यनेनसहासदीपैरपियोधमुवैरितर्जनोक्तिर्नतेपितृ
 मिनिभगवडुक्तिप्रसंगच्छतेःवस्थिताःपुद्गकरणार्थेसंसृजमानाः
 स्थिताःयेयोधायोद्धारस्तेसर्वमयाहृतत्वादवनभविष्यतिसर्वाने
 वभस्तीमीमर्थःयद्वा ननुययदेयुहंकरिष्यामितर्ह्येवत्वमेतान्व
 धिष्मसितोचेकथमिपेतायामाहर्ततेपीति तंयोद्धारंअतेपितृ
 त्वांअतेतडुद्योगादतेपिविनापिमत्संकल्पादेवैतेसर्वनभविष्यति
 मरिष्येतेवेत्यर्थः ३२

श्रीभगवानुवाच

मधुसूदनीटीका १

एवमर्जनेनपार्थितःयःस
 ययदेषावसप्रवृत्तिःतत्त
 वैत्रिमिः॥

यि

ता

कालःक्रियाशक्त्युपहितःसर्वस्यसंदर्तापरमेष्ठरोस्मिभवामि इहा
 नीप्रवृद्धोद्दिगतःयदर्थेप्रवृत्तस्तत्तुल्यलोकान्दुर्योधनादीनस
 माहर्तसमगाहर्तभस्तिनेविनाकथमेवंस्यादितिचेत्नेत्याहर्त
 तेपितृमर्जनेनयोद्धारंविनापितस्यापारंविनापिमद्यापारंनैवभवि
 ष्यतिविनस्येवसर्वेभीष्मदोणकणप्रभृतयःयोद्धमनर्हतेनसभा
 विताःअन्येपियेवस्थिताप्रमनीकेषुप्रतिपत्तसेमेषुयोधाःयोद्धारः
 सर्वेपिमयाहर्ततदेवनभविष्यतितत्रतवव्यापारोःकिंचित्करइ
 त्यर्थः ३२

प्रवृत्तोहमिहास्मिन्का
 लेमत्यवृत्तिं

तथा

सदानेदीटीका ११

एवंसंपार्थितोविस्मर्जिस्त्वनातिप्रियेणसःस्वयेयश्चपदार्थाचप्रवृत्ति
 स्तत्रिभिर्वदन् १ उवाचपरमेष्ठयेनिधिःश्रीभगवानिति कालोहंसवे
 संदर्ताक्रियाशक्त्युपहितःसर्वेष्टरोभवामीहेदानीद्दिगतःपरा
 लोकान्दुर्योधनादीन्सर्वान्भस्तिनेत्वदेप्रवृत्तोस्मिजगत्कतीपाता
 संहारकृद्भिःमत्यवृत्तिविनामेवेकथस्यादितिचेत्तुल्यतामर्जने
 विनाशूरंतस्यापारंविनापिते मद्यापारणमुहेनभीष्मदोणदयो
 विताः ५ विनस्येयत्तज्यतालोकेसेभावितान्अपि येवाप्यवस्थि
 ताअन्येप्रतिपत्तचमपुभोःयोद्धारस्तेमयासर्वहृतत्वादवसंतिनो
 व्यापारस्त्वतत्रस्यादकिंचित्करपवहि ३२

श्री.
नीली
प

नीलकंठीटीका १२

एवमर्जनेन प्रार्थितो भगवानुवाच काल इति इहास्मिन्नेवामेलो
कान्तमाहर्तं भवति तं प्रवृत्तः प्रवृद्धो महानलोकस्तयकृतकालो ना
मपरमेष्ठुरस्मि यस्मादेवं तस्मात् अनेपित्वा तां विनापि सर्वे न भ
विष्येति मरिष्येति के ते सर्वे ये प्रत्यनीकेषु शत्रुसैन्येषु योधाः शूराः भी
ष्मादयोऽवस्थितास्त १२

एवं प्रार्थितः सत्वरूपे प्रवृत्ति च श्रीभगवानुवाच ॥ **आनेदीटीका**
एषि वीभारभूतानलोकान्सहर्तं प्रवृत्तः संहारकर्ता कालसंश्रयोस्मीत्य
र्थः अनेपित्वा इति नु यद्यपि पितृणां याहंतुने लुप्तमिदं यामिमेत्येतद्गता
एवेत्यर्जनप्रोत्साहनायम् यद्वा जयेम यदि वा न जयेम यदि प्राशुदि
ष्टं संशयमप्यकरोति १२

रामकंठीटीका किं मा विष्करोतीति विज्ञातो भगवानुवाच ॥
कालोऽस्मि निरुपलवस्वरूपा प्रकृतस्यैव विजृम्भमाणा शान्तोऽप्रचोदरूप
समग्रशक्तेः कालाद्याचौरा ममेयं शक्तिरित्यर्थः शक्तेश्च शक्तिमदमे
वा दहमेव काल इत्युक्ते कीदृशः कालः सकललोकसंहारैकव्या
पको धनातिरूपधियां प्रवृद्धान् सदोद्रिक्तान् एषि वीभारभूतानलोकान्
तिमात्समाहर्तं तयनेतं प्रवृत्तः प्रसृतस्तत्त्वत्वेनेपित्वा विनापि परि
पूर्णपापात्मकत्वात् सर्वयते न भविष्येति तय योत्समानेपि विनश्ये
व के ते योधाः संप्रहारीणाः प्रत्यनीकेषु प्रतियत्समैस्तेषु ये स्थिता यत
एवमेते संसवंते वावश्यं भावविनाशेनाहताः १२

अत्रोत्तरं श्रीभगवानुवाच लसिकी **वसुपतीटीका**
व-लोकस्तयकर्ता यः कालः स पवास्मि प्रवृद्धो वृद्धिगतः किमर्थं प्रवृत्तो
सोऽत्रोत्तरमाह लोकात्प्राणिनः सहर्तुमिह लोके प्रवृत्तोऽस्मि अतस्त्वा
मनेपित्वा हंतारं विनापि तय योत्समानेपीत्यर्थः एते सर्वे न भविष्य
न्ति विनश्यति सर्वेषां प्राणित्वा विनाशाशंकापरिहाराय माह ये योधा
प्रत्यनीकेषु सर्वेषु सैन्येषु स्थितास्त एवमेतदंति

१२ ॥

पंचोलीटीका

पवंप्रार्थितः सन् श्रीभगवानुवाच कालोस्मीतिलोकक्षयकृतलो
कक्षयकारीकालोहमस्मिप्रवृद्धः प्रवृद्धिप्राप्तः लोकान्समाहर्तुं स
हर्तुमिह अस्मिन्काले संप्रवृत्तयः ये प्रत्यनीकेषु अनीकमनीके प्रति
योधाः योद्धारः अवास्थिताः ते सर्वे भीष्मद्रोणप्रभृतयः ये भ्यस्तवाशं
कर्ते सर्वे त्वां ऋते विनान भविष्यति ३१

२१। वीरसमिद्धोधिनी॥

इत्यमेव प्रार्थितो भगवानर्जुनं प्रत्यनुनिवृत्तकृत्वा च कोलास्मीति
प्रदंतु कालः कालक्रियाशक्तिमा ल्लोकक्षयकृतलोकानां क्षयं
करोतीति लोकक्षयकृतलोकसंहारकः प्रवृद्धः समृद्धते जाइइ
स्मिन्लोके लोकान्समाहर्तुं प्रवृत्तोस्मि इति तथा हि ये योधाः प्रत्य
नीकेषु युधुसेनासु वस्थिताः संसुखे स्थितास्ते सर्वे युद्धे त्वां मृते पि
तव्ययोऽस्य मानेऽपि न भविष्यति भावितां न गच्छं त्यथा स्वयमेव न
ष्येतीति ३२॥

मधुभाष्य

कालपादो जगद्वधनच्छेदनज्ञानादिसर्वभगवद्दुर्मवाची कल
बंधने कलच्छेदने कलज्ञाने कलकामधेनुरिति पदंति प्र
सिद्धस्य सपादो भगवति नियतं कालपादो न बद्धं शक्यविवक्ष्य
से प्रयुक्तः प्रपामो लोकस्य दुरतिप्रजाः बधाति इति मोक्षे
दः पशुन रथानयाययेति मोक्षधर्मं विसृज्य बद्धो बलिर्वक्ति
विलोवाधीश्वरे चितं थारयन्कालविग्रहे इति भागवते प्रवृद्धः
परिपूर्णनादिर्वा ऋतं च सत्यं वा भीष्मादिति श्रुतिः एतन्मद
दूतमनंतमिति च प्रविशत्यस्तुतव सस्तवीयां तेषां सस्यस्य वि
रस्येनामेति च न त्ववर्द्धनं नासौ जनान न मरिष्यति नेथ ते सो
इति हि भागवते यस्य दिव्यं दित इयं दीयते वर्द्धते न चेति मोक्षधर्मं
न कर्मणेति त्वकर्मणापि न किंच यमिति लोकान्समाहर्तुमिह
विशेषणप्रवृत्तः आश्वीक्षत इत्यपि प्रवृद्धः प्रत्यनीकं त्वपरस्य

103
तथा सर्वेपि न भविष्यन्ति प्रज्ञो हि एषादिभेदेन बहवचनं युक्तं
यो स्यात्पि रक्षितं भूमाया तयति तच्छिरोभेत्स्यतीति तत्पि सर्वं
जयदयोपि विशेषणोक्तः सवरावा सवीशक्तिरितिकर्णः य
देतद्व्यमारांतस्याने युक्तमेवेत्यर्थः ३२।

भाषा अनुवाद

इस प्रकार अर्जुन से प्रार्थना किये गये श्रीभगवान् नीनि सो
कसे कहते हैं कि मैं सकल लोक का तय करनेवाला कालरू
पहों और प्राणीयों को संहार करने की इच्छा करि इस लोकमें
प्रवृत्त भया हो सो एक तमको छोड़ि और कोई रूम से नवेचैगे
अर्थात् प्रति सेना में जो भीषण शूल आदि योद्धा हैं वे सबमें
गे ३२

चौथी

हों काल प्रवृद्ध लोकक्षयकारी हरहुं लोक इह लग प्रवतारी"
बिना तो दिनदि कोई ववेहें यो योथे प्ररि सेन रवे हैं ३३॥

तस्मात्तुमुत्तिष्ठयशोलभस्व जिताशत्रुभुङ्
 त्वराजं समृद्धं मयैवैते निहताः पूर्वमेव
 निमित्तमात्रं भवसव्यसाचिन् ११

शाहरभाषटीका १

यस्मादेवं तस्मात्तुमुत्तिष्ठ भीष्मशोणप्रभृतयोऽति
 रथाश्रजेयादेवैरण्जनेन जिता इति यशोलभस्वकेवलं पुण्ये
 हि तत् प्राप्यते जिता शत्रु उर्ध्वधनप्रभृतीन् भुङ्क्ते राजं सम
 र्द्धं असपत्नमकार्कं मया एवैते निहताः निश्चयेन हताः प्राणो
 विद्यो जिताः पूर्वमेव निमित्तमात्रं भव त्वं हे सव्यसाचिन् सव्येन
 वामेन हस्तेन शरणां लेपात् सव्यसाचीत्युच्यतेऽन्तः ११

आनन्दगिरिकृतटीका २

तथोदासीमेपि प्रतिकूलानीकस्यामत्यातिकृत्यादेव न भविष्य
 नीत्येवं यस्मात्प्रस्थितं तस्मात्तदोदासीनमकिञ्चित्करमित्याह
 यस्मादिति उत्तिष्ठ युद्धाय उन्मुखी भवेत्यर्थः यशोलाभमभिभूतं
 दति भीष्मेति किं तेनापुमर्थेनेत्याशङ्क्याह पुण्येति राजभोगे
 सते किमन्येति तेनेत्याशङ्क्याह जितेति भीष्मादिषु निरशेषं कु
 र्वन्तयाशङ्का हत्याशङ्क्याह मयैवैत इति तर्हि मृतमारणार्थं न
 मे प्रवृत्तिसङ्गः निमित्तेति सव्यसाचिपदं विभजते वामेनेति ११

स्वामिकृतटीका ३

यस्मादेवं तस्मादिति तस्मात्तुमुत्तिष्ठयशोलभस्वप्राप्तुं योभीष्म
 शोणादयोर्जनेन निजिता इमेव भूते यशोलभस्वप्राप्तुं हि अयत्ने
 न शत्रून् जिता समृद्धं राजं भुङ्क्ते तव शत्रुवत्सदीय युद्धात् पूर्वमे
 व मयैव कालात्मनानिहितप्रायाः तथापि त्वं निमित्तमात्रं भव हस
 व्यसाचिन् सव्येन वामहस्तेन साधितं संपातं शीतमस्येति युससा
 वामेनापि बाणलेपात् सव्यसाची इत्युच्यते ११

पिशुनभाषटीका ४

स्पर्शार्थं १३

श्री.
गी. टी.
प

रामानुजभाष्यटीका. ५

तस्मादिति तस्मात्तत्त्वतान्प्रतिपुद्गायतिष्टतान्छूनजिताय
शालभस्वथर्म्यचराभ्यसम्पदंभत्वं मयेवेतेकतापराथाः पूर्वमेव
निहताः हननेविनिपुक्ताः त्वमेतेषां हननेतिमितमात्रंभवमया
हममानानांशस्वादित्यानीयोभवमयसाचित्तरासमवायेसथे
नशरसमवायशीलः सद्यसावीसद्येनापिहस्तेनशरसमवायक
रः हस्तद्वयेनयोहुंसमर्थेतर्यः ३३

अभिनवग्रन्थकृतटीका-६

सप्तार्थ ३३

परमार्थप्रपाटीका. ७

अतएवाह तस्मादिति तस्मात्कारणात्तत्त्वतान्प्रतिपुद्गायतिष्टकिंतकृते
देवैरपिर्जयाभीष्मादयोः जनेननिर्जिताइति यशालभस्वतः
तःशून्यजितासम्पदंदेशवलकोशउर्गायुपेतंराजंभुत्वं अथश
नुजयेपवमेवोद्विष्टपहृत्तामापिपरमेष्ठुरस्तीतीत्यादयोन्दर
रेः तथाहि ओहोईत्वामिहिहवामहाऐसातोवाजास्याकारावाः
तवाहोवोवाह्रापिषुवाइहासायतिमोराः तांकाष्टायाहोवास्त
प्रवाताः उपहृष्टाउवाहोइस्त अत्रत ओहोईतिचसंभुदोविकल्पहा
उगायतइति उहयेष्टोक्तेः तथाअदीर्घदीर्घवाकुर्यादितिसामशि
तासृगानक्रमेदर्शितः अथसंहितापाठस्त त्वामिहिहवामहेसा
तोवाजस्कारवः तांहृष्टेष्टिंसमतिनरत्वाकाष्टासर्वतइति भा
ष्यं भोइंद्रपरमात्मनवयंनरामनुष्ठाः कारवस्तोतारवाजस्व
लस्यसातोलाभेकोत्तमातोतामित् त्वामेवहवामहेआह यामग्रा
कारयामइत्यर्थः तथाहृष्टेष्टावरकेषुउपस्थितेषुसत्त्वतामेवा
हं यामः तथाअर्वतःसंग्रामस्यकाष्टासमर्थादासद्यह रच नया
धर्म्यपुहृष्टुतामेवसमतिभक्तपुत्तपातिनंप्रभुंआहृष्टामोनाम
मित्यर्थः आपलभणावायाचइहाणंदेवेनप्रतनाजयामिउष्टमे
नछंदसापंचदशोनस्त्वामेनहृत्तासाम्नावधकारेणवज्रुणंसह
जानिति भाष्ये इंद्रेणपरमात्मनादेवेनकृताएतनाःशत्रुसनाः
जयामितत्राजुष्टानमहतासाम्नातउपासनया किंभूतेन त्रेष्ट
भेनचतस्रवारिशादत्तरेणछंदसातथापंचदशोनस्त्वामेन वृत्ति

एते च ये च भोर्दिकरोति सति सुभिः सपकयेति अयमर्थः एकं सू-
 क्तं विरावर्तनीयेत उपशमावृत्तौ प्रथमया अचसिरभासः द्वि-
 तीयावृत्तौ मध्यमाया तृतीयावृत्तौ उत्तमायाः सो ये ये च दशमला
 मस्तेन एव मनयोपासनया स्वष्टकारो वशीभूयतः शत्रुन हित
 किं प्रकृते तत्र शत्रुवसहजास्तानि सर्थः सायणभाष्यकारैरपि
 देविकाभिः प्रायेण वासुसंश्रामविषयो दर्शितः रावणभाष्येन अ-
 ध्यात्मरीत्याः भेदेन संश्रामविषयो दर्शितः बोधभाष्ये तु भयम-
 पि अत्रार्थैककशाखीयाद्युतिरपि संसृष्टं धनमुभयं समाक-
 तमस्मिन् दत्तं वरुणस्य मरुः भियं दधाना हृदयेषु शत्रवः परा-
 जिता सोमश्च निलयेतो भाष्ये अस्मभ्यमस्मदर्थं परमेश्वरेण स-
 माकृतं यथायोग्यमुभयं धनं संसृष्टं सम्यक् प्रकारेण निमित्तं
 अध्यात्मिकमायि देवत तपोदिता रोहो अध्यात्मिकसदा तावद-
 णः प्रकाशकः परमात्मा अमृत्समसुरिंदो हृदस्यतिरिति श्रुते
 रिंदः ऐश्वर्यवान् देवतारूप इंदः अष्टाभयधनसफलमाह
 भियमिति येन धनेन हृदयेषु प्राणिनामेतः करणेषु शत्रवः
 षट्सयत्नाः भियं दधानाः संतोः यनिलयेतो नाशं प्राप्नुवन्तीत्य-
 ध्यात्मपक्षे अपरत्र हृदयेषु स्वातः करणेषु भयं दधानाः सं-
 तः स्वत एव युद्धे विनापि अपनिलयेतो नाशमायौति अथ
 प्रकृतमनुसरा म एव शत्रुपराजयेत त्वं प्रयासो नास्तिकुतः पते
 पूर्वमयैव निरुताः संतीति त्वयैव दृष्टं अतः परं भो सद्यमाविन-
 श्रजेन त्वं निमित्तमात्रं भव अत्रे तत्कं भवति पूर्वमहं रुदं नि-
 मित्तमात्रं कृता स्वनिर्मिते धनुषिकलांतकालानलसमः स्वयं
 वाणो भूत्वा उर्जयमपि विप्रमधासे संप्रति त्वं निमित्तमात्रं क-
 त्वा यतो जगद्विप्रलयसमर्थं संकल्पानामस्माकं कुरु कुरु
 लदलने कियानाया सो स्तीत्यर्थश्चुतिरपि अहं रुद्राय यत्र रात-
 नो मित्रं लक्ष्मिं शेषं वेदं तदा उ भाष्ये अहं रुद्राय महादेवार्थमे-
 ह त्वत्समलौकिकं धनुरातनामि विस्तारयामि किमुदिष्य वल-
 हिषे वल्लदेष्टारं शत्रुं विप्रं देतं हं तं नाशयितुं तत्कं रथः तो-
 णीयेतेत्यादि ११

श्री
गी टी.
प

भीष्मद्रोणादयो ये योऽनुमर्दन्ते तत्र योक्तास्ते मध्ये वनिहतास्तत्र वि
ष्टादं माकाधीरित्याह तस्मादिति यस्मात्तथापारं विनाप्येते विनश्य
त्तेव तस्मात्तमुत्तिष्ठ उमुक्तो भवयुद्धाय देवैरपि दुर्जया भीष्मद्रो
णादयोतिरथा कटिसेवानेनेन निर्जिता इत्येवं भूतं यशो लभस्व
मरुद्भिः पुण्यैरेव हियशो लभ्यते अयत्नतश्च जिता शत्रून् दुर्जया य
नादीन् भुत्स्व समुद्रं निःकंठं कंठं पतेव शत्रुवो मयेव कात्मात्मना
निहताः संहता दता पुष्टः तदीय युद्धात्पूर्वं मेव केवलं तव शोला य
भायरथात्मागेवं निपातिताः अतस्ते निमित्तमात्रं अर्जुनैर्नैते नि
र्जिता इति सार्वलोकिकं कथयं देवाः स्य देव भव दे सद्यसा चिन्मये
नवा मे न हस्तेनापि शरान् सचितं संधाते शीलं यस्या दशस्य
तव भीष्मद्रोणादिजयोना संभावितस्तस्मात्तथापारं नैतरे मया
रथात्मा समानेष्टे तेषु तवैव कर्तुं तं लोकाः कस्य विधिं तीक्ष्णमि
प्रायः ३३

ऊसमवैजयन्ती टीका. ५

तस्मादिति यस्मात्तथापारं विनैव मत्संकल्पादेवैते विनश्यन्ते
व तस्माद्देतोः दस्यसा चिन्मयेन वा मे न हस्तेनापि स रात्सचितं
संधाते शीलं यस्या तत्संवाधने दे सद्यसा चित युद्धनिर्भरे प्राप्ते हस्त
हयेनापि योऽनुमर्दन्ते मर्त्यः मत्सहायेन वै लोका विजय समर्थस्तु
तिष्ठ स्वधर्मभूताय युद्धायो युक्तो भवयशो लभस्व समरेः मरज
यथा तिनो देवव्रतगुरु कर्णशत्यादयोर्जनेनात्मा योर्नैव वि
निर्जिता इत्यति दुर्लभां कीर्तिं प्राप्नुहि शत्रून् दुर्जया यनादीन् जि
त्वा विजित्य समुद्रं धनं रत्नादि सम्पत्तिं निष्कण्टकं राज्यं भुत्स्व
कीयत्वेन भोग्यनां प्रापय न त्वतिप्रवृत्तप्रतापान् भीष्मद्रोणादी
न हं कथं विजेष्यामीति चेत्तत्राह मयैवैते इति मया चाश्रितः त्वा
महिम्ना स्वभक्तविरोधि दशास्वजन रत्न एव दुर्कले रौवपूर्व
मेव कृष्णस्वरदरण्यकाले पदैते कृतापराधा भीष्मादयो निहता
वधिताः केवलं तव शोलाभाये वरणाभ्यादि बाहनेभ्यो न पातिता
इत्यर्थः ननु पुनरेव यथैतत्तथैव निहताः सुसर्हि मां युद्धाय किम
र्थं मे रयसीति चेत्तत्राह निमित्तमात्रं भवममशस्यादि स्थानीयो भ
व यद्वा मया दस्यमानानामेषां लयाय निमित्तमात्रं केवलं काशुय

४ वरू

इयमात्रंभव ३३

मधुसूदनीटीका १०

यस्मादेवं

तस्मात्तद्यामन्तरेणापियस्मादेवेतिनेहोत्पेवतस्मात्तद्युतिष्ठ
उद्युक्तोभवयुडायदेवेदपिउजंयाभीष्मदोणादयःप्रतिरुषः
कटितेवार्जनेननिदताइत्येवंभूतेयशोलभस्वमहद्भिः पुणै
रेवहियशोलभते अयत्तुश्चजिताशत्रून्डयोपनादीन्भुक्त्वा
स्वोपसर्जननेनभोग्यतां प्रापयस्महेराज्यमकंठकं एतेचत
वशत्रवोमयेवकालात्तनानिदता संरुतायुषः तदीययुडात्
पूर्वमेवकेवलंतवयशोलाभायरात्रपातिताः अतस्तेनिमि
तमात्रंश्चर्त्तनेनैवेतिनिदताइतिसर्वलौकिकव्यपदेशास्पदंभ
व हेमव्यसाचित् सद्येनवामेनहस्तेनापिशरान्संचितं संधा
तंशोलेयस्यतादृशस्यतवभीष्मदोणाविजयोनासंभावितः
तस्मात्तद्यापारानेतंमयारथास्यासमानेष्वेतेषुतवेवकत्ते
त्वंलोकाःकथयिष्यंतीत्यभिप्रायः ननुशोणोवास्मणो नमो
धनुर्वेदाचार्योममगुरुविशेषणवदिव्यासुसंपन्नः तथाभी
ष्मःसह्यंदमत्तुर्दिव्यासुसंपन्नश्चपरशुरामेणहेहयुद्धयुष्मा
गम्यापितपराजितः विजयवर्जितः तथायस्यपिताहृदुत्तत्रः
तपश्चरतिममपुत्रस्यशिरोयोभूमौपातयिष्यति तस्यापिशि
रस्तत्कालंभूमौपतिष्यतीति सजयद्रथोपिनेतमशक्वाःस्व
यमपिमहादेवाराधनपरोदिव्यासुसंपन्नश्चतथाकर्णोपिस्व
यंसूर्यसमस्तदाराधनेनदिव्यासुसंपन्नोवासवदत्तयाचैकपुरु
षघातिग्राकर्तमशक्वायाशक्ताविशिष्टः तथाकृपा सु स्या
मभूरिश्चवः प्रभृतयोपिमहानुभावःसर्वथाउजंयापवतेषु
सत्सुकथीजिताशत्रून्राज्यंभोत्येकथंवायशोलभस्वइत्याशंका
मर्त्ततस्यापनेतमाह तदाशंकाविषयानामभिःकथयन् ३३

४ मोठी

सदानेदीटीका ११

तद्यापारेविनाप्येतेमयेवनिदतायतः तस्मात्तेभवयुडायस
मुद्युक्तोत्रकेवलं १ भीष्मादयोमहाशूराश्चनेयाश्चमरेरपि
र्त्तनेनजिताइत्येवभस्वतंयशोमले जिताशत्रून्नायासाडुक्त्वा

श्री.
गी टी.
प

रामकंदकं मयैवेतेरताः पूर्वनिमित्तकेवलं भव १ रथान्
पातितास्तेन यशोलाभाय केवलं शरात्वामेन संधातं शीलेय
स्यतेवेति सः ५ तद्यापारोत्तरं तस्मात् मयैवेते पुनरुच्यते पात
मानेषु कर्तृत्वं कस्यपि ध्येति ते तथि ५ ३३

नीलकंठीटीकाः ३३

तस्मादिति यस्मात्वा विनाप्येते मरिष्येति तस्मात्ते उन्निष्ठमुद्वाय
शेषस्य ३३

शान्दीटीका सृष्टार्थम् ३३

रामकंदीटीका

कालात्मिकाया सच्चिदाप्रोगेव प्रसूते तान्निष्ठं स्वेकारा मात्रे सं
पद्यतेति या कार्यपवेष्टोक्तः ३४

लासिकी दशरथटीका

नचेतद्विभक्तिप्रश्नस्योत्तरं भाविकल्पान् रूपमाह ॥
यतपवंतस्मात्त्वमिति उज्ज्याता भीष्मादीनां जयेत यशोला
भस्व एवमप्रयासेन शत्रुं जित्वा समृद्धं राज्यं भुंज्यते तव शत्रु
वो मयेव कालात्मना पूर्वमेव तद्यापारात्प्रागेव निरताः संधातं
याः हेमवत्सावित्रं संयतवामहस्तेनापि सावितं भव ३४

पंचोलीटीका

यस्मादेवं तस्मात्त्वमिति भीष्मप्रभृतयो अतिरथाः दैवैः रण्यजे
यास्ते प्रजनेन जिता इति यशोलाभस्वकेवलं पुणैर्हि न प्राप्यते श
त्रुन उद्योयनप्रभृतीनां जित्वा समृद्धं राज्यं भुंज्यते मयैव असौ
भीष्मप्रसौ कर्ण इति दर्शयति निरताः प्राणैः वियोजिताः हेम
वत्सावित्रत्वं निमित्तमात्रं भववामेन पाणिना शराणां दोषात्
वत्साचीत्युच्यते अर्जुनः ३४ ॥

शरासंधातं शी
मस्येति हे अर्जु
निमित्तमात्रं

ररावीरसमिहोधिनी

तस्मादिति यस्मादेवं तस्मान्मदात्तयात्तमुतिष्टोयुक्तोभव तत
पचस्वधर्मवरणाच्छृंजित्वायणोलभस्वसम्पदं हृदिमन्त्रिषं
दकंराज्यचभुंत्वेति श्रय कथमदमेतान्निदन्मीतिवेतत्राद मये
वेति यत्तेशात्रवो मयैव सर्वमेवनिदताभवेति नतवताहंतं प्र
यासः त्वंतसव्यसाविन् निमित्तमात्रं भवेति त्वानिमितीकृत्यस
यमेवादंतान्निदन्मिती कातेवितथांतिरितिभावः ३३॥

मधुभाष्य

३३॥

विशेष विज्ञापन

हमारे कार्यालय में विभिन्न विभागों के अधिकारियों की नियुक्ति के संबंध में सूचना दी जा रही है।
यह सूचना विभागों के अधिकारियों को उनके कार्य के लिए आवश्यक है।
इस सूचना को ध्यान में रखकर कार्य करना चाहिए।
हमारे कार्यालय में विभिन्न विभागों के अधिकारियों की नियुक्ति के संबंध में सूचना दी जा रही है।
यह सूचना विभागों के अधिकारियों को उनके कार्य के लिए आवश्यक है।
इस सूचना को ध्यान में रखकर कार्य करना चाहिए।

10/1

संलग्न

16/11

भाषा अनुवाद

जिस हेतु ऐसा होनहार है इस से तम पुत्र के अर्थ उठो और
देवता से भी अजय जो भीष्म शत्रु आदि वीर से अर्जुन से परा
जित भये इस यश को लाभ करो और शत्रुओं का विनाश क
रि के संपूर्ण राज्य भोग करो और ये जो तमारे शत्रु तिन को
पुत्र के पूर्व ही कालरूप में ये यद्यपि हत करि राखा है तो भी
हे सत्यसावित्र अर्जुन तम निमित्त मात्र होउ सत्यसावी उसको
कहतें जो वांछे दण्ड से पुत्रादि कार्य करि सकें ३३

वैष्य

ताते तुं उदयशकोलेद राज्यरीतिभजन अरिकेद हते पूर्व
सभमें दि पते दो सत्यसावि निमित्त दि तेते ३३

[Faint, illegible handwritten text in Devanagari script.]

[illegible]

दोणञ्चभीषञ्चजयद्रथञ्च कर्णेनशामा
नपियोयवीरान् दत्तोस्तेजहिमावधिष्ठा
पुण्यस्वजेतासिरणोसपत्नान् १५

मया

येषु शाङ्करभाषटीका १

दोणञ्चेति दोणञ्च येषु योथेषु अर्जुनस्याशङ्कासीत् ततोस्तान् स
र्वान् व्यपदिशति भगवान् मया हतान् इति तव दोणभीषयोस्ता
वत् प्रसिद्धमाशङ्काकारणं दोणोयवुर्वेदाचार्यादिव्याससंपन्नः
आत्मनश्च विशेषतोऽङ्कगविष्टोभीषः स्वच्छन्दस्तदिव्याससंप
न्नश्च परशुरामेण हन्तुमुद्दमगमनचपरानितः तथा जयद्र
थोपि यस्य पिता तपश्चरति मम पुत्रस्य शिरोभूमौ पातयिष्य
ति यस्तस्यापिशिरः पतिष्यतीति कर्णेपि वासवदत्तया शक्त्या
त्वमोचया सम्पन्नः सूर्यपुत्रः कानीनोयतोतस्त्रास्त्रैव निर्देशः स
या दत्तोस्ते जहि निमित्तमात्रेण मावधिष्ठास्तेभ्योभये मा कधीः
पुण्यस्व जेतासि उर्योयनप्रभतीन् रणो पुद्गे सपत्नान् शत्रून् १५

आनन्दगिरिकृतटीका २

मयेवेत्यादिनोक्ते प्रपञ्चयति दोणञ्चेति किमिति कतिचिदेवा
त्र दोणादयोगाण्यन्ते तत्राह येषुति दोणादिषु कुतः शङ्केत्या
शङ्क्य द्वयोः शङ्कानिमित्ततमाह तत्रेत्यादिना जयद्रथेपि शङ्का
निमित्ततमाह तथेति दिव्यास्तसंपन्नइति सम्बन्धः तत्रशङ्का
यो कारणान्नरमाह यस्मेति कर्णेपि तत्कारणात् कथयति क
र्णेपीति पूर्व वदेव सम्बन्धः हेतुन्नरमाह वासवेति सा खल्व
मोचा पुरुषमेकमत्यन्तसमर्थं वातयित्वैव निवर्तते जन्मना
पि तस्य शङ्कनीयतमाह सूर्येति कुन्ती हि कम्पावस्थायां म
त्प्रभावे जातमादिसमानुहावततस्तस्यामेवावस्थायामयमुद्द
भूव तदाह कानीनइति एतदेवाभिप्रेत्यकर्णग्रहणमित्याह य
तइति उक्तेष्वप्येषु च न तथा शङ्कितव्यमित्याह मयेति १५

स्वामिकृतटीका ३

श्री.
गी टी.
प

नचेत हिमः कतरनो गरीयो यहाजये मयदिवा नोजयेयुरिमादि
यीशंका सापिनकार्येमाद शोणं चेति येभ्यस्तमाशंकसेतान् शोण
णभीष्मादीन् मयेवदतास्तेन हि ज्ञानयमाद्यधिष्ठाः ह्यथाभयेमा
काधीः सपत्नान् शत्रुनरोपुहे निश्चितं जेतासि जेष्यसि ३४

विष्णाचभाष्यटीका. ४

शोणं चेति जहिष्याणदयमाद्यधिष्ठाः मातुर्ध्वंकृथाः भयचलनेमा
काधीरित्यर्थः जेतासि जेष्यसि ३४

रामानुजभाष्यटीका. ५

शोणमिति शोणभीष्मकर्णादीन् कृतापराधतयामयेवदनने
विति युक्तास्तेन हि तदस्याः पतान् गुरुत्वं भूम्नामानपिभोगा
सक्तानुकण्ठेन निष्णामीति माद्यधिष्ठाः तावदिष्यथर्मभयेन वंशु
स्तेहेन कारुण्येन च माद्यथा कृथाः यतस्ते कृतापराधाः मयेवद
नने विनिशुक्ताः अतो निर्विशंकोष्यस्वरणो सपत्नान् जेतासि
जेष्यसि नैतेषां वयेत्तशंसतार्ग्यः अपितु जयपवलभ्यत इत्यर्थः
३४॥

शुभिनवगुप्तकटीका. ६

स्पष्टार्थ ३४

परमाधी प्रयादीटीका. ७

शोणं चेति शोणभीष्मं जयद्रथे कर्णं च तथा अमानपियोधेषु वीरा
न्मया संहारकालरूपे हतान् पहतशक्तीन् जहिमारय परं न
माद्यधिष्ठा माभे काधीः निर्भयः सत्यस्वरणो संश्रामे सपत्नान्
शत्रुन् जेतासि जेष्यसि

वनमालीटीका. ८

ननु शोणो यत्र वैदावीर्यविद्यासु वेचुस्तथाभीष्मः स्वच्छेदस्तदि
ग्यास्तु संपन्नः पशुरामेण हृदयुद्धमुपगम्य पिन पराजितस्तथा
यस्य पिता हृदयस्त्वपश्यति मम पुत्रस्य शिरोयोभूमौ पातयि
ष्यति तस्यापि शिरस्तकाले भूमौ पतिष्यतीति सजयद्रथोपि जेतुम
शक्यः स्वयमपि महादेवाराधनपरो दिव्यासु संपन्नश्च कर्णोपि सु
र्यसमस्तदाराधनेन दिव्यासु संपन्नश्च शक्रदत्तैकवीर्यशूरशर

क्वायुक्तश्च तथा न्ये भगदत्तादयोतिर्जया एव ते पुंसस्तु कथं नि
 ताशुं कथं राजं कथं वा यशो लब्धमिति शोकामणकरोति दो
 णमिति दोणादींस्तदाशोकाविषया भूतान् सर्वानेव यो यवीरान्
 कालशक्तिनामया दत्तानेव ते जहि हतानो हनने को वा परिश्र
 मः अतो माययिष्ठाः कथमेवं शक्त्यामीति यथा भयमिति ते पीड
 माणाः भयेन क्वायुश्च स्वजेता सिजेष्वास्वचिरे सौवरो मे शमे स
 पत्नान् सर्वानपि शत्रून् अत्र दोणे च भीष्मे च जय इष्टं चेति चकार
 उद्ये एष्वीकान् जेत्यतः शोकान् यजेत तथा शस्त्रेण कर्णमप्यस्यानपि य
 यो यवीरानित्यत्रापि शस्त्रेण तस्मात्कृतोपि स्वस्य पराजयं वय
 निमित्ते पापे मां शोकिष्ठा इत्यभिप्रायः ३४

असमेवे जयनी टीका

ननु शस्त्रास्त्रविद्या कुशलो हि जेतो मम मयुः कुर्यात्तथा लब्धं कु
 लांतकं रामेणाप्यपराजितः स्वेच्छा मृत्युभीष्मस्य यो मयुः
 शिरोभूमौ यातपि पितृस्य शिरः स्वयमेव भूमौ तत्कालं मवय
 ति पितृतीति पितृः सकाशात् लब्धं वरो महोदका राधनेन प्राप्ति
 व्यासो जय इष्टं लब्धं सूर्या राधनेन लब्धं दिव्या स्वावामवदत्ते क
 पुरुषपातिशक्ति सम्यक्कर्णं लब्धं कृपास्वस्यामभूरि श्रवः प्र
 भृतयोः ति प्रवलप्रतापिनोतिर्जया स्वरेतात्सर्वान् कथं जेष्वा
 मिकथं वारा न्ये भोत्सामीत्याशं कायामाह दोणे चेति तथा च का
 रत्रयं वाप्यर्थे दोणे दिव्यास्त्रसम्यक् मयुः कुरुमपि भीष्मे स्वेच्छा मृत्यु
 व्याससम्यक्पितामहमपि जय इष्टं लब्धं पितृवरमीशानुग्रही
 तमपि एतान् नानपि कृपास्वर्त्यमादीन् यो यवीरान् शुद्धविशार
 दान् इज्या नपि मया कालात्तानाह तान् दत्तायुधः सर्वानेता
 स्ते जहि द्वातय मृतानो मारणे पिश्रमो नास्तीत्यर्थः माययिष्ठाः को
 दिव्यास्त्रसम्यक् जेतानेको दं कथं विजेतं शक्रो मीति भयं माणाः
 यद्वा माययिष्ठाः चेष्टुस्ते हनकारुण्येन यमेभयेन वयं माह
 णाः यस्मात्कृता पराधाना मानतापि नासौ वधे नरो मता लेशो
 पि नास्ति तस्मात्ते वयां मा कुर्वित्यर्थः युद्धं स्वपुङ्गव कुरुष्व यतार
 णं मे यामे स पत्नान् शत्रून् जेत्येता सिजेष्वास्वपि शस्त्रैः पंचभिर्नि
 मिता निच चोराणि विपरीतानि केशव न वशे योऽनुपपन्ना मिहता

श्री
गी. टी.
प

स्वजनमादवे नवेदिमः करत्रोगरीयोयहानयेमयदिवा नोजये
युः कथंभीषमहंसंख्येदोणंचमधुसूदन इषुभिः प्रतियोत्स्या
मिष्टुजाहीवरिसूदनेत्यादीनामस्यासामपि सर्वेषामर्जनस्यशंका
नोनिराकरणंन्योतितम् ३५

मधुसूदनीटीका ॥

दोणादीस्तदाशंकाविषयीभूतान्सर्वानेवयोधवीरान्कात्मात्म
नामयादतानेवतेजस्विदतानांदननेकोवापरिश्रमः प्रतोमा
व्यधिष्टाः कथमेवंशस्यामीतिव्यथाभयनिमित्तापीडमागाः भ
यंतत्कायुयस्वजेतासिजेष्पस्वविरेणोवरणेसंश्रमेसपमानस
र्वानपिशचून् अत्रदोणंचभीषंचनयद्रष्टेतिचकारत्रयेणपू
र्वीका जेयतशंकानृत्ययतेतथाशस्त्रेनकर्णेपि प्रमानपियोध
वीरानित्यत्रापिशस्त्रेनतस्मात्कुतोपिस्वस्यपराजयंवयनिमित्तेण
पंचमाशंकिष्टादमभिप्रायः कथंभीषमहंसंख्येदोणंचमधु
सूदन इषुभिः प्रतियोत्स्यामिष्टुजाहीवित्यत्रापिसमुदायात्वया
नेतरेप्रमेकात्वयोदष्टुयः

सदानेटीटीका ॥

अनुर्वेदाचार्योममयकरयेदोणउचितैः स्वयेदिद्योरसेर्भुतत्र
दविजेतंसशकः तथाभीषोवीरोरणधुविगतामेतसवतो
नजेतंशकोभूयुधिपरशुरामेणचपुरा १ तथाजयद्रष्टोयस्य
पितोत्रेतपसिस्थितः यः शिरोममपुत्रस्यपृथिव्योपातपिष्यति
२ पतिष्यतिशिरस्तस्यस्वयेचेतिविनिश्चयः तथाकर्णेपिसंपन्नः श
त्यावासवदतया ३ एकातिवीरवानित्यामोचीकर्तमशक्यया स्व
येचसूर्यपुत्रोसिदित्यासवलसंभुतः ४ तथापिमेमहापूराश्रय
त्यामहपादयः सर्वथाउजयाः सविते सुससकथंजयः ५ कथं
निष्कटकरामेयशालस्यशवाकथं इत्यनेनाशयेष्टीशोभिल
स्यादोतरेवचः ६ दोणंभीषंतथाकर्णेजयद्रष्टमथापरान् योध
वीरांस्तदाशंकागेचरानाविलात्रिमान् ७ कात्मात्मनामयेषोनह

तांस्वेजहि संगरे हता नोदनने को वातव पार्थपरिश्रमः ८ यथावो
थप्रतायेन धुस्तेविस्तेसदेतके तत्रमस्यादिवाजन्तयीहिंनस्तिप्र
मात्मिका ९ तथातेमत्प्रतायेन विधस्ते शत्रुसैनिके जहिसेयेस
माश्रिमनतेतहननेश्रमः १० शत्याम्हंकथेतेवेपीजोमागाभ
योइवो युध्यस्तेभंयमकाजेष्सेवरणे रिपून् ११ तस्मात्कुतोपि
स्वस्तेमाशंकिएः पराजयं पापेवथनिमित्तवा श्रीहरेरयमाश
यः १२ १५

नीलकंठी टीका १२

माव्यथिएः एतेमहोतः कथं हंते शका इत्याकुलीभावेमागाइत्य
र्थः जेतासिजेष्मसि सपत्नानशून् १५

ग्रान्दीटीका

१५

द्रोणादयश्चाप्रतिमपराक्रमत्वात्तुर्जं रामकंठीटीका याइतिचमावमंस्थाइत्याह॥
द्रोणादयोपिसकललोकैकवीराः कालस्यतुर्जयत्तान्मयाव्यपदि
ताः इतितात्सजयान्मातामाभेष्ठीरितितात्पर्यम्

द्रोणादयोमहाउभावनया लासिकी रामकंठीटीका सजय्याइत्याशंकापरिहारायाह॥
चोष्यर्थे द्रोणमपिरिव्यासमंपत्रेभीषंस्वतंत्रमृत्युपरश्वरमाद्यन
भिभूतमपि जयइयंतदंतः शिरपतनवरदानाजेतमशकमा
पि कर्णसूर्यादिव्यासमंपत्रम् वासवदत्तयामोचयाशत्र्याविशि
ष्टमपि तथात्यानपिपवेविथप्रभावातिशयकत्वात्वीरमुत्थान्तया
कालरूपेणाहतोस्वेजहि एतस्यहननेभयाभावमाह माव्यथि
ष्टामाभेष्ठीर्यइंऊरु शत्रुसुहेजेतासिजेष्मसि

१५ ॥

पंचोलीटीका

नैवेतद्विद्यइति याशंकासीत्सापिनकार्येत्याह द्रोणमिति येषुये
षुअर्जुनस्पर्शकातान्मयाहतान् इतिभगवान्व्यपदिशतिद्रोणोयजु

गी.
टी.
प.

वेदाचार्यो दिव्यास्तु संपन्नः आत्मनो विशेषतो गुरुरिष्टः भीष्मः स्वर्गे
दमस्तुः दिव्यास्तु संपन्नः परशुरामेण हृदयद्वयसमागममापन्नः
पराजितस्तथा जयदशो यस्यापिता तयस्वरितियो मम पुत्रस्याशिरो
भूमौ पातयिष्यति तस्यापिशिरः पतिष्यति इति कर्णेण पिवासवदत्त
याशक्त्याद्यमोचया संपन्नः सूर्यपुत्रः कोनीनः पतानन्या नयि योयवी
रान् मया हतास्त्वं जहि मा व्याधिष्टास्तेभ्यो भयं मा कार्षीः ३४

रणवीरसमिद्धो धिनी॥

अथासुमेवार्थविहरणोति द्रोणं चेति स्पष्टार्थः ३४॥

मधुभाष्य

३४॥

भाषा अनुवाद

और जो पूर्व में अर्जुन ने शंका किया कि हम इन को जी
तेगे या ये हम को यह हम नहीं जानते हैं उसका वारण
करते हुये कहते हैं कि जिनसे तमको शङ्का भई थी वे सुध
से हत ये भये जो द्रोण भीष्म जयद्रथ कर्ण तथा और जो वीर
उन सबको तम जय करो और उन से न डरो तम अवश्य ही
जीतोगे ३४

चौपई

द्रोण भीष्म अरु जयद्रथ सोई सूनपुत्र अन्य वीर दिंजोई में मारे
ते मारन डखहुं पुढकरहुं राण पाउ जितहुं ३५

[Faint, illegible handwritten text]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 श्रीमद्भगवद्गीता ॥ अर्जुनसंवादे ॥
 अर्जुन उवाच ॥ द्रुपदमुनिर्वाक्यं मे ब्रूय ॥
 कुरुष्व धर्मं त्वं कुरुष्व धर्मं ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

संजय उवाच एतच्छ्रुत्वा वचनं केशवस्य क
 ताज्जलिर्वेपमानः किरीटी नमस्कृत्य भूय
 एवाह कलं सगद्गदं भीतभीतः प्रणम्य १५

शाङ्ख्यभाष्यटीका १

एतच्छ्रुतेति एतत् श्रुत्वा वचनं केशवस्य पूर्वोक्ते कृतान्ज
 लिः सन् वेपमानः कम्पमानः किरीटी नमस्कृत्य भूयः पुनरे
 वाहोक्तवान् कलं सगद्गदं सह गद्गदया वाचा मन्दशब्देन भया
 विष्टस्य दुःखाभिजातात् स्नेहाविष्टस्य च दर्शयित्वा अत्रुष्टाने
 वत्ते सति श्लेषाणां कण्ठवरोधः ततश्च वाचोऽपाटवं मन्दश
 ब्देन यत् सगद्गदेन सह वर्तत इति सगद्गदं वचनमाहति
 वचनं क्रियाविशेषणमेतत् भीतभीतः पुनर्भयाविष्टचेताः
 सन् प्रणम्य प्रह्वीभूत्वा हेति व्यवहितेन सम्बन्धः श्रावसरे स
 ज्ञयवचने साभिप्राये कथं शौणादिष्वर्जनेन निरुतेष्वर्जयेषु च
 तर्षु निराश्रयीऽर्जयोनो निरुतपवेति मत्वा एतद्विज्ञेयं प्रति
 निराशः सन् सन्धिं करिष्यतीति ततः शान्तिक्रमयेषां भविष्यती
 ति तदपि नाशोषीत् एतद्विज्ञेयं भवितव्यवशात् १५

आनन्दगिरिकृतटीका २

पराजयाभावात् करिष्यति बुद्ध्या सज्जयोरज्ञे हतान्तमुक्तवा
 नित्याह सज्जय इति पूर्वोक्तवचनं कालोस्मीत्यादि विस्तरूपदर्श
 नदशायामर्जनस्य भगवता सत्त्वादवचने किमिति सज्जयोर
 ज्ञेयमिच्छापयदित्याशङ्क्य तदुक्तेस्तत्प्रेमाद अत्रेति तमेवाभि
 प्रायं प्रश्नद्वारा विशदयति कथमित्यादिना तर्हि सज्जयवचने श्रु
 त्वा किमिति राजा सन्धिं न कारयामासेति तत्राह तदपीति १५

स्वामिकृतटीका ३

ततोयहतेतदुतसष्टेप्रति संजय उवाच एतदिति एतत्पूर्वस्यो
 क्तव्याप्तिके केशवस्य वचनं श्रुत्वा वेपमानः कम्पमानः किरीटी
 अर्जुनः कृतान्जलिः संप्रदीकृतं हस्तः कलं नमस्कृत्य पुनरप्याह
 कवान् कथमाह भयहर्षायावेशाद्गद्गदेन कंठकेपनेन सहव

श्री
गीटी.
प

नेतृति सगद्देय्या भवति तथा तिभीतादपि भीतः सन् प्रणम्य
वनतो भूत्वा ३५ पिशाचभाष्यटीका ५

संजय उवाच एतच्छ्रुतेति वेपमानः कंपमानः किरीटी अर्जुनः
सगद्देभीतभीतः प्रकरोरेपेव प्रणमपूर्वकं भगवन्तमर्जुन उवा
च ३५

गमानुनभाष्यटीका ५

संजयः एतदिति एतदाश्रितवात्सत्यनलयेः केशवस्य वचने श्रु
त्वा अर्जुनः तस्मै नमस्कृत्वा भीतभीतोति भीतस्ते प्रणम्य कृतो जति
वेपमानः सगद्देमाह ३५

स्यष्टार्थ ३५

अभिनवशुभकृतटीका ६

अतः प्रणम्य प्रति संजय उवाच
एतदिति -

किरीटी

परमार्थप्रपाटीटीका ७

अर्जुन एतत्केशवस्य वचने श्रुत्वा वेपमानः कंपमानः
सन् कृतान्ते लिभूत्वा सगद्देकं पितस्वरं यथा भवति तथा भीत
भीतः सन् प्रणम्य दे उवाच नित्याभूयः पूर्वोपमस्ते भक्ता भक्तको
दिद्योगतिं हस्ते प्रसाह ३५

वनमालीटीका ८

भीष्मादिपुत्रयाशा विषयेषु दृतेषु निराश्रयोऽर्थो यनो हतप्रेतस्य
नुसंधाय जयाशापरित्यज्य यदि हतराष्टः संधिं कुर्यात्तदा शांति
रुभयेषां भवेदिसमिप्रायवान्तरतः किं हतसित्यपेक्षायां सं
जय आह एतदिति एतत्पूर्वोक्तं केशवस्य वचने श्रुत्वा कृतो ज
तिः किरीटी शक्रदन्त किरीटः वेपमानः परमाश्रयं दशाननं जनि
मसंभ्रमेण कंपमानो जैनः कृष्णभक्तपायकषणं भगवन्तं नम
स्कृतवानमस्कृत्य भूयः पुनरप्याह उक्तवान् सगद्देभयेन हर्षे
ण वाक्कृष्णं नेत्रैः सति कफरुद्धकं वतया यो वाचो मे दत्तसकं
एकत्वादिविकारः सगद्देस्तु युक्तं यथा स्यात् भीतः भीतः सन् प्र
वेनमस्कृत्य पुनरपि प्रणम्य तनमो भूत्वा देति संवेयः ३५

रुसमवेजयतीटीका ५

यानेव दोषा भीष्मजयदशकर्णादीनां प्रिय उष्ट्रस्य ज्ञो युद्धकर
णमेव निश्चितवान् तेन कालात्मना भगवन्ते वदन्त प्रायासं जित

त्वपुत्रविजयाशोभकोभयेषां राज्ञां सेरत्तणायायाधिते कथे
 नवारयसीमभिप्रायं तेजयस्ततः किमभूत्तद्वदेत्पेलायामा
 ह एतच्छ्रुत्वेति केशवस्य केशो विधिशिवो वयतिजनयतीति
 तथा स तं स्पविधिशिवयोर्जनकस्य भक्तवात्सल्यजनये भग
 वत इत्यनेन यो विधिशिवयोः पिता तस्यायेः न्यस्यतव पुत्रः स्व
 विजयाय किमुपापे करिष्यति किनु मरिष्यते वेति सूचितम् एत
 कोलोसीत्पारम्परो एते सत्रकं वचनं श्रुत्वा संश्रुत कृतान्जलिः
 कृतसंपुटकरपुगस्तनवेपमानोत्पदुतचोरदर्शनजनितसं
 भ्रमेण कम्पमानः सन्भीतभीतो निरतिशयभया कुलः स
 न्किरीटीवा सवदत्ते किरीटं शिरोभूषणं विद्यते यस्य तथा स
 इत्यनेनास्य परमवीरशिरोमणित्वं सूचितम् पार्थः क्लृप्त
 जनशोकमोहादिकर्षणकरं सर्वेश्वरेण मस्कृतं तेषां धनम
 स्कृत्य पुनश्च प्राणम्य प्रकर्षणाति शयननस्त्राभूत्वा सगद्गद
 नभयेनानन्देन वासुष्माणैश्च तैस्तिकफरुदकंठतया सकं
 पतमन्दस्वरत्वादिर्यो विकारः सगद्गदशब्देनोच्यते तेन सदयु
 क्तं यथा स्यात्तथा भूय एव पुनरप्याहा ववीत् २५

संजय उवाच

मधुसूदनी टीका १

एतत्पूर्वोक्तं केशवस्य वचने श्रुत्वा कृतान्जलिः किरीटीरुद
 न्किरीटः परमवीरत्वेन प्रसिद्धः वेपमानः परमाश्चर्यदर्शन
 जनितेन संभ्रमेण संभ्रमेण कम्पमानः अज्ञेनः क्लृप्तभक्ताः च
 कर्षणं भगवते नमस्कृतानमस्कृत्य भूयः पुनरप्याह उक्तवा
 दसगद्गदस्तपुक्तं यथा स्यात्तभीतभीतः अनिशयेन भीतः सन्
 पूर्वमस्कृत्य पुनरपि प्राणम्यात्पतनस्त्राभूत्वा आदितिसंवेधः

५ ते
 सगद्गदं भयेन हर्षेण वासु
 शुर्लनेत्रैस्तिकफरुद
 कंठतया यो वाचो मन्द
 तसकंपत्वादिविकारः +

सप्तमं टीका १

इते भीष्मे तथा द्रोणे कर्णे च विनिपतिते जयद्रथप्रभृतिषु
 तेषु जयशंसिषु १ इतोऽर्यो यतो नूनं तेर्विना स निराश्रयः
 इत्येतरं तसंभाष्य तस्योत्तरं यदि २ सजयाशोपरिममसं

श्री.
नी. टी.
प

शिकुर्यात्तदास्ये उभयेषां भवेच्छांतिरित्यभिप्रायवोस्ततः किं हि मि
सपेक्षायां सुवाचेति संशयः पूर्वोक्तं वचनं आकर्ण्य केशवस्य महेशि
तः ४ इदं दत्तकिरीटेन युक्तो सोमूरसतमः निवातकवचादीनां
गोसेहारकोर्जनः ५ कृतोजलिः कंपमानः परमाश्चर्यदर्शनात् न
मस्कृत्य पुनः कृतं भक्तकेशपदे विभुं ६ आदसगद्गदेवाकांशव
तो निसावावदे हर्षणचमयेनाह पूर्णतित्वे सति स्वये ७ कफरु
द्वगलत्वेन विकारो योगिरो भवेत् मंदस्वसप्रकंपतरूपः सो यो हि
गद्गदः ८ तयुक्तं वचनं प्रादासंतभीषसंस्तथा प्राहुर्मस्कृतम् तः
योपि प्रणम्या नतकं धरः १५

नीलकंठी टीका १२

भगवन्नेवमुक्ते सति पश्चात्किं हतमित्यपेक्षायां संजय उवाच अत्र
कृतोजलित्वादित्यादिना चिद्वेन भगवद्वाक्येन चने किरीटीन करिष्य
तीति सूच्यते सगद्गदं भयदर्षाणां वेशेन गद्गदेन कंठं कंपनेन स
हवर्त्तत इति सगद्गदं यथा भवति तथा आद उक्तवान् भीतभीतः अ
संतं भीतः सत्रादेति संबंधः अत्र आदेति पदद्वये पुनरुक्तं उवाचे
ति पुनरुक्तं स्यात् अतः प्रणम्य अर्चनं उवाचेत्येव संबंधो न तत्र प्रण
म्य आदेति कातर्हि आदेति क्रियाया गतिः नेयं क्रिया किं तर्हि अदेति प्र
सिद्धार्थमवययमित्यदोषः ३५

ग्रान्दी टीका स्पष्टार्थम् भगवद्भवतो जयका

लिकीमर्जनावस्थां संजय उवाच ३५॥

रामकंठी टीका ॥

एवं भगवद्भक्तैरर्जुनावस्थां

धृतराष्ट्राय संजय उवाच ॥ ३५

स्पष्टार्थः आकः

लासिकी

रामकंठी टीका

ततो यद्दुर्गतं तद्दुर्गाष्टं प्रति संजय

उवाच

पतन्त्यो कत्रयात्मकं वचनं समाधिकाले कालरूपमात्माकारेण सुख

नेवेपमानः अत्यल्पम् ३५ ॥

पंचोली टीका

ततो यद्दुर्गतं तद्दुर्गाष्टं प्रत्याह संजय उवाच पतदिति किरी

टीअर्जनः केशवस्य पतत्सर्वोक्तं वचने श्रुत्वा कृतं जलिर्वेपमानः
स नमस्कृत्य भूयः पुनरपि कृत्स्नमेव भीतभीतः प्रणम्य स गङ्गादमा
ह ३५

रणवीरसमिद्धो धिनी ॥

एवं विस्मृत्य दर्शनानन्तरं भगवदर्जनसंवादः कीदृशभूदिति
एषः संजय उवाचैतच्छ्रुतेति केशवस्यैतदीदृशं वचनं श्रुत्वा
वेपमानो जातकंयः किरीटी धृतकिरीटोऽप्यर्जनस्ततः कृतं
जलिः स न कृत्स्नं भगवंतं भूय यवनमस्कृत्वा पौनः पुन्येन का
यवाङ्मनोभिः प्रणम्येति प्रणम्य सर्वस गङ्गादं यात्राभंगमया
स गङ्गादमित्युक्तमिति स गङ्गादं वचनं वक्ष्यमाणं रीत्या प्रोवाचे
स्यानेति ३५ ॥

मधुभाष्य

अप्रियो माघं तर्कामितया जगद्गुर्घणादेरुषीकेशः केशं
संस्नानं तन्नियंत्वा देः प्रमाणं तु शशि सूर्यनेत्रमित्यशोक्तं ३५

भाषा अनुवाद
जिस के वारि जो भया सो संजय धृतराष्ट्र से कहते हैं कि ये
श्रीकृष्ण के वचन श्रवण करि कम्पमान कलेवर किरीटी
अर्जुन हर्ष ओ भयके मारे गदगद काण्ठ अति उरे ऐसे ह
य जोरि कृष्ण को प्रणाम करके आगे कहेंगे जो सो बातें कह
ते भये १५

चौपई
येसे वचन सुन हरिके सोई कंपत नर जोर कर दोई करि
नमस्कार कहे पुन कृष्णदि गदगदवाक अस कहि नमदि

३५॥

१६
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
विष्णुसंज्ञकं चतुर्भुजं शशिधरं
वसुधैव कुटुम्बकम्
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
विष्णुसंज्ञकं चतुर्भुजं शशिधरं
वसुधैव कुटुम्बकम्
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

अर्जुन उवाच स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या
जगत्प्रहृष्टयनुरज्यते च रत्नोसिभीतानि
दिशो द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसेवाः ३६

शाङ्ख्यभाष्यटीका १

स्थान इति स्थाने युक्तं किं तव प्रकीर्त्या तस्मादात्मकीर्तनेन
युतेन हृषीकेश यज्जगत्प्रहृष्टयति प्रहृष्टयति तत्स्थाने यु
क्तमित्यर्थः अथवा विषयविशेषणं स्थान इति युक्तो हृषीकेश इति विष
यो भगवान् यत इत्यर्थः सर्वात्मा सर्वभूतसुहृद्वेति तथा अनुरज्य
ते अनुरागं ज्ञापेति तच्च विषय इति व्याख्येयं किञ्च रत्नोसिभीतानि
भयाविष्टानि दिशो द्रवन्ति गच्छन्ति तच्च स्थाने विषये सर्वे नमस्य
न्ति नमस्कृवन्ति च सिद्धसेवाः सिद्धानां समुदायाः कपिलादीनां
तच्च स्थानि ३६

शान्तसिद्धिस्तटीका २

किं तदर्थं नो भगवन्ने प्रति सगद्गदे वचनमुक्तवानिति तदाह अ
र्जुन इति विषयविशेषणतमेव ध्यानं किं युक्त इति भगवतो हृषीदि
विषयत्वं युक्तमित्यत्र हेतुमाह यत इति तव प्रकीर्त्या हृषीवदनु
रागञ्च गच्छति जगदित्याह तेषां तच्च अनुरागगमने रत्नः स
जगदेकदेशभूतेषु प्रतिपत्तेषु कुतो जगतो भगवति हृषीनुरागा
विष्णोः काह किञ्चेति इतश्च जगतो भगवति हृषीदि युक्तमि
त्याह सर्व इति ३६

स्वामिस्तटीका ३

स्थान इत्येकादशभिरर्जनस्योक्तिः स्थाने इत्यवयवयुक्तमित्यस्मिन्
र्थे हे हृषीकेश यदेवं तमनु तमभावो भक्तवत्सलस्य तस्मै तव प्रकी
र्त्या माहात्म्यसंकीर्तनेन केवलमदमेव न प्रहृष्टयामि किं तु जगत्स
र्वप्रहृष्टयति प्रकर्षणं हर्षं प्राप्नोति एतत्तु युक्तं स्थाने इत्यर्थः तथा
जगदनु रज्यते नुरागं ज्ञापेति इति यत् रत्नोसिभीतानि सन्ति दिशः प्र
वेति पलायंते इति यत् सर्वयोगतपोमंत्रादि सिद्धानां सेवानमस्येति
प्रणमंतीति यत् तच्च स्थाने युक्तमेव न चित्रमित्यर्थः ३६

विष्णुभाष्यटीका ४

स्थाने युक्तं प्रकीर्त्या प्रकर्षणं कीर्तयति ३६

श्री.
मी टी.
ए

रामानुजभाष्यटीका ५

स्थानरतिस्थानेषुक्तं तदेतद्युद्धिदित्यागतमशेषदेवगंधर्वप
तसिद्धविषयपरकिंमरकिंपुरुषादिकंजगतत्तत्प्रसादात्सर्व
स्वरमवलोक्यतवप्रकीर्णसर्वप्ररुषाति अनुस्मृतेचयवतामव
लोक्यरत्नोसिभीतानिसर्वादिशःप्रद्वेति सर्वसिद्धसंवातमस्य
तिव तदेतत्सर्वेषुक्तमितिपूर्वणसेवयः

अभिनवगुप्तकृतटीका ६

प्रकीर्तिः प्रकीर्तने ३६

परमार्थप्रपाटीटीका ७

स्थानरति तवाहुतसामर्थ्यभक्तवात्सल्यरूपयाकीर्तिरद्वयपुंज
गत्यरुषातिसंवेष्टेभवतितद्विष्णुसेनानुस्मृतेचयवतामव
तिस्थानेषुक्तमेवपतउभयमवलोक्यसर्वसिद्धसंवाःकपिलादय
स्तानमस्येतीतिस्थानेषुक्तमेव ३६

वनमालीटीका ८

स्थानेइत्यवयवेषुक्तमित्यर्थे हेरुषीकेशसर्वेदियप्रवर्तकांतर्यामि
न यतस्त्वमेवाहुतप्रभावोभक्तवत्सलस्यतत्सवप्रकीर्णप्ररुष
याकीर्णनिरतिशयप्रशस्ताहुततयशःकीर्तनेनप्रवर्णनचन
केवलमहमेवप्रहृषामिकित्सर्वमेवजगत्तनमात्रंरत्नोविरो
धिप्रहृषातिप्ररुषंरुषमाप्नोतीतिनतस्थानेषुक्तमेवसर्थः त
थासर्वजगदनुस्मृतेच तद्विषयमनुस्मृतेतिचयवतामव
मेवतथा रत्नोसिभीतानिसंतिदिशोद्वेतिसर्वासिद्धिलपलायेत
इतियत्तदपिपुक्तमेवतथासर्वसिद्धानां संवातमस्येतिप्रद्विपु
क्तमेव सर्वत्रतवप्रकीर्णमस्यात्वयःस्थानेइत्यस्यच अयंस्लोकार
लोनुमंत्रं शास्त्रेसिद्धः ३६

रुसमवेनयन्तीटीका ५

यनेनयेनस्वसारर्थेभगवतोयदतिरम्यत्वमस्यप्रतेष्टं तउभया
चरूपेपाथःसोतिस्थानरत्नारम्भकिरीटिनमितेरेकादशभिः
स्थानेरुषीकेशेतिस्थानेइत्यवयवेषुक्तार्थकं हेरुषीकेशवासात
करणनियेतः इत्यनेनत्वेसकीयमतिरम्यरूपेप्रदर्शयसभक्तैदि

याणि स्वसम्प्रदानिकरोषि अभक्तैरियाणिव निजातिचोरं रूपे प्र
दर्शयस्व विमुखाविकरोषीति सूचितम् नवविस्वरूपस्य प्रकीर्ण
प्रकृष्टया कीर्णजगत् शिष्टाशिष्टात्मके चेतनमात्रे सर्वप्रदृष्ट
तिप्रकर्षेणानेदं प्रामोति च पुनरनुरूपते तद्विषयानुरागप्रामो
ति इति स्थाने युक्तमेव अयम्भावः विषयविग्रहस्य भगवतः कति
चिदङ्गमतिमोम्पानिकतिविज्ञानिकुराणिमेति अस्मिन् जगत्पि
केचित् शिष्टाः केचित् शिष्टाः जनाः सन्ति तत्र ये मुहुरिदं लयागताः
सुरासुरादयः शिष्टजनान्तेः तिष्ठोम्पकारुण्यवात्सल्यमोदर्यादिक
स्याणगुणायुक्तवैरूपमवलोक्य तन्नङ्गणमपि कुर्वन्ति ये तशि
ष्टजनान्ते तवात्मासुखमतिक्रमनीये जगत्सोदने रूपे दृष्टातव
तदासुखमोदर्यादिकीर्णनेन अवर्णनचमोहिताः सन्तः प्रह
सन्ति तद्विषयिणी प्रीतिं कुर्वन्ति तवानिभयानके कुरूपे च नि
रीत्य कालरूपोऽये सर्वे जगत्प्राशयितीमेव रूपया कीर्णप्रवणे
न च प्रहसन्ति अशिष्टानो सर्वा निष्ठुचिन्नस्वभावतात् स्वमरण
भयात्स्वरत्नणाय च तद्विषयिणी प्रीतिं कुर्वन्ति इति रत्नोसि जगत्स
मथेया निरातसोपलत्तितानि भूतयेतपि शाचकृष्णान्दभैरववेत्ता
लादीनि स्वाभाविका मन्त्रस्वरूपगुणकुराणति दोरुणपरहिंसादि
कर्माणि तानि तव प्रकीर्णशिष्टजनैरुच्चैर्गीतया श्रीनृसिंहसुदर्श
नमंत्रकवचादिकीर्तनेन अवर्णनचमोहितानि तस्मादप्यति
भयंकररूपदर्शनातिभययुक्तानि सन्ति दिशः सर्वा सुदित्तद्रवे
ति स्वस्वप्नारत्नणाय पलायते इति यत्तदपि स्थाने युक्तमेव च पुनः
सर्वसिद्धसंज्ञाः ये सिद्धाना भगवत्स्वरूपगुणयाष्टात्म्यविदो कपिल
कुमारनारदादीनां संज्ञाः समूहास्ते तव प्रकीर्णश्रमे स्वस्वसुखेन
चोद्गातया तव तन्माकर्मगुणादिकीर्तनेने तर्थाः नमस्येति तव सोम्पा
सोम्परूपे दृष्टा पिदृष्टविषादरहितास्तत्त्वानमनमेव कुर्वन्निभगवा
नययदकरोय यत्करिष्यति यच्च करोति तत्सर्वमस्माकं सर्वेषां
गलायेवेति कृता तव सोम्पासोम्परूपे दृष्टा पिदृष्टविषादरहितास्त
न्नस्त्वनमस्य कुर्वन्नि तव प्रहस्योत्पन्नरमेतेवेति यत्तदपि युक्तमेव
तर्थाः ३६

अथ सुदनी टीका १०

अर्जुन उवाच एकादशभिः ॥

२ श्री.
गी टी.
प

॥४

भयाविष्टानि

रतो

ह

स्थाने इत्यवयवयुक्तमित्यर्थे हेरुषीकेशसर्वेन्द्रियप्रवर्तकयत्नस्त
मेवममेतादुनप्रभावोभक्तवत्तलः ततस्तवप्रकीर्त्याप्रकृष्टयाकी
र्त्यानिरतिशयप्रशस्त्यस्कीर्तनेन अवगोचनकेवलमदमेवप्रकृ
ष्टामिकै तसर्वमेवजगच्चेतनमात्रे रतोविरोधिप्रकृष्टप्रकृष्ट
दृष्टमामोतीति यत्ततस्थानेयुक्तमेवत्यर्थः तथासर्वजगदनुर
ज्यतेचतद्विषयमनुरागमुपेतीतिचयत्नदपियुक्तमेव तथारत्तां
सिभीतानिसेतिरिशोद्वेति सर्वासुदित्तपलायेतइतियत्नदपियुक्त
मेव तथासर्वसिद्धानांकपिलानांसेवाः समूहानमस्यतिचेतियत्न
दपियुक्तमेव सर्वत्रतवप्रकीर्त्यामस्यान्वयः स्थाने इत्यस्यचप्रयेसा
कोत्रमेवत्वेनमेवशास्त्रेप्रसिद्धः ॥

सदानेदी टीका

सचनारायणप्रादुरसुदर्शनमेवाभ्यो ॥ संयुक्तोत्तेय इतिरहस्य

सर्वेन्द्रियगणायीशत्वममेतादुतेचरः कीर्तनेनतवासन्नप्रशस्त्य
अवगोचनच ॥ नाहमेवप्रकृष्टामिकैवलं किंतुसर्वतःजगच्चेतनमात्रे
हिइष्टरतोविरोधियत् २ प्रकृष्टदृष्टमामोतीत्यवयवयुक्तमेवतत्
तद्विषयेजगत्सर्वमनुरागमुपेति यत् ३ युक्तंनदपितद्वच्चभयाविष्टा
निसंति यत् सर्वासुदित्तरत्तासिपलायेतेतिसोप्रते ४ सिद्धानांक
पिलादीनांसमूहास्त्वजगद्भूतं नमस्यतीति यत्तच्चयुक्तमेवजगद्भू
तो ५ प्रकीर्त्यामस्यसर्वत्रतवेत्यस्यतथान्वयः स्थाने इतिपदस्याभ्यो
विषयेतद्विशेषणे ६ समुदात्तासहत्वामीदृषादिविषयोहरिः ॥

नीलकंठी टीका ॥

एकादशभिः श्लोकैरर्जनउवाच स्थाने इति हेरुषीकेशसर्वेन्द्रिय
प्रवर्तकचेतयामिन् तवप्रकीर्त्यानामसंकीर्तनेनजगत्सहस्य
तियत्ततस्थानेयुक्तं स्थाने इत्यवयवयुक्तमित्यर्थे यत्तवप्रकीर्त्याज
गदनुरज्यतेतदपिस्थानेयुक्तं यत्तवप्रकीर्त्यारत्तांसिभीतानिसे
तिदिशोद्वेतिपलायेतेतदपिस्थानेयुक्तं यच्चतोसर्वसिद्धसेवाः
कपिलादीनांसपुराणाः नमस्यतितदपिस्थाने प्रयेसाकोरत्ताज्ञ
मेवत्वेनमेवशास्त्रेप्रसिद्धः सचनारायणप्रादुरसुदर्शनासुमेवा
भ्योसंपुटितोत्तेयइतिरहस्य ॥

स्थानेदीटीका

स्थाने इति विभक्तिप्रतिरूपकमवयं युक्तमित्यत्रार्थे यतस्सर्वतव प्रकीर्त्या
भगवन्नामकीर्तनमात्रेण जगत्प्रहृष्यतीत्यादिकं स्थाने युक्तमेवेत्यर्थः ३६

कस्ममर्चनः किं प्राहेत्याह ॥ रामकेदीटीका

इत्थं सर्वशक्तेः सर्वेश्वरस्य तव प्रकीर्त्या प्रशंसया सर्वजगत्प्रहर्षं भजते
तपवचत्वय्यनुरक्ते भवति तदा तच्छ्रवणात्प्राप्तं स्यात् तथानानि
भयाद्यतस्ततः पलायंते सिद्धसंघादेव विशेषसमूहाः समस्ताः प्राण
मंति च तत्सर्वं स्थाने युक्तं

लासिकी वसुधालीटीका

५ क्तः हे ह्यषीकेशेन्द्रियस्वामिन् आत्मरूपतयेन्द्रियवृत्तेः प्रवृत्तिनिवृत्त्यर्थं
येष्टविनियोगस्तव प्रकीर्त्या माहात्म्यसंकीर्तनेन नरकेवलमहमेव प्र-
हृष्यामि यावत्सर्वजगत्प्रहृष्यति प्रकर्षेणार्हं प्राप्तोतीति यत् ।
यतस्स्थानेयुक्तं भवति नैतद्विविधमित्यर्थः तथा सर्वजगदनुसृत्यते
त्वय्यनुरक्ते भवतीति यत् रक्षांसिभीतानि संतिदिशो यतस्ततः पला-
यंते इति यत् तथा सर्वे सिद्धानां ज्ञानोक्तर्षप्राप्तानां समूहाः प्राणमंती-
तियत् एतत्सर्वं युक्तमेव सर्वत्र वा कोष्ठतव प्रकीर्त्या स्थाने इत्यस्य चा-
न्ययः अयं श्लोको रत्नमंत्रेषु मंत्रशास्त्रे प्रसिद्धः ३६

पंचोलीटीका

यदा हार्जनस्तदृशीयति स्थान इति हे ह्यषीकेश तव प्रकीर्त्या तव
माहात्म्यकीर्तनेन जगत्प्रहृष्यति हर्षमुपैति च पुनश्च नुरत्यते अ-
नुरागमुपैति च पुनः रक्षांसिभीतानि दिशो द्रवन्ति सर्वे सिद्धसंघा-
कपिलादीनां समूहाः नमस्यति तत्स्थाने युक्तं ३६

रणावीरसमिद्धो धिनी ॥

१११
दृषीकेशोति भगवत्संबोधनं सर्वजगदंतर्यमित्वसूचनार्थसक
लं जगत्तव प्रकीर्त्या तन्नाम संकीर्त्या प्रहृष्यति प्रकर्षेण हर्षेण
ति प्रवृत्त्यनेन त्वय्यनुरक्तश्च भवति तथा तन्नाम कीर्तनमादा
त्या देव भवद्भक्तेभ्यो भीतानिरक्षां सिदिशोद्वंती तस्ततः य
त्नायंतं तथा च सर्वे सिद्धिं संचास्यापि नमस्यंति भवद्भक्तानि
ति शेषः इत्येतत्सर्वं तन्नाम कीर्तनमादा त्या देवस्याने शुक्तं
भवतीति ॥ ३६ ॥

मधुभाष्य

दृषीकाणामिंद्रियाणामीशत्वाच्च तेषां विशेषतश्चात्वं यः प्रा
णोतिष्ठति त्यादौ सिद्धं न मे दृषीकाणि पतंत्यसत्यं ये इत्यादि
प्रयोगाच्च इतरोर्था मोक्षार्थमसिद्धः सूर्या चंद्रमसौ प्राणसक्तौ
मेघं प्रसंसंति ते बोधयं स्यापयंश्चैव जगदुत्पद्यते पृथक् बोध
ना त्यापयनाच्चैव जगतोद्वर्षसंभवात् अग्नीषोमकृतैरेभिः क
र्मभिः पांडुरेन दन दृषीकेशोदमीशानो वरदो लोकभावन इति
कथं स्थाने इति तदोद कस्मादित्यादिना पूर्णं सा सावात्मा
चेति मदात्मा आत्मशब्दोक्तो भारतं यच्चामोति यदा दत्ते य
च्चानि विषयानि द यच्चाम्यसंततो भावस्तस्मादात्मेति भण्यते
इति ३६ ॥

भाष्य अनुवाद

अब इस श्लोक में अर्थ न कहते हैं कि हे हृषीकेश जिस हेतु
तम ऐसे अद्वैत प्रभाव से युक्त अभक्त बल्लभ हो इससे तमारा
माहात्म्य संकीर्तन करने में केवल हमीने जो हर्ष पाया सो
नहीं किन्तु ब्रह्माण्डभर अति हर्षित और प्रीति युक्त है यह उ-
चित है और इस ब्रह्माण्ड में जो सब सज्जन प्रसन्न और तस-
सकल उरके सारे दशा दिशामें भागे फिरते हैं और योग तप
मन आदि के द्वारा सिद्ध गण तम को प्रणाम करते हैं यह
कुछ आश्चर्य नहीं है ३६

चौथई

हृषीकेश तब नाम कहियोगा हर्षित जगत अनुगग दिलोगा
राक्षसभीत दण्डोद्विषा नाशों नमदिसिद्धगण यथादिप्रकाशों
३६॥

[Faint, illegible handwritten text in Devanagari script]

[Faint, illegible handwritten text]

कस्माच्च ते न नमस्कृतं हात्मन गरीयसे व्रस
 णोऽप्यादिकर्त्रे अनन्तदेवेशजगन्निवा
 स तमत्तरं सदत्तरं यत् ३१

स५

शाङ्ख्यभाष्यटीका १

भगवतो हर्षादिविषयते हेतुं दर्शयति कस्माच्चेति कस्मा
 चेति कस्माच्च हेतोस्तत्तुभ्यं न नमस्कृतं न नमस्कृतं दे महा
 त्मन् गरीयसे एकतराय यतो ब्रह्मणो हिरण्यगर्भस्याप्यादिक
 र्ता कारणमतस्तस्मा आदिकर्त्रे कथमेव ते न नमस्कृतं अतो
 हर्षादीनां नमस्कारस्य च स्थाने त्वमहो विषय इत्यर्थः हे अन
 न्त देवेशादे जगन्निवास तमत्तरं तत्तरं यद्देवानेषु श्रूयते
 किं तत् सदसत् यत् विद्यमानं तत् सत् असत् यत् नास्ती
 ति बुद्धिस्तु उपधानभूते सदसती यस्यात्तरस्य यद्दोरेण सद
 सदिसु यच्चर्यते परमार्थतस्तु सदसतः परं तत् यदत्तरं वेद
 विदो वदन्ति तत्तमेव नामादित्यभिप्रायः ३१

आनेदगिरिकृतटीका २

उक्तेषु हेतुषु तेनोत्तरस्योक्तमवतारयति भगवत इति महा
 त्मन् तमत्तरं चेतस्त्वं एकतरतात्रमस्कारादियोग्यत्वमाह पुरु
 तरायेति तत्रैव हेतुनरमाह यत इति महात्मतादिहेतुनाशुक्ता
 नां फलमाह अत इति तत्रैव हेतुनराणि सूचयति हे अनन्तेति
 अनवच्छिन्नत्वं सर्वदेवनियन्तृत्वं सर्वजगदाश्रयत्वञ्च तव न
 मस्कारादियोग्यत्वे कारणमित्यर्थः तत्रैव हेतुनरमाह तमिति
 तत्र मानमाह यदिति कथमेकस्यैव सदसदपत्ते तत्राह ते
 इति कथं सतो सतस्यात्तरं प्रत्युपाधितं तदाह यद्दोरेणोति
 तत् परं यदि ते तत्राचष्टे परमार्थतस्तिति अनन्ततादिना भ
 गवतो नमस्कारादियोग्यत्वमुक्तं ३१

स्वामिकृतटीका ३

तत्र हेतुमाह हेमहात्मन दे अनन्तदेवेशजगन्निवास कस्माद्देतो

श्री.
गी. टी.
५

स्नेतभ्येन न मे रन्न न मस्कारे कर्षुः कथं भूता यत्र लणो पि गरीय
मे गुरुतरायादिकर्षे ब्रह्मणो पि जनकाय किंच सत व्यक्त मसद
व्यक्त च ताभ्यां परं मूलकारणं यदस्तरं ब्रह्म तच्च तमेवैतेनैव भि
देत भिस्त्वा सर्वे न मे तोति न चित्तमिदमर्थः ३०

पिशाचभाष्यटीका. ४

कस्माच्चेति न न मे रन्न न मसुः अस्तरं ब्रह्म सद्वा सत् सदसदात्मक
मिदमर्थः ताभ्यां सदसत्परं तत्परं यत् ३०

युक्ततामेवोपपादयति ॥

गमानुजभाष्यटीका. ५

कस्मादिति महात्मे स्नेतभ्ये गरीयसे ब्रह्मणो हि राण्यगर्भस्यापि
आदिभूतार्थं कर्षे हि राण्यगर्भादयः कस्मादेतोर्न न मस्कर्षुः अनेन
देवेश जगन्निवास तमेवास्तरं नस्तरं जीवात्म तत् न जायते
प्रियते वा विपश्चिदि सां सुति सिद्धे हि जीवात्मा दिनस्तरं जीवात्म तत्
वात्म वस्तु सदसच्च तमेव सच्च हनिर्दिष्टं कार्य कारण भावेनावस्थि
ते प्रकृति तत्ते नाम रूप विभागवत्तया कार्य वस्ये सच्च हनिर्दिष्टं
तदन हेतया कारण वस्य मसच्च हनिर्दिष्टं तत्परं यत् तस्मात्
प्रकृतीः प्रकृति संवेधिनः जीवात्मनः परममत् सुक्तात्म तत्तयत्
दपितमेव तत्परं यत् ३०

अभिनवगुप्तकृतटीका. ६

सत्यदार्ष्टेन असदपलम्भे प्रत्यक्षयत्नात् अथवा अभावोपि
थिपि निजनिजविशिष्टवाचक संसिधितो ज्ञानाकार मश्रुवानो नप
रं ब्रह्म सत्तावतिरिक्तः सदसद्रूपाभ्यां च परं तदभयबुद्धि रीथाने
तद्रूपोपलब्धेः ३०

परमार्थप्रपाटीटीका. ७

तत्र हेतुमाह कस्मादिति भो महात्मन महाशब्द व्यपदेश्य भो
नंत देवेश जगन्निवास ते सिद्धाः कपिलादयस्ते तत्तमेवा कस्मादेतो
न न मे न न मस्कारे न कर्षुः किं भूता यत्तमे ब्रह्मणो जगत्तत्तत्परं
गरीयसे अष्टतमाय आदिकर्षे च किं पुनरस्य यद्यस्मात्कारणा
ने अस्तरं परं ब्रह्म सत व्यक्ते असदव्यक्तताभ्यां परं मूलकारणं ३०

वनमालीटीका. ८

हर्षादिविषयतेहेतमाहकस्मादिति कस्माच्चदेतोस्तेतभ्येतनमे
 रत्रमस्कपुःसिद्धसंवाःसर्वेपिहेमहात्मने अनंतगुणपरिपूरणहे
 अनंतदेशकालापरिच्छिन्नदेदेवेशावलरुदादीनादेवानांनियंतः
 हेनगनिवाससर्वाश्रयतभ्यो कीटशायेवल्लोपिगरीयसोयकृत
 राय आदिकर्त्रवल्लोजनकायतमत्तरंस्वरूपतोयमित्तोयमिति
 शादिभूमंसदसदभावाभावात्मककार्यकारणात्मकंवाभूताभूता
 त्मकंवातद्यायकत्वातदात्मकत्वमित्यर्थः तत्परंताभ्योकारणादिभ्यो
 परमूलकारणोयदत्तरंवल्लोतदपितमेव एतैर्हेतुभिस्तोवसदेव
 सतंसर्वेनमंतीतिनकिमपिविनमित्यर्थः ३०

रुसमंवेत्तयतीटीका ५

सिद्धसंवानांभगवन्नमनेहेतमाहचतुर्भिःकस्माच्चेतिहेमहात्मम
 हानधिकसाधुभूयःआत्माविग्रहोयसमतस्त्वोयनेयहामहा
 नत्तरायात्माचित्तंयसमतथासमोयनेहेतुहत्तायदेउदारम
 नेवेत्यर्थः हेःनेतदेशकालवल्लोपरिच्छेदप्रभूत्वस्वरूपसर्वव्या
 पित्वमित्यर्थः हेदेवेशदेवानांवल्लोदीनामीशान्तियन्त्रःहेनगनिवा
 सेवेतनाचेतनात्मकस्यजगतोनिवास आश्रयतेतभ्योपूर्वाकाले
 सर्वेसिद्धसंवाःकस्माहेतोर्ननमेरन् आत्मनेपदमाघं अपितप्र
 णमेपुरेवतेकीटशायेत्याद ब्रह्मणोदिराण्यगर्भस्यापिचकारा
 छिवस्याप्यादिकर्त्रेपित्रेतागयणाह्माजायतेनारायणादुद्गो
 यंतलतादाहःशूलपाणिरजायतेत्यादिश्रुतिभ्यःकर्तृत्वेने
 वभगवत्तत्त्वमित्येसिद्धेप्यादीत्यनेनपरमेश्वरस्वतावत्त्वष्टि
 समयेस्वेतानांपरायाःस्वप्रकृतेस्वीनगुणानुयायतत्रसर्वेस्व
 क्तयेवसत्स्वीकारमात्रमेवकृतेतगभ्योरजस्तमोभ्यामदत्तेत्र
 जविशेषयोर्विधिशिवयोःसंयोगत्वेतत्रह्मणाभिमानत्वेतत्तद
 भीनस्थितिप्रवृत्तिकंचकारपित्वास्वसतयातत्रह्मणानुसारेणच
 तयोःस्वाधिविहितस्यायतस्थितिप्रवृत्तिकस्यस्वीलारूपस्यजग
 तःकिंचित्त्वष्टिमंदारसामर्थ्येदत्तातोतत्रदधिकारेस्यापयइति
 योतितम् यहावल्लोवेदस्याप्यादिकर्त्रेजनकाय यस्यनिष्प
 सितमेतद्विदोयजर्वेदस्यामवेदस्यादिश्रुतेः इत्यनेनवल्लो

३०

श्री.
गी. टी.
प

दीनां सर्वतेजसां शितकोयो वेदस्तस्यापि जनकत्वेन भगवतः सर्व
स्थितिप्रवृत्तिरायपितृत्वे सर्वधर्मकर्मकारपितृत्वं सूचितम् अतएव
गरीयसे ब्रह्मणे गुरुतम्य अपिशोभेन भगवतः सृष्टिं संहारमिताक
र्तृत्वं विधिश्चिवेराजं जनकत्वेन तज्जहकत्वेन च सर्वोत्कृष्टं सूचित
म् योज्यमाणं विदधाति पूर्वयोवावेदांश्च प्राहिणोति तस्माद्गुणैः श्रुतेः
नन्वादिकर्ता स भूतानां ब्रह्मणे समवर्तते तस्मादि वाक्याद्ब्रह्मणो भूतादि
कर्तृत्वं स्पष्टं यैवर्तितं च श्रूयते वसुदेवपुत्रस्तत्समवयस्कस्य समव
त्जनकत्वं तज्जहकत्वं च कथं वदसीत्याशंक्यभोक्तृभोग्यनियंत्वरूपं
तमेवासीत्याह तमत्तरं सदसत्तमपरं यदिति अन्तरं जीवात्मवस्तुत
मेव यद्ब्रह्मसुक्तादिभेदवाङ्मयं जीवतत्तदन्तरात्मतया स्थितस्त्वमे
वासीमर्थः यच्च सदसत्तमरूपविभागवतया कार्या वस्यं सच्चिद
निर्दिष्टं तदनर्हं तथा कारणवस्यं वा सच्चिदनिर्दिष्टं तदशब्दवाच्यं
कृतितदपित्वमेव यच्च परं तदन्तरात्मवाच्याभ्यां पराभ्यां चेत्तनाचे
तत्प्रकृतिभ्यां परमुत्कृष्टं तद्विलक्षणं तत्प्रियं त्वरूपं परमात्म
तत्तदपित्वमेव वा विमोघरुषो लोकेतरस्यात्तरं पवव तरः
सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽन्तरउच्यते उत्तमः पुरुषस्तमः परमात्मे
सुदारुतः इति वक्ष्यमाणान् पवतेषां तत्र मने महात्मना दयानेके
हेतवः सप्रतल्लोकस्याचूने मेरुत्रपिन मेपुरेवानेकहेतुत्वात्समुच्चा
लेकारः ३०

भगवतो हर्षादिविषयत्वे हेतुमाह ॥ मधुसूदनीटीका ॥

कस्माच्च हेतोस्ते तभ्येन न मेरुत्रमस्कुपुंसिद्धसंज्ञाः सर्वे पि हे महात्म
न परमोदारवित्ते हे अने त सर्व परिच्छेदं शून्यं देवेशादिरण्यगर्भादी
नामपि देवानां नियतः हे जगन्निवास सर्वाश्रय तभ्ये कीदृशा यवत्स
लोपि गरीयसे गुरुतम्य आदिकर्त्रे ब्रह्मणो पि जनकाय नियते त
पुपरेष्टु ते जनकत्वमिमादिरेके कोपि हे तर्ने मस्कार्यता प्रयोजकः
किंपुनर्मेहात्मताने तत्तज्जगन्निवासत्वादिताना कस्याणं समुचित
इत्यनाश्रयता सूचनार्थेन मस्कारस्य कस्माच्चेति वा शङ्काः चका
रः किंच स हि दिमुत्वेन प्रतीयमान मस्तीति असत्निषेधमुत्वेन
प्रतीयमानं नास्तीति अथवास्यत्वं असत्प्रत्यक्तं तमेव तथा तस

रंताभ्यो सदसद्यो परं मूलकारणं यदत्तरं ब्रह्मतदपि तमेव तद्वि
त्रे किमपि नास्तीत्यर्थः तत्परं यदि मत्र यच्छब्दात् प्राक् चकार मपि
केचित्तदंति एतेनैतद्विस्तारं सर्वे न मतीति ने किमपि चित्रमिदं

२०

सदानंदीटीका ॥

हर्षादिविषयतेपि हेतुमाह जगत्पतेः कस्माद्देतोर्न ते तभ्येन मकु
पुःपुरे रिताः १ सर्वेपि हेतुमाह तं परमोदारविद्वानः अपरिच्छिन्न
देवेशानियंता ते विधेयं २ हेतुमाह तं प्रयोजनं तभ्ये कीदृशं विधा
यच्च ब्रह्मणोपि नियंते तस्मिन्नेतद्विशिष्टाय च ३ किंच प्रतीयमाने
यत्तत्सहिधिसुखेन वै नास्तीति भावविषयमसत्तयन्निषेधतः य
त्तावत्तच्च वा सर्वे सदसद्यो परं तथा यदत्तरं परब्रह्मतदपि तेषां
त्परं ततो भिन्नेन च स्थलेन सूक्ष्मेनापि कारणं तमात्मा सर्ववस्तुतो
त्तामेतैर्हेतुभिर्विभुं सर्वलोकानमतीति न चित्रं किमपीश्वर ३०

नीलकंठीटीका ॥

कुतो मोक्षसिद्धिं संवाचनमस्येत्यतस्तेषां हर्मिषु ब्रह्मोद्भूता निरुपम
हेतीत्यत आह कस्मादिति हेतुमाह तं कस्माद्देतोर्न ते तभ्येन मकु
पित्तन मेरेव तत्र हेतुः गरीयसे तेपि पुरवस्तुमपि पुरुस्तथा
पित्तमतिशयितो गुरुसीत्यर्थः कुतो ममेवातिशयस्यैव ममव
समानेपि सप्तसंकल्पत्वाद्देवस्य तस्याह ब्रह्मणो हिरण्यगर्भस्यापि
आदिकर्त्रेपि तामहाय पंचमहाभूतसृष्टिद्वारा ब्रह्माणो रजते इत्य
र्थः जगद्यापारवर्जं प्रकरणदसन्निहितत्वाच्चेति न्यायेन तिसृषु
हेतुषु रसतवा जयाते सर्वेषु चैव भावो भवेति न तत्तत्समास्ते अत
एव हेतुनेन हेतुदेवानां ईश जगत्त्रिवास जगतामालयभूत तेषु
त्तरं शुद्धं ब्रह्म कीदृशं अत्तरं यत्तत्सदसत्तमं सच्चिन्मसच्चिदस
तीताभ्यो परं च सदसत्तमं कार्यकारणं तदुभयातीतं चेति विविध
मित्यर्थः ३०

आनंदीटीका

सत्तद्द्रियगोचरात् असत्तद्द्रियागोचरात् प्रधानाच्च परम् ३०

रामकंठीटीका

तदनुग्रहादेव साक्षात्कृतं परं तत्त्वरूपं परास्त्वानुग्रह ॥

गी.
टी.प.

अथवाकस्मात्कृतवृत्तेहेतोरेतेसिद्धादयस्तुभ्येननमेयुः महात्मन्यरम
पुरुषकोटशायतेब्रह्मणोपिप्रजायतेरपिगरीयसेपरमगुरवेयतश्चा
दिकत्रेयायायसहेतस्यापिजन्महेतवे हेअनेतापरिच्छिन्नमाहात्म्य
यतस्त्वमतर्दियगोचरादिरंतावधारणीयाहस्तुनोयत्यरेयतिरिक्तं
तथासतत्वाभावरूपादपियत्परमद्वारमविकारेतिरुन्नरं परमार्थमन्त
तमतोवेदकैकसंभावमनन्यवेद्यं परमकारणं लोकं येतेसिद्धादयवि
दितवेयाः संतो ननमस्येष्टरिति तात्पर्यम्

२० ॥

लासिकी पंचोलीटीका

तत्रहेतुमाह॥ हेमहात्मनवापक अनेतापरिच्छिन्न हेदेवेश हेजगन्निवासस्यावर
जगमात्मकलोकाश्च तेनभ्यमीश्वरायसर्वेसिद्धसंज्ञाः कस्मात्कृतो
हेतोः ननमेरन्ननमेयुः अत्रहेतुगर्भविशेषगामाह ब्रह्मणोपियत्र
स्वसकाशादपिगरीयमेगुरुतराय कृतः आदिकत्रेजगतः प्रथमनिर्मात्रे
ब्रह्मणोदिनिष्क्रियतादीश्वरस्यैवप्राथम्येननिर्मातृत्वमतोब्रह्मणः स
काशाङ्गरीयस्तम् तथात्रमेवेश्वरोत्तरंरुदस्यापरपर्यायमात्मरूपं
तथासत्पुलममत्सुत्सुपलंभाविषयंतत्परंतयोऽपिकायाभूते
यन्मायाव्यतत्सर्वंनमेव अतपतेषामन्यतमस्यापिदर्शनांतरोक्तं
कर्तृत्वमनुपपन्नम् तदेवादिकर्तृत्वात् २० ॥

पंचोलीटीका

भगवतोहर्षादिविषयत्वेहेतेदर्शयति कस्माच्चेतिहेमहात्मन
चपुनस्तेतभ्यंगरीयसेगुरुतरायकस्माद्धेतोननमेरन्ननमस्कुर्युः
यतोब्रह्मणोहिरण्यगर्भस्यापिआदिकर्तृकारणमतः आदिकर्त्रे
कथमेवननमस्कुर्युः अतोहर्षादीनोनमस्कारस्यवस्थानत्वमहे
विषयइत्यर्थः हेअनेतदेवेशहेजगन्निवासयत् वेदोतेषुपरंअक्षरं
श्रूयतेतत्त्वमतवियमानंअसदवियमानंकार्यकारणंतत्त्वं २१

ररावीरसमिद्धोधिनी ॥

अथ भगवद्रूपं परास्मृतः सिद्धादयश्च दर्शयितुं हेतोः किं न
नमस्कृवंतीत्याह कस्माच्चेति हेमदात्मनेते सिद्धादयोगरीष
से गरिमाशक्तिमते तयवब्रह्मरूपेणैव स्थितकर्तृरप्यादिकर्त्रे य
तादृशित्वद्वारा स्वभावायते त्वभ्यं कस्मान्न न मेरन् कृतो न न
मस्कारे कुर्धुरर्थाद्भगवन्नामसंकीर्तनमेव दर्शयितुं कारणमि
त्यवधार्य त्वभ्यं नमस्कृवंतीति त्वं तत्परमद्वारमसि यत्परमत्त
रंसदसच्चसद्देदनमसद्देयं तदात्मकं निर्विकारं निरुत्तरं परमार्थ
तत्त्वं वेदं तेनैव श्रूयते इति ३०॥

मधुभाष्य

तत्परंसदसतोः परम् असच्चसच्चैव वयद्विषंसदसतः परमि
ति भावते एकस्मैव कारयिता नान्योक्तथापि स्वकं रूपं त
त्त्वं तत्प्रतीत्या अन्यथा तदपि स्वकमेव प्रमाणानि तत्त्वानि उ
क्तानि ३०॥

123

भाषा अनुवाद

और सबके हर्ष औ प्रणाम करने से अक्ष देत कहते हैं
 कि हे महात्मन् हे अनन्त हे जगन्निवास श्रीकृष्ण क्यों नये
 सब प्रणाम करेंगे कि जो तम ब्रह्माके भी आदि कर्ता कहे
 जनक और गुरुद्वौ और सत् कहे ब्रह्म प्रगट जो जगत्
 औ असत् जो अद्यत् प्रकृति साया इन दोनों से पर अर्थात्
 मूल कारण रूप प्रहार कहे अविनाशी जो ब्रह्म सो भी तम
 हो तो नवधा भक्ति द्वारा जो सब तमको प्रणाम करते हैं सो
 उचित है ३७

वैयर्थ

हे महात्मा किम तो दिनमे न सोई भूरिप्राप्ति आदिकर्ता ब्रह्म
 जोई सुधेया अनंत सभ जगत् निवासा त्वं अखंड सदसत् पर
 जो भासा ३७

[Faint, illegible handwritten text in Devanagari script]

知作

महाराज श्री... की आज्ञा...
... महाराज ...

तमादिदेवः पुरुषः पुराणस्त्वमस्य विश्वस्य
परं निधानं वेत्तासि वेद्यञ्च परञ्च धाम त
या न तं विश्वमननरूप ३६

शाङ्ख्यभाष्यटीका. १

पुनरपि स्मोति तमिति तमादिदेवोजगतः सष्टत्वात् पुरुषः ७
विशयनात् पुराणश्चिरन्तनस्तमेवास्य विश्वस्य परं प्रकृष्टं निधा
ने निधीयतेऽस्मिन् जगत् सर्वं महाप्रलयादाविति किञ्च वेत्ता
सि सर्वस्यैव वेद्यजातस्य यच्चैव वेदनाहं तच्चासि परञ्च धाम प
रमे पदे वैस्मत्वं तथा तत्ते व्याप्तं विश्वं समस्तं हे अनन्यरूप श्रुतो
न विद्यते तव रूपाणां ३८

आनन्दगिरि हस्तटीका २

सम्बन्धि नगत् सष्टादिनापि तद्योग्यत्वमस्तीति कृतिद्वारा द
र्शयति पुनरपीति नगत् सष्टा पुरुषो हिरण्यगर्भ इति पते प्रमा
ह पुराण इति सष्टत्वे निमित्तमेवेति तटस्थेष्ववरवादिनस्तान् प्र
सक्तमेवेति महाप्रलयादावित्यादिपदमवान्नरप्रलयाद्यर्थे ईश
रस्योभयथा कारणात् सर्वज्ञत्वेन साधयति किञ्चेति वेद्यवेदित
भावेन अद्वैतानुपपत्तिमाशङ्क्याह यच्चेति शुक्तालम्बनस्य ब्रह्म
णोऽर्थान्तरत्वे आशङ्कित्वेन परञ्चेति यत्परमे पदे तदपि च त्वमे
वेति सम्बन्धः तस्य पूर्णत्वमाह त्वयेति व्यापकत्वमेव भेदे
शङ्कित्वा कल्पितत्वात् तस्यैवमित्याह अननेति २५

सामिहृतटीका ३

किंच त्वमिति त्वमादिदेवः देवानामादिधृतः पुराणोत्तारिपुरुष
स्त्वमतएव त्वमस्य विस्वस्य परे निधाने लयस्थाने तथा विस्वस्यैव
त्वावेदिताज्ञाता च त्वे यच्च देवे वस्तुज्ञाते परं च धाम वै सर्वपदे तद
पितृमेवासि श्रुतपवदे अनेतरूपत्वयैवेदे विस्वततेश्यामं यतेश्च
समभिर्देतुभिस्त्वमेवनमस्कार्य इति भावः ॥ २८

पिशाचभाष्यटीका ४

तमादिदेव इति तदपि त्वानिधीयतेस्मिन्निति निधानं वेत्तासि वेदि

ਸੀ. ਟੀ.

रामानुजभाष्यटीका ५

अभिनवप्रसक्तटीका ६

परमार्थप्रपाटीका ७

तदेवाहवमिति आदिभूतो देवः स्थूलसूक्ष्मप्रपंचकारणीभूतः
सूत्रात्मा तमेव स एव पुराणः पुरुषो हिरण्यगर्भस्तमेव ततो वि
ष्टस्य चराचरस्य निधानं तस्य स्थानं विराडाख्यं तमेव ततो जीव
रूपेण वेत्ता तमेवासि भोक्तृ नंतरूपसमष्टिरूपपरं धाम निवा
सस्थानं ब्रह्मा उक्तं तथा तत्ते विस्तरितं तदपि तमेव एवमेक
एव तेनिरूपितप्रकारैर्वर्तते इत्यर्थः अतिरपियो नः पिता जनि
ता यो विधाता धामानि वेदभुवनानि विष्टा यो देवानां नाम धा पक
एव ते संप्रभु भुवना प्रसंतीति भाष्ये यो नोस्माकं पिता बीजरूपः
सूत्रसंज्ञः जनिता निर्मायकः सूक्ष्मभूतरूपो हिरण्यगर्भः ततः
स्थूलभूते विदधतीति विधाता विराट् ततो विष्टा विष्टानि सर्वाणि
धामानि शरीराणि भुवनानि भूभुवः स्वरादीनि जीवरूपेण यो वे
दपवेद्ये देवानां उक्तस्वरूपाणां नाम धा सूत्रादिना मप्रकारैरेनेको
प्येक एव तमेव विधेयं भुवना भुवनानि चराचरादीनि प्रस्पृशेति
कीदृशः परमेश्वर इति प्रसं कुर्वतीत्यर्थः अथात्तां वैलोम्येन
तिरेव प्रश्नोत्तरं वदति एकया ह्यो द्विषा दोषी चक्रमे द्विषा त्रिषा
दमम्येति पश्चात् चतुष्पादेति द्विषा दामि स्वरे संपश्यन् पत्नौ रू
पतिष्ठमान इति एवमभाष्ये जीवो ब्रह्मेकपादमित्युक्तत्वादेक
पाजीवः भूयो भ्यामादिना द्विषादः विराट् प्रपंच एव चक्रमे द्विषा
ति पश्चादनेतरं द्विषाद्वैराजं ब्रह्म त्रिषादे हिरण्यगर्भाख्यं पवेति
त्रिषादर्थ उदेदिति श्रुतेः तदपि चतुष्पात्सूर्यब्रह्मेति पवेद्विषादो

मनुष्याणामभिसृष्टोकाशोपकपदादिपेत्तीः सपश्यन्सालिते
नपश्यन्पतिष्ठमानोस्मि स एव परमेश्वर इत्यर्थः ३८

वनमालीदीका ५

त्वमादिदेवोजगतः कारणत्वात् पुरुषः पूर्णः पूरयित्वा तयोमी
वपुराणश्चिरेतनः तमस्य विषयस्य परे निधाने विषयस्य मतिस्थि
तिलयाधार इत्यर्थः जगदुदयादिकहेतवेन प्रधानात्मजजीव्या
स्यार्थे सर्वज्ञत्वमाह वेतासि वेदिता सर्वस्यासि वेद्ये च सर्ववेदवे
द्ये च सर्वश्रुतयस्त्वामेव बोधयंस्वर्थः वेदे स्य सर्वे रहमेव वेद्य इति
वक्ष्यमाणत्वात् सर्वज्ञो मुख्यत्वात् सर्वश्रुतिबोधो न त गुणो मु
मुक्षुर्ज्ञेयो मुक्तप्राप्यस्त्वमेव इत्यर्थः परं धाम प्रकाशरूपे वा तमे
व इदं सर्वजगत्तया जितशक्तिनाधारत्वेनोत्पादकत्वेन पालक
त्वेन च तत्तया मेव ह्युक्तजीवजज्ञानोपालकादिसत्त्वमेव इत्यर्थः
अनेन रूपे अनेन रूपेऽपि देशकालगुणैरियता हीनैक रूपेण
तदेकसंयुक्तमनेन रूपमिति श्रुतेः ३९

रुसमवेजयन्तीदीका ५

भगवतः सर्वपरत्वं प्रतिपादयत्वा तस्य देवात्मनः स्तोति त्वमादिदे
व इति आदिदेवो देवानां तत्ताधिष्ठातृणां मादिः कारणमादि
देवत्वं मसि जगतः सर्गहेतुत्वात् अत एव पुराणैः नादिः पुरुषः
पूरयित्वा जगत्पालकश्च तमेव श्रमविषयस्य परं सर्वोत्कृष्टं निधा
ने निधीयते सर्वयस्मिन्निति निधाने विषयस्य लयस्याने च तमेव न
नु कालकर्मप्रधानपरमाण्वी नो जगत्सृष्ट्यादिकारणत्वे सप
सिद्धं ममेव तत्कारणत्वं कथं वेदसीत्याशंक्यते षो जडत्वेन ज्ञानं
मां श्रयताभावाच्च कारणत्वे तं वैवतदाश्रयेन तत्संभवतीत्याह
वेतासीति वेता सर्वेषां चेतनानामचेतनानां च स्वरूपवेष्टितेता
नात्त्वमेवासि अतस्त्वमेव कारणमित्यनेन कालादिषु जडवर्गेषु
कहेतुत्वात् त्वभोक्तृत्वादिके ये ममेते तेऽर्जुने न हरतो पालाशम
वन्नितिसूचितम् वेद्येणास्ते मुमुक्षुभिर्वा वेदनविषयं यद्वस्तु तद
पित्वमेवासि यद्वा जगत्तियो वेता वेदिता यच्च वेद्ये वस्तु तद
भयं सर्वं त्वमेवासि ननु वेत्तवेद्ययोरेकं चेन्न हि वेदनरूपे वेदितरि
परमार्थसंबंधाभावेन सर्वस्य वेद्यस्य कल्पितत्वाद्देतसिद्धिरिति

श्री.
मीटी.
५

चेन्नगह तयाततेविद्यमितिहेननेतरूपदेशकालायपरिच्छिन्नरू
पतयाप्यपकेनपरमपुरुषेणव्याप्यरूपेविदविन्मिष्टविष्टं ततया
मेव्याप्यस्यापकादृष्टकसिद्धस्वरूपस्थितिप्रवृत्तिकवाद्याप्य
रूपेणभिन्नमपीश्वरव्याप्याःभिन्नमितिब्रह्मभिन्नाभिन्नजगदिति सिद्धे
नतहेने यथावहारदशायाप्यसमदृश्यतेनैवव्यापकस्या
पकतासिद्धिर्नामदृश्यतेनतथापरमार्थदशायाप्यविशेषसमस्यते
नैववेदितुर्वेदितुत्वसिद्धिर्नतकल्पिततेननचपरमार्थदशायावे
दवेयसमं धाभावइतिवाच्यतत्रापितयोःसंबंधः स्यान्नप्राप्तियस्य
वैतस्यसर्वविदित्वादेवयस्यसर्वपदस्यवेदरूपस्यसर्वविदिनिपद
स्यसंनिवेशात्तत्सम्बन्धोऽस्यव नचयस्यसर्वज्ञ इत्याद्याः सायाम
वलमीश्वरेप्रतिपादयंतिनत निविशेषं ब्रह्मनिवाच्येब्रह्मणोत्तमा
पतेः तत्रास्माभिलेष्टृष्ट्याः भवदभिमतेयद्वलतज्ञानीतवा ज्ञानी
चेन्नज्ञानधर्माश्रयत्वेनब्रह्मणो निविशेषसिद्धौ तभङ्गेहेतापति
स्यस्यादिसलेकुतर्कनिराशोः प्रकृतिमनुस्मरामः परंचधामपरंप्र
कृतिप्राकृतिद्वयादसन्नविलक्षणोवशात्कालादप्यपरिवर्तमान
मप्राकृतेपरमपदपरमयोमादिशब्दाभिधेयधाममुक्तप्राप्यस्या
नेयतदपितमेवासि १६

मधुसूदनीटीका १८

भक्तपुत्रेकात्मनरपिलो
ति॥

तमादिदेवः जगतः सर्वहेतुतात्पुरुषः परयितापुत्राणाः अना
दितमस्यविश्वस्यपरंनिधानंलयस्थानतात् विधीयतेसर्वमस्मि
मिति एवेष्टुष्टिप्रलयस्थानतेनोपादानतत्समुत्कासवेत्तत्वेनप्रधा
नेवावर्तयन्मिमततामाहवेत्तावेदितासर्वस्यासिद्धेतापतिनिवार
यति यच्चवेद्येतदपितमेवासिदेवदंनृपेवेदितरिपरिमार्थसंबंध
धाभावेनसर्वस्यवेद्यस्यकल्पिततात् अतएवपरंचधामसच्चि
दानंदचनमविद्यातत्कार्यनिर्मुक्तंविश्वोः परमपदंतदपितमे
वासितयासद्रूपेणस्फुरणरूपेणवकारणेनततेव्याप्तमिदं सतः
सतास्फूर्तिभूयैविश्वंकार्यमायिकसंबंधेनैवस्थितिकालेहे अनेत
रूपप्रविच्छिन्नस्वरूप १६

सदानंदीटीका १९

भक्तपुत्रेकात्मनस्लोतिभगवतमुदारधीः जगतः सर्वहेतुतादादि
देवसनातनः तमनादिरशेषस्यलयस्थानतयासच निधानं जग

गतः सर्वोपादानत्वेन कारणं वेदिता सर्वविष्य सवेदनार्हत्वमे
वच समस्तस्यापि वेद्यस्य ज्ञात रिज्ञानरूपिणि कल्पिततात्रसे
वेद्योवास्तवोदृष्ट्यसाक्षिणोः अविद्यादिविनिर्मुक्तं सच्चिदानंद
महद्ये ५ यत्परं यामविसर्वाद्येतत्त्वमेव परंपदे सत्तास्फूर्तिस
रूपेण त्रया व्याप्तमिदं जगत् स्वतः सत्तादिभूयंतद्विषयकार्येहि
माधिकं त्रयिमाधिकं संवेधान्स्थितिकालेस्मि सर्वग ३८

नीलकंठीटीका १२

पुनरपि स्तोति त्वमिति आदिदेवो जगतः सृष्ट्वात् पुरुषः सर्व
शरीरशायी पुराणः शरीरनाशादिनाप्यविनश्यन् विम्वस्यास्य
त्वं परं निधाने निधीयते स्मिन्निति लयस्थाने सात्त्विको जडो प्रकृ
तिवारयति वेत्ता ज्ञाता वेद्यो दृष्टो च त्वमेव परं वेत्तवेद्याभ्यामस
त्तथा मच्चैतन्यं त्रयाविष्यंतं तं व्याप्तं स्वसत्तास्फूर्तिभ्यां हेअनेतरू
पवि विधपरिच्छेदवृत्त्यस्वरूप ३८

ग्रान्तेटीटीका

३८ ॥

अथ यथा उभूत भगवद्भर्मा उदीरयति ॥

रामकंठीटीका

वद्भर्मा तात्पर्यात्ते भगवद्भिषयाः शब्दाः ३९

लासिकी तमसरीटीका

यः

किंच पुराणः पुरुष ईश्वराख्यस्तमादिदेवः प्रथमोपासनी तथामेरेताव
धार्यस्य जगतः परं निधानम् प्रकृताख्य आश्रयस्तमेव तथा त्वमे
व जीवरूपेण वेदकोसि तथा वेद्ये वस्तु ज्ञाते च त्वमेव परं यामचमो
लाख्यं त्वमेव अतएव विधाते नानेतरूपतये श्वरेण विश्वं सर्वं तं व्या
प्तम् ३९

पंचोलीटीका

पुनरपि स्तोति त्वमादीति हेअनेतरूपत्वमादिदेवः जगतः स्व
ष्ट्वात् पुरुषपुरिशयनात् पुरुषः पुराणाश्चिरंतनस्य जगतः
परंप्रकृष्टे निधीयते महाप्रलयादौ जगत्सर्वमस्मिन्निति निधानं
वेत्ता सित्वं ज्ञाता सित्वं वेद्यं ज्ञेयमपित्वमसि परमुत्कृष्टं वै सवंपा

देवमसित्वयेदं विषंततं व्याप्तं ३६

ररावीरसमिहोयिनी

पुनरपि स्तोति तमादीति निगदमाख्यातमेतच्छ्लोकश्च
म् ३८ ॥

मधुभाष्य

३८ ॥

भाषा अनुवाद
और संसार देवताओं के आदि भूत जो अनादिपुरुष तम सो
इस विश्वके परनिधान कहे लेशस्मान ओ विश्वके जाला ओ
जो कुछ जानने के योग्य वस्तु हैं सो तम हो और परम धाम
जो विसृष्ट सो भी तम हो इससे हे अनन्यरूप कसो तम इ
स विश्वमे व्याप्त हो इन सात देवताओं के द्वारा भी तमही नम
स्कार योग्य हो ३८

दोपई

आदिदेव तं पुरुष पुराण तं इस जगको परमनिधान वेत्ता
वेद्य परम धाम दि जोई अनंतरूप तव विस्तृत सभ सोई ३८॥

20568-0376

[Faint, illegible handwritten text]

知作

ਸਰੋ ਸਾਧਨੀ ਸਾਧਨੀ ਸਾਧਨੀ ਸਾਧਨੀ ਸਾਧਨੀ ਸਾਧਨੀ ਸਾਧਨੀ ਸਾਧਨੀ ਸਾਧਨੀ ਸਾਧਨੀ
ਸਾਧਨੀ ਸਾਧਨੀ ਸਾਧਨੀ ਸਾਧਨੀ ਸਾਧਨੀ ਸਾਧਨੀ ਸਾਧਨੀ ਸਾਧਨੀ ਸਾਧਨੀ ਸਾਧਨੀ

वायुर्मोमिर्वरुणः शशाङ्कः प्रजापतिः
 स्वेप्रपितामहस्य नमोनमस्तेस्तसहस्र
 कृतः पुनश्च भूयोपिनमोनमस्ते १५

शाङ्खभाष्यटीका १

किञ्च वायुरिति वायुस्त्वे यमस्यामिर्वरुणोऽप्यपतिः शशाङ्कः
 अत्रमाः प्रजापतिस्त्वे कश्यपादिः प्रपितामहस्य पितामहस्यापि
 पिता प्रपितामहो ब्रह्मणोपि पिता इत्यर्थः नमोनमस्ते तभ्यम
 स्त सहस्रकृतः पुनश्च भूयोपि नमोनमस्ते वरुणो नमस्कारकि
 याभ्यासाहतिगणानं कृतसवोच्यते पुनश्च भूयोपीति अष्टाभक्त्या
 निशायाद परितोषमात्मनोदर्शयति १५

शानेदगिरिकृतटीका २

तेषां सर्वात्मने हेतुनारमाह किञ्चेति कश्यपादिरिणादिशब्दे
 न विराटदत्तादयो गृह्णन्ते पितामहो ब्रह्मा तस्य पिता सूत्रा
 त्मानयोमी चेत्याह ब्रह्मणोपीति सर्वदेवतास्तमेव सक्तं क
 लितमाह नम इति सहस्रकृत इति कृतसवो विवर्तितमर्थमा
 ह वरुण इति पुनरुक्तितामर्थमाह पुनश्चेति अष्टाभक्त्या
 निशायात्कृतेषु नमस्कारे परितोषाभावो दुर्दशात्मनोलेप्रत्यय
 राहितं तदर्शनार्थं पुनरुक्तिरित्यर्थः १५

स्वामिकृतटीका ३

इतश्च तमेव सर्वतः नमस्कार्यः सर्वदेवात्मकत्वादिति स्तुवनस्य
 मपिनमस्करोति वायुर्मोमिर्वरुणः शशाङ्कः प्रजापतिः पितामहः तस्यापि जनकत्वा
 त्मकत्वापत्तत्वात्पुनर्नमः प्रजापतिः पितामहः तस्यापि जनकत्वा
 त्मपि पितामहत्वे अतस्ते तभ्यं सहस्रकृतः सहस्रशोपिनमोस्तभ्यो
 पि पुनरपि सहस्रकृतः नमोनम इति

पिशवभाष्यटीका ४

वायुरिति प्रजापतिर्देवः पितामहो ब्रह्मा तस्य पितामहः १५

रामाजुजभाष्यटीका ५

अतस्त्वमेव देवादिशब्दवाच्य इत्याह ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

श्री.
गी. टी.
प

वायुरिति सर्वेषां प्रपितामहस्त्वमेव सर्वासां प्रजानां पितरः प्रजा
पतयः प्रजायतीनां हि पिता हिरण्यगर्भः प्रजानां पितामहः हिर
ण्यगर्भाणां पिता त्वं प्रजानां प्रपितामहो दीनामात्मतया तत्तच्छ
हवाच्य इत्यर्थः ३५

सप्तार्थ ३५

अभिनवशुभकृतटीका ६

परमार्थप्रणीतीटीका ७

अथानंतरूपत्वमेव प्रकटयति वायुरिति वायादिसप्तभिः प्रका
रैस्त्वमेवासि तस्मै ते तभ्यं नमो नमोस्तु आदरे वीणा अथ किं पु
नः समरूपात्मने सहस्रकृतः सहस्रप्रकारात्मने भूयो धिनमो
नमः ३५

वत्सालीटीका ८

वैदिकसर्वशब्दवाच्यस्त्वमेवैसाह वायुरिति वायुपति सर्वाङ्ग
मयति प्रेरयतीति वायुः यमस्य तः स्थ इति यमः अंगयति चेष्ट
यतीत्यग्निः सुषुप्तभिः सद्यतेन स्वाश्रितान् हृणते वावरुणाः शा
कनाच्छाकः वद्यादिनियामकत्वाद्वा तत्पदवाच्यः इन्द्रचेद
रुद्रसूर्यादिशब्दः प्रवृत्तिनिमित्तानां धर्माणां यो कृत्यस्य भगवत्स
वसत्तेन समत्वया ध्यायोक्तरीत्या सर्वशब्दवाच्यस्यैवेति भावः
प्रजानां पतिर्जगत्पितुरपि च तर्ष्वस्यापि पिता त्वमेव पतः स
र्वदेवानां नियामकः पिता च त्वमतो मम तभ्यं नमो नमोस्तु स
हस्रकृतः पुनश्च भूयोऽपि पुनरपि नमस्ते भक्तिश्रद्धातिशयेन
नमस्कारेष्टुलप्रत्ययाभावो नमस्कारावस्थासूच्यते ३५

रुद्रमवैजयन्तीटीका ५

नवसर्वशब्दवाच्यत्वेन सर्वात्मत्वेन नवसर्वदेवरूपत्वात् सर्वे नमस्का
र्य इति त्वत्त्वयमपि नमस्करेति वायुर्यमोऽग्निरिति वायुरेकोनयं
वायान् यमः प्रजासंयमनकर्ता अग्निर्भोमदियाकरजभेदाविधिः
वरुणो जलाधिपतिः शाशाङ्गः पीयूषस्य हृणते तोषपीयोषकश्चन्द्रः
सूर्योऽन्दादीनामप्युपलक्षणमेतत्प्रजापतिः जातिवादेकवचनम्
मनुमरीत्यादयः प्रजापतय इत्यर्थः चकारासि त्वपितामहो गृह्यते त
त्रेयं वावस्थासस्वोऽप्रजानां प्रजानां मनुमरीत्यादयः पितरस्तेषां पि

तावन्नासतततत्तजानाम्पितामहस्तस्यापि पिताः तस्मादीनां तत्र
 तजानां प्रपितामहस्तमेवासि पुत्रपितृ पितामहादीनां सर्वेषामा
 त्तजया तत्र ह्यवाच्यस्तमेवैवमर्थः यस्मादेवं तस्माद्यथा सर्वे
 पिदेवैस्तत्र मस्यो सितशाममापिन मस्य सेइत्यादनमोनमइति
 सहस्रकृतस्तेतभ्ये नमोनमोनमोनमस्कारोस्तपुनश्चभूयोपि
 नरप्यसत्कृदपितेनमोनमः अनयानमस्काराहत्याश्रद्धाभत्या
 निशयेन नमस्कारेष्टलंप्रत्ययाभावस्तूच्यते ३५

मधुसूदनीटीका १०

वायुः यमोऽग्निः वरुणः शशांकः सूर्यादीनामप्युपलक्षणमेतत् प्र
 जापतिः विराट् हिरण्यगर्भश्च प्रपितामहश्च पितामहश्च हिरण्यग
 र्भस्यापि पिता त्रैयस्मादेवं सर्वदेवात्मकत्वात् तमेव सर्वे नमस्कार्यो
 सितस्मात्तमापि वराकस्य नमोनमस्तभ्यमस्तमहस्र कृतः पु
 नश्चभूयोपि पुनरपिनमोनमस्तभक्तिश्च इति शयेन नमस्कारे
 सुतेप्रत्ययाभावोऽनयानमस्काराहत्यास्तूच्यते ३५

सदानंदीटीका ११

वायुः सर्वजगत्प्राणो यमः प्राणिनियामकः अग्निः समस्तदेवानां मुखः
 प्राणपन्नपावकः १ प्राणाप्यायनकर्ता सो वरुणो रसपालकः शशां
 कजोषधीस्वामी तथा सूर्यादयो धियाः २ प्रजापतिर्विराट्संस्मृतस्तु
 त्किर्त्तनचविश्वस्तु पितामहस्य सप्तपिता त्रैजगदीश्वरः ३ सर्व
 देवाकृतेन नमस्कार्योऽसि सर्वकैः यतस्तस्मादराकस्य ममाप्यस्तु
 नमोनमः ४ तभ्यं सर्वात्मनेभूयोभूयोऽस्तु सहस्रशः सहस्रकृता
 भूयोपितृभ्यमस्तु नमोनमः ५ भक्त्याधिक्या नमस्कारेष्टलंबुडैः
 भावतः अज्ञानयानमस्काराहत्यास्तूच्यते इत्यपि ६ ३५

नीलकंठीटीका १२

देवनेतृर्वायुः सर्वजगत्प्राणो यमः प्राणिनियामकः अग्निः समस्तदेवानां मुखः
 प्राणपन्नपावकः १ प्राणाप्यायनकर्ता सो वरुणो रसपालकः शशां
 कजोषधीस्वामी तथा सूर्यादयो धियाः २ प्रजापतिर्विराट्संस्मृतस्तु
 त्किर्त्तनचविश्वस्तु पितामहस्य सप्तपिता त्रैजगदीश्वरः ३ सर्व
 देवाकृतेन नमस्कार्योऽसि सर्वकैः यतस्तस्मादराकस्य ममाप्यस्तु
 नमोनमः ४ तभ्यं सर्वात्मनेभूयोभूयोऽस्तु सहस्रशः सहस्रकृता
 भूयोपितृभ्यमस्तु नमोनमः ५ भक्त्याधिक्या नमस्कारेष्टलंबुडैः
 भावतः अज्ञानयानमस्काराहत्यास्तूच्यते इत्यपि ६ ३५

आनेदीटीका ॥ एवं परं व्याप्तिमुक्ता परामाह ॥

श्री.
गी. टी.
प

हे सर्वमहाविभूते सर्वेभ्यः पेश्वर्य गुणगुक्तेभ्यः महती प्रकृष्टा विभूतिः
शक्तिविस्फारसर्वादयमोक्ता महर्त्ये विभूतयो यस्येति च तस्या मंत्राणां
भगवन्त सर्वदिदेशो कालाकारैकान्येन परामृशन् प्रणामति ३६

किंच सर्वेभ्यः पेश्वर्य गुणगुक्तेभ्यो महती प्रकृष्टा विभूतिः शक्तिविजृम्भाय
स्य तथा विधो भगवन्सादृशः सर्वेश्वरतत्पवा प्रतिमप्रभावो न त्वसामा
न्यमाह त्वस्तथानादिमानादिर्विद्येत यस्य स आदिमात्रादिमाननादि
मात्तर्वप्रथमः इत्यर्थः एवं विधस्तमेव वाच्यादयो देवर्तविषेष्टाः स
या च वाच्यादीनामीश्वरतत्तादभिन्नत्वे तथा सर्वमादौ व्याप्य तमेव पर
मेस्वरस्य सर्वाकारत्वं परामृशन् सर्वस्यैष्टार्थमेतत् किंच न हित
दन्यः कविदपीह देवलोकत्रये दृश्यते वित्यकर्मा ३६

किंच प्रतीत्यादिदित्सतो देवानां ये चेदाः परः सरो प्रिते जाइत्यादिश्रुति त्वं
ओक्तनायकत्वेन प्रसिद्धावाद्यादयश्च त्वमेव प्रजापतिर्ब्रह्मा च त्वमेव त
स्यापि जनकतात्पिता महश्च त्वमेव नमोनम इति पौनः पुन्यं भजति
शया विस्कारार्थं ३६ ॥

पंचोलीटीका
सर्वदेवात्मकत्वात् सर्वैस्त्वमेव नमस्कार्य इति बुवनस्वयमापि न
मस्कुर्वन्नाह वायुरिति हे भगवन् वायुर्धमो निर्विरुणाः शशोकः
वैदः प्रजापतिः च पुनः प्रपिता महत्त्वे ते तभ्यो नमः प्रस्तु पुनश्च भूयो
पिते तभ्यो नमः पुनर्नमस्कारकरणं आत्मभक्तिप्रदानि शयं दर्शय
ति ३६

स्वष्टः ३६
रत्नवीरसमिद्धोधिनी

३६ ॥

मधुभाष्य

भाष्य अनुवाद

जिस हेतु तम सर्व देवरूप हो इससे तम सबके नमस्कार
योग्य हो ऐसे वचनोंसे अर्जुन भगवान् की स्तुति करिके अ-
ब श्राप प्रणाम करते हैं कि वायु यम अग्नि वरुण चन्द्र प्रजा
पति ब्रह्मा औ प्रपितामह ब्रह्माके भी जनक जो तम सोमे
रे सदस सदस प्रणाम तुमको दें फेरि फेरि भी सदस सद-
स प्रणामें दें ३५

वोपई

वायु अनल यम वरुण शशी जोई प्रजापति तं प्रपितामह
होई नमस्कार तोहि सदस दिवारा पुन नमस्कार तोहि
करो अथारा ३५॥

57532-0278

[Faint, illegible handwritten text]

1948

नमः पुरस्तादद्य एष्टतस्ते नमोस्तु ते सर्वतप
व सर्व अनन्तवीर्यामितविक्रमस्तु सर्व
समाप्नोषि ततोमि सर्वः ५.

शास्त्रभाष्यटीका १

तथा नमः पुरस्तादिति नमः पुरस्तात् पूर्वस्यां दिशि तभ्यमथ
एष्टतोपि च नमोस्तु ते सर्वत एव सर्वोस दित सर्वत्र स्थिताय
हे सर्व अनन्तवीर्यामितविक्रमः अनन्तवीर्यमस्य अमितो विक्रमो
यस्य वीर्यं सामर्थ्यं विक्रमः पराक्रमः वीर्यवानपि कश्चित् शस्त्रा
दिविषयेन पराक्रमते मत्पराक्रमोवा तेन अनन्तवीर्यामित
विक्रमश्चेत्यनन्तवीर्यामितविक्रमः सर्वं समस्तं जगत् प्राप्नो
षि सम्पत्केनात्मना आप्नोषि अतस्तस्मादसि भवसि सर्वस्वया
विनाभूते न किञ्चिदस्तीत्यर्थः ५.

आनन्दगिरिकृतटीका १

विशान्तरेण भगवन्ते स्तुत्या नमस्तु सर्वत्र भिक्षुवीकरोति तथेति
यस्यां दिशि सवितोदेति सापूर्वादिगुच्यते तस्यां व्यवस्थिते स
र्वे तमेव तस्मै ते तभ्ये नमोस्त्वित्याह नम इति अथ शब्दः सप्र
चये पश्चादपि स्थिते सर्वे तमेव तस्मै ते तभ्ये नमोस्त्वित्याह अ
थेति किं ब्रूना यावन्तोदिशास्तत्र सर्वत्र यदुत्तेते तदशेषं त
मेव तस्मै तभ्ये प्रह्लाभावः स्मृदित्याह नमोस्त्विति फलिते सर्वो
त्तमे सूचयति हे सर्वेति वीर्यविक्रमयोर्न योनिरुक्त्यमित्याह
वीर्यमित्यादिना वीर्यवतो विक्रमाद्यभिचारादर्शयोनिरुक्त्यमाशे
त्पाद वीर्यवानिति भगवति लोकतो विशेषमाह तेति उक्तं
सर्वात्मते प्रपञ्चयति सर्वमिति सप्रपञ्चत्वं वारयति तथेति ५.

भक्ति प्रज्ञाभरातिरेकेन तमस्तोत्रेण स्वामिकृतटीका १ मिमन्निगच्छन् ब्रह्मणः प्रणमति ॥

किंच नम इति हे सर्व सर्वात्मन सर्वास्वपि दित तभ्ये नमोस्तु सर्वात्म
क तमुपपादयन्नाह अनेने वीर्यसामर्थ्यस्य तथा मितो विक्रमः परा
क्रमो यस्य सपदेभूतस्तु सर्वविश्वे सम्यक् अतर्वदिस्य आप्नोषि
वर्णमिव कटकजं उलादिकार्यं व्याप्यते तेततः सर्वस्य रूपोसि ५.

पिशवभाष्यटीका ५

श्री.
गी टी.

नमरति पुरस्तादग्रतः पृष्ठतः पश्चात्सर्वतः पुरस्तात्पार्श्वतः पश्चाच्चदे
सर्वे अनंतवीर्ययस्य सो नंतवीर्यस्तस्य सेवोयेने अभितः अपरिच्छि
न्नो विक्रमः पराक्रमो यस्य सो मितविक्रमः सर्वव्याप्तो सिततस्सर्वो
भवति ५.

समानुजभाषाटीका ५

नमरति अस्य दुताकारं भगवते दृष्ट्वा हर्षोत्कल्लनयनोः संतसाध
सावनतः सर्वतो नमस्करो मिश्रनेन वीर्यामिति विक्रमस्त्वसर्वमात्म
तया समामोषि ततः सर्वोसियतस्त्वसर्वविदविद्वत्तज्ज्ञातमात्मत
या समामोषि अतः सर्वस्य विदविद्वत्तज्ज्ञातस्य तं शरीरतया तत्त्वका
रत्वात् सर्वप्रकारस्त्वमेव सर्वशब्दवाद्यासीत्यर्थः त्वमस्य सदसद्वा
युः पमोषिरित्यादि सर्वस्य सामानाधिकरण्यनिर्देशात्मात्मतया वा
मिरेव हेतुरिति सव्यक्तमुक्तं तया तत्ते विषमनेन रूपसर्वसमामो
षिततोसि सर्व इति ५.

स्यष्टार्थ ५.

अभिनवप्रसक्तटीका ६

परमार्थप्रपाटीटीका ७

अथापरिच्छिन्नापापितभ्येनमस्काररतिरथंतरसामाभिप्रायेणान
मस्करोति नमरति भो सर्वसर्वात्मकपरस्तादग्रतः पृष्ठतश्च तत
भ्येनमः किंपुनर्हि दिक्से स्थिताय सर्वतः सर्वैरित्यस्थिताय नमो
स्त्यथत केवलदृष्टमात्रेण स्थितो सीत्याह भो स्वाभिन्नतवीर्यः
सनमितविक्रमवलौजः सहः समेताः शुतिस्व विसोपर्वकवीर्या
णि प्रवोचैपः पार्थिवानि विममेरजोसीति भाष्यनुक्रमिति निपातेः
वधारणाद्यतस्य विसोर्वीणि प्रवोचैव वलीमिसः पृथिव्यं तस्मिन् सर्व
धीनिरजोमितो काल्मिषमिति मितवान् एवं त्वं सर्वसमामोषि अत
र्व हि व्याप्तोषि ततस्त्वेन कारणेन सर्वोसि सर्वात्मको सितहेतुरस्य स
वस्य तदसर्वस्यास्य वासत इति श्रुतेः तथारथंतरसामापि अभिज्ञा
भूरनोनुमोडग्या इव येन वः ईशानमस्य जगतः स्वदेशमीशान
मिदं तस्य स्योवाहा उवाच अस्य भाष्यं भो ईश परमात्मन शूर
शत्रुनिवर्हणावपेतां अभिश्रितः समंततो नमः नमः कुर्मः कथं
भूतमत्वा अस्य जगतो जंगमस्य तस्य सः स्यावरस्यापि ईशानेति
यामने के इव वयं ब्रह्मणाः अकृतदोहनायेन वदवतीरेण पूर्णाः
सत्यः वत्सानि विस्मृत्य तत्रावपतीर्णः सत्यः त्वोपातितथावयमपि स

५ इति संहितापारः साम
गातं च अभिज्ञाभूरनो
नुमो राजा उवाच येन
वः ईशानमस्य जगतः
सुवाट्टिणम् आ ईशान
नेमापि दाता स्युषा

वैविध्यजाते विस्मयतामेव सर्वगतं नमस्कर्मः स्वर्दण्डजगत्प्रका
 शकं ईशानमिति पटुस्याहतिरादराणां तथायसंभाष्यपि अग्नितादे
 वेन एतन्नाजयामि गायत्रेण छंदसा विहतास्ते मे नरणां ते रणसास्त्राव
 षड्गुणेण वज्रेण पूर्वजान् भ्रातृव्या नय गान् पाजयामिति भाष्ये अग्निना
 विष्णुरूपेण देवेन दीप्यमानेन कृत्वा एतन्नाशत्रुसेनाः जयामि गाय
 त्रेण च त्रिविशात्तरेण विहतास्ते मे न ब्राह्मणे तिसृभ्यो हिं करोति स
 प्रथमे पेत्यादि अथ मर्थः सूक्तत्रयगतानां गच्छां गानं त्रिभिः पर्यायेः
 कृतं तत्र प्रथमे पर्याये विष्णुसूक्ते सुपास्तिस्त्रयः द्वितीये मध्यमाति
 सृभ्य इति तृतीयां पर्याये च मीहिं करोति गायति शेषं स्पष्टं ५:

वनमालाटीका. ५

तभ्यं पुरो यतो नमस्तात अथ शत्रुः समुच्चये एष्टतस्तभ्यं नमस्तात न
 मोस्तते तभ्यं सर्वतपवसर्वा सदित् स्थिताय हे सर्व सर्वव्यापिन वीर्य
 शरीरवलं विक्रमः शिताशस्त्रप्रयोगकौशले समस्तमेकं पदमनेत
 वीर्येति संवाधनेन वा यतः सर्वजगदुत्पादकत्वाधारतनियामकत्वस
 ताप्रदत्तादिना समामोषि अतः सर्वसर्वशब्दाव्यस्तं एतेन सर्वत्वत्ति
 देवस्तेत्याद्याः श्रुतयो व्याख्याताः ५.

ऊसुमं वैजयन्तीटीका. ५

पुनश्च भगवतः सर्वव्याप्तिन सर्ववाच्या तस्वदत्तत्वं विप्रयेन नम
 स्कारेष्टुलं भावमवित्त्वत्तत्त्वः प्रणमति नमः सुरस्तादिति हे सर्व
 सर्वात्मतया सर्वशब्दवाच्ये तभ्यं पुरस्तात्समाग्रभागे स्थिताय नमो
 स्तु तभ्यं पुरो नमः स्तादिति वा अथ शत्रुसमुच्चये एष्टतो मम एष्ट
 देशे स्थिताय ते तभ्यं नमोस्तु नमस्तात सर्वतपवसर्वा सदित् स्थि
 ताय तभ्यं नमस्तात अनेन वीर्यामित विक्रमः वीर्यं देहवलं विक्रमो
 धीवलं शस्त्रास्त्रप्रयोगादि प्रावीण्यरूपं अनेन वीर्यं यस्य अमितो वि
 क्रमो यस्य स चासौ स च अनेन वीर्येति समवायनमत्वा एकं वीर्याधि
 कमने उतैकं शितयाधिकमिति भीमउर्ध्वयनाबुद्धिस्तोकोल्योर
 मेष्टुं वैकैकं व्यवस्थिते तत्र अनेन वीर्यं व्यामित विक्रमश्च भवति सर्व
 रूपत्वे हेतुमाह सर्वमिति सर्वं विदधिमि अजगत्समाग्राधिसम्पक
 व्यामोषिततस्तस्माद्धेतास्त्वसर्वा सिद्धोः यतवागतो देवसमीपे देव
 तागणः सत्तमेव जगत्प्रायतस्सर्वगतो भवानिति पराशरोक्तेः ५.

श्री.
गी टी.
प

तुभं पुरस्तादग्रभागे नमोस्तु त्वं पुरो नमस्तादि ॥ तिवा अथ शब्दः मसु
द्वयेष्टुतोपितुभेनम स्ताननमोस्तुतेतुभं सर्वत एव सर्वा सदित्तस्थि
ताय हे सर्ववीर्यशरीरबलेविक्रमः शिताशास्त्रप्रयोगकौशलपकेवीर्य
धिकं मे मत्र वै कौशल्याधिकमिदमेतैः भीमदुर्योधनयो रमेषु च पके
केव्यवस्थिते त्वेन त्वं न तवीर्यं चामित विक्रमस्य ~~विद्वन्मोक्षोपनिषदि~~
~~मोक्षोपनिषदि~~ समस्तपदं अनेतवीर्येति संवोधनेन वा सर्वसमस्तजगतसमा
मोक्षिसम्पदकेन सदृशेणामोक्षिसर्वात्मना व्यामोक्षिततस्तस्मात्
सर्वेऽपि तदतिरिक्तं किमपि नास्तीत्यर्थः

मेकं

सदानंदी टीका ॥

अग्रभागेनमस्तुभंष्टुतोपिनमोस्तुते दित्तस्थिताय सर्वास सर्वरूप
नमोस्तुते १ अपरिच्छिन्नवीर्यस्त्वेषामितपराक्रमः जगत्सर्वतमेकं
न सदृशेणाखिलात्मना सम्यग्यामोषतः सर्वस्त्वतो नष्टश्च ज्ञानाक ५

नीलकंठी टीका ॥

हे अनेतवीर्ययतः सर्वसमामोक्षिणकीभावेना समंताद्यामोक्षिततो
हेतोः सर्वइति त्वनाम पुरस्तात्कर्मणामादौ एष्टतस्त्वेषां समाप्तौ
सर्वतोमध्यपितेनमोस्तु ५

अनंदी टीका

अत्र नमस्कारार्थोपेतः पुन्येनावृत्तिः प्रत्यभिज्ञातपरमेस्वररूपस्यार्जनस्य
भक्तिप्रवृत्तिशायं चोत्तयति न हित्वदन्यः कश्चिदस्तीह देवलोकत्रयेष्ट
श्रुतेर्विद्वत्कर्मा वीर्यमानसिकमुत्साहशक्तिः पराक्रमः शारीरिकः
क्रियाशक्तिः

वा ५

रामकंठी टीका

अत्रापि न किंचिद्व्यातमस्ति सर्वस्वशक्त्या समाप्तमोक्षियतस्ततस्त
वात्मकस्त्वमेव वीर्यमत्साहशक्तिः पराक्रमः क्रियाशक्तिः

अ

५

लासिकी वसुतीटीका

किंच हेन सर्वसर्वरूप सर्वतपवसर्वासुदित हेन तं तवीर्यपरिच्छिन्नसामर्थ्य
यतः अपरिमितेति शिष्टः क्रमो व्याप्तिर्यस्य सपर्वविधः संस्तु सर्वसम
गंतर्वहिस्य व्याप्तिः सवर्गमिव कटकादिततो हेतोः सर्वसर्वोपि

ध. ॥

पंचोलीटीका

किंच नम इति हे भगवन् ते तभ्यं पुरस्तात् सर्वस्यादिशिनमः अथ
पृष्ठतः ते तभ्यं नमोस्तु हे सर्वसर्वतपवसर्वासुदित ते तभ्यं नमः हे
अतवीर्य अनेतं वीर्यं सामर्थ्यं यस्य सोनेतवीर्यं स्तु अमितविक्रमः
पराक्रमो यस्य सत्त्वं सर्वसमस्तं जगत्समाप्तिः सप्तकपकेना
त्मना व्याप्तिः तत्सत्त्वं सर्वोचित्व हि नाभूतं न किंचिदस्ती
त्यर्थः ध.

राणावीरसमिद्धोधिनी

स्पष्टः ४. ॥

मधुभाष्य

४. ॥

134

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥
 श्रीमद्भगवद्गीता ॥ अध्यायः प्रथमः ॥
 अर्जुनसंवादे ॥ १ ॥

कविचिन्ता

[Faint, illegible handwritten text]

41305

1870

100

भाषा अनुवाद

भक्ति ओ बहुत तणा आदर की अधिकार से भगवत को नमस्कार करने से हमें न पाके पुनर्बार और भी प्रणाम करते हैं कि हे सर्वात्मन् तमारे सम्मुख ओ एष्टभागमें प्रणाम करता हूँ और तमारे सब ओर भी मेरी नमस्कार पड़ें चै और भगवान की सर्वात्मकता सिद्ध करने की आकांक्षा पर कहते हैं कि जिस की अनन्त सामर्थ्य ओ अपरिमित पराक्रम एवंभूत जो तम विश्वके भीतर बाहर सम्यक् व्याप्त हो जैसे सवर्ण नानारूप से भूषणों में व्याप्त है ओ मृत्तिका चट आदि पात्रों में जैसे व्याप्त है जैसे विश्वमें आप व्याप्त रहे हो ५.

चोपई

आगे पीछे तोहि वंदन करहुं नमस्कार तोहि जहां तहां सर्वहुं
अनंत वीर्य प्रतिविक्रम तोहि सभ प्रापदि तं ताते सर्वदि होई
४.

[illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

सवेति सत्ता प्रसभं यत्कं हेतुसहेयादव
हेसवेति अज्ञानतामहिमानेन वेदं मया
प्रमादात् प्रणयेन वापि ४१

शाङ्करभाष्यटीका १

यतो हे तत्माहात्म्यापरित्यागादपराधाहेतोः सवेति सत्ता स
मानवया इति सत्ता ज्ञाता विपरीतबुद्ध्या प्रसभमभिभूय प्रस
भं यत्कं हेतुसहेयादव हेसवेति च अज्ञानता अज्ञानिना
मूढेन किमज्ञानतेत्याह महिमाने माहात्म्ये तदेव मीश्वरस वि
स्वरूपं तवेदं महिमानमज्ञानतेति वैयर्थिकरणेन सम्बन्धस्त
वेममिति पाठो यद्यस्ति तदा सामानाधिकरण्यमेव मया प्रमादा
त् वित्तिप्रविजतया प्रणयेन वापि प्रणयो नाम स्ते हस्तनिमि
तो वित्तिप्रभलेनापि कारणेन यत्कृतवानस्मि ४१

आनन्दगिरिकृतटीका २

अज्ञाननिमित्तमपराधे तस्य यति यत इति इदं शब्दार्थमाह वि
स्वरूपमिति नहीदमित्यस्य महिमानमित्यस्य च सामानाधिकर
ण्ये लिङ्गव्यसयादित्याह तवेति पाठान्तरसम्भावनायां सामाना
धिकरण्यपपत्तिमाह तवेत्यादिना यत्कृतवानस्मि तदहं तामये
तामिति सम्बन्धः ४१

स्वामिभक्तटीका ३

इदानीं भगवते तत्मापयति सवेति दाभ्यो तं प्राकृतः सवेति मेवं
सत्ता प्रसभं हेतुनतिरस्कारेण यत्कं तत्तामये तामिति तत्रेणान्न
यः किं तत् हेतुसहेयादव हेसवेति च सैथिगर्भः प्रसभोक्तो हेतुः त
वमहिमानमिदं च विस्वरूपमज्ञानतामया प्रमादात् प्रणयेन हेतु
नापि वा यत्कृतमिति ४१

पिप्पलाचभाष्यटीका ४

सवेति प्रसभं तथा हेसवेत्यत्र परलोपोदष्ट्याः तवेदं तव इदमित्य
र्थः ४१

रामानुजभाष्यटीका ५

सवेति यदिति अनंतवीर्यामितविक्रमरूपसर्वोत्तरात्मतत्सष्ट
तादिको यो महिमा तवेदं महत्त्वमज्ञानतामया प्रमादात् मोहात् प्र

श्री. १ एतेन सखेति समवयस्क इति मत्वा हेतु स्यादवदे सखेति मया प्रसभे
नी ही यदुक्तं विनयापेते ५१

संशुद्धे ५१

अभिनवप्रसक्तटीका ६

परमार्थप्रपाटीटीका ३

इदानीं स्वपरायंतमापयन्नाह खेति द्वाभ्यां तेषां कृतः सखा इति म
त्वा मया प्रसभेति रक्कारेण यदुक्तं तथा कथं हेतु सदेयादवदे सखे
इत्येकवचनेन सखेति लोपश्चिज्ञाते सधिः कदादसः किम् तेन मया
इदमनभूपमानं तव महिमानमजानता अथानिरक्कारप्रकारांतरमा
ह प्रमादात्प्रथेण अनवधानेन वा प्रणयेन प्रीत्या वा ५१

वनमातीटीका ६

यतो हेतुत्वादात्प्रापरिज्ञातादपराधानजसमकार्षमनः परमका
रुणिके तेषां प्रणयापराधतमो कार्यामीत्याह सखेति द्वाभ्यां तं म
म सखा समानवया इति मत्वा प्रसभे स्यात्कृष्यापनरूपेणाभिभवे
न मया यदुक्तं तेवेदं विस्मर्ये तस्या महिमानमेव श्रुतिशयमजान
ता प्रमादाच्चित्तवित्तेपात् प्रणयेन स्नेहेन वापि किमुक्तमित्याह
हेतु सदेयादवदे सखेति ५१

रुसमवेजयन्तीटीका ५

पवंससारथेर्भगवतो निरेकुशे श्रुत्यातिशयमवलोक्य स्त ताचनम
स्कारे कृतवानि सत्काधनात्वापरायंस्यापयन्नुनो भगवन्तमाह
द्वाभ्याम् सखेतीति यथेह लोके प्राकृतजनानां प्राकृतसखा भवति
तथा त्वमपि मम सखा भवसिन त्वनवीर्यामित विक्रम इति मत्वा
विज्ञापप्रसभं दृष्टा तवोक्त कृष्यापनरूपेणाभिभवेनेत्यर्थः प्रमादा
त् मोहाच्चित्तवित्तेपादित्यर्थः प्रणयेन स्नेहेन वा अपि शब्दात्कस्मेति
त्ययोजनाय हेतु सदेयादवदे सखेति सन्निर्गर्भः मया यदुक्तं निर
क्कारपूर्वकं यद्वाधितं तत्तामयेतामित्युत्तरेणान्वयः कीदृशेन मया तवे
दे स ह स प्रीति दलिततामतिभयानकमप्युत्तरूपं तथेयं महिमानमे
व श्रुत्यातिशयमजानतापुं लिङ्गपाठेति मविस्मरूपत्वात्कं महिमानम
जानता हेतु सत्प्रतीत्यैव कत्वाभावात् देयादवत्प्रवृत्तवेषणत्वा
भावावेदनात् हेतु सत्प्रसमवयस्क तत्मात्रसूचनात्तवौधनत्र
येण भगवतोऽनादरणो यतस्वरूपं सापरायं समापयतीत्यभिप्रायः ५१

+ यतो ह्येतन्माहात्म्या परिज्ञातादपराधमनस्रमकार्षततः परमकारुणिकं तं प्राणम्यापराधमोकारयामीत्याह द्वाभ्यां ॥

मधुसूदनीटीका १-

मधुसूदनी टीका १०
+ त्वेममसत्वासमानवयाइति मत्वा प्रसभं स्वातर्क्या व्यापनरूपेणाभि
मानेन यउक्तं मया तवेदं विषयरूपतया महिमानं मे सूर्यातिपायमना
नता पुंलिंगपाठे ~~विषयरूपतया~~ इमे विषयरूपात्मकं महिमानमज्ञानताप्र
सादाचित्तविज्ञेपात्प्रणयेन स्वेदेन वापि किमुक्तमिमाद हेतुस
देयादवदे सखेति ५॥ मराने टीका ११

सदानेदी टीका. ११

तत्समावापरित्तानाद्यनोहेनित्यशोदरे अपराधमकार्षयत्ततस्त्रोक
रुणाकरं १ कार्याभिप्राय्यादमपराधतमामिति मयातत्पव
याहीतिमतास्वात्कर्षताभ्रमात् १ हेतुसमादवसवेवेतिमूढन
साम्पतः अभिभूययउक्तंतेमहिमानुज्ञानता प्रमादाद्वितवितेण
वोक्तंस्त्रेदेनवामया ५१ नीलकंठीटीका १२

नीलकंठीटीका. १२

वाक्स्नेहेन वा मया वा नीलकण्ठीटीकाः ११
 एवं स्तुत्या स्वापराधान्तमापयते सखेतीति अयं मम सखा इति म
 ता प्रसभं स्त्वा कर्षा विष्करणपूर्वकं यत्तमया उक्तं हेतुस्तु हेतुद्वय
 हेतुसखेति इति शब्देन संधिरार्थः कुत उक्तं त्वद्वयं यत्तमया
 हिमानं माहात्म्यं अज्ञानता कदाचित्त्वमादाच्चित्तविलेपात् कदाचित्
 एवेन स्नेहेन च ५१
 मातृदीटीका शुकसखित्वादिप्रतिपत्त्या विहित

आनंदीरीका

[illegible]

रामकंदीलीका

नस्त्रहृषवकेगावणाकारिगावापत्रयस्य...
 रूपगावलाकारेगादेकस्येत्यादियउक्तं तत्तामयेतामित्यप्रमेणान्वयः
 अथविज्ञातभगवत्परसभावत्वात्सर्वप्रहृषप्रतिशमकंदीरीका पत्न्याभगवतिविहितमतिक्रममन्
 स्तोत्रवचनस्य स्वोपमेतत् किंतुसत्वात्ममेतिसत्वायद्यादवादिशब्देनामंवितासिया
 माह ॥ पत्न्यायतिक्रमःकृतस्तत्सर्वमज्ञानतोभगवत्त्वात्स्यंतयतीमज्ञानवतोमे
 दांतव्यमितिसंबंधः कित्तमदमिति सत्तायावास्तवतत्सत्तियो लोकावयवै
 लासिकी वसुधैकुटीका

लासिकी वसुधै कर्ममा

+ सावायंममेतिमत्ताप्रसभंरुदेनानादरेणाप्रमादाद्वितविलेपादा स्नेहेन
 वातवेश्वरस्यमहिमानंवैश्वात्म्यलक्षणाभिदमनुभूतचरमज्ञानतामयाय
 त हेरुस्यइत्याफक्तंतांतामयेइत्युत्तरेणान्वयः सावेतिसंधिरिदमितिच ॥
 लिगव्यत्ययपेश्वरः इममितिपुंलिंगंकेचित्पठेति ॥

लिंगव्यत्ययपेशः स्मितिगुणविशेषः
+ एवं भगवति समनुष्णबुद्ध्या विहितमतिक्रममधुना तन्माहात्म्यसंवेदनादपराङ्मन्यमानः तत्तो
त्यर्थं श्लोकवत्तदयमाह ॥

गी.
टी.
प.

पंचोलीटीका

इदानीं भगवन्महात्माः परिज्ञानात्कृतमपराधं क्षमापयन्नाह स
वेति हे कृष्ण मया तेन वदं देवि स्रष्टुं महिमानं महात्म्यमजानता
प्रमादात् असावधानचित्ततया प्रणयेन स्नेहकृतविद्यासाक्षात्साक्षा
समानवयेति मत्वा यत् हे कृष्ण हे यादव हे सावेति प्रसभं हठाद्
कं ४१

राजीवसमिद्धोधिनी

इदानीं भगवंतं स्वात्मानं प्रति क्षमापयति सवेति मया तवेदं वि
षदूपलक्षणां महात्म्यं परमार्थतो जानता प्रमादाच्चित्तव्याप्ते
पादयवाप्रणयेण साक्षात्प्रसभं मेति प्रकृतवन्मत्वा प्रसभं साहसि
कतया कृष्णयादवादिसंबन्धेन पदैराह्वानं भवंतं प्रत्ययुक्तमपि
यत्कृतमथ व विद्वद्दिक्कर्मसु परीक्षासार्थं केलिषु प्राकृतबुद्ध
तमसक्तोऽसि परिभूतोऽसि असत्करणमपि भवंतं प्रत्ययुक्तं य
त्कृतं प्रच्युतेति कीदृशपक्षमेकः यो संकाकी स परिभूतोऽय
न्येन व्यलीकं न जानाति इति वदेका कथयन्वा तत्समक्षं तासां
साखीनां समक्षं परिभूतोऽसि यो स न्यसमक्षं परिभूतः स व्यली
की परिभवतीति वत्तत्समक्षमपि तदसत्करणां त्वामप्रमेयं
प्रमातुमशक्यमहं क्षामये क्षमां कर्तुं मदपराधं प्रति प्रसाद
यिष्ये इति भावः ४१॥

मधुभाष्य

४१॥

भाषा अनुवाद

अब दो श्लोक के द्वारा भगवान से अर्जन अपनी अपराध तमा
करावते हैं कि हे कृष्ण हे यावद हे सखे ऐसे वचनों से आपको
आपना सखा मानि जो हठ से मेने तमारी यह महिमा न जानि
के अथवा भूल से या प्रणय कहे अति प्रीति से कहा सी मेरे अ
नजान की अपराध चुक आप तमाकरो धर

की असावधान

चौपई

सखा जान हठ से जो कहियो हे कृष्ण यादव सखा निरवदयो
जानेबिन तव महिमा पढ़ूं में मद से वा प्रेमदि से हूं ४१

ਸਤਿਨਾਮੁ ਸਤਿਨਾਮੁ

ਨਾਨਕ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਸਾਹਿਬੁ ਤੇ ਸਾਹਿਬੁ ਨਾਨਕ ਸਾਹਿਬੁ ਤੇ
ਨਾਨਕ ਸਾਹਿਬੁ ਤੇ ਸਾਹਿਬੁ ਤੇ ਸਾਹਿਬੁ ਤੇ ਸਾਹਿਬੁ ਤੇ
ਨਾਨਕ ਸਾਹਿਬੁ ਤੇ ਸਾਹਿਬੁ ਤੇ ਸਾਹਿਬੁ ਤੇ ਸਾਹਿਬੁ ਤੇ
ਨਾਨਕ ਸਾਹਿਬੁ ਤੇ ਸਾਹਿਬੁ ਤੇ ਸਾਹਿਬੁ ਤੇ ਸਾਹਿਬੁ ਤੇ
ਨਾਨਕ ਸਾਹਿਬੁ ਤੇ ਸਾਹਿਬੁ ਤੇ ਸਾਹਿਬੁ ਤੇ ਸਾਹਿਬੁ ਤੇ
ਨਾਨਕ ਸਾਹਿਬੁ ਤੇ ਸਾਹਿਬੁ ਤੇ ਸਾਹਿਬੁ ਤੇ ਸਾਹਿਬੁ ਤੇ

ਸਤਿਨਾਮੁ

ਨਾਨਕ ਸਾਹਿਬੁ ਤੇ ਸਾਹਿਬੁ ਤੇ ਸਾਹਿਬੁ ਤੇ
ਨਾਨਕ ਸਾਹਿਬੁ ਤੇ ਸਾਹਿਬੁ ਤੇ ਸਾਹਿਬੁ ਤੇ
ਨਾਨਕ ਸਾਹਿਬੁ ਤੇ ਸਾਹਿਬੁ ਤੇ ਸਾਹਿਬੁ ਤੇ
ਨਾਨਕ ਸਾਹਿਬੁ ਤੇ ਸਾਹਿਬੁ ਤੇ ਸਾਹਿਬੁ ਤੇ

यच्चावहासार्थमसक्ततोसिविहारशाय्यास
नभोजनेषु एकोऽथवाप्यच्युततत्समत्वेन
तामयेतामदमप्रमेयं ४२

शाङ्ख्यभाष्यटीका १

यच्चेति यच्च अवहासार्थं परिहासप्रयोजनाय असक्ततः परिभू-
तोसि भवसि क्वच विहारशाय्यासनभोजनेषु विहरणं विहारः पा-
दशायामः शयने शय्या आसने आस्थायिका भोजनमदनमित्येते
षु विहारशाय्यासनभोजनेषु एकः परोक्षः सन् असत् कृतोसि प-
रिभूतोसि अथवा हेअच्युत तत्समत्वं तच्छब्दः क्रिया विशेषणार्थः
अत्यन्तं वासत् कृतोसि तत्सर्वमपराधजातं तामये तमां कारये
तामदमप्रमेयं प्रमाणातीते यतस्त्वे ४२

आनेदगिरिक्तटीका २

यद्युक्तमुक्तं तत्तत्तन्वामित्येव न किन्तु यत्परीहासार्थं क्रीडा
दिषु तथि निरस्तराणं कृतं तदपिसौख्यमित्याह यच्चेति विह-
रणं क्रीडा व्यायामोवा शयने तस्यादिकं आसने आस्थायिका सिंहा-
सनादेरुपलक्षणमेतेषु विषयभूतत्विति यावत् एकशब्दोपरसि
स्थितमेकाकिनं कथयतीत्याह परोक्षः सन्निति प्रपत्ते परोक्षे वात
दसक्तराणं परिभवेन यथास्यात्तथा यत्तथा तमसत् कृतोसि त-
त् सर्वमितियोजनामङ्गीकृत्याह तच्छब्द इति तमा कारयितव्येति
वापरिमितत्वं हेतुमाह अप्रमेयमिति वाचनिकं मदीयमपराधजा-
तं तया तन्वामित्युक्तं इदानीं मदीयोऽपराधोनतया गृहीतव्यो
गृहीतोपिसौख्यइत्याह यत इति ४२

स्वामिक्तटीका ३

किंच यच्चावहासार्थमिति हेअच्युतयच्चपरिहासार्थं क्रीडादिषु
निरस्क्तोसि एकः एकलः सखित्विनारदसि स्थित इत्यर्थः अथवा
तत्समत्वेन वापरिहसनां सखीनोसमत्वेन परोक्षितत्वं सर्वमपराधजा-
तमदं तामप्रमेयमवित्प्रभावेतामये तमां कारयामि ४२

पिशाचभाष्यटीका ४

श्री.
मी. टी.
प

यचेति विहारः क्रीडा एकः अपसादायः वरुजनप्रमत्ततामये प्रसा
दये ५२

रामानुजभाष्यटीका ५

यद्यपि परिहासार्थं सर्वदेवसत्कारार्हं स्वमसत्कृतोति विहारशय्या
सनभोजनेषु सहकृतेषु यकोवा सतसमत्तं वा यदसत्कृतोति सित
तसर्वं त्वामप्रमेयमहं त्वमापये ५२

स्यष्टार्थे ५२

श्रमिनवप्रमत्तटीका ६

परमार्थप्रपाटीटीका ७

यचेति यहा अवहासार्थं परिहासनिमित्तं मातलपुत्रोहिविनोदा
स्पदमिति उच्यते यः विहारे क्रीडायां एकत्र शयने आसने सभास
विवेशे भोजने च येनोत्तमसत्कृतोति स्ववशातोति किं भूतस्त्वकं अथ
वायकलः ररसि स्थितः तत्सर्वमपराधजाते त्वामप्रमेयमविम
प्रमेयप्रभावं त्वमापयेत्तमोकारणमि अयमर्थः सामवेदे हृद
येतरादिपावमायस्मृतिभिः प्रसन्नाद्गवतो यशोलभस्वपादि
नश्वरफलं न ह्येते किं त्वपराधमेव त्वमापयेतेन पुनश्च तर्भुज रूप
दर्शनामुक्तिं प्राप्नुया यतः कृतापराधस्यैवं पुंसो नश्वरफलप्राप्ति
रिमाशयोः जेतस्या श्रुतिरपि वाजसनेय्येणैव के अथातः पवमा
नानामेवाभ्यारोहः सर्ववत्प्रसूतोतासाम प्रसूतोति मयत्प्रसूया
तदेतानि जपेदसतो मास मयत्तमसो मज्योति र्गमयत्तमो मास
ते गमयेति भाष्ये अथात ईश्वरप्रसादकवाक्योपक्रमात् पवमाना
नापावकमायस्मृतीनामभ्यारोह उक्तैः वैयस्मात्प्रसूतोतापरमे
श्वरस्य प्रकृतेः प्रसूतोतासनसामरूपेणैव ईश्वरसूतोति सपत्रयदाप्रसू
यात्सूतिं कुर्यात्तदापतानि त्रीणि येन धियजेत तान्माह अस
तो मास मयत्तमसो मज्योति र्गमयत्तमो मास मयत्तमो मास
मयत्तमसो मज्योति र्गमयत्तमो मास मयत्तमो मास मयत्तमो मास
नात्मा मज्योतिः स्वप्रकाशरूपेण गमय तथा मज्योतिः संसारात्तामसं तं
गमयेति तैत्तिरीयके पि यथा मज्ये स सुदृश्यं कृत्स्नवमन्वर्जं सुखा
दत्तमनुत्सर्गं हृदये तराभ्यामिष्या प्रतिष्ठा गच्छति यथा स सुदृश्य
मज्ये यतिताः स वै नो कामन्वर्जं पुः प्रयेति तादृकं दत्तमनुत्सर्गं तप
त्रिविधं हृदये तराभ्यामज्ञानाधिभितासं सान्नाप्रतिष्ठां त्रि

ह्यणिस्थितिं गच्छेति अथ नम्रफलमिंद्रादिसुतिभिर्लभ्यते शु
 तिरपि अथपानीतराणिसौत्राणितेषात्मनेऽत्राद्यमागायेतस्मा
 उतेषु वरं हणीतसं कामे कामयते तमागायदिति भाष्यं अथेयं न
 तरेणा विदतराणि यावमायम्युत तिरितामिसौत्राणिसुतिवा
 कानितेषु आत्मने स्वात्मार्यमत्राये फले आगायेत्यर्थं येन तस्मा
 त्समत्रादेवता विशेषाद्ये कामे कामयते यद्वरं हणीत तदागा
 यतप्राप्तयात् ५२ वनमालीदीका ८

यच्चावहासार्थं परिहासार्थं विहारशय्यासनभोजनेषु विषयभू
 तेषु मया सत्कृतोसि एकः सखीन विहाय रहसि स्थितो वाहे अ
 थवा तत्समं तेषां सखीनां परिहसतां समं तवा हे अच्युतसंदेका
 कारविकारभूय तत्सर्वं वचनरूपमसत्करणरूपं वा मे मं पराधना
 तं तामये तमं ययामितामप्रमेयमचित्प्रभावे अचित्प्रभावेन
 तिरिक्कारेण च परकारुणिकेन भवता तत्माहात्म्यं न भिन्नसम
 मापराधाः तं तव्या इत्यर्थः ५२

कृतसमवेन यतीति दीका ५

किंच यच्चावहासार्थमिति हे अच्युतप्रच्युतकारुण्यवात्सल्यतमा
 दिसुभावेन नममापराधसहनेन तवनातिप्रयास इति सूचितं
 यच्च विहारशय्यासनभोजनेषु विहारः क्रीडायाया मेवाशय्यात्
 लिकाद्यस्मरणविशेषाः आसनं सिंहासनादिभोजने वह्नों पंक्ता
 वशनमेतेषु विषयभूतेषु चकारादभ्युगजवाजिरयादिगमनेषु
 अथवा सार्थं परिहासाय एकः सखी विना विजने स्थितः अथवा त
 त्समं तेषां परिहसतां सखीनामग्रे स्थितस्त्वमया असत्कृतोसि
 यवनचराजसत्त्व विजयी जितेंदियः परस्मैवाकसरलो निष्क
 पटत्वमिते वं व्यंजकशब्दैरसत्कृतवत्तातोसि तत्तामपतत्सर्वं
 चनरूपमसत्काररूपं वा पराधनात् त्वोकारुण्यमिधुसमस्व
 भगवन्निमनुनयामिकीटशे अग्रमेयमतर्कप्रभावमित्यनेन
 त्वमाहात्म्यं न भिन्नसममापराधाः परमकारुणिकेन भवता तं
 तव्या इति सूचितं ५२

मधुसूदनीदीका १

यच्च अथवा सार्थं परिहासार्थं विहारशय्यासनभोजनेषु विहारः

श्री.
गी.टी.
प

तेषां
१९

क्रीडायायामेवाशय्यातलिकायास्तरणविशेषः आसनेसिंहाम
नादिभोजनं वदन्तोपेतावशाने तेषुविषयभूतेषुसत्कृतोसिम
यापरिभूतोसिपकः सखीनविहायरहसिस्थितोवाते अथवातत्स
मत्तंसखीनोपरिहसतोसमत्तंवा हेअच्युतसदानिर्विकारतत्सर्व
वचनरूपेअसत्काररूपेवा अपराधजातंतामयेत्तामयाभित्तामप्र
मेयमचित्प्रभावे अचित्प्रभावेणनिर्विकारेणचपरमकारुणि
केनभगवतातत्तादात्म्यानभित्तस्यममापराधाःतंतव्याहस्यर्थः

सदानंदीटीका ॥

यच्चैवपरिहासार्थक्रीडाशय्यासतादिषुमयात्वेपरिभूतोसिरहसि
स्थितएववा १ यद्वातेषांसखीनोचसमत्तंहाससंसरि हेनिर्विका
रतत्सर्वमपराधसहस्रकं तमोतोकारयेचित्प्रभावाहेक्योबु
धिं अतोचित्प्रभावेननिर्विकारेणचतया ३ अतिकारुणि केने
वतत्ताहात्म्याप्रवेदिनः ममापराधाःतंतव्याःश्रीमद्भगवताधुना
५२

नीलकंठीटीका ॥

तथायच्चअवहासार्थेविहागादिषुसत्कृतोसिपरिभूतोसि पकी
वासखीनोवियोगकालेवातत्समत्तंसखिजनसमत्तंवाःसत्क
तोसितत्तामयेत्तमापये यतस्त्वमप्रमेयोचित्प्रभावःकरुणा
परः यतःशत्रुभ्योपि शिशुपालादिभ्यउत्तमोगतिरुत्तवानसीत्
र्थः ५२

आनेरीटीका

अवहामोनर्मलीलासुपरिहासःपकःपकाकोसत्समत्तंसतोव
दन्तामनिथोवा असत्कृतोसिअनादतोसितत्तंतव्यामित्यर्थः

गमकटीटीका

नेत्समत्तमिति सभायांवासतांसत्रिथो

लासिकी दत्तजनीटीका

किंच हेअच्युत विकारहेतोसत्यपिस्वस्वभावादप्रच्युत यसुपरिहासार्थे

विहारादिषु ताटतोसि एकः सखीविनारहसि स्थितः मयवातत्समत्
साखीनां प्रत्यक्षं तत्सर्वमपराह जातं तमापयामित्वाम् नत्वीश्वरस्याप-
राधचरणमनुवितमित्यतो हेतुगर्भविशेषणमाह अप्रमेयतातिके
नरूपेण प्रत्यक्षायोगोचरम् ॥ ४२ ॥

पंचोलीटीका

यच्चेति हेतुवत्तत्तदनुः श्रवणसार्थपरिहासप्रयोजनाय एकः
परोक्षं श्रवणवातत्समत्तं विहारशय्याः सनभोजनेषु विहारश्चरण
चक्रमाणं च शय्याशयनं आसनमुपवेशनस्थानं सिंहासनादिभो-
जनाशनं तेषु सत्कृतः परिभूतो सितत्सर्वं अपराधजातं ग्रहमप्र-
मेयं अविनश्यत्तत्तां दामयेदमांकारयेदसत्काभूमौ दंडवत्पण-
न ॥ ४२ ॥

ररावीरसमिद्धोधिनी ॥

स्यार्थः ॥ ४२ ॥

मधुभाष

४२ ॥

111

विष्णुसहस्रनाम स्तोत्रम् ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

भाषा अनुवाद
और हे अमृत विहार प्रायन भोजन क्रीडा आदि मे अथवा सखा
गण रहित निर्जन स्थान मे जहां हम और तम को छोड़ और
कोई नया ऐसी जगह मे अथवा परिहास करने वाले मित्रों के वी
चमे जो हमने हमने के लिये तिरस्कार आपका किया है सो सब
अचिन्म प्रभावरूप आपसे हम समा करवावते हैं ४२

चौपई

जो इस दिमें कसो अनादित तोदि बेहत चलत प्रायन भोजन स
दि जोदि कस्य कांत वा संग जो देखा में तोदि अप्रमेय सो न
महुं भलेखा ४२ ॥

पितासिलोकस्य चराचरस्य तमस्य पूज्यस्य गु
 रुगरीयन् न तत्समोऽप्यधिकः कुतोऽपि
 लोकत्रयेऽप्यप्रतिमप्रभावः ५३

शाङ्ख्यभाष्यटीका १

पितासीति पितासि जनपितासि लोकस्य प्राणिजातस्य चराचरस्य
 स्वावरजद्रुमस्य न केवलं तमस्य जगतः पिता पूज्यस्य पूजाही
 यतो गुरुगरीयान् गुरुतरः कस्मादगुरुतरस्त्वमित्याह न च तत्त
 मस्तत्त्वलोकोऽस्ति न हीश्वरादहं सम्भवत्यनेकेष्वरतयावहागु
 पपत्तेः तत्सम एव तावदस्योन सम्भवति कुत एवासोऽप्यधि
 कः स्यात् कस्मान्न लोकत्रयेऽपि सर्वस्मिन् प्रतिमप्रभावः प्रतिमीयते
 यथा सा प्रतिमा न विद्यते प्रतिमा यस्य तव प्रभावस्य स तम
 प्रतिमप्रभावः देशप्रतिमप्रभावः निरतिशयप्रभाव इत्यर्थः ५३

ज्ञानदगिदिकृतटीका २

गुणाधिकात् पूजाहेतु धर्मात्मज्ञानसंप्रदायप्रवर्तकत्वेन पि
 तृपितृत्वात् गुरुत्वं गुरुणामपि सूत्रादीनां गुरुताङ्गरीयत्वं तदे
 व प्रश्नद्वारा साधयति कस्मादिति ईश्वरान्तरं तस्य भविष्यती
 त्वाशङ्क्याह नहीति ईश्वरभेदे प्रत्येकं स्वातन्त्र्यात्तदेकमस्य हेत
 वभावान्नानामतित्वे चैकस्य सिद्धतायामन्यस्य संनिहीषासम्भवाच्च
 वहारलोपादयुक्तमीश्वरनानात्वमित्यर्थः अथ अधिकासत्त्वं कैशु
 तिकन्यायेन दर्शयति तत्सम इति तत्र हेतुमवतार्य व्याकरोति
 अप्रतिमेत्यादिना ५३

स्वामिकृतटीका ३

अविंशप्रभावमेवाह पितृति न विद्यते प्रतिमोपमायस्य सः अप्र
 तिमस्तथाविधः प्रभावो यस्य तव हे अप्रतिमप्रभावतमस्य चराचर
 स्य पिता जनकोऽसि अत एव पूज्यस्य गुरुस्य गुरोरपि गरीयान् गुरुतरः
 अतो लोकत्रयेऽपि तत्सम एव तावदस्योनास्ति परमेश्वरस्य न्यस्याभा
 वात् ततोऽप्यधिकः पुनः कृतः स्यात् ५३
 पिशाचभाष्यटीका ४

संक्षेपार्थः ५३

च.
 द.

श्री.
मी. सी.
प

रामाजुनभाष्यटीका. ५

पितासीति अस्यचराचरस्यलोकस्यपितासि अस्यलोकस्यगुरुश्चा
सिप्रतस्त्वमस्यलोकस्यचराचरस्यगरीयान्पूज्यतमः नतत्तसमो
त्यभ्यधिकं कुतोऽयः लोकत्रयेपितृदम्यः कारुण्यदिनाशणेनके
नापिनतत्तमोस्ति कुतोभ्यधिकः ५३

अभिनवगुप्तकृतटीका. ६

स्यष्टार्थ ५३

परमार्थप्रपाटीटीका. ७

अथतत्तापनेवीजमाह पितेति पितोऽमादकः पूज्यः पूजनीयः
रूपदेष्टा ततोपिगरीयान् दृष्टातोभावेकश्चयति अतिमप्र
भावः तत्सदृशोऽयः परमेश्वरोनास्ति कुतस्ततोधिकः अतिरपि
रथंतरमास्येतरान्तावांश्चोदियोनपार्थिवोनजातो नजनिष्प
तइत्यत्रवासिति विनाशोच्यस्यष्टार्थ ५३

वनमालीटीका. ८

अचिंत्यप्रभावमेव प्रपंचयति विनेति अस्यचराचरस्यलोकस्यपि
ताजनकस्त्वमसि पूज्यश्चासि सर्वेश्वरत्वात् गुरुश्चासि शास्त्रोपदे
ष्टा अतः सर्वप्रकारेर्गरीयान् गुरुतरासि अतएव नतत्तमोऽस्यभ्य
धिकः कुतः लोकत्रयेपिदे अतिमप्रभाव नास्ति प्रतिमातुल्योऽयः
प्रभावो यस्य सोऽतिमः प्रभावो यस्य सत्त्वे तव समो यो ना
स्ति द्वितीयपरमेश्वराभावात् तस्य अधिकोऽयः कुतः स्यात् सर्वथा
न संभाव्यत एवेत्यर्थः ५३

सर्व

रुसमवेजयनीटीका. ९

अप्रमेयतामेव प्रपंचयति पितासीति अस्यचराचरस्यचिदचिन्नि
अस्यलोकस्य त्वं पिताजनकोऽसि सर्वकारणत्वात् अस्य पूज्यश्चासि
सर्वेश्वरत्वात् अस्य गुरुश्चासि सर्वशास्त्रोपदेष्टृत्वात् अतः सर्वैः प्र
कारेर्गरीयान् गुरुतरस्त्वमेवासि अतएव दे अतिमप्रभावनविय
ते प्रतिमा उपमा यस्य सोऽतिमस्तथाविधः प्रभावो निरंकुषाचि
त्येवमर्थस्य सत्त्वोयने कुत एवेत्यतो लोकत्रयेपि त्वत्सत्त्वाका
दिपातालानेपि अत्यस्तदम्यः कश्चिदपि त्वत्समोऽचिन्मानत्रस्वरूप
गुणशक्त्यादिभिरत्यन्तलोनास्ति असीत्स्यलक्षणो नासीत् न भविष्य
तीत्यर्थः अतोभ्यधिकस्तत्रः सर्वप्रकारेऽधिकोऽयः कुत स्यात् तदि

तीयस्य सर्वेष्वरस्याभावात् एवंश्रुतिरप्यादनतत्समस्याभ्यधि
कश्चदृश्यतइति धर मधुसूदनीटीका १०॥ अविंशप्रभाव तामेवप्रपंचयति॥
अस्यचराचरस्यलोकस्यपिताजनकस्तमसि पूज्य आसि सर्व
स्वरत्वात् गुरु आसि शास्त्रोपदेशा अतः सर्वैः प्रकारैर्गरीयान्
गुरुतरोसि अतएवनतत्समोस्यभ्यधिकः कृतोयः लोकत्र
येपि हेतुप्रतिमप्रभावयस्यसमोपि नास्ति हितीयस्यपरमे
रस्याभावात् तस्याधिकोयः कृतः स्यात् सर्वेष्वानसंभावत
एवेत्यर्थः धर सदानेदीटीका ११

अविंशप्रभावतंप्रपंचयति पांडवः चराचरस्यलोकस्यपि
तात्पूज्य ईश्वरः १ गुरु शास्त्रोपदेशासि गरीयात्सर्वेष्वपि
तत्समो नास्ति कुत्रापि कृतः स्यादधिको हरेः ततोयस्येश्वरस्यैवा
भावादप्रतिमेश्वर धर नीलकंठीटीका १२
अप्रमेयत्वमेवाह पितासीति यत्तत्समस्याकंपितासिप्रतोसा
भिः शिशुभिः कृताग्रपरायास्त्वया तत्तथापवेति भावः धर

अप्रमेयत्वप्रविंशप्रभावतांप्रपंचयति॥ सदानेदीटीका + सुगमोर्थः धर
गमकंठीटीका १३ लोकत्रयेपितव
समो नास्ति कृतो न भ्यधिको भविष्यति॥ धर ॥
लासिकी वसुगतीटीका

यतः हेतुप्रतिमप्रभावअनुपमेश्वर्य तमस्यचराचरस्यलोकस्यपितात
नकः पालकोवासि पूज्य आसि गुरु आसि अतः सर्वेष्वगरीयान्
कृतमोसि अतो लोकत्रये तत्समस्तावरन्यो नास्ति द्वितीयस्यपरमे
स्वरस्याभावात् ततोभ्यधिकः कृतः पुनः स्यात् धर ॥

पंचोलीटीका
अविंशप्रभावत्वमेवाह पितासीति अस्यचराचरस्यस्यावरजं
गमस्यलोकस्यजगतस्त्वपिताजनकः न केवलं जनकः पूज्यः
पूजार्हः यतस्त्वगुरुगरीयान् गुरुतरः यतो लोकत्रये तत्स

गी.
टी.
प.

मः कोपि नास्ति अभ्यधिकः ऊतः अप्रतिमः अनुपमः भावो
यस्य सः अप्रतिमप्रभावः ४३

ररावीरसमिद्धोधिनी॥

पितासीति त्वमेवास्य वराचरात्मकस्य जगतः पिता पितृवड्
त्वादयिता त एव गरीयान्तरुतरप्रभावत्वात् सृज्यो गुरुस्ततोप
देष्टासियतस्त्वमप्रतिमप्रभावः विष्णुपिलोकैष प्रतिमो समा
नः प्रभावो स्याद्वितीयत्वादिति ब्रह्मादयोऽप्युपादयितारो म
त्समाना एवेति चेदत आह नेति तत्राहो विप्रोषयोतकः अन्यो
ब्रह्मादिकः त्वत्समोऽपि न भवत्यप्रतिमप्रभावत्वात् कुतोऽप्यधि
को निरतिशयप्रभावत्वादिति ४३॥

मधुभाष

४३॥

भाषा अनुवाद

अथ भगवत् का अचिन्म प्रभाव कहते हैं कि हे अप्रतिम प्रभाव नहीं है प्रतिमा कहे उपमा ऐसा निरूपम प्रभाव है जि सका सो तम इस चराचरात्मक लोक के पिता कहे उत्पतिक र नेवालि औ पूजनीय तथा गुरु के भी गुरु हों इस हेतु परमे स्वर जो तम तमारे समान का बिलाकी मे कोई नहीं तो अथि क फेरि और कहा होय सकें हैं ५१

वैपरी

पिताचराचरको तं दोई तं जगसृज्यगुरुगविष्ट दिसोई नदि तव समका अथिकदिशोर तीनलोक असमप्रभाव दि तोरा ५२

[Faint handwritten text in Devanagari script]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय कायं प्रसादये त्वा
महमौशमीशे पितेव पुत्रस्य सविवसायुः
प्रियः प्रियायार्हसि देवसोऽहं धध

शाङ्खभाष्यटीका १

यत एवे तस्मादिति तस्मात् प्रणम्य नमस्कृत्य प्रणिधाय प्रक
र्षण नीचैर्धृता कायं शरीरे प्रसादये प्रसादं कारये त्वामहमौ
शमीशितारमीशं स्तुते त्वं पुनः पुत्रस्यापराधं पिता यथा तम
ते सर्वे सात्वा इव सात्वरपराधं यथा वा प्रियः प्रियाया अपराधं
तमते एव महसि देवेव सोऽहं प्रसहितं तन्मिष्ये धध

न

ज्ञानन्दगिरिकृतटीका २

निरतिशयप्रभावते हेतुं कृताप्रतिभेदादिना प्रसादये प्रणम
पूर्वकं तामिमां यत इति प्रसादनानन्तरं भगवता कर्तव्यं प्रार्थय
ते त्वं पुनरिति प्रिय इव प्रियाया इतीवकारोत्पद्यते प्रियायार्ह
सीति ह्यन्तः सन्धिः तन्ने मदपराधजातमिति शेषः धध

स्वामिकृतटीका ३

यस्मादेवं तस्मादिति तस्यात्तामीशो जगतः स्वामिनमीशे स्तुते प्रसाद
यामि कथं कायं प्रणिधाय देव उव त्रिपात्यप्रणम्य नत्वा अतस्त्वं समाप
राधे सोऽहं त्वं तमहं सिकस्य क इव पुत्रस्यापराधं कृपया पिता यथा स
ह ते सात्वा मित्रस्यापराधं सात्वानिरुपाधि वै प्रयेया प्रियश्च प्रियापरा
धेन त्रियार्थे यथा तद्वत् धध

पिशुभाष्यटीका ४

तस्मादिति प्रणिधाय प्रकर्षण नीचैर्दे उव त्वभूमौ कायं निपात्य सो
ऽहं सुपचारः धध

शमानुजभाष्यटीका ५

तस्मादिति यस्मात् सर्वस्य पिता पूज्यतमो गुरुश्च कारुण्यदिगुणो
ऽसर्वाधिकोसि तस्मात् प्रणम्य प्रणिधाय कायं प्रसादये यथा कृता
पराधस्यापि पुत्रस्य यथा साद्युः प्रणम पूर्वकं प्रार्थितः पिता सात्वा वा
प्रसीदति तस्यात्ते परमकारुणिकः प्रियाया इव मे सर्वे सोऽहं महसि धध

स्पष्टार्थं धध

अभिनवगुप्तकृतटीका ६

॥

परमार्थप्रणटीका ७

श्री-
गी. टी.
प

हवे

यद्येवं तस्मात्काये प्रणिधाय देउर्व निजातणाम् त्वामहं प्रसादये प्र-
सन्नं करोमि किं भूतमीशं तियं तारं रियं स्तुतं अनेक प्रकारेण तमप-
परायं मोहं महं सि कस्य कवचं पिता पुत्रस्येव सरक्तुः प्रियः सह-
स्त्रिणां प्रियायाश्च यवश्चरफलायै मृतिः जातारमिदं मवितारा-
मिदं हवे सहवमिमादि प्रमेयं तं प्राह स्त्रोकश्च सुहान्धवसा-
पिनोऽपि भगवद्मानमिह संमतं हाव्यात्ममितादरस्य न्दरिप्रो-
काह माश्रयिषः शुक्लापत्तं तमारण्यं मपुत्रासासास्त्रामभोग-
मिरादात्तामित्यपरायं जातमथुना प्राप्नोति देवदेवाने ५५

सखिव

वनमालीटीका. ८

तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय प्रकर्वेण नीचैः काये धृत्वा देउर्व मोपति-
त्वा प्रसादयेत्तामीशमीशं सर्वस्वममहं मपराधी अतो देवपितेव
पुत्रस्यापराधं सखिव सखुरपराधं प्रियः प्रियायाः पतिव्रतायाश्च प-
राधं ममापराधं तसो हतं तमहं सि अनेक प्रकारं तामम प्रियायां दे-
सी सखेवरा हलोपः सखिश्च ह्यादसः ५५

रा.

रुसमवेन यनीटीका. ९

किं व यस्मात्सर्वलोकस्य पिता गुरुः पूज्यो गुरुतस्मै स्व रूप गुणा-
दिभिस्तु सर्व प्रकारेण सर्वाधिकोऽसितस्मात्काये प्रणिधाय प्रणम्य भू-
मौ साष्टाङ्गं प्रणतिं कृत्वा हतं दयराधी तन्महिमानं भिजः ईशं सर्व-
संनियं तारं स्वामिने वा ईशं सर्वस्वममहं विद्याकारं भगवंतं प्रसादये-
प्रसन्नं करोमि नन्वपराधिनः प्रणम्यै नैवाहं प्रसन्नः कथं स्यामि सपे-
त्तायां स्वस्वाभाविककारुण्यदिगुणाश्च तेन प्रणामादि साधने वि-
नैव तं प्रसन्नं स्यादिति स्वजनापराधमहं न दृष्टो तत्र पेण भगवतो
योग्यतामाह पितेव पुत्रस्य यथापराधिनः पुत्रस्यापराधं पिता सहते
यथा वसन्तपुरपराधं पिता सहते यथा वसन्तपुरपराधं सखा सहते
यथा प्रियायाः पतिव्रतायाः अपराधं प्रियः पतिः सहते यथा दे-
वापराधिनो ममापराधं सो हतं तं तं करुणा वरुणा लयोः हसि-
योग्यो भवसि प्रियायां देसी सखेवरा हलोपसंखि स्तार्धः ५५

यस्मादेवं

मथुसूदनीटीका. १०

तस्मात्प्रणम्य नमस्कृत्य ताम् प्रणिधाय प्रकर्वेण नीचैः धृत्वा काये देउ-
र्व मोपति ते निजावत् प्रसादयेत्तामहं मीशमीशं सर्वस्वममहं
पराधी अतो देवपितेव पुत्रस्यापराधं सखिव सखुरपराधं प्रियः प-

तिरिचप्रियायाःपनित्रतायापराये ममाप्यपरायेतंसो^{१६} तंतुमहे
 सि अनमशरणतात्मम प्रियायाहेसीमत्रइवशाहलोपःसंपि
 शब्दादसः

सदानदीदीका ११

तस्मात्ताहेनमस्कृत्यपतितादेउवस्तितौ प्रसादयेविलस्तुत्य
 तामीश्वरपदास्पदे १ यथापुत्रस्यतमतेमपरायेपितायथा
 सायुःसावापतिःसत्ताभायायाःतमतेयथा २ तथासमापरा
 येतंसोद्रुमहेसिकेशव अनमशरणतात्वकल्याणप्रासागर
 ३ इत्येकवतमनिशोजगतामधीशःकृष्णःकृपाजलधिरात्मव
 तोशरणः स्त्रीयेपदेनयनिशानिस्त्वैकथामयस्तंभनेसततमी
 शमहेमुकुंदे ४५ नीलकंठीदीका १२

एतदेवाह तस्मादिति यस्मात्पिताशुरुस्तस्मात्तायेशरीरेप्र
 णिधायभूमौकृतादेउवत्प्राणम्यतोप्रसादये ईमेस्तुमे सष्टमस
 त ४५

आनंदीदीका

कायेप्रणिधायदंडवद्भूमौपतिताप्रणामतमस्कृत्य अथेश्वरस्य
 माहात्म्यप्रत्यभिज्ञानमाह दिव्यातिकर्माणि तवाद्भुतानि पूर्वाणि पूर्वे
 पृष्ठयः स्मरंति नास्योस्तिकर्ताजगतस्त्वमेकोधाताविधाताचविभु
 भवस्य धाताधारयिताविधातासृष्टा तवाद्भुतं किं न भवेदस्य किं वा
 प्राकंपरतः कीर्तयिष्ये कर्तासि सर्वस्य तस्यैवैविभोततंसर्वमिदं
 तमेव अत्यद्भुतं कर्म तदुक्ते कर्मोपमानं न हि विद्यते ते न ते शरणा
 नां परिमाणमस्ति न तेजसो नापि बलस्य ऊहेः दिव्यातिकर्माणीत्या
 दिकं श्लोकद्वयमेतदार्थेनास्ति

रामकंठीदीका १३

अथविज्ञातमहिमानमावेदयितमाह दिव्यातिकर्माणि तवाद्भुता
 नि पूर्वाणि पूर्वे पृष्ठयः स्मरंति नास्योस्तिकर्ताजगतस्त्वमेकोधा
 ताविधाताचविभुभवस्य तवाद्भुतं किं न भवेदस्य किं वा प्राकंपरितः

श्री . .
गी . री .
ए .

कीर्तयिष्ये कर्तासि सर्वस्य यतः सर्वं वै विभो न तः सर्वमिदं तमेव अ
नृते कर्म न उक्ते कर्मोपमानं न हि विद्यते ते न ते गुणानां परि
माणमस्ति न ते जसो नापि बलम् न ह्येः पूर्वं पुनस्तथा अपि सर्व
तां यस्तव कर्माणि स्मरेति अतएव ते वा मृषीणां मयिता
नि पूर्वाणीति जगत्सर्गप्रलयादीनां भगवत्कर्मणां सनादिप्र
बंधप्रवृत्ततत्प्रतिपादनपरमेतत् पूर्वं व्याख्यातशायमस्य तत्स
बोधं किं तथा तां धारयिता विधाता सृष्टा तव सृष्टयः समारः
किमनुतमाश्चर्यरूपं कर्म खेच्छामाशेषकारणास्यैकस्य कर्त
सत्वात् त्वम तपवसहकार्यादिकारणानि रूपेण तात्परतः स्वा
त्मव्यतिरिक्ता तज्जतश्चिच्छकां साध्यं किं वा ते कथयिष्यामीत्युक्ता
न त्वापेक्षतया यतस्ते सर्वस्य वस्तुजा तस्य निर्माता ततो हेतुं त
राभावात् तमेवेदं सर्वं तच्छक्तिरेव जगत्कास्तीत्यर्थः ततश्चात्मा
श्चर्यरूपमपि कर्म न ते उक्तरमित्यादि स्पष्टम्

लासिकी वसुतीरीका

तस्मात्ततो हेतोः प्राणम्यतता कायं प्रणिधाय देवद्रुमौ निपास
तां स्तुत्यमीश्वरं प्रसादये हे देव पिता पुत्रस्यापराजितमिव सत्वा
सात्पुरिवा पराथम् प्रियः प्रियायाश्वापराथं समापितं तमर्हसि
प्रियाया इति विसर्गलोपः संधिरार्थः

पंचोलीटीका

यस्मादेवं तस्मादिति काये देहं प्रणिधाय भूमौ पातयित्वा प्राण
म्यनमस्कृत्य ग्रहं त्वामीशमीशं पितैव पुत्रस्य प्रसादये प्रसादं
कारये हे देव ममापराथं सोढुमर्हसि यथा पुत्रस्यापराथं पिता
सहते यथा सात्पुरपराथं सत्वा सहते प्रियायाः अपराथं प्रियः सह
ते तथा त्वमपि यथ

रत्नवीरसमिद्धेयिनी॥

यस्मादेवं तस्मात्कारणादहं त्वत्पूर्वकार्यं स्वप्राप्तिं प्रणिधाय प्रकर्षे
राष्ट्रं दंडं वन्निधाय तदनुप्रणम्य प्राणमवचनं सुकृतात्मा मीमां
स्वामिनमीज्यं कीर्तनीयमाहात्म्यं प्रसादये प्रसन्नं कारयेत्यर्थः
पुनः प्रार्थयते पितृति यथादि पुत्रे रक्षितत्वादियर्थं व्यापारवत्त्वं पि
त्रेवेति पुत्रस्य पितृव यथाच सख्युः कुमार्यादिभ्यो व्यावर्तकत्वादि
धर्मवत्त्वं सख्यावेवेति सख्युः सखेव तथात्वमपि ममेति किंच
प्रियः प्रियाया रक्षितेव सोऽहं मिति देव यथाच प्रियः प्रियतमः पुत्रा
दिकः प्रियाय पित्रे रक्षिताय भवति तथात्वमपि ममेति महिषया
नयनयान्साकुमर्दसि अयं यथिनमयिमां प्रतिप्रसीदेति भावः

६४॥

मधुभाष्य

६५॥

1875

भाषा अनुवाद

इस से हे ईस स्वामिन स्तुति के योग्य ईसर जो आप तिन को
मे शरीर से दण्ड की नाई अछाङ्क प्रणाम करि प्रसन्न कराव
ता हे कि जैसे पुत्र की अपराध कृपा करि के पिता सहि लेता
और मित्र की अपराध मित्र मनमें नहीं धरता तथा पत्नी की
अपराध पति भी प्रीति से सम करता हे जैसे हीरे देव पि
ता ओ मित्र तथा स्वामी रूप आप भी मेरी अनजान बालक
समान प्रीतिपात्र सेवक की अपराध क्षमा की जिये ४४

चौपई

जाते नमहुं भूमिधर प्रीण करो प्रसन्न मे तोहि पूज्य दिं ईशा
स्तुत को पितृ समहित को हित होई प्रियेदि प्रिया तं योग्य दे
व सदन कोई ४४

अट्टपूर्वमिति अट्टपूर्वं न कदाचिदपि दृष्टपूर्वमिदं विष्णु
रूपं न च मया मैत्र्या तदहं दृष्ट्वा हृषितोस्मि भयेन च प्रव्यथितं
मनो मेऽतस्ते देव मे मम दर्शय हे देव रूपं यत्तत्सत्त्वं प्रसीद दे
वेश जगन्निवास ५५

शाङ्ख्यभाष्यटीका १

अट्टपूर्वमिति अट्टपूर्वं न कदाचिदपि दृष्टपूर्वमिदं विष्णु
रूपं न च मया मैत्र्या तदहं दृष्ट्वा हृषितोस्मि भयेन च प्रव्यथितं
मनो मेऽतस्ते देव मे मम दर्शय हे देव रूपं यत्तत्सत्त्वं प्रसीद दे
वेश जगन्निवास जगतो निवासो जगन्निवासः हे जगन्निवास ५५

आनन्दगिरिकृतटीका २

हे तूक्तिपूर्वकं विष्णुरूपोपसंहारं प्रार्थयते अट्टेति हृषितो हृष्टः
हृष्ट इति यावत् भयेन तद्धेतुविकृतदर्शनेनेत्यर्थः ५५

स्वामिकृतटीका ३

एवं तमापयित्वा प्रार्थयते अट्टपूर्वमिति द्वाभ्यां हे देव पूर्वमट्टं
तव रूपं दृष्ट्वा हृषितोस्मि तस्याभयेन च मे मनः प्रव्यथितं तस्मात्तम
व्यथानिहतयेत देव रूपं दर्शय हे देव वेश जगन्निवास प्रसन्नो भव ५५

पिशङ्गभाष्यटीका ४

अट्टपूर्वमिति हृषितो हृष्टो मा ५५

रामानुजभाष्यटीका ५

अट्टेति अट्टपूर्वमत्सु दुतमत्सु च तव रूपं दृष्ट्वा हृषितोस्मि
भयेन च प्रव्यथितं च मे मनः अतस्ते व प्रसन्नं रूपं मे दर्शय प्रसीद दे
वेश जगन्निवास मयि प्रसादे कुरु देवानां ब्रह्मादीनां मयी जग
दाश्रय भूत ५५

अभिनवगुप्तकृतटीका ६

स्वार्थं ५५

परमार्थप्रणालीटीका ७

अपत्तमाप्यप्रार्थयते अट्टपूर्वमिति द्वाभ्यां पूर्वजन्तुजन्तांतरे
पिनट्टमिदं दृष्टपूर्वं विष्णुरूपं तत्तत्तु जगत्तत्तु मादृशाना
मपमलभ्यता भवति हृषितोस्मि अतः परं भो देव वेश जगन्निवास प्र
णिदृष्ट्वा भयेन च मे मनः प्रव्यथितं अतः परं भो देव वेश जगन्निवास प्र

श्री.
गी. टी.
प

सीदप्रसन्नोभव प्रसादेकिंपावनीयमित्याह तदेवप्रथममुपलब्धं
हर्षजनकं चतुर्भुजं रूपं सदृतिमो दर्शय तावन्तेव कृतार्थः स्थापित
र्थः ५५

वनमालीटीका ५

एवमयापराधान्तरमापयित्वा सर्वदा स्वानुभूत रूप दर्शनं प्रार्थ
यते अट्टेतिहाभ्या कदाप्यट्टपूर्वपूर्वमट्टं विषय रूपं ट्टाह
षितोरुष्टोस्मितरूपदर्शनजेन भयेन मे मनोव्यथितं व्याकुलीकृतं
अतस्तदेव सदा मया भस्ममप्राणसहसापेक्षया पिप्रियं तत्
सादेविनायो गीश्वराणां मनसाप्यगम्यं रूपं मम दर्शय च तर्गोचरे
कुरु हे देवेश हे जगन्निवास प्रसीद मम दर्शय त्वत्तुल्यं रूपं
प्रसादं मे कुरु ५५

कुरु मे देव जगन्नीटीका ५

एवमात्मनो पराधत्तमां संप्राप्य दानीं स्म गवतो विषय रूपोपसंहा
रेण प्राप्नुपदर्शनाय भगवन्मन्त्रेनः प्रार्थयते हाभ्या अट्टपूर्व
मिति अट्टपूर्वमया कदापि पूर्वमट्टं न वेद मे शरं विषय रूपं
ट्टावलोक्याहं हृषितोऽस्मि मन्त्रिभ्यो वेदमसाधारणरूपमिति
मुदितोऽस्मि अथ च मे मम मनोतिभयानकं न वेद वीर रूपमव
लोक्य तद्विकृत रूपदर्शनजेन भयेन प्रव्यथितं व्याकुलीकृतं भव
ति अत इदमहं तं प्रार्थये हे देवेश ब्रह्मादिदेव नियंतः स्थापित्वा
हे जगन्निवास सर्वजगदाधार प्रसीद त्वमपि प्रसादं कुरु मत्प्रसादे
न किं फलमिच्छती तपेतायामाह तदेवेति मे मम प्राणोभ्योऽप्य
तिप्रियं तदेव सर्वमट्टमेव देवरूपं च तर्भुजाकारं तेनैव रूपेण च
तर्भुजेनेत्यनेतरमेव वस्तु ते दर्शय प्राडभी वयं देवेति मम स्वोथन
रूपं भिन्ने पदेवाहं देव तनेन तत्कट्टासमुष्माकारो पितं तमा
नुषः किं तपरमेश्वर एवास्याहं जाने इति सूचितं ५५

+ एवं निजापराधत्तमां प्रा
प्य नः प्राप्नुपदर्शनं वि
षय रूपोपसंहा रेण प्रार्थ
यते हाभ्या ॥

+ कदापि अट्टपूर्वपूर्वमट्टं न वेद मे शरं विषय रूपं ट्टाह
षितोरुष्टोस्मितरूपदर्शनजेन भयेन मे मनोव्यथितं व्याकुलीकृतं मनोमे
वेश हे जगन्निवास प्रसीद प्राप्नुपदर्शनं रूपं प्रसादं मे कुरु
सदानेटीटीका ॥

अपराधतमोपार्थपुनः प्राप्नुपदर्शने विस्मरूपोपसंहारद्वारा
 प्रार्थयते पुनः १ कदाप्यदृष्टं पूर्वमिदं विस्मरूपं महतरं दृष्ट्वा हृष्टो
 स्मितरूपं श्रीमद्भगवतोदरः २ भीषणात्मा हृष्टो नैव मनो मेव
 क्लीकृतं अतस्तदेव प्राचीने मम प्राणादपि प्रियं ३ मत्संदर्श
 यदेवेश प्रसीद न गतोपते ४५

नीलकंठीटीका १२

एवं स्तुतां संप्रार्थयते अदृष्टपूर्वमिति हे देव कदाचिदपि
 पूर्वमदृष्टं तादृशं अदृष्टपूर्वतवरूपं दृष्ट्वा हृषितः क्लृप्तः
 स्मितः तथा विकलरूपदर्शनं न भयेन न च मम मनः प्रव
 र्धितं अतस्तदेव धारणाविषयभूतं रूपं मे मत्संदर्शय ४५

आनंदीटीका ॥

अद्येतद्वपुः संप्रकृतित्वाच्चिरकालं द्रष्टुमशक्तश्चि
 रपरिवर्तितमेव रूपं द्रष्टुं प्रार्थयते नः ॥

रूपधितोस्मिरोमां चितोस्मि ४५ ॥

रामकंठीटीका स्पष्टार्थम् ४५

अथात्र ग्रहलक्षणवधूतभगवत्स्वरूपावतिरेकसमाधेर्निष्क्रान्तत्वाविध
 मत्सु ग्रंभगवद्रूपं मनुष्यधर्मप्रत्यापत्तेर्विरुद्धमशक्तः प्राक्तनमेव दि
 माणमिदमाह ॥ लासिकी दत्तचुलीटीका

किंच हे जगन्निवास अदृष्टपूर्वतवैश्वर्यं रूपं दृष्ट्वा भयेन च मम मनः प्र
 वृत्तितं व्याकलीभूतम् पेश्वररूपसमावेशसंस्कारवैवश्येन प्रः
 स्थितमपि श्रीकृष्णरूपमनुपलभ्यमानत्वाददर्शयितुं प्रार्थयते त
 देवेति हे देव हे देवेश तदेव प्राचीने रूपं मे मत्संदर्शय प्रसीद प्रसन्नो भ
 व ४५

पंचोलीटीका

एवं क्षमाप्यप्रार्थयते अदृष्टपूर्वमिति हाभ्यो हे देव हे भगवन्
 अदृष्टपूर्वतवरूपं विस्मरूपं दृष्ट्वा हृषितोस्मि च अत्यन्तं भयेन मे
 मनः प्रवर्धितं प्रचलितं ममतदेव रूपं यत्मात्सुखं तदेव दर्शय
 हे देवेश जगन्निवास प्रसीद प्रसादं कुरु ४५

शावीरसमिद्धोधिनी

अट्टसर्वमिति सर्वत्रनट्टमेतत्तेदृपसंप्रतिट्टाद्वितो।
 स्मि मनश्चमेभयेनप्रव्यथितमितिदृषकंपमिप्रसुखलाभा
 समव्यथानिहतिर्नाभूद्वत्स्वदृपाख्यातेरित्यतस्तदेवदृपं
 दर्शय येनाहं सुखितस्यामित्याह तदेवेति तदेवदृपमेद
 र्शयिष्येदेवदेवेषाजगन्निवासेति संबोधनत्रयंभक्तान्यत्यत्र
 प्रदसूचनार्थ इति मां प्रति प्रसीदेत्यनेनैव प्रसादेननिरतिप्राय
 सुखोभवामीति प्रसादफलमितिभावः ४५॥

मधुभाष्य

भाषा अनुवाद
 इस प्रकार से हमारा कर्ण अव अर्जन दो शोक के द्वारा भा
 वानसे प्रार्थना करते हैं कि हे देव श्रीकृष्ण अष्टष्टपूर्व यह
 आयका रूप देखि के मे अति प्रसन्न भया हों परन्तु भय के
 मारे मेरा मन थिर नहीं है इससे हे देवश जगत के निवा
 स अव मेरे पर प्रसन्न होउ और वही पूर्व रूप देखावो यह
 प्रार्थना करना है ५५

चौपई

अष्टष्ट पूर्व देखि मे दर्षा पुन भयसे मन मोरदि कर्षा
 ताते देव दर्षी पसीई दृषा हर्ष सुखे जगवास स्वदृषा ५५

151

मम मातुः कं अमुकं विदुः ॥ १ ॥
अथ विदुः कं अमुकं विदुः ॥ २ ॥
अथ विदुः कं अमुकं विदुः ॥ ३ ॥
अथ विदुः कं अमुकं विदुः ॥ ४ ॥
अथ विदुः कं अमुकं विदुः ॥ ५ ॥
अथ विदुः कं अमुकं विदुः ॥ ६ ॥
अथ विदुः कं अमुकं विदुः ॥ ७ ॥
अथ विदुः कं अमुकं विदुः ॥ ८ ॥
अथ विदुः कं अमुकं विदुः ॥ ९ ॥
अथ विदुः कं अमुकं विदुः ॥ १० ॥

अथ विदुः कं अमुकं विदुः ॥ ११ ॥
अथ विदुः कं अमुकं विदुः ॥ १२ ॥
अथ विदुः कं अमुकं विदुः ॥ १३ ॥
अथ विदुः कं अमुकं विदुः ॥ १४ ॥
अथ विदुः कं अमुकं विदुः ॥ १५ ॥
अथ विदुः कं अमुकं विदुः ॥ १६ ॥
अथ विदुः कं अमुकं विदुः ॥ १७ ॥
अथ विदुः कं अमुकं विदुः ॥ १८ ॥
अथ विदुः कं अमुकं विदुः ॥ १९ ॥
अथ विदुः कं अमुकं विदुः ॥ २० ॥

किरीटिनं गदिनं चक्रहस्तमिच्छामित्वां दृष्टुम
हेतयेव तेनैवरूपेण चतुर्भुजेन सहस्रवा
हो भवविष्णुमूर्ते ५६

शाङ्खभाष्यटीका १

किञ्च किरीटिनमिति किरीटिनं किरीटवन्तं तथा गदिनं गदा
वन्तं चक्रहस्तमिच्छामि त्वां प्रार्थयेत्वा दृष्टुमहेतयेव पूर्वव
दित्यर्थः यत्त एव तस्मात् तेनैव रूपेण वसुदेवपुत्ररूपेण च
तुर्भुजेन सहस्रबाहोवात्मानिकेन विष्णुरूपेण भव विष्णुमू
र्ते उपसंहृत्य विष्णुरूपे तेनैवरूपेण वसुदेवपुत्ररूपेण भवे
त्यर्थः ५६

आनन्दगिरिकृतटीका २

तदेव दर्शयेत्सर्तुर्कृतदित्येता यामाह किरीटिनमितीति चक्रं
हस्ते यस्य तमिति युष्मन्ति गदही ताह चक्रेति मदीयेच्छाफलप
र्यन्ता कर्तव्येताह यत्त इति चतुर्भुजे कथं सहस्रबाहूतं तथा
ह वर्तमानिकेनेति सति विष्णुरूपे कथं पूर्वरूपभाक्त्वे तत्राह
उपसंहृत्येति ५६

स्वामिकृतटीका ३

तदेव दृष्टुं विशेषयन्नाह किरीटिनमिति किरीटवन्तं गदावन्तं चक्र
हस्तं च त्वां दृष्टुमिच्छामि पूर्वयथा दृष्टो सितथेव अतो हे सहस्रबा
हो विष्णुमूर्ते इदं रूपं संहृत्य तेनैव किरीटादिपुक्तेन चतुर्भुजेन
भवविभूतो भवतदनेन श्रीकृष्णमूर्तेनः पूर्वमपि किरीटादिपु
क्तेमेव पश्यतीति गम्यते यत्त पूर्वमुक्तं विष्णुरूपदर्शने किरीटिनं
गदिनं चक्रिणं च पश्यामीति तत्र बहू किरीटाद्यभिप्रायेण यद्वा
यत्तावन्तं कालं यत्तां किरीटिनं चक्रिणं च सप्रसन्नमपश्यन्तमे
वेदानीं तेनो राशिर्निरुपश्यामीत्येवं तत्र वचनव्यक्तिरिति
न विरोधः ५६

पिण्णवभाष्यटीका ४

यथा पूर्वदृष्टवानहं तथेव संयुक्तो भव ५६

गमानुजभाष्यटीका ५

किरीटिनमिति तथेव पूर्ववत् किरीटिनं गदिनं चक्रहस्तं त्वां दृष्टु
मिच्छामि अतस्तेनैव पूर्वसिद्धेन चतुर्भुजेन रूपेण युक्तो भव सहस्र

श्री
ती. टी.
प

वाहो विष्णुमूर्तेरदानीं सहस्रवाक्त्रेन विष्णुशरीरेन दृश्यमान
रूपस्त्वेतेनैव रूपेण युक्तो भवेत्तर्थाः ५६

अभिनवगुप्तकृतटीका-६॥

स्पष्टार्थे ५६

परमार्थप्रपाटीटीका ७

अथोपक्रमेऽदृष्टपूर्वकीदृशमित्याह किरीटिनमिति मुकुटवं
तेगदिनेचक्रिणोवेकपल्लवामेन सर्वायुधयुतमिति तेयं अत्रा
यमर्थः विष्णुरूपादर्शनोपक्रमेदिव्यदृष्ट्यापचतर्भुजंतेनोरूपमिति
मनोरमरूपं दृष्टं तदेकं देविना नाम शत्रुभवा गोचरे भवतीति
वैप्रगणादिभ्यः अतमासीत्तदप्रयासतो मया चैव दृष्टमिति दृष्टं
जनकं तथा नंतरं दृष्टा करालमकृप्यपतम् यजनकं मृतस्तदेव
किरीटाक्षपस्कृतं रूपं दृष्टमिच्छामिन त्वभयजं कृतस्माद्वा विष्णु
मूर्ते सहस्रवाहो तेनैव च तर्भुजेन रूपेण भवशा विभव अथा विष्णु
रूपदर्शनात् अत्रातिरमर्जनमर्थं भुजमेव रूपं दृष्ट्वा नितिव
नर्हि पश्यामि देवांस्तु वेदेद इत्यत्र किरीदिनेगदिनेचक्रिणोवेति
पुनर्वक्तुं न युज्यते किं च चतर्भुजरूपे हि देवेन मानुषं तथा
च पश्यमतो देवरूपपतीतो अजानतामहिमानेन वेदेतथापवा
वहासाध्यमसकृतोसीति न युज्यते किं च अवजानेति मां मूढा
मानुषीतनुमाश्रिते तथा दृष्टं मानुषं रूपं तव सौम्यजनादेनैक
पक्रमोपसंहाराभ्यां सर्वमनुष्ठासाधारणस्य ५६ दिभुजं यत्सैव निर्देशात्

वनमातीटीका-६

किरीटवंतेनैव रूपेण वक्रहस्तचक्रादृष्टमिच्छामितथैव तेनैव
मदभ्यस्त रूपेणैव च तर्भुजेन सहस्रवाहो देवि विष्णुमूर्ते यद्यपि भ
वानेन रूपेण याममचितं तस्मिन् रूपेण च तर्भुजेन सहस्रवाहो देवि
शये अविष्मानेन गुणालये वासदेवे एकस्मिन्नेवानेन रूपेण कृति
गुणशक्तयः संतियस्मै स्वभक्ता यत्कृपया रूपगुणदिके यावद
श्रयतितावेदेव स पश्यति न तदुपांतरमतीत्यासत्ता विष्णुरूपा
दिस्मागः पञ्चाननेनित्यमचितं रूपं यदा स न गोपितं विष्णुरूपमि
ति नृसिंह रूपेण गृहीतं विष्णुरूपतोक्तैः तथा च रूपान्तरस्य गोपन
मेव न तस्मादिति भावः एतेनानेन रूपेणापि हररजनेन च त
र्भुजमेव रूपं सदा दृश्यत इत्युक्तम् ५६

रुसमवैजयन्तीटीका-५

तद्वपंकीटगभवतीसपेतायामाह किरीटिनमिति किरीटिनेकिरीटो
 पललितकुंडलकटककेपूरदारकटिसूत्रनूपराद्यलंकारवतंगदि
 नेगदावतंचक्रहस्तचक्रहस्तयस्यते एतेपदेशात्तुपमवतोह
 स्तयोरस्यपललितोःस्तस्यतभुजोक्तिमिदःशाखवतंपमवतंचस
 र्णःईदृशंचतभुजदेहतादृष्टमहमिच्छामि अतोहसहस्रवाहोह
 विष्णुमूर्ते इदानीमिदंरूपमेतर्भावांतथैवपूर्ववदेवतेनैवातिमौ
 दयादिगुणयुक्तोवचतभुजेनरूपेणविशिष्टःसमवप्राउभवः५६

मधुसूदनीटीका १८

तदेवरूपं विवृणोति ॥

किरीटवतंगदावतंचक्रहस्तचक्रहस्तयस्यते एतेपदेशात्तुपमवतोह
 वदेव अतस्तेनैवरूपेणचतभुजेनवसंदेवात्मजतेनभव इहा
 नीहेसहस्रवाहोहविष्णुमूर्तेउपसंरूपविष्णुरूपेष्टरूपेणवप्र
 कटोभवत्यर्थः एतेनसर्वदाचतभुजादिरूपमर्जनेनभगव
 तादृष्टपतद्वस्तु ५६

५६

सदानंदीटीका १९

प्राथमीयेस्वरूपंतद्विवृणोतिदरेर्जयः किरीटिनंगदावतंचक्रह
 स्तमहंप्रिये १ पूर्ववद्रष्टुमिच्छामित्तांश्रियोवासमच्युते चतभुजे
 नतेनैवरूपेणप्रकटोभव २ सहस्रवाहोविष्णात्मनुपसंरूपसर्व
 तः विष्णुरूपेस्वसोभनरूपेणप्रकटोभव ५६

नीलकंठीटीका १२

तदेवरूपमाह किरीटिनमिति एतेनअर्जुनस्यचक्रगदाकिरी
 टोपेतंचतभुजेभगवतोरूपंयारणाविषयइतिदर्शितं हसहस्र
 वाहोहविष्णुमूर्ते सहस्रवाहतादिकमुपसंरूपतेनैवरूपेण
 भवप्रकटोभव ५६

आनंदीटीका

स्वोद्यमेतत्

५६

रामकंठीटीका स्पष्टार्थ ५६

लासिकीदत्तनीटीका ॥ कालरूपसंहरणाय तदेवरूपंविशिनष्टि ॥

श्री
गी. टी.

५

१५३

तथैव सर्वदेवतेनैव किरीटादिकेन यत्नेन पूर्वमपि चतुर्भुजायाः
कारेण श्रीकृष्णमूर्तनः पश्यति स्मेति गम्यते

४६

पंचोलीटीका

तदेव रूपं विशेषेण ग्राह्यं किरीटिनमिति हेसहस्रबाहो अहंत्वा
तथैव किरीटिनं गदिनं चक्रहस्तं दष्टमिच्छामि हे विश्वमूर्ते तेनैव च
तुभ्यं न रूपेण भव ४६

रामवीरसमिहोधिनी ॥

तदेव रूपं दिदृक्षुर्जनो भगवंतं पुनः प्रार्थयते किरीटिनमिति
यत्नं सर्वमेव किरीटिनमित्याद्युक्तं तेनैव रूपेण संयुक्तो भवेति
वाक्यार्थः ४६ ॥

मधुभाष

४६ ॥

भाषा अनुवाद
अब सोई पूर्व रूप कहते हैं कि हे सहस्रबाहो हे विश्वमूर्ति
तुम सोई किरीट मुकुट दियो गदाओ चक्र हाथ से लिये आप
की देखने को इच्छा करता हों इससे अब आप इस विश्वरूप
को संसार करि के वे सही चतुर्भुज रूप स्वरूप धारण करो ५६

वैपरी
गदाकिरीट चक्रधरजैसों चाहत देखामें तो दि तैसों तो देख
चतुर्भुज रूप दि सोहु सहस्रबाहु विश्वमूर्ति होहु ५६॥

154

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
सर्वभूतहितं कुरु सर्वदा ॥
सर्वदुःखहर्त्रा सर्वपापनाशके ॥
सर्वकल्याणकरे सर्वसुखदायके ॥
सर्वविघ्नहर्त्रे सर्वशत्रुनाशके ॥
सर्वभयहर्त्रे सर्वदुर्गतिनाशके ॥
सर्वसुखसागरे सर्वसुखदायके ॥
सर्वसुखसागरे सर्वसुखदायके ॥

ॐ नमो

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
सर्वभूतहितं कुरु सर्वदा ॥
सर्वदुःखहर्त्रा सर्वपापनाशके ॥
सर्वकल्याणकरे सर्वसुखदायके ॥
सर्वविघ्नहर्त्रे सर्वशत्रुनाशके ॥
सर्वभयहर्त्रे सर्वदुर्गतिनाशके ॥
सर्वसुखसागरे सर्वसुखदायके ॥
सर्वसुखसागरे सर्वसुखदायके ॥

श्री.
गी. टी.
५

परमार्थप्रपाटीटीका ७

विभूतरूपसौवर्णिकेन अथाष्टासयनभगवानाह मयेति विभिः
तथाप्युक्तं प्रवृत्तिं तत्रात्मा प्रतिनविदामीति तर्हि आकस्मिकादुत
भयानकरूपदर्शनेन भयमुत्पद्यते प्रकृते तत्प्रसन्नेन मयादिव्यं
हि दानपूर्वकं तव त्वम्मात्मयोगात् प्रितमाया वै भवेन रये सुत्त
हं रूपं दर्शितं अतएव त्वमि विप्रोषणे राह तेजोमयं विस्मयनेन
आद्यत्तदमेन केनाप्यदृष्टपूर्वं ५७

वनमालाटीकी ८

एवं प्रार्थितो भगवान् भक्तिविह्वलये विस्मयपददर्शनस्य उत्तमत्वं
दर्शयन् जनमाष्टासयनाह मयेति हे अर्जुन किमिति विभेषिम
या प्रसन्नेन रूपयावतदेव परमुत्कृष्टमप्यगम्य विस्मयं प्राप्ता
योगाददृश्यमपि स्वसामर्थ्यादर्शितं तेजोमयं प्रकारात्मकं वि
द्यापकमनेन गुणपूर्णं च अनेन देशकालादिपरिच्छेदशून्यं
मेयदिदेहूपमेतादृशाप्रसादहीने न त्वदमेन न दृष्टपूर्वं यद्यपि
श्रीवासप्रसादात्सजयेतामैरपि भीष्मादिभिरप्येवैरपि कैश्चिदप्यदृष्टं
तथापि यथा उर्जुनेन दृष्टं तथा मेनेन दृष्टमर्जुन इवात्मजभगव
त्प्रसादस्यासत्तात् ५८

रुसमवैजयन्तीटीका.

एवमर्जुनेन प्रार्थितो विस्मयरूपमुपसंहृतकृपापूर्णनेत्राभ्यां सभ
यन्मित्रमवलोक्य तमुपलभ्य च यथावितसद्वचनेन तमाष्टा
सयनीं भगवानुवाच विभिः मया प्रपन्नेनेति हे अर्जुन सुहोतस्कर
णयतो दृष्टमिच्छामितेरूपमित्यादि स्वार्थनया प्रसन्नेन तद्विष
यकृपातिशयवता मया आत्मयोगात् आत्मनः स्वस्य योगात्सम
संकल्परूपयोगात् स्वसामर्थ्यादिसंघः परसंवत्सकृष्टमिदं रूपं वि
स्मरूपं तव त्वं दर्शितमतो भये तस्मादि त्वमि प्रायः परतं विह्वलो
तितेजोमये तेजो राशिं विस्मयं सर्वात्मभूतमनेने आदिमध्ययोरुत
तदुपलक्षणं आदिमध्योतरहितमित्यर्थः आद्यं सर्वस्यादिभूत
ईदृगुन्मेममरूपं विस्मरूपं तया दृष्टं तत्तदमेन केनापि जननेन
दृष्टपूर्वं पूर्वमदृष्टं यत्तत्तत्सद्भादिदानीं तदमेरपि देवादिभि
ईदृजतदेतन्ममरूपं भक्तिदृष्टं भक्तताम्यतिप्रदर्शयता मया त
दृष्टस्य तस्य वह सात्त्विकताय देवाय देवादिभ्योपि भक्तिमत्याः प्र

+ एवमर्जनेन प्रासादितो भयवाधितमर्जनमुपलभ्योपसंहृत्य विश्वरूपमवितेन वचनेन
तमाप्तासयन् ॥

दर्शितं यच्चैहास्ति न पुनर्भीष्मदुर्योधनादिभिर्दृष्टं तत्रैव विधमि
नितदमेन न दृष्टपूर्वमित्युक्तं ४७ मधुसूदनी टीका १०

श्रीभगवानुवाच हे अर्जुन मा भेषीः यतो मया प्रसन्नेन तद्विषयकपातिशयवता
इदं विश्वरूपात्मकं परं श्रेष्ठं रूपं तव दर्शितमात्मयोगात् असा
धारणात् निजसामर्थ्यात् परत्वे विवर्णोति तेजोमये तेजः
प्रचुरं विश्वं समस्तमनेन माद्यं च यत्नमरूपं तदमेन केनापि न
दृष्टपूर्वं न दृष्टं

५ पूर्व

४७ मधुसूदनी टीका ११
एवं प्रासादितो विसृज्यते दृष्टार्जनं प्रिय उपसंहृत्य तद्रूपमुवा
चाप्तासयन् ॥ मा भेषीः स्तयतः पार्थ प्रसन्नेन मया तव वि
श्वरूपात्मकं श्रेष्ठं दर्शितं करुणावशात् असाधारणसामर्थ्या
दात्मयोगाभिधायकं तेजोमयं समस्तं यच्चायमेतद्विवर्जितं
तदमेन न केनापि दृष्टपूर्वं कथंचन ४७

नीलकंठी टीका १२
एवमर्जनेन प्रार्थितस्ते स्तवन् भगवानुवाच मयेति विभिः हे
अर्जुन प्रसन्नेन मया तव तभ्येदं परं रूपं दर्शितं आत्मयोगात्
सामर्थ्यात् करुणायानततव दर्शनेऽधिकारोक्तिं तणाच प्रागुक्तं
कर्मण्येवाधिकारस्त्विति तेजोमयं चिरूपं दिव्यं विश्वं विश्वात्मकं
प्रायेऽप्रनादि अनेनैव यत्नरूपं तदमेन कदाचिदपि न पूर्व दृष्टं
दृष्टपूर्वं ४७

अथैवंप्रार्थितो भगवानुवाच ॥ आनेरी टीका
आत्मयोगादेवात्मज्ञानोपदेशेन मयित योगः तयि च मम योग
संबन्धः सैव प्रकारात् परमेश्वर्यसंबन्धमेतद्रूपं प्रकटीकृतम्

४७ ॥

एवं प्रार्थितः सन्नमाप्तासयन् ॥ रामकंठी टीका
अथैवंप्रार्थितो भगवानुवाच स्वबोधमेतत् किं तात्मयोगादर्शित
मित्येतदेवं बोद्धव्यं यदनुग्रहपरेण मया त्वमात्मनि परस्मिन् स्वभावे
योगसमाधिप्रापितस्तदैतद्रूपं तव प्रत्यक्षीकृतं

गी
टी. प.

श्रीभगवानुवाच

नासिकीदशगतीटीका

हे अर्जुन तमाभैषीः यतो मया प्रसन्नेन सता इरेतदनुभूतं परमं तस्य
त्कष्टमैश्वर्यं यमात्मयोगात् आत्मनः श्वरं रूपं योगसमावि
शं प्राप्य त्वद्भो ये पंचमीतव दर्शितम् इष्टं तया तदात्मतया
प्रकृतं परतमेवाह तेजोमये विश्वे विश्वात्मके ते पिते जेोमये वि
त्प्रकाशमयम् अनेतमपरिच्छिन्नम् आद्यं विश्वोत्पत्त्यकारणं
भूतं यत्समस्तं तदनेन त्वाद्दशादनेन पूर्वं तदृष्टं

पंचोलीटीका

अर्जुनं भीतमुपलभ्य विश्वरूपमुपसेह्य प्रियवचनेन आशा
सयन् श्रीभगवानुवाच मयेति हे अर्जुन मया प्रसन्नेन इदं परं
रूपं विश्वरूपं तेजोमयं तेजः प्रायं विश्वसमस्तमनेतमेतद्वदितं
आदौ भवमाद्यमात्मयोगात् आत्मपेक्षया सामर्थ्याद्दर्शितं यन्मे
यद्रूपं मे मत्तदनेन न दृष्टपूर्वं ४३

रागवीरसमिद्धेयिनी

अथ भगवानर्जुनं संभ्रांतं समसमासासयन् विश्वरूपदर्शनं
लक्षणं प्रसादमंगीकृतं प्रत्युवाच मयेति अर्जुनेति संबोधनं
सुदृढचित्तसूचनार्थमिदानीं तां प्रति प्रसन्नेन मयेदं विश्वरूपा
त्वं परं रूपमात्मयोगादात्मनो योगः सामर्थ्यतस्तद्वदितो दर्शितं
कीदृशं तत्तेजोमयं तेजपवप्राचुर्यं यत्तत्तेजोमयं मनंतमा
यमाद्यंतद्वदितं किंतु दित्याह यन्मे इति यत्परं रूपं ततो न्येन ब्र
ह्मादिनापि न दृष्टपूर्वं पूर्वसर्गस्यानुवर्तते च न दृष्टं भगवदनुग्र
हपात्रत्वाभावादिति ४३॥

मधुभाष्य

भाषा अनुवाद

भगवान् श्रीकृष्ण जब ऐसे प्रार्थना किये गये तब अर्जुन
को समझाते हुये तीन श्लोक से यह कहने लगे कि हे अ
र्जुन तम भय काहे लिये करने हो मैंने अति प्रसन्न होय
अपनी योग माया की सामर्थ्य से यह अपना अपूर्व उत्तम
रूप तम को कृपा करि के देखाया है और इस तेजोमय
विष्णुत्मक आदि अन रहित मेरे रूप को तुम्हारे समान भक्त
के बिना कसी और भक्तने कभी भी नहीं देखा है ४०

सौप्य

मैं प्रसन्न होय यह अर्जुन तोहि रूप दिखायो स्वयोगद्वंद्वों
दि तेजोमय विष्णु अनंत आदि सर्व नदृष्ट जो तैं और न
रादि ४० ॥

50

सिद्धिस्तोत्रम्

सिद्धिस्तोत्रम् ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
सिद्धिस्तोत्रम् ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
सिद्धिस्तोत्रम् ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
सिद्धिस्तोत्रम् ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
सिद्धिस्तोत्रम् ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

श्लोकः

सिद्धिस्तोत्रम् ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
सिद्धिस्तोत्रम् ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नवेदयज्ञाय नैर्नदानैर्नचक्रियाभिर्न
तपोभिरुग्रैः एव रूपः शक्यो हेतुलो
के द्रष्टुं तदत्येन कुरुप्रवीर ५५

आत्मनो मम रूपदर्शनेन कृतार्थं एव तं संहत इति ततः
 स्तौति न वेदेति न वेदयज्ञाध्ययनेन दानैश्च तर्णमपि वेदा-
 नामध्ययने यथावत् यज्ञाध्ययने च वेदाध्ययने रेव यज्ञाध्य-
 यनस्य सिद्धत्वात् पृथक यज्ञाध्ययनग्रहणं यज्ञविज्ञानोपल-
 लक्षणार्थं तथा न दानैः तुलापुरुषादिभिर्न च क्रियाभिरपि हो-
 त्रादिभिः श्रोतादिभिर्नपि तपोभिरुग्रैश्चात्मोयणादिभिरुग्रैः
 धीरैः एवै रूपो यथा दर्शिते विस्वरूपं यस्य सोऽहमेवं रूपः
 शक्यो न शक्यः अहं त्वलोके मनुष्यलोके इह तदमेन वृक्रम
 वीर ५६ आनन्दगिरिकृतटीका २

वीर धर्म
ज्ञानरूपिरिक्ततटीका २
तच्छब्देन प्रकृतं दर्शितं परात्प्रपते वेदाध्ययनात् पृथक्
यज्ञाध्ययन ग्रहणं पुनरुक्तेरयुक्तमित्याशङ्क्याह न वेदेति
न च वेदाध्ययन ग्रहणादेव यज्ञविज्ञानमपि तद्गीतमध्य
यनस्यार्थावबोधान्न त्वादिति वाच्यं तस्यान्तरग्रहणान्न त
या हर्दैः साधितत्वादिति भावः श्लोकसुरणार्थमसंदितक
रणं ततो न मदनुग्रहविहीनैति शेषः धर्म

स्वामिकृतटीकादी ३
एतदृशेनमतिउर्लभंलब्धात्वेकतापोसीत्याह नवेदेति वे
दाध्ययनातिरेकेणयज्ञाध्ययनस्याभावात् यज्ञशास्त्रेनयज्ञवि
द्याःकल्पसूत्राद्यालस्येते वेदानोयज्ञविद्यानांवाध्ययनेरित्य
र्थः नवेदानैर्नयज्ञक्रियाभिरग्निहोत्रादिभिर्नवोपेक्ष्यतापोस्वांदा
यणादिभिः एवतूपादंततोमेनमवधत्तेकेदृष्ट्वाव्यःअ
पित्तत्वमेवकेवलेमतप्रसादेनट्ट्वाकृतार्थोसीति ४८

पिशवभाष्यटीका. ५

श्री.
मी. टी.
प

नवेदयज्ञेऽप्ययनेऽपि साध्ययनेः नवक्रियाभिः पुरुषविचर्याभिः
धृद

समानुजभाषाटीका. ५

अनन्यभक्तियतिरिक्तैः सर्वैरप्युपायेष्वप्यावदवस्थितो दे इष्टं
नशक्य इमाह नवेदेति एवेदूपोयणावस्थितो हेमपि भक्तिमे
तत्त्वतो मेन एकोतभक्तिरहितेन केनापि पुरुषेण केवलं वे
दयज्ञादिभिः इष्टं नशक्यः धृद

अभिनवगुप्तकृतटीका ६

स्पष्टार्थ धृद

परमार्थप्रपाटीटीका. ७

अत्रास्य उल्लेखमाह नवेदेरिति वेदाङ्गादयः यत्ताग्रसुमे
धादयः अथ यने शास्त्रपठनेनैः नापितला पुरुषादिदानैः
नवक्रियाभिः श्रोतस्मार्तकर्मभिः तपोभिः कृच्छ्राद्यैः यणादि-
भिः नलोके मनुष्यलोके अर्जकभूमौ तदमेन इष्टमशक्यः
ऊरुप्रवीरेति निर्भयत्वेपि भयोत्पत्तिरुक्तेति सूचितं धृद

वनमालीटीका. ८

एतदपदर्शनात्कमतिउल्लेखं मत्स्यसादेलव्याकृतकुसुमपुष्पाणि
त्वमित्यादनेति वेदानामप्ययने रत्नरत्नरूपेः तेषामिमांसा
कल्पसूत्रादिद्वारा यज्ञानां वेदबोधितकर्मणामप्ययने रथविवा
रूपेदेनैस्तलापुरुषादिभिः क्रियाभिरपि होत्रादिकर्मभिः
तपोभिः कृच्छ्राद्यायणादिभिरुचैः कार्यैरियशो युक्तं तदुक्तं
रेरेवेरुवाह नशक्यः नलोके मनुष्यलोके इष्टं तदमेनैव भूत
मत्स्यसादहीनेन हे ऊरुप्रवीर शक्यो ह मिति वक्तव्ये विसर्गलो
पच्छादसः प्रत्येकं नकाराभासो निषेधदाह्यं धृद

ऊरुमेवैजयन्तीटीका. ५

मइक्तिविनाशेः शापनैरीटशो मत्स्यसादोतिउल्लेखं इति इतिव
दत्त्वस्य स्वरूपस्य प्रामाण्यतामाह नवेदयज्ञाध्ययनेरिति
वेदानां शास्त्रादिनां मप्ययनेः पदकमजदाद्यभ्यासरूपे
तरयदत्तैः यज्ञानां वेदबोधितकर्मणामप्ययने मीमांसाक
ल्पसूत्रादिद्वारा तदर्थं विचाररूपे अत्रानेः स्वेष्टभोग्यवस्तूनां
समावेभ्योऽप्येते नक्रियाभिरपि होत्रादिकर्मभिः न तपोभिः क

+ एतद्वपददर्शनात्मकमतिर्दुर्लभं
मत्प्रसादेल्लङ्घ्यार्थपवा
सित्वमित्याह ॥

५॥

सदानंदीदीकी ११
यत्तत्तद्रूपमेष्वर्यपदेष्टुसुडर्लभं कृतार्थसितमित्याह
तदौर्लभं पवरत्नरिः १ अथ यनेन वेदानो वेदार्थसुविचार
तोः तलापुरुषादिदानैः श्रोतकर्मभिरप्युत २ कृद्वादिभि

श्री
गी. टी.
प

159

सुपोभिर्वाङ्मरैर्देहशोषकैः एवेतूपोनशकोहंतदमेनम
हीतले १ दष्टकुरुकृतमेषमदनुग्रहमेतस ५८

नीलकंठीटीका १२

योगैकगममेतत्कर्मिणोऽष्टापमित्याह नवेदेतिवेदानोपा
ज्ञानां च प्रथयनेरपिगमैः नचदानैः नचक्रियाभिः स्तसत्ता
भिराहर्तादिभिर्वापीकृपारामादिभिः तपोभिः कृच्छ्रचोदाय
णाद्यैः उग्रैः मासोपवासाद्यैः तलोके एवेतूपोहं दष्टनशकाः
रोरुताभावप्रायः तदमेनकुरुप्रवीर ५८

कोस्यसुरूपस्येत्याह ॥

ग्रानेरीटीका ॥

शक्यग्रहमितिच्छान्दसस्तन्निः ५८ यत्तेनविधमेनयोगेनशामः सद्रष्टुमश

वर्तिरिक्तत्वेनास्यपारमेश्वरसुरूप गमकंसीटीका सद्रष्टुमशकत्वादतपवाह ॥

वेदानां यत्तां वदन्त्यादधिगमवदन्त्वमधिगमशब्देनवाच्ययन

श्रवणादयोऽगणाः प्रतिपारिताः दानक्रियातपश्चैस्मदनुष्ठा

ने क्रियाशब्दानुष्ठीयमानव्रतचर्यादिकर्मविशेषवाचकः

यतश्चैवंविधसराचारव्यवस्थितैरपिपराज्ञानमृत्युतादशकाद

शून्यमेतत्परमंममरूपंमदनुग्रहादेवोन्मांलितदिव्यवत्तया

दष्टतेताभयमोहादीनांकोवसरः प्रत्युतमत्सरूपनित्यानुसंधा

नावदितात्मनात्यातरेवस्मर्तव्यमित्यभिप्रायः ५८

नावदितात्मनात्यातरेवस्मर्तव्यमित्यभिप्रायः ५८

नवेदानोचतर्गायुजविद्यानां कल्पसूत्रीटीका

नैर्नचक्रियाभिरपिहोत्रादिभिः तपोभिः कृच्छ्रचोदायणादिभिः

रैर्नपोभिः कृच्छ्रचोदायणादिभिः तपोभिः कृच्छ्रचोदायणादिभिः

शरोमनुष्यलोकेतदमेनदष्टशक्यः अपित्तयवतदर्शनेमोहं

कुरुप्रवीरेतिसामर्थ्यसर्वकाममंत्राणाम् अन्योदिमनुष्याः परिलिख

भयानकवस्तुदर्शनादेवसहसाप्राणांनष्टात् स जीभाववाव्रजे

त काप्रतः कथास्पदर्शनस्य शक्योहमिति वक्तव्ये विसर्गलोपव्या

नमः अतः ५८ ॥

+ किंचकालरूपसंबलितसविष्ठा
त्मकास्पदर्शनेमनुष्यलो
केशकामित्याह ॥

पंचोलीटीका

एतद्वर्णनमतिउल्लंभलव्यात्वंकृतार्थोसीतिस्तवज्ञाह नवेदे-
ति हेऊरुप्रवीरग्रहंनृलोकेमनुष्यलोकेपवंपूर्वदर्शितरूपस्त्वद
नृनृदृष्टंनशक्यः नवेदयज्ञाध्ययनेःचतुर्णामपिवेदयज्ञाध्ययने
यद्वावेदानांयज्ञविद्यानांकल्पसूत्रादीनांचाध्ययनेःनचक्रियाभि
नदानैस्तपोभिरुग्रैश्चोरेस्तपोभिश्चाज्ञयणादिभिरहंनृदृष्टंनशक्यः
५८

राजीवसमिद्धोधिनी

किंच ऊरुप्रवीरेतिऊरुसमथ्येप्रकर्षेणवीरोविक्रान्तोयसस्य
संबोधनं इहंनृलोकेमनुष्यलोके पवंरूप एवंप्रकाशितवि
स्वरूपोदं दृष्टंसाक्षात्तुल्यैर्लक्षयितुं तदन्त्येनत्वतोत्येनाभक्ते
ननशक्यंनृनृदृष्टंनवेदयज्ञाध्ययनेःप्रतिपादयन्ति तदध्ययनं च चतुर्वर्गफलसा
दीयेरेवमंत्रब्राह्मणैःप्रतिपादयन्ति तदध्ययनं च चतुर्वर्गफलसा
धनत्वावगमात् ऊर्वतीतिवेदाध्ययनस्य मोक्षंप्रतिपादयन्तंस्त्व
तमिति तथाच येदानप्रीलादानैरेवात्मानं संभावयन्तः पुनर्कर्म
ऊर्वति तेचफलसाधनत्वावधारणात्तथनंदानसात्ऊर्वतीति
दानप्रीलस्यापिमोक्षंप्रत्यधिकारित्वंस्त्वितमितीष्टापूर्तरूपाभिर्वे
दाध्ययनपूर्वकयज्ञदानक्रियाभिरुग्रैश्चोरेस्तपोभिर्चोरेःकर्मभिश्च
किंनैवंरूपोदृष्टंनृकोपितप्रकाशयवेति किमनेन यन्मेतदन्त्येन
नृदृष्टंपूर्वकत्वंनेत्याशङ्काद नवेदेति एवंरूपोविस्वरूपोदंनवे
देर्नापियज्ञदानादिभिः क्रियाभिर्द्रष्टुंनृकोभगवद्भक्तेरभावादि
तिभावः ५८॥

मधुभाष्य

1867

This image shows a blank, aged, cream-colored page, likely an endpaper or flyleaf of a book. The paper has a textured appearance with visible creases, discoloration, and faint, illegible markings, possibly from a previous page or a watermark. The overall tone is warm and slightly mottled, characteristic of old paper.

भाषा अनुवाद

दानः

और यह अति उल्लभ दर्शन पायके तम अव कृतार्थ भये
हैं सोई कहते हैं कि न वेद अध्ययन सेन यत्न अध्ययन
कहे यत्न विद्या जो कलसूत्र आदि कर्मकाण्ड के अर्थ संग्र
ह किये ग्रन्थ तिन से अर्थात् न यत्न विद्या ध्यायन से और
न सेन अग्निहोत्र आदि क्रियों से न वाग्दायण आदि उपक
हे कठिन तपस्यों के द्वारा यह मेरा रूप नरलोक में देव
ने के शका है सो दे कुरुप्रवीर अर्जुन तम को छोड़ि और
कोई नहीं नरलोक में इस रूप को देवशका है सो तम मे
रे अनुग्रह से इस मेरे रूप का दर्शन करि अपने को कृता
र्थ भये जानो ५६

चौपई

वेद न यत्न पठन दान दि सो दे क्रिया किये तप उपदि जो
दे में नरलोक न पाकों यह रूप दि कुरुप्रवीर तो दि अ
न्यत्र दर्श दि ५६ ॥

मातेव्यथामात्रविमूढभावोदृष्टारूपेवोर
मीदृशमेतद्व्यपेतभीः प्रीतमनाः पुनस्त
तदेव मे रूपमिदं प्रपश्य धर्

आह. रभाषटीका १
मातेव्यथेति माते व्यथामात्रे भये मात्र विमूढभाव विमूढ
चित्ता दृष्टोपलभ्य रूपं चोरमीदृक् यथावद्वर्णितममेतद्व्यपे
तभीर्विगीतभयः प्रीतमनाश्च सन् पुनर्भूयस्तं तदेव चतुर्थं तं
पेशं चक्र गदाधरे तदेष्टं रूपमिदं प्रपश्य धर्

आनन्दगिरिकृतटीका २
विमूढरूपदर्शनमेवं स्तुता यद्यस्मादृष्टमानादिभेषि तर्हितउ
पसंहारमीत्याह माते व्यथेति वक्तुमिदं तन्मममिदं
तदेवमेतत्तं इदमिति धर् स्वामिकृतटीका ३

एवमपि चेत्तदेव चोरं रूपं दृष्ट्वा व्यथाभवति तर्हितदेवरूपे
दर्शयामीत्याह माते इति ईदृक् ईदृशं चोरं रूपं दृष्ट्वा ते व्यथा
मात्रविमूढभावो विमूढत्वाच्च मास्त्वपराजभयः प्रीतमना
श्च सन् पुनस्तं तदेव मे रूपं प्रपश्य प्रकर्षणाय धर्

पिशाचभाषटीका ४ ॥
स्वार्थम् धर्

रामानुजभाषटीका ५
माते इति ईदृशचोररूपदर्शनं न ते वा व्यथा यश्च विमूढभावो
वर्तते तत उभयमाभूत् तथाभ्यस्त सर्वमेव सोम रूपं दर्शयामि
तदेव मम रूपं प्रपश्य धर् अभिनवगुप्तकृतटीका ६ ॥

परमार्थप्रणाटीका ७
अतएवाह माते व्यथेति ईदं चोरं भयानकं मे रूपं दृष्ट्वा ते व्यथा
भंगुरत्वं विमूढभावो प्रातस्तं मास्त्व अतः परं व्यपेतभीः प्रीत
मनाः सन् तदेव पूर्वाभूतं पुनः प्रपश्य धर्
वनमालीटीका ८

१ श्री.
गीटी.
प

इदं चोरमीदृगनेकवाह्यादियुक्तत्वेनातिभयंकरं मम रूपं दृष्ट्वा
स्थितस्य ते तव वा यथाभयनिमित्तापीडा सामाभूत् तथा म
ह्यदर्शनेपियोविमूढभावो व्याकुलचित्ततमपरितोषाद्यः
तोभसोपिमाभूत् किंतव्ययेतभीरयगतभयः प्रीतमना प्रस
न्नपुनस्त्वं तदेव च तर्भुजं वासुदेवाख्यं तया सदा नुभूते रूपं प्र
पश्य भयराहित्येन संतोषेण च पश्य ५५

ऊसमवेजयलीटीका ५

शेषाः प्रथमं वीत्यापितुस्मीमेव स्थिता ये सर्वे धर्मज्ञा अपि
भीष्मादयस्ते तद्वर्षेण प्रकुपिते न मयैव दत्तव्या ज्ञवत तत्रिह न ते
न कोपि भारोऽस्तीति बोधयितुं मये दमति चोरजगत्सह ह्ये रूपं
दर्शितं यद्येतदृष्ट्वा तव वा यथासीत् तर्हि तदेव च तर्भुज रूपं त्वपश्य
साहमाते व्यथेति मेदमीदृक् सहस्रवाक् शीघ्रं कादिप्रकार
कंचोरमतिभयंकरं रूपं दृष्ट्वा प्राते तव वा यथा तदृशं न जभय
निमित्तपीडा जाता सामाभूत् च पुनर्यस्मिन् दर्शनेन विमूढ
भावो व्याकुलचित्तत्वेनापरितोषस्तोपिमाभूत् व्यथेतभीः ति
र्भयः प्रीतमनाः प्रसन्नचित्तस्तन् त्वं पुनर्भूयो मे ममतदेव स्
सारथिभूते हि भुजं च तर्भुजं वा रूपं विग्रहे प्रपश्य प्रकर्षणाति
द्वर्षेणावलोकय ५५

मधुसूदनीटीका १-

इदं चोरमेदृक् अनेकवाह्यादियुक्तत्वेन भयंकरं मम रूपं दृष्ट्वा
स्थितस्य ते तव वा यथाभयनिमित्तापीडा सामाभूत् तथा म
ह्यदर्शनेपियोविमूढभावो व्याकुलचित्ततमपरितोषः सो
पिमाभूत् किंतव्ययेतभीरयगतभयः प्रीतमना प्रसन्नपुन
स्त्वं तदेव च तर्भुजं वासुदेवाख्यं तया सदा पूर्वं दृष्ट्वा
यमिदं विस्मरूपं प्रसारेण प्रकटी क्रियमाणं प्रपश्य प्रकर्ष
णभयराहित्येन संतोषेण च पश्य ५५

सरानंदीटीका ११

माते भयनिमित्ते यं पीडाभूत्मा विमूढता इदं चोरमहद्वप
मीदृक् कातिभयंकरं दृष्ट्वा सर्वात्मकं नानाकारयुक्तं ममैव

एवं तदनुग्रहार्थमाविर्भूतेन
रूपेणानेन च त्रयोदशसु हि

रं निर्भयोभवप्रीतात्मापुनस्त्वपश्यमहपुः तदेवचचनशपा
मंचतर्वाऊंश्रियोज्वले ४५ नीलकंठीटीका १२

इदमतिङ्गलभदशीनेरूपेष्टुपिचेष्टुपिसेतर्हिउपसेह
रामीदमित्ताशयेनाह मातेइति ममइदंईटकचोरूपे
टुष्टुतेतवव्यथामाभूदिति शेषः विमूर्खभावोमोहस्यते
माभूत् व्यपेतभीः निर्भयः प्रीतमनाश्च पुनस्त्वं भूत्वा तदेव
यत्तयाद्रष्टुं प्रार्थितं मे ममेदं रूपे प्रपश्य ५४

आनंदीरीका स्पष्टार्थ

五

रामकंठरीका

चोरंकालपुरुषाया कृतियोगादुग्रं संहारकर्मणा शिष्टं स एवम्

लासिकीय योरी का

ममेश्वरस्य रूपमिदं विप्रवात्मकमिदं तद्वत् भूते चोरे कालपुरुषा
कृतियोगाद्भयं करं दृष्ट्वा स तस्मै वयं भासते विमूढभावे मो
हेन सत्त्वता च मास्तु भयं करं दर्शने दिवोरस्यापि व्याघ्रास्तत्र तयो रस
तद्भवत्येव विगतभयः प्रीतमना सत्त्वाभावेन प्रसन्नचेता संस्तुतः
तदेवैश्वर्यं दर्शनात् प्रादुर्भवत् भजता दिलक्षणा मिदं परिचित्रते
नैदं तथा पुरोभासमानं मे श्रीकृष्णस्य रूपं प्रपश्य सम्यक्समाधि सं
स्कारमवपुष्य इष्टुमर्हो भवतु मे नमो नमो ५६
मंजोरी गीता

पंचोलीटीका

यदापवमिदं चो रं रूपं दृष्ट्वा ते व्यथा जायते तर्हि तदेव प्रागनुभू
तं रूपं दर्शयामीत्याह माते व्यथेति हे अर्जुन मम इदानीं ईदृक्
रूपं चो रं दृष्ट्वा ते तव व्यथा भयं मा भूत् मा च विमूर्छ चितता भू
त् व्यपेतभीः विगतभयः प्रीतमनाः पुनस्तदेव च तर्धु जेशं त्व
चक्रं गदापद्मधरं तवेष्टमे मम इदं रूपं प्रपश्य ४५

राजीवसमिद्धोधिनी॥

163
इदानीमेतादृशोऽप्यदर्शनेनमास्तुतेव्यथेत्याद मातेऽ
ति ममेदं दृश्यमानं चोरे विष्ठाकारं रूपमीदृशं विदिजन
कं मया दर्शितं संप्रति दृष्टुं ते व्यथाभयं चलनं वामास्तु प्र
थवा विमूढभावश्च मूर्च्छितमपि मास्तु किंतर्हि पुनर्भू
यपवप्रत्युत्तं रूपं तदेव तद्भावेनैव यद्यप्यसाक्षात्कुरु तत्क
त्वावप्रीतमनाः संस्तु रूपस्य दर्शनकत्वादतपवव्यपीतभी
र्भव संत्यक्तप्रोक्तमोक्षं भवेति वरदानस्तद्वरणो भगवदनुग्र
हः सिद्धि इति ४५॥

मधुभाष्य

४५

भाषा अनुवाद

जो ऐसा चोर भयानक रूप देलि तम को क्लेश होता है
तो जिसमे तमे मेरा रूप देलि अथा श्री मूर्त्ति न होय
इस से अब तम विगत भय प्रसन्न चित्त होय फेरि हमा
रा सोई वह पूर्व रूप जो देवा चाहते हैं सो देवों ५५

चोपई

ना तो दिव्य था न मूर्त्ति होई चोर रूप मोहि देष सोई भय
कर विगत हर्ष मन होई फिर देव रूप मोहि देष हूं सोई
४५॥

164

विष्णुः सर्वेश्वरः सर्वभूतेश्वरः सर्वलोकेश्वरः सर्वदेवेश्वरः सर्वव्यापकः सर्वशक्तिः सर्वज्ञः सर्वभूतेश्वरः सर्वलोकेश्वरः सर्वदेवेश्वरः सर्वव्यापकः सर्वशक्तिः सर्वज्ञः सर्वभूतेश्वरः सर्वलोकेश्वरः सर्वदेवेश्वरः सर्वव्यापकः सर्वशक्तिः सर्वज्ञः

विष्णुः

विष्णुः सर्वेश्वरः सर्वभूतेश्वरः सर्वलोकेश्वरः सर्वदेवेश्वरः सर्वव्यापकः सर्वशक्तिः सर्वज्ञः सर्वभूतेश्वरः सर्वलोकेश्वरः सर्वदेवेश्वरः सर्वव्यापकः सर्वशक्तिः सर्वज्ञः

संजय उवाच इत्यर्जनं वासुदेवस्तथोक्ता स
 के रूपं दर्शयामास भूयः आश्वासयामास
 च भीतमेनं भूत्वा पुनः सौम्यवपुर्महात्मा ५.

शाङ्ख्यभाष्यटीका १

इत्यर्जनमिति इत्येवमर्जने प्रति वासुदेवस्तथाभूतं वचनं उ
 क्ता स्वकं वसुदेवगृहे जातं रूपं दर्शयामास दर्शितवान् भूयः
 पुनराश्वासयामास चाश्वासितवान् भीतमेनं भूत्वा पुनः सौम्य-
 वपुः प्रसन्नदेहो महात्मा ५. आदितिरिक्तटीका २.

प्रत्यक्षयोग्यत्वं तदिदं वृत्ते राज्ञे सूक्तो निवेदितवानित्याह संज
 य इति तथाभूतं वचने मया प्रसन्नदेहोऽपि च तर्जने रूपं किं त
 स्य रूपस्य परिचितपूर्वस्य प्रसन्नदेहत्वेन चार्जने प्रत्याश्वासनं
 भगवतो युक्तमित्यत्र हेतुमाह महात्मा इति ५.

प्रदर्शनेन

स्वामिकृतटीका ३

एवमुक्त्वा प्राक्तनमेव रूपं दर्शितवानिति संजय उवाच इतीति श्री
 वासुदेवोर्जनमेवमुक्त्वा यथा रूपमासीत् तथाकिरीटादियुक्तं च
 तर्जने रूपं पुनर्दर्शयामास एवमर्जनं भीतमेव प्रसन्नवपुर्भूत्वा पु
 नरणाश्वासितवान् महात्मा विश्वरूपः कृपालुरिति वा ५.

स्पष्टार्थं संजय उवाच ५.

विशाखभाष्यटीका ४ ॥

रामानुजभाष्यटीका ५

संजय उवाच इतीति एवं पाठे न पंचवसुदेवस्य उरुका भूयः स्व
 कीयमेव च तर्जने रूपं दर्शयामास अपरिचितं रूपं दर्शनेन भीत
 मेनं पुनरपि परिचितं सौम्यवपुर्भूत्वा आश्वासयामास च महात्मा स त
 संकल्पश्च सर्वेश्वरस्य परमपुरुषस्य परब्रह्मणो जगदपकृष्टम
 त्स्य वसुदेवसूक्तोऽतर्जने मेव स्वकीयं रूपं कंसभीतवसुदेवप्र
 र्शितेन कंसवधात् पूर्वभुजद्वयमुपसेरुतं पश्चादाविःकृतं वरा
 तो सिद्धे देवदेवेशोऽखचक्रगदाधरदिव्यं रूपमिदं देव प्रसादेनोप
 सेहरउपसेहरसर्वात्मन रूपमेतच्च तर्जनेन मिति हि प्रार्थितं शिशु

श्री.
ती टी.
पे

पालस्यापि द्विषतोऽनवरतभावनाविषये चतुर्भुजमेव वसुदेवस्य
नो रूपं उदारपीवरचतुर्बाहुं शोखचक्रगदाधरमिति अतः पार्श्वेनानेनै
वरूपेण चतुर्भुजेनैव लब्धते ५.

स्यार्थम् ५.

अभिनवग्रन्थतटीका ६

परमार्थप्रपाटीका ७

पुनः संज्ञाय इति इत्युक्तप्रकारेण वासुदेव उक्तास्वकं रूपं चतुर्भु
जं दर्शयामास ५.

वनमातीटीका ६

वासुदेवोर्जनो तथोक्तस्त्वास्ववत्क्रियते प्रकाशयति इति स्वकं रूपं
स्वरूपं विश्वरूपं जानतां स्ववत्प्रकाशयति एतद्वृत्तं जानतां वि
श्वरूपं स्ववत्प्रकाशयति रूपेण परापरत्वे चाधिकारिणामपेक्ष
भगवद्रूपेण उत्तरतया भावात् यद्वा स्वकं स्वकीयमर्जनीयं सदा
र्जनं सेव्यं शोखचक्रगदादिभुक्तं दर्शयामास भूयः आश्वासयामा
स च भीतमेनमर्जने भूत्वा पुनः पूर्ववत्सौम्यवपुश्च शरीरः
महात्मा परमकारुणिकः सर्वेश्वरः सर्वज्ञ इत्यादिकल्याणगुणात्करः ५.

रुसमवेनयनीटीका ५

एवमपरिचितरूपदर्शनेन व्याकुलचित्तमर्जनेन मुक्ता भगवांस्तु
परिचितमेव स्वकं रूपं तं दर्शितवानिति सञ्जयो एतद्वृत्तमुवाच
इत्यर्जनमिति वासुदेवावसुदेवपुत्र इत्येवमर्जनेन मुक्ता तथा
स्वयंकल्पेनैव विश्वरूपं दर्शितवान् तथैव भूयः पुनरपि स्वकं मेव
प्रणम्य पीताम्बरधरं किरीटकुंडलकटको गदकौस्तुभहारकटिस्तु
नूपुराद्यनेकभूषणभूषितं शोखचक्रगदायुगौ पशोभितममं
उरीकनयनं समयमानं सखं पुनर्निजं रूपं चतुर्भुजं विप्रदं
दर्शयामास पुनः सौम्यवपुर्नित्यं कारुण्यं वात्सल्यं शान्तिकांसा
दिगुणपुक्तशरीरो भूत्वा महात्मा सुदारमना इत्यनेन भगवतः
स्वयं तस्थितिप्रवृत्तिकल्पेऽपि भक्ताधीनविग्रहत्वं सूचितं भीतं
अपरिचितं चोराकारदर्शनेन भययुक्तमेनमर्जनेन साश्वासया
मास देवार्थं त्वमसि मतस्तव भयं नास्ति स्वसारं हि मामवलोक
येत्यादिनमवचनेन राश्याशितवान् चकारेण सर्वेश्वरस्य भगव
तोऽयं प्रतीदृशी क्रिया तस्यैव विजयस्य विजयो भविष्यति तत्सु
दयः कृपाः सर्वमदनापेक्षं देममेव त्वमपि मत्तमपि मत्तमिति

* मित्रम्

द्योतितम् ५०

मधुसूदनीटीका १०

वासुदेवोर्जनमिति प्रायुक्तमुक्तायथा पूर्वमासीत् तस्यास
कंदूयेंकिरीटमकरजंडलगदाचक्रादियुक्तं चतुर्भुजं श्री
वत्सकोत्सुभव नमालापीता वरादिशोभितं दर्शयामास भू
यः पुनः प्राश्नास यामास च भीतमर्जनमेतं भूता पुनः पूर्वव
त्सोम्यव पुरनुग्रंशरीरः महात्मा परमकारुणिकः सर्वेश्वरः स
र्वज्ञ इत्यादिकस्याणुणाकरः ५०

इत्येवमर्जनं प्रोक्तं स्वकीयं नृपमीश्वरः किरीटिनं गदाशोख
कादियुतमद्भुतं चतुर्भुजं च श्रीवत्सकोत्सुभप्रभया त्वित
वनमालापीता गंदारके पुरशोभितं २ पीता वरधरं स
र्वसौंदर्यं रसवारिधिं दर्शयामास भीतं ते भूता सोम्यव
हैरिः पुनराश्नास यामास पूर्ववत् करुणाकरः सर्वज्ञः सर्व
शक्तिश्च कस्याणुणासागरः ५०

नीलकंठीटीका ११

संजय उवाच इतीति वासुदेवः अर्जनं प्रति इति पूर्वोक्तरी
त्या उक्ता यथा पूर्वमासीत् तस्यासकं मानुषं रूपं भूयः पुनर्दर्श
यामास यदर्जनं न प्रार्थितं चतुर्भुजं धारणा विषयं रूपं तद
पिति रोदधे इत्यर्थः तस्या महात्मा व्यापकोपि सन् सोम्यव
पुरनुग्रं देहो भूता भीतं एतं प्राश्नास यामास च ५०

न्यानेरीटीका स्पष्टार्थ

अथेतद्वृत्तराष्ट्रप्रति संजय

उवाच ५०

रामकंठीटीका

अथेतद्वृत्तराष्ट्राय संजय उवाच किंतु महात्मा विष्णुयः सत्सौ
म्यवपुः पुनः प्राज्ञं न पुरुषविग्रहात्स दर्शनात्कृतिर्भूता भगवाने
नमज्जने तथा विभाज्यत दर्शनं संवत्सवितं वक्ष्यमाणं न प्रत्याश्ना
स्यदिति तात्पर्यं

श्री
गी. टी.
प

संजय उवाच

लासिकी चत्तुर्लीटीका

एवं वासुदेव उक्त्वा अर्जुने यथा सर्वदृष्टं तथा स्वकं रूपं किरीटारि
पुङ्गव भूयो दर्शयामास पश्यन्ते प्रपुष्टये अर्जुन स्तन्यपानिस्त भ
गवांस्तत्र प्रयोजको भूदित्यर्थः समहात्मा विश्वरूपः श्रीकृष्णः
कालरूपोऽयं महारोगसमाधिसंस्कारनिरसनेन च सौम्यवपुः स
दर्शक इति भूता एते भीते अर्जुने पुनर्वक्ष्यमाणेन प्रकारेणास्मा
सयामास च सांत्वयामास च

पंचोलीटीका

एवमुक्त्वा प्रोक्तं तमेव रूपं दर्शितवानिति संजय उवाच इत्य
र्जुनमिति वासुदेवः अर्जुनं तथेति तथाभूतं वचनमुक्त्वा भूयः
पुनरपि स्वकं रूपं वसुदेव दृष्टे जाते दर्शयामास च पुनः महा
त्मा पुनः सौम्यवपुश्भूत्वा पुनर्भूतमास्मासयामास ५.

रणावीरसमिहोधिनी॥

एतदेव वृत्तांतं धृत्य द्रष्टुं प्रति संजय उवाच इत्यर्जुनमि
ति स्पष्टार्थः ५०॥

मधुभाष्य

५०॥

भाषा अनुवाद

ऐसे वचन कहि कर भगवान ने अर्जुन को वही स्वरूप
अपना देवाया यह सज्जय धृतराष्ट्र से कहते हैं कि म
हात्मा वासुदेव श्रीकृष्णजी ने अर्जुन को सोई चतुर्थ कि
रीटधारी अपना शान्त स्वरूप फेरि देवाया और उरे भये
अर्जुन को आश्वास दिया ५.

वीथई

वासुदेव कहि नरको ऐसे फिर निज रूप दियायो तैसें
ब्रह्मभय कहुं करी आशासा भय पुन सोम्य दूय जग वासा
५.॥

167

अर्जुन उवाच दृष्टुं देमानुषं रूपं तव सौम्यं जना
देन इदानीमास्मि संवृत्तः सचेताः प्रकृतिं गतः

५१

शाङ्ख्यभाष्यटीका १

दृष्टुं दमिति दृष्टुं देमानुषं रूपं मतस्त्वं प्रसन्नं भव सौम्यं
जनार्दने तर्ह्येते गतिकर्मिणोः सगतां देवप्रतिपत्तजनानां प्रा
णवियोगजननकायार्थप्रयोजने सर्वैर्जनेर्याच्यतरति वा गम
यित्वा च जनार्दनः अभ्युदयनिः श्रेयसपुरुषार्थाय इदानीमपु
नास्मि संवृत्तः संज्ञातः सचेताः किं प्रसन्नचित्तः प्रकृतिं स्वभावे
गतश्चास्मि ५१

आनंदगिरिकृतटीका २

एवं भगवदाश्वासितः सन्नर्जनस्तं प्रसन्नवानिमाह अर्जुन उ
वाच ५१

स्वामिकृतटीका ३

ततो निर्भयः सन् अर्जुन उवाच दृष्टुं दमिति सचेताः प्रसन्नचि
तः इदानीं संवृत्तो जातोऽस्मि प्रकृतिं स्वास्थं च गतोऽस्मि शेषं स्पष्टं
सकृत् स्मरन्नुग्रहं प्राप्नुयितुं भवं दर्शयन् ५१

पिशाचभाष्यटीका ४

अर्जुन उवाच दृष्टुं दमिति इदं परं प्राप्ति कारणं ५१

गमानुजभाष्यटीका ५

अर्जुन उवाच दृष्टुं दमिति अनवधिका निशयसौंदर्यसौकुमार्य
लावणादियुक्तं वैवासाधारणं मनुष्यतसंस्थानस्थितमिति
सौम्यमिदं रूपं दृष्ट्वा इदानीं सचेताः संवृत्तोऽस्मि प्रकृतिं गतश्च ५१

अभिनवगुप्तकृतटीका ६

स्पष्टार्थम् ५१

परमार्थप्रपाटीटीका ७

पुनरर्जनः प्राह दृष्टुं दमिति मानुषं मेनुष्ये ईदृशं योगं सचेताः
प्रसन्नचित्तः संवृत्तो जातोऽस्मि प्रकृतिं स्वास्थं च गतोऽस्मि ५१

वनमालीटीका ८

इदानीं सचेता भयकृतं ज्ञानं व्याप्नोति भावेनाप्याकृतचित्तः सं

श्री.
गी. टी.
५

हृतोस्मि तथाप्रकृतभयकृतव्यथाराहित्येन स्वास्थ्यं गतोस्मि स
ष्टमम्यत् ५१

रुसमवेनयनीटीका ५

भगवतस्योत्पत्त्यादर्शनात्तदासासनाच्चनिर्भयः शोतचित्तः स
न्नर्त्तनउवाच दृष्टेदमिति हे जनार्दन ते त्वनेन त्वं उष्टु जनान् हत्वा
स्वजनात्रस्मात्त्रिंशत्तेवेति ह्युचितम् नवविषयरूपस्यानेति
भूतिपतेः सर्वेष्वरस्येदं मन्त्रे त्रिविषयभूते सोम्येति रवयिकाति
शयसौंदर्यसौकुमार्यसौदार्ढ्यसौगन्ध्यसौस्पर्शसौशील्यसौरस्य
लावण्यमनोहादिगुणविशिष्टमानुषमात्रसंस्थानस्थितं
रूपेदेहं दृष्ट्वेदानीमद्यसचेताः प्रसन्नचित्तः भयकृतव्यामोहाभा
वेनाव्याकुलचित्तइत्यर्थः स हृतोस्मि जतोस्मि तथाप्रकृतिगतः
भयकृतव्यथाराहित्येन स्वास्थ्यं प्राप्नोस्मि एवं मया प्रसन्नेनातवा
र्त्तनेन देन वेदयता ध्ययनेनैति ह्युक्तं त्वं स्वविश्वविग्रहस्य उद्देशं
तमुक्तमपुना सु उद्देशं मिदमिहादिनाम कर्मकृदित्यनेन स्वक
समानुषविग्रहस्यापि सु उद्देशं तां दर्शयन् ५॥

ततो निर्भयः सन्

मधुसूदनीटीका १-

इदानीं सचेताः भयकृतव्यामोहाभावेनाव्याकुलचित्तः स हृतो
स्मि तथाप्रकृतिभयकृतव्यथाराहित्येन स्वास्थ्यं गतोस्मि सष्टम
मत् ५१

सदानंदीटीका ११

ततोऽसौ निर्भयो भूत्वा वाक्पमाहाजुनोदरं दृष्ट्वेदं सौम्यरूपं ते वा
सुदेवाभियं परं इदानीं निर्भयो भूत्वा स्वास्थ्यं प्राप्नोति गतः ५॥

नीलकंठीटीका १२

ततो निर्भयः सन्नर्त्तनउवाच दृष्टेति सचेताश्च व्याकुलः प्रकृतिं
गतः स्वास्थ्यं प्राप्नोति स हृतो जतोस्मि ५॥

ततो निर्भयः सन्नर्त्तनउ

शान्तेरीटीका सप्तमः

वाच ५॥

वाच-सष्टमेतत्

रामकंठीटीका ॥

एवं प्रत्यागतप्रकृतिरर्त्तन

ततः सम्प्राप्य कृतोऽर्जुन लासिकी दत्तलीटीका
उवाच हे जनार्दन नन्दपुरः स्फुरत्सोमं सदृशं मानवैरूपं तव दृष्ट्या दृश्यते व्युत्पत्त्या
ने प्रकृतिं स्वभावं जीवन्मूर्त्युं गतः प्राप्तः सन् सचेताऽन्तःकारणान्
वितोदं संवृत्तः संपन्नः ५१

पंचोलीटीका

ततो निवर्त्य मानभयोर्जन उवाच दृष्ट्वेदमिति हे जनार्दन तवे
देसौमं मानवैरूपं दृष्ट्वा ददानीमधुना सचेताः प्रसन्नचित्तः संवृत्तः
संजातः प्रकृतिं स्वभावांगतश्चास्मि ५१

शाखीरसमिद्धोयिनी॥

एवं भगवतोऽप्युक्तं रूपं दृष्ट्वा जाता ह्यदोर्जन उवाच दृष्ट्वेदमि
ति प्रवृत्तजनार्दनेति संबोधनमनिष्टनिवृत्तीत्यपत्तिसाधनत्वा
त्तवेदं मानवैरूपं मनुष्यावतारकं सौम्यमाह्लादकं स्वरूपं दृष्ट्वेदानी
मेव संवृत्तः स्वयं मे प्रवृत्तः स्वयं मेव भगवद्भक्तिमूलस्य मोक्ष
प्रतिपादनत्वावधारणादित्येतादृशोदं सचेताः चेत्यते स्वभा
वो नैनेति चेतः स्वभावसंवित्तेन सद्वर्तते इति तत्संविद्येव प्र
कृतिं सदज्जातांगतः संश्रमस्वभाव इति यावदिति ५१॥

मधुभाष

769

भाषा अनुवाद
तिसके अनन्तर निर्भय होय अर्जुन ने कहा कि हे जनार्दन
न तमारा यह ज्ञान मनुष्य स्वरूप देवि में अब प्रसन्नचित्त
औ सावधान भया हों ५।

होहा
मनुज रूप यह देवके सौम्य जनार्दन तोर स्वयमस्थित
अबमें भयो स्वाभावक चितमोर ५।

170

[Faint, illegible handwritten text]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

श्रीभगवानुवाच सउदर्शमिदंरूपं दृष्ट्वा
नसि यत्नम देवाश्रयस्वरूपस्यनित्यदर्श
नकांतिणः ५२ शाङ्खभाष्यटीका १

सउदर्शमिति सउदर्शं सष्ट उः खेन दर्शनमस्येति सउदर्शं
मिदं रूपं दृष्ट्वानसि यत्नम देवादयोऽप्यसमम रूपस्यनि
त्यं सर्वदा दर्शनकाङ्क्षितोदर्शनेष्वपि न तमिव दृष्टवन्तो न
दस्यन्ति चेत्तमिमांशः ५२ आनन्दगिरिकृतटीका २

उपासनाय विष्णुरूपं स्तोतं भगवत्कृतं उत्थापयति भग
वानिति तद्यतिरिक्तानामिदं रूपं दृष्टमशक्यमित्यतदिशद
यति देवादय इति ५२ स्वामिकृतटीका ३
यत्नेविष्णुरूपं दृष्ट्वानसितत्सउदर्शमसंते दृष्टमशक्यमतोदे
वाश्रयस्वरूपस्यदर्शनमिच्छन्ति केवलं न पुनरिदं पश्यन्ति ५२
विशाखभाष्यटीका ४

स्पष्टार्थं ५२

॥ रामानुजभाष्यटीका ५

श्रीभगवानुवाच सउदर्शमिति ममेदं सर्वस्य प्रशासनेवस्थि
तंसर्वीश्रयंसर्वकारणभूतेयत् दृष्ट्वानूतत्सउदर्शं न न
केनापि दृष्टं शक्यं अस्य रूपस्य देवाश्रयिनिर्देशदर्शनकांतिणः
नतदृष्टवन्तः ५२ अभिनवगुप्तकृतटीका ६

स्पष्टार्थम् ५२

परमार्थप्रणाटीटीका ७

पुनर्भगवान् सउदर्शं सततं उः खेनापि दृष्टमशक्यं मम रूपं य
दृष्ट्वानसि त्रयस्वरूपस्य देवाश्रयिनिर्देशदर्शनमिच्छन्ति मनोरथ
मात्रे कुर्वन्ति परं नु न प्राप्तुं वेति ५२

वनमालीटीका ८

स्वकृतस्यानुग्रहस्याति दुर्लभं तददर्शयति तत्र त्रिभिः मम यद्
पमिदानीं तदृष्ट्वानसि इदं विष्णुरूपं सउदर्शं असंते दृष्टमश

कं यतो देवा अथ स रूपस्य निमित्तं सर्वदा दर्शनकोटि एव न तत्र
मिव सर्वदृष्टवन्तो न वा ये द्रष्टेतीत्यभिप्रायः दर्शनकोट्या यत्नो
क्तैः ५२

श्रीभगवानुवाच स उदंशमिदमिति मम सर्वविषयप्रशासनेः
वस्थितस्य सर्वाश्रयस्य सर्वकारणभूतस्य युद्धं विषयरूपद
शानात्मा कलं दृष्टवानसितदेवदमितानीतनरूपं यदुक्ता
वदेवकीपुत्रं मनुष्याकारविग्रहं स उदंशं न केनापि दृष्टं शक्यं
विषयरूपं उदंशमिदं तस्य उदंशमिति विशेषः अस्य स उदंश
तमेवाह देवा इति अस्मन्नुष्यतमेव सा स्थितस्य रूपस्य देवा
अपित्रेणादयोपिनित्यमनवरतं दर्शनं कालिणं स न तदृष्टं
तः अयं भावः यथा भगवतो मम विषयविग्रहस्तेनोत्पलेष्यर्था
दीनां कुरुत्वमयं कुरुतादीनां च गुणानां व्यापारमस्य राय
मिति यथात्मेन देवैरपि न जानो मनुष्यैस्तु का कथा तथा कुरु
रूपे मनुष्ये विग्रहेऽपि सो दध्यलावापव लपोरुषवुद्यादिभि
र्गुणैः पशुचारणतपरदाररमणतभूततारिपुभयपलायन
तत्तत्सारथिवादि कर्मभिश्चाहृतमीश्वरतयाथातयेव ब्रह्मा
दयोपि न जानंतीतरेकिमुक्तव्यमतो मदनुग्रहेणैव सदृशं
ममथा स उदंशमिति ५२ मधुसूदनीटीका १३

ममथासुददेशमिति ५२ मधुसूदनीटीका १३
ममयद्रूपमितानी तं दृष्टवानसि इदेविस्वरूपं सर्वदर्शनमसं
दृष्टमशक्यं यतो देवाश्च षण्ण्यस्य रूपस्य नित्यं दर्शनकोटिणाः
न तत्त्वमिव पूर्वं दृष्टवन्तः नवायेदस्य तीक्ष्णमभिप्रायः दर्शना
कांतायानिमित्तैः

सदानंदीदीका ११

स्वकृतस्य प्रसादस्य उल्लेखं भवेत्प्रदर्शयन् उवाच भगवानेव
स्वभावस्य जयं प्रति १ विष्णु रूपं मदीयं यत्तमिदं दृष्टवानसि
तदसं तमशकं हि दृष्टं देववररूपि २ देवास्त दृष्टमिच्छन्ति स
तते सातिका अपि न तं तमिव सर्वं ते दृष्टवन्तः कदाचन न चै-
वापि द्रष्टुं ति श्रीहरेरयमाशयः ५२

नीलकंठीटीका. ५२

अस्य विश्वरूपदर्शनस्य दौर्लभ्यं दर्शयन् श्रीभगवानुवाच
सुहृदं प्रीतिं दर्शनकोटिणाः दर्शने कोटिने पवनतलभं
ते ५२

अस्य रूपस्य दुर्लभदर्शनतां व्याख्याय श्रीभगवानुवाच ॥
देवा ब्रह्मादयो पितृ तत्सर्गादि स्वाधिकारव्यग्रविजितया परा मृष्टेन
सभावाः ५२

अर्जुना सा साय भगवानुवाच ॥ रामकंठीटीका
निगदयामास तत्रायमेतत् यतः सर्गादि तत्स्वाधिकारव्यग्रवि
जितपरा मृष्टसभावात् ब्रह्मादयो देवा अप्यस्य रूपस्य परासाता
कारमभिकोदन्ति न तलभं ते ५२॥

दर्शयन् दृष्टवान् सात्ताकृतवान् अमृतस्य मृष्टस्य ५२ ॥
लासिकी रसमयीटीका ॥ सकृत्तस्यानुग्रहस्यातिदुर्लभत्वं

पंचोलीटीका

सकृत्तस्यानुग्रहस्यातिदुर्लभत्वं दर्शयन् श्रीभगवानुवाच
सुहृदं प्रीतिं हे अर्जुन मम हृदये सुहृदं प्रीतिं सुहृदं प्रीतिं सुहृदं प्रीतिं
यत्तदृष्टवानसि देवा अपि अमृतस्य मृष्टस्य निमित्तं निमित्तं दर्शनकोटि
दिणो भवेति ५२

ररावीरसमिद्धे धिनी ॥

अथ भगवानर्जुनं पुनराव्यासास्यितमाह सुहृदं प्रीतिं
गतार्थमेतच्छ्लोकद्वयं ५२॥

मधुभाष्य

172

50

THE FIRST PART OF THE HISTORY OF THE
REIGN OF HENRY THE SEVENTH
OF ENGLAND
BY
JAMES HALLAM
ESQ.
OF LINCOLN'S INN
IN TWO VOLUMES
VOL. I.
LONDON:
PRINTED BY J. JOHNSON, ST. PAULS CHURCH-YARD, 1795.

भाष्य अनुवाद

निसके वादि भगवान अपनी कृपा की उल्लभता देखाव
ते हैं कि जो यह हमारा विश्वरूप स्वरूप तम ने देखा
इस का दर्शन अति उल्लभ है देखो देवतागण भी इस रू
प के दर्शन की इच्छा सर्वदा करते हैं परन्तु इसका दर्श
न नहीं पावते हैं ५२

दोहा

उल्लभप्रतिपाद्यरूपयद् जो मम देखातेहुं स्रग्भिलाखी
दर्शके नित्य यादिरूपके पडुं ५३॥

THE END

[illegible]

55

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

नाहं वेदैर्न तपसान दानेन न चेज्यया श
क्य एवं विधौ दृष्टवानसि यत्नम ५३

शाङ्खभाष्यटीका १

कस्मात् नाहमिति नाहं वेदैः ऋग्यजुः सामाथर्ववेदैश्च त
र्भिरपि न तपसोऽपि चान्द्रायणा दिना न दानेन गोभूहिराणा
दिना न चेज्यया यजेन पूजया वा शक्य एवं विधौ यथा दर्श
तप्रकारो दृष्टमभेरशको दृष्टवानसि मां यथा त्वं ५३

आनन्दगिरिकृतटीका २

दर्शनोपायाभावात् उदर्शितमिति शङ्कते कस्मादिति वेदादिमूला
येषु सतस्त्वपि भगवानुक्तकूपो न शको दृष्टमित्याह नाहमिति त
र्हि दर्शनायोग्यत्वात् दृष्टमशक्यत्वमिमांशक्याह दृष्टवानिति ५३

स्वामिकृतटीका ३

तत्र हेतुर्नाहमिति स्पष्टार्थः ५३ पिशाचभाष्यटीका ४

स्पष्टार्थम् ५३

रामानुजभाष्यटीका ५

नाहमिति भक्त्येति वेदैः अध्यापनप्रवचनध्वयनश्रवणजपवि
षये रीतिगदान्तोमतपोभिस्समद्वक्तिविरहितैः केवलैर्यथावदव
स्थितो हं दृष्टमशक्यः ५३ अभिनवगुप्तकृतटीका ६

नमोनम इत्यनेन योनः पुण्यं भक्त्यातिशयाविकाराण्ययदेव भग
वता तिकांताध्यायैरभ्यासस्वरूपं तदेवार्जनः प्रमत्तोपलभ
विषयापन्नोत्तरद्वारेण प्रकटयतीति तद्याख्यानं केवलं योनरु
क्तप्रसंगायेति विरम्यते ५३ परमार्थप्रणालीटीका ७

नाहं वेदैरिति गतार्थं

विस्तारोक्तं नमो वेदैः केवलं नमो यथावदव

वनमालीटीका ८

कस्माद्देवा एतद्रूपेन दृष्टवन्तो न वा द्रव्यमिदं दीयतां दृष्टानुग्रह
शून्यत्वादित्याह न वेदयता ध्वयने रित्यादिना गतार्थः स्मार्कः परम
उल्लेखतत्वापेक्षया भयः ५३

श्री.
गी.टी.

ऊसमेवेजयन्तीटीका ५

यथा मम विष्णु रूपं भक्ति हीनैः पुरुषैर्वेदाध्ययनादिभिः साधनैः
ईदं दर्शयामासुष्य रूपं मपीत्याह नाहं वेदैरिति यथा त्वमात्रं
षरूपं मोह एवानसितं यैर्वेदविधौ तस्य देवसूनुर्हि भुजश्च त
भुजो वा तत्सारथिरहं मद्रु किं भूमेः कैश्चिदपि पुरुषैर्वेदाध्यय
नानिभिरपि साधनैर्दृष्टुं न शक्यः ५३

मधुसूदनीटीका १-

कस्माद्देवा एतद्भूषणं न दृ
ष्टुं न वा येदं निति मद्रु
किं नृत्वादिन्याह ॥

न वेदयज्ञाद्यधनेरित्यादिना गतार्थो येषोक्तः परमदर्शमव
स्थापनाय पुनरभ्यस्तः

सदानेदीटीका ११

कृतपतत्र देवाले दृष्टुं न वा पुनः द्रष्टुं निति मद्रु तं मद्रु
किर्या प्रेमलक्षण १ नृयेषां सासु मन्त्रान्तेन श्रुति कारिणः
वेदैरधीनैस्तपसादानैर्धनैरहं हरिः २ दृष्टुं न वेदविद्योनास्मि
शक्यो दृष्टुं यथा तया १ ५३

नीलकंठीटीका १२

नाहमिति न वेदयज्ञाध्ययनैरित्यनेनोक्तपदार्थः पुनरुच्यते
विष्णुरूपदर्शनस्यातिदोर्लभ्यसूचनाय स्पष्टार्थश्चोक्तः ५३

श्रानेदीटीका स्पष्टार्थम् ५३ अत्रोपायमाह ॥

रामकंठीटीका

ततः सततं सर्वेण केन विदुश्चरदर्शनमेतद्यत्नयामासुष्य साराविर्भू
तपरत्नानवत्तुष्टादृष्टमतो यथा मोत ततः साक्षात्कृतवांस्तथादाना
दिक्रियासकैर्दृष्टुं न शक्यः

लासिकी वसुपतीटीका

तत्र हेतुः ॥ स्पष्टार्थः

५३ ॥ ॥

पंचोलीटीका

नाहमिति नवेदैः ऋग्यजुः सामाथर्वीभिः तपसोऽग्ने एवैश्याणा
दिनानदानेनदानेनगोभूहिरण्यादिनानचेज्यायजेनअसमेथा
दिनापवेविथोदष्टुनशकः यथात्वंमां दृष्टवानसि ५३
रणवीरसमिद्धोधिनी॥

स्य सार्थः ५३॥

मधुभाष्य

५३॥

123

महाराजस्य विद्वत्पुत्रस्य नामः कृतः ॥ १ ॥
महाराजस्य विद्वत्पुत्रस्य नामः कृतः ॥ २ ॥
महाराजस्य विद्वत्पुत्रस्य नामः कृतः ॥ ३ ॥
महाराजस्य विद्वत्पुत्रस्य नामः कृतः ॥ ४ ॥

महाराजस्य विद्वत्पुत्रस्य नामः कृतः ॥ ५ ॥

महाराजस्य विद्वत्पुत्रस्य नामः कृतः ॥ ६ ॥

भाषा अनुवाद
उस अपने रूप के उल्लभ दर्शन में कारण कहते हैं कि
तम ने जो रूप मेरा देखा वह वेद अध्ययन और तपस्या
या दान यज्ञ के द्वारा किसी की देवते की सामर्थ्य नहीं है ५१

दोहा

नाम तपयज्ञदान से वेदहि से पुन पढ़े यद विध देष न
शाका हों जिद विध देवातेह ५२॥

106

ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ
ਮਨ ਮਨ ਮਨ ਮਨ ਮਨ ਮਨ ਮਨ ਮਨ ਮਨ ਮਨ
ਮਨ ਮਨ ਮਨ ਮਨ ਮਨ ਮਨ ਮਨ ਮਨ ਮਨ ਮਨ
ਮਨ ਮਨ ਮਨ ਮਨ ਮਨ ਮਨ ਮਨ ਮਨ ਮਨ ਮਨ

ਮਨ

ਮਨ ਮਨ ਮਨ ਮਨ ਮਨ ਮਨ ਮਨ ਮਨ ਮਨ ਮਨ
ਮਨ ਮਨ ਮਨ ਮਨ ਮਨ ਮਨ ਮਨ ਮਨ ਮਨ ਮਨ
ਮਨ ਮਨ ਮਨ ਮਨ ਮਨ ਮਨ ਮਨ ਮਨ ਮਨ ਮਨ

भक्त्या तनयया शक्यं महमेवंविधोऽर्जन
सातेद्रष्टुं तत्त्वेन प्रवेष्टुं च परतप ५५

शाङ्खभाष्यटीका १

कथं पुनः शक्यं इत्यनेन भक्त्या त किं विशिष्टं येनादय
नम्या अष्टमभूतया भगवतोऽन्यत्र पृथक् न कदाचिदपि
भवति सा तनया भक्तिः सर्वेऽपि करोतां सदेवादमनं लभते
यथा सा तनया भक्तिस्तथा शक्यं महमेवंविधो विप्रवरूपप्रकारो दे
अर्जनं साते शक्यं तान केवले साते शक्यं तद्रष्टुं सात्तात क
र्तुं तत्त्वेन तत्ततः प्रवेष्टुं च मातृत्वं गन्तुं परंतप ५५

आनेदगिरिकृतटीका २

केनोपायेन तर्हि द्रष्टुं शक्यं भगवानिति पृच्छति कथमिति शा
स्त्रीयज्ञानद्वारा तदर्थं सफलं सिध्यतीत्याह उच्यते इति नभक्ति
मात्रं तत्र हेतुरिति तत्रार्थं सूचयति किमितिना अनमभ
क्तिमेव व्यनक्ति सर्वेऽपि ५५

स्वामिकृतटीका ३

केनोपायेन तर्हि तद्रष्टुं शक्यं इति तत्राह भक्त्या अनमया मदेकनि
ष्टया भक्त्या तत्रैव भूतो विप्रवरूपो देव तत्त्वेन परमार्थतो साते शक्यः शा
स्त्रतो द्रष्टुं च प्रत्यक्षतः प्रवेष्टुं च तादात्म्येन शक्यो नां मेरुपायैः ५५

पिशाचभाष्यटीका ४

स्यार्थम् ५५

रामानुजभाष्यटीका ५

अनमया भक्त्या ततः शास्त्रे साते तत्ततः सात्तात्कर्तुं तत्ततः प्रवेष्टुं
च शक्यः तथा च कतिनायमात्मा प्रवचनेन लभ्यते न मेथयानवद्वं
नास्तेन यमेवैष ह्यनेन तेन लभ्यते सौष आत्मा विहाते तत्तत्त्वा
मिति ५५

अभिनवगुप्तकृतटीका ६

स्यार्थम् ५५

परमार्थपदाटीका ७

किं हेतुर्न पर्वति धोतमन्य ७ या यमिवादिण्या भक्त्या तत्त्वेन रा
तं शास्त्रतः द्रष्टुं प्रत्यक्षतः प्रवेष्टुं तादात्म्येन शक्यः नास्तथा ५५
वनमालाटीका ८
वेदतपोदानेत्यादिभिर्द्रष्टुं शक्यं तर्हि केनोपायेन द्रष्टुं शक्यो सीत

श्री.
गी.सी.
प

तत्राह भक्त्येति साधनान्तरव्याहृत्य मर्थस्तथाहः भक्त्येवाननमयामदेक
निष्ठया सर्वोत्तमत्वज्ञानपूर्वका विच्छिन्न प्रेमपवाद रूपया एवंविधो
दिव्यानेतनिरतिशयैश्चैविशिष्टविश्वरूपवानदेशास्तोत्तातेश
कप्रहमितिच्छोदसो विसर्गलोपः न केवलं यरोत्ततोत्तातेशकोपि
तत्तत्तेन दृष्टं च एतादृशभक्तिपूर्वक वेदोत्तमवर्णमननतिदिध्यास
नादिभिरनेतगुणालयोद्धेतैश्चैविशिष्टरूपायनेतद्रूपवानस्वयोग्य
तानुसारेण शेषतया सात्तात्तेशक्यः प्रवेष्टुं मत्सात्तात्कारानत
रमत्प्रसादेन निवृत्तिनिशेषाविश्रुतया मुक्तेन शमंशक्यः प्रवेशो
हि भगवत्साधुग्यादिकेन लोकप्रवेशः साधुग्यादि रूप संक्षेपविशे
षपदवामवेशः ५५

ऊत संवेजयतीतीका ५५

ननु यदि वेदतपोदानेत्यादिभिः साधनैस्त्वमशक्यस्तर्हि केनोपाये
न दृष्टं शक्यः सीति चेन्न तत्राह भक्त्या त्वनमयेति तत्राहः साधनान्त
रनिरासाथकः हेः तन्नयथाविश्वरूपतिरहे भक्त्येव दृष्टं शक्यो ना
मैरूपायैस्त्वयैवं विधानाकारश्च तर्भुजोऽहमनमयाऽव्यभिचा
रिणा देवान्तेरोपासनरहितया भक्त्या साधनरूपया पराध्या
शक्यः किं कर्तेशक्यः सीत्येतायामहं तात्तमिति वेदोत्तादिशक्त
स्तत्तेन याथात्म्यस्वरूपगुणादिकत्वेन सात्ततोद्धेच पुनस्तत्तेन द
ष्टं सात्तात्तं त्वेव पुनस्तत्तेन प्रवेष्टुं मद्रावायतिलक्षणं मोक्षं प्राप्तं श
क्यो नायैरूपायैरित्यर्थः नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यते न मेधयानव
रुना श्रुतेन न मेवेष्टुं श्रुतेन लभ्यते न मेधयानव
मिमादिश्रुतेरप्येकार्थतात् परंतपेति संकोचनेन मद्रक्तिरहिता
मसाधनकदम्बात्मकशत्रुनाशकस्त्वमेवासिनामः शतिसूचितम् ५५

मधुसूदनीतीका ५५

यदि वेदतपोदानेत्यादिभिः साधनैस्त्वमशक्यस्तर्हि केनोपाये

। दृष्टं शक्यो सीत्यत आह

साधनान्तरव्याहृत्य मर्थस्तथाहः भक्त्येवाननमयामदेक निष्ठयानि १
तिशय प्रीत्या एवंविधो विश्वरूपयरोहं तातेशक्यः शास्त्रतः हे अर्जन
शक्यप्रहमितिच्छोदसो विसर्गलोपः प्रवेष्टुं न केवलं शास्त्रतोत्तात
शक्यः अनमया भक्त्या कित्तत्तेन दृष्टं च स्वदूषेण सात्तात्तं त्वेव श
क्त्येवोत्तवाक्यप्रवचनमननतिदिध्यासनपरिपाकेन ततः वित्स्वरू
पसात्तात्कारादविद्यातत्कार्यनिवृत्तौ तत्तेन प्रवेष्टुं च मद्रूपतयेवा
वाहं शक्यः हे परंतपश्चत्तानशत्रुमर्दनेति प्रवेशयोग्यता सूचयति

नायपुंजीकृतोच्यते ५५ सदानंदीटीका ॥

यदिदृष्टमशक्यं तपोवेदाधरादिभिः केनोपायेन तर्हि दृष्टं
शक्योऽसि चेति चेत् १ साधनोत्तरव्याहृतो तशब्दो बोध्य उक्तमेः स
देकनिष्ठया प्रेमभक्तौ वाहं महेश्वरः २ दिव्यरूपधरो ज्ञानेश्वरः
शास्त्रज्ञो ज्ञेयः साक्षात्कर्तृस्वरूपेण वेदवाकोऽप्याधिया श
क्यश्चास्मि सदा प्रेमभक्तौ वाराधितो जनेः साक्षात्कारादविद्यातका
यहात्मा च तत्ततः ५ मत्स्वरूपतयेवाप्रोक्तो वाहं देव परंतप अन
न्येव भक्त्या तं सदा भीमाश्रयार्जन ५५

नीलकंठीटीका १२

कथं तर्हि दृष्टं शक्यं त्वमत आह भक्त्यति भक्त्या आश्रयते न अन
न्यथा अथाभिचरितया अविद्येयार्थः अदेयवे विद्यो ज्ञानेश्वरः
तं पदार्थं शोधकशास्त्रतः दृष्टं शक्यं ध्यानतः तत्त्वेन याथात्म्येन
प्रवेष्टुं शक्यं त्वमसि वाक्यार्थं ज्ञानतः हे परं ज्ञान प्राप्तेता
पयतीति परंतपः ५५

आनंदीटीका सप्रार्थः ५५ ॥

रामकंठीटीका

केन तर्हिोपायेन शक्योऽसीत्याह ॥
भक्त्या मदिच्छयेत् परदेवसर्गो भिजात जनसत्त्वभयापरिचर्यया तत्
भावादेवा विभूतसंस्पृष्टान तादविद्यमानमद्यतिरिक्तभजनीयवि
षयत्वे सत्यनमया सातु मविसे वारिता वगमेन बोद्धुं तया संस्पृष्टान
लक्षणो नोपायेन दृष्टं गोचरी कर्तुं तथा तादृशेण यपरिशीलनाभ्या
साति शयात्प्रवेष्टुमात्मतया वगादुमेवं विधो यथा तया तु भूतः प्रा
कोहं नानैरुपाये स्तं च परस्मात् रूपस्य साक्षादर्शनात्प्रवेशपर्यंतं
परां भूमिं सधिरुक्तेन इत्यरहैतमोहसागरादुत्तीर्णः समाश्रयमिदि
कृतस्तवेदानीमदृष्टपरमार्थं जनोचितैर्भयान्निदोषैः संवंपरार्थः ५५ ॥

लासिकी टीका

नन्वेवं चेत् केनोपायेन तर्हि दृष्टं शक्यं इति तत्राह ॥

श्री
गी. टी.
प.

अनन्ययामह्यातिरिक्तयाकांक्षणी परहितयाभक्ता प्रेमातिशय
पुंकेनोपासनेन एवंविधस्तदनुभूतोविश्वात्मकोहेतातंप्रत्यभिता
तम् द्रष्टुंसाक्षात्कर्तुंप्रवेष्टुमात्मतयावगाहं चशक्यः नामैरुपाये
तत्त्वधारणोसाधनोतरयाद्युत्तर्यः

पंचोलीटीका

केनोपायेनतर्हिद्रष्टुंशक्य इतितत्राह भक्तेतिहेअर्जुनतुप्र
नः अहमेवंविधोअनन्ययामभक्त्यानविद्यतेअन्यउपाधिर्यस्यासा
तयाअनन्ययामभक्त्यासर्वैरपिकरणैर्वासुदेवादम्यत्रोपलभ्यते
तत्त्वेनतत्त्वतः याथात्म्येनद्रष्टुंशक्यः चपुनःअन्यतशास्त्रतोज्ञात
द्रष्टुपरमेश्वरेणपेकांगंतंहेपरंतपअहेशक्यः ५४

शांतीसमिद्धोधिनी॥

भक्तेति हेअर्जुन भक्त्यातत्त्वतः यज्ञादिभ्योविशिष्टपदश
मिसाधकत्वद्योतकः अनन्ययार्थान्निष्ठयामभक्त्यार्थादह
तकर्मणोममदरेः अवराकीर्तनध्यानात्मिकयासुश्रूष
यादमेव अवरादिकमतोज्ञातंतद्वुद्रष्टुं तत्त्वेनपरमार्थ
हेतुनाप्रवेष्टुंचभक्तेनयाकोनतत्त्वतः यत्तसाध्यस्वर्ग
कामेष्टयेतिभावः ५४॥

मधुभाष

५४॥

भाष्य अनुवाद

जो के पि कौन उपाय से आप दर्शन दे सकते हैं जो यह कहो
जो कहते हैं कि हे अर्जुन अनन्य कहे मदेकचिन्न भक्ति ही के
द्वारा ऐसे विश्वरूप से हम प्रगट हो सकते हैं और वह भक्त
भी हमें जानि शकें हैं और हे परमप अर्जुन शास्त्र से प्रसन्न
औ तत्काल रूप प्रवेश अर्थात् उस रूप में लीन हम कराय श
कते हैं और कोई भी उपाय नहीं है ५४

दोहा

अनन्य भक्तिकर प्राक्स में अर्जुन यादि विधान जानन देषन
तबसे प्रवेश परंतप जान ॥ ५४

1912

[Faint, illegible handwritten text]

56

[Faint handwritten text at the bottom of the page]

मन्त्रकर्मकृतापरमोमदक्तः सङ्गवर्जितः
निर्वैरः सर्वभूतेषु यः समा मेति पाएव ५५
इति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मवि
द्यायोगो ग्यासास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसेवादेवि
श्वरूपदर्शनेनामैकादशोऽध्यायः ॥

शाङ्ख्यभाष्यटीका ।

अथुना सर्वस्य नीताशास्त्रस्य सारभूतोऽर्थो निःश्रेयसार्थो नृपे
यत्नेन समुच्चितोच्यते मत्कर्मकृदिनि मत्कर्मकृतमदर्थं क
र्म मत्कर्म तत् करोतीति मत्कर्मकृत मत्परमः करोति भ
त्यः स्वामिकर्म न त्वात्मनः परमा प्रेत्य गन्तव्या गतिरिति स्वा
मिने प्रतिपद्यते अयन्त मत्कर्मकृतमामेव परमा गतिं प्रति
पद्यते इति मत्परमोहं परमः परा गतिर्यस्य सोऽयं मत्परमः
तथा मद्भक्तः मामेव सर्वप्रकारैः सर्वात्मना सर्वात्मादेन भजत
इति मद्भक्तः सद्भवर्जितः यन्मित्रपुत्रकलत्रवन्धुवर्गेषु स
द्भवर्जितः सद्भः प्रीतिः स्नेहवर्जितो निर्बैरो निर्गतवैरः अतः स
र्वभूतेषु शात्रुभावरहितः आत्मनोऽपनायकारप्रहर्तृष्वपि
यईदृशो मद्भक्तः समाप्तेऽहमेव तस्य परा गतिर्नास्तीति कदाचि
द्वदतीति ५५ इति श्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां श्री
गणेशोपनिषद्भाष्यटीकायां एकादशोऽध्यायः ११ ॥

अत्र गिरिकुतटीका २

भक्त्यातिथि विशेषणद्वयमदत्तमाशङ्क्यादप्रुनेति स
 पुत्रित्वं सति पुत्रीकृत्येति यावत् सकर्मकद्वयके मय
 रमत्वे आर्थिकं इति पुनरुक्तिरित्याशङ्क्याद करोतीति भग
 वानेव परमा गतिरिति निश्चयवत्तत्वेन निष्ठा सिध्यतीत्याह
 तथेति ननुवेव सर्वप्रकारेभजनं ध्यादिस्नेहाकृष्टादित्याश
 ङ्क्याद सङ्गेति द्वेषपूर्वकानिष्ठाचरणं वैरं अनपकारिषु तद्भावे
 पि भवत्येवापकारिष्विति शङ्किताद आत्मन इति एतच्च सर्वं
 संतिष्ठानुष्ठानार्थमुक्तमेव मनुतिष्ठतो भगवत्प्राप्तिरव
 स्माविनीत्यपमंदरति अयमिति तदेवं भगवतो विश्वरूपस्य

शुभ

श्री.
गीटी.
प

सर्वात्मनः सर्वज्ञस्य सर्वेश्वरस्य सकर्मकदिन्यायेन कममुक्ति
फलमभिधानमभिवदता तमदवायोः शोचोवस्थापितः ५५
इति श्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायोगो गणेशः श्राने
दगिरिकाटीयो एकादशोऽध्यायः ॥

स्वामि कृतटीका ३

श्री

अतः सर्वशास्त्रसारं परमरहस्यं शृण्वित्वा ह सकर्मकदिनि म
दर्शकर्मकरोतीति सकर्मकं अहमेव परमः पुरुषार्थः य
स्य सः ममेव भक्तिमाश्रितः पुत्रादिषु संगवर्जितः निर्वैरश्च स
र्वभूतेषु एव भूतो यः समाप्ताप्रोतिनाम इति ५५ देवैरपि सु
दर्शितो दानादिको दिभिः भक्ता य भगवानेवं विष्णुरूपमदर्श
यत् ॥ इति श्रीभगवद्गीतासु बोधिगोटीकायां विष्णुरूपदर्शनं
नामैकादशोऽध्यायः ॥

विष्णुभाष्यटीका ४

अदेवासु देवः परमं प्रधानं यस्य समत्परमः ५५ इति श्रीभ
गवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायोगो गणेशः श्री
कायो एकादशोऽध्यायः ॥

रामानुजभाष्यटीका ५

वि

मदिति वेदाध्ययनादीनि सर्वाणि मदारथनरूपाणीति यः क
रोति समतकर्मकं न मरः सर्वेषामारंभाणामहमेवोद्देश्यो
यस्य समत्परमः अर्थमन्त्रियते न मत्कीर्तनं न तु तिथ्या न च
न प्रणामादिभिर्विनात्मधारणमलभमानो मदेकप्रयोजनत
यायः स तत्ते तानि करोति समद्वक्तः संगवर्जितः मदेकप्रियते
नेतरसंगमसहमानः निर्वैरः सर्वभूतेषु मत्संस्मरणविद्योगे कस
त्विडः स्वभावतात्सुदः तस्य स्वापराधनिर्मुक्तानुसंधानात् स
र्वभूतानां परमपुरुषतत्वात्संधानात् स
भावातेषु निर्वैरः य एव भूतः समाप्तेति मायया वदवस्थिते मा
प्रोति निरस्ता विद्याय शेषदोषगोमदेका नुभवो भवतीत्यर्थः
५५ इति श्रीमद्भगवद्गीतासु रामानुजाचार्यविरचिते श्रीमद्भग
वद्गीताभाष्यटीकायां एकादशोऽध्यायः ॥

स्वामि नवग्रहकृतटीका ६

सकलोपसंहारोने परमप्रशान्तं रूपं ब्रह्म तत्स्थितिं ददातीति
उपसंहारे भगवतः सोम्यता च विद्यमाना न्यजेत यमणीया ये च

भक्तिः परिपोस्फुरीतिनेषांवासदेवंसर्वमिमादिपूर्वाभि
हितोपदेशचमत्कारादिष्वात्मकेवासदेवतत्त्वमयत्नतय
ववोयपदवीमवतरतीनिशिवम् ५५ शुद्धाशुद्धविमिश्रो
ष्टसंविदैक्यप्रकाशनात् भूर्भुवःस्वसूयपशुपत्समतेनस
मोमुनिः पषोत्रसंग्रहः इतिश्रीमदाचार्याभिनवगुप्तवि
रचितेश्रीभगवद्गीताथसंग्रहेपकादशोऽध्यायः ११

परमार्थप्रपाटीका ७

अथरहस्यंशृण्वत्पाद मत्कर्मकृदिति मदर्थकर्मकरोती
तिमत्कर्मकृत् अहमेवपरमः पुरुषार्थः स मयिभक्तो
मदाश्रितः पुत्रकलात्रादिसंगवर्जितः सर्वभूतेषुनिर्वैरोभ
वति समाप्ताप्रोति नायः तउक्त मस्माभिर्मक्तिशोते ना
नारंगैरनेगायुथमभिलिखतश्चिविणोभ्यासलभ्येसौरभ्यं
नैवतस्मिन्नतुसरणहयेमेडलेचेडरश्मेः तीव्रतेजस्वितो
कीतिमिरनिरसनंतद्वदानंदसंन्यासाभ्यासभाजोनसलभ
मपितृश्रीयहतेसभक्ता ५५ अध्यायताम्यंतमात्रुषं म
त्सेचेत्सपितदपनेयभूर्भुवः स्वर्मेहोतःस्वीकारेवैभवं
चाभयमस्तगतिंरष्टमिच्छास्तिनेचेत् तत्पश्यागतिव
गेनिहतमिहमयादत्तयादिवदृष्ट्याब्रहीनदेवदेवानिति
यडपतिनाप्रोक्तमेकादशोस्मिन् ॥ इतिश्रीमदैवंसंपेडि
तसूयैविरचितायोभगवद्गीताटीकायांपरमार्थप्रपाया
विश्वरूपाख्यमध्यमप्राणतिरूपानांमेकादशोऽध्यायः ११

वृत्तान्तलीटीका ८

अथुतासर्वसगीताशास्त्रस्यसारभूतोर्थोनिः श्रेयसार्थिना
मनुष्ठानायपुत्रीकृतोक्तं मदितिमत्कर्मकृत् मत्स्य
राणाय मत्सीत्पर्थकर्मकारी स्वर्गादिकामनायाससोक
थमेवमितिनेत्याह मत्परमः प्राप्यतेननिश्चितोतत्स
गीदियस्यसः अतएवप्राप्तीच्छयामद्वक्तः सर्वोतमत्वयो
सर्वकमत्येमयुक्तः पुत्रादिपुत्रहंसतिकथेतयेवंप्रेमस्यादि

ह्या

मनु

श्री.
गी. टी.
प

स्य संगावर्जितः बा वस्तुस्य हा मूयः शत्रुषु हे सति कथमेवेत्या
त्रेणाहनिर्वैरः सर्वभूतेषु प्रकादिषु पिह्य मूयः समामाने
दचने सदने तगुणालये सर्वदेवतनयमेति निर्मुक्ता विद्यः स
नमत्साम्ये प्राप्नोतीत्यर्थः निरंजनः परमं साम्यमुपैतीति श्रुतेः
मम साधर्म्यमागता इति वस्तुमाणात्वाच्च अयमर्थस्तथाज्ञातमि
ष्टो मयो यदिष्टो नातः परं किं चित्कर्तव्यमस्तीत्यर्थः ५५ इति श्री
वनमालीकायां भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगो
शास्रे गीताटीकायां पकादशोऽध्यायः ११

ऊर्तनवेनयनीटीका ५

ननु यद्येवं तर्हि वेदतयोदानेनानां साधनानां कागतिरित्यपेक्षा
या यथैव यथाभक्त्या तैसा तैरुपैवैष्टं च शक्यः सितया पुक्त
स्तद्रक्तः कीदृशो भवतीत्याशंकायामाह मक्तर्मकृदित्येवम
दाशयनार्थं येव कर्माणि वेदतयोदानेनानां नि करोति समक्त
र्मकृत् नन्विहा मुत्र चानेकभोगकामनायां सत्यां कथमेवं नि
श्चितस्यादिति चेन्न ज्ञादमपरमः अदमेव परमः सर्वेषां मुपाय
भूतानां कर्मणा मुदेषो यस्य समपरमः नन्विहा मुत्र च भोगेक्षु
मित्यर्थः ननु मित्रपुत्रकलत्रादिषु त्वेहे सति कथमेवं स्यादिति
चेन्नेत्याह संगावर्जितः सर्वेषु स्त्रात्रु कूलेषु प्राकृतवस्तुषु रागा
रहितः ननु शत्रुवर्गेषु हे सति कथमेवं स्यादिति चेन्नेत्याह
निर्वैरः सर्वभूतेषु स्वप्रतिकूलेषु पिभूतेषु प्राणिषु निर्वैरो वै
रमूयः यतोऽस्य सर्वेषु मिमदृक्त्वेन हेष्वाभावत्तमुपपन्न
मेवेत्यर्थः ईदृशो यस्य एवमद्रक्तः समश्च वणाकीर्तनादिनव
लक्षणया भक्तेराश्रयानाम्यः देवा एव पाएतनयस्य एव च म
त्कृपाभाजनो मा सर्वेश्वरं सर्वकारणं सर्वपापं यो गिधो यं यदा
मुने श्रीमुकुन्दमेति मद्रावापतिलक्षणं मोक्षं प्राप्येति नामः अ
तः परं किं चित्त्वया ज्ञातव्यं कर्तव्यं नास्तीति मभिप्रायः ५५ यदि
विश्वम्भरो देवो विश्वरूपेण मोक्षं जन्म सत्युत्तमानतामिह महर
त्तनमाम्यदम् ॥ इति श्रीनियमानेन्दवेशावतैर्प्राक्तसदाशस्यो

+ पुनः सर्वत्र गीताशास्त्रस्य सारभूतार्थानिः श्रेयसार्थानामनुष्ठानाय पुंजीकृतोच्यते ॥

ते वा शिनागिरिधारिदासेन विरचितायां गीतार्थकुशुमे वैजयं
त्वा मेकादशोऽध्यायः ॥ मधुसूदनीटीका ॥

+ मदर्शकर्मवेदविहितं करोतीति मत्कर्मकृत् स्वर्गादिकामना
यां सत्प्राप्तये मेवमिति नेत्याह मत्परमः अहमेव परमः प्रा
प्तये तेन निश्चितो न तस्मादिदं स्पष्टं अतएव मत्प्राप्त्या शया
मद्वक्तः सर्वैः प्रकारैः मम भजनपरः पुत्रादिपुत्रे देसतिकथ
मेव स्यादिति नेत्याह संगवर्जितः बाह्यवस्तुस्पर्हाभूयः शत्रुदे
षे सतिकथमेव स्यादिति नेत्याह निर्वैरः सर्वभूतेषु अपका
रिषु पित्रेष्टेषु नोयः समामेति अभेदेन पांडव अयमर्थस्त्वया
ज्ञातमिष्टो मयोपदिष्टो नातः परं किंचित् कर्तव्यमस्तीत्यर्थः ५५
इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीविश्वेश्वरसंखतीपा
दशिष्यश्रीमधुसूदनसरस्वतीविरचितायां विषयवृत्तदर्शन
निरूपणो नामेकादशोऽध्यायः ॥

सदानंदीटीका ॥

गीताशास्त्रस्य सर्वस्य सारभूतार्थानिः श्रेयसार्थानां सम्य
गनुष्ठानाय चापुनः पुंजीकृतोच्यते श्रीमद्भरिणा करुणाधिना
मदर्शकर्मवेदोक्तं कुर्वन्मम गणः समोपतेन यस्याहं नि
श्चितो नापरोक्षिकः सदवाप्याशयात् अमद्वक्तः सर्वेषां तमः मा
मेव सर्वेषां प्रीत्या सर्वोत्साहेन सर्वदा सदात्मना भजते मत्प
रमाविष्टमानसः पुत्रवित्तकलत्रादौ भोगेषु स्नेहवर्जितः सर्वभू
तेषु मदृष्ट्या तत्तु मतिः पुमान् ५ स्वस्यात्मता प्रकारादि
हंतेषु पुपकारकृत् ईदृशादंभभूयो यामद्वक्तो मामुपैतिसः
६ परागतिरहेतुसद्विरेव न चापरा अयमर्थस्त्वया ज्ञातमिष्टो
तस्मै मयोदितः ७ नातः परं च कर्तव्यं किं विदिता शयोदरेः ५५
सम्यग्वेदैरपीतैः श्रुतिमते विधिना कृतनुष्ठानतोपि स्वातः क्ल
ेशैस्तपोभिर्निजसमकनकैः ब्राह्मणेभ्योऽपि दत्तैः यः शक्नोति नैव
लोके कथमपि दिवि जैर्दृष्टमिच्छद्दिरीशः शक्नोत्येन स भक्त्या
प्रविशतु हृदये मे सकृत् सः स भक्तिः ५५ इति श्रीभावप्रकाशे
श्रीसदानंदविदाकृते हरिप्रसादमाहात्म्यपूर्तिमेकादशोऽध्यायः ॥

नीलकंठीटीका १२

शास्त्रसर्वस्वसंग्रहणमिदमकर्मकृदिति मदर्शमेवकर्मणि क
रोतीति मकर्मकृत् अहमेव परमो निष्कल प्राप्नोयसे निसमस्य
रमः एतेन कृत्तः कर्मयोगाध्यानयोगश्च त्वेपदार्थशोधक उक्तः
ममभक्त आराधनकृदिति उपासनाकोशार्थसंग्रहः संगवर्जित
इमनेन एकांते भगवत्पाननिष्ठसुक्तं निर्वैरइति विश्वभग
वदात्मनापश्येदितुक्तं अस्याभेदबुद्धिमतो निर्वैरत्वासे भवात्
एवंभूतोयः समो तत्पदलक्ष्यार्थभूतमलं शनैर्देकचनेन प्रतिप्राप्नो
ति प्रसंगभेदेन हेण्डवविशुद्धवैशज तमेवैत ज्ञाते शक्रोषी
तिभावः ५५ इति भीष्मपर्वणि नैलकंठीये भारतभावदीपे
कादशोऽध्यायः ५५ ३५

सर्वप्रकरणसुप्रभृतमर्थसिद्धांतीज आनंदीटीका वृत्रथायस्य प
संहरति मकर्मकृत् कृत्यदितानि वर्णाश्रमकर्मणि मनुष्याप्रत्यमेव करोति
नतफलांतरार्थम् अतएव मत्परः अहमुपादेयो यस्य मद्रक्तः स
र्वावस्थासमयेव समाहितचित्तः सर्वभूतेषु संगवर्जितो रागही
नः निर्वैरो देवहीनः समा मेव ब्रह्मैकात्म्यं प्राप्नोति ५५ इति श्री
भागवद्गीता आनंदीटीकायां पकारशोऽध्यायः ५५ ॥ ॥

एतेनैवार्थसिद्धांतीज वृत्रथायार्थस्य प
संहरति सर्वयोगाविशिष्टोपिकश्चिदभिफक्तः समा मेति मद्भेदल
क्षणमिदमपि गच्छति कोटशो मकर्मकृच्छास्वचोदितानि तानि
वर्णाश्रमक्रमागता नि कर्मणि करोति किंतु मदर्शययोग्यपत्त्याम
तप्राप्तयेन तत्फलांतरसिद्धये अतएव मत्परमो ह्येवोपादेयतया
प्रकृत्यो यस्य तत्तत्प्रमदातिरिक्तसमस्तहेयोपादेयवस्तुविरक्तचित्त
ज्ञानमेव भक्तः सर्वावस्थासमयेव समर्पितान्तःकरास्तथासहि
सर्वभूतेषु चराचरभाविषु निःसंगो रागहितो निर्वैरो देववर्जितः
योऽतस्तत्तयारागद्वेषविषयत्वेन सर्वमेसाविभिः परिहृतीतेषु व
स्तुषु तिरिग्यामृतनिर्भरं सत्स्वरूपमेव सततमनुभवति समा
मेवेति सिद्धो मुक्तः इहाद्यतेति तात्पर्यमित्येव संवत्सेवसभावे

नवतवद्भविधेरकमेकांतपुद्गेवंद्विर्भावभेदैरिति विहितपरमर्श
 मुक्तभुमागाम् स्वात्मनेवेश्वरवोमणिमङ्कुरः इव व्यत्यतो वैश्वरूपं
 स्वाध्यायस्यास्य तोते स्फुटमभिमुखतां व्याख्येयैकादशस्य ५५ ॥
 इति श्रीभगवद्गीता रामकंठोटीकायां एकादशोऽध्यायः ॥ ॥

अथ सर्वशास्त्रसारमुप दिशति ॥ ~~रासिकी~~ ~~दश~~ ~~उत्ती~~ टीका
 हेण्डव एव विधो मद्भक्तो मङ्गलसंकोचः समाप्तामेति किंविधस्या
 ह मत्कर्मकृत मत्प्राप्त्यर्थमेवाकुरु कुरु कर्म करोति तथा संगवर्जित
 तः आसक्तिरहितः तथा सर्वभूतेषु निर्वैरः मेमादिवितपरिक
 र्मसंयतः इति युक्तानि निरोधे तत्परमः अहमेव सर्वथा प्राप्य त
 र्थः अतिशिवम् महावाप्या विस्मर्य दर्शने समदर्शयत यः प्रेष
 यार्जुना येव भक्ताधीनं न मामितम् ५५ इति श्रीभगवद्गीता
 वेसमीटीकायां विस्मर्य दर्शने नामैकादशोऽध्यायः ॥ ॥

पंचोलीटीका

इदानीं सर्वस्य गीतांशास्त्रस्य सारं भूतोऽर्थः निश्चये सार्थानुष्ठेयः
 त्वेन समुच्चित्योच्यते मत्कर्म इति हेण्डवयः मत्कर्मकृत
 दर्शकर्म करोति इति मत्कर्मकृतमत्यरमः अहं परमागतिर्यस्य
 मयेव प्रकारैः भजते इति मद्भक्तः यत्नपुत्रकलत्रेण संगवर्जितः
 प्रीतिस्नेहवर्जितः सकलभूतेषु निर्वैरः अशत्रुभावन आत्मनः
 अत्यन्तास्त्रे हेतुने अपि निर्गतवेरस्य यद्दृष्टेयमद्भक्तः समाप्तेति
 अहमेव तस्य परागतिः ५५ इति श्रीपंचोली आचार्यकृतटीका
 यां एकादशोऽध्यायः ॥

रत्नावलीरसमिहोधिनी ॥

इदानीं मर्षसंग्रहवाक्यमुपदिशति मत्कर्मकृदिति मत्कर्मकृ
 त्तयैव पूर्वमेव यत्कर्मदननं मयेवैते निदता पूर्वमेवेत्यादि

१८३
 वचनात्कृतं तदेव कर्म करोतीति मत्कर्मकृद्भव स्वधर्मत्वादिति
 अथवा मदर्थं कर्म मत्कर्म तदपि स्वधर्मलक्षणं कर्म सदर्थं
 मध्यर्पितभावनया ऊर्वतो न ते हि सादोषः अथवा मत्कर्म मतो
 विमृशं कर्मार्थान्मात्रकायकर्म तदेव येषां ते मत्कर्मार्थो महि
 मत्वा मद्भक्त्या वस्तुनान्ति मारयतीति मत्कर्मकृद्भवेति
 भगवदाज्ञैव सर्वस्वयंतस्य निर्लेपत्वादिति तथा मत्परमः
 मतो मत्सकाशादाज्ञां धृतेति शेषः परात्रिपुन्नीनातीति म
 त्परमो भवेति अथवा मत्परमो हमेव धर्मविरुद्धान्परात्मीना
 ति भगवदाज्ञैव शून्यं न्नीति व्युत्पत्त्या मत्परमो भवेति अथ
 वामत्परमो हमेव परमः पूज्यो यस्य स पतादृश लक्षणो भवेति
 तत्ते कश्चिदोषः तथा मद्भक्तो तपवसंगरहितो निर्लेप इत्येता
 दृश लक्षणो यस्तु सर्वभूतेषु सर्वेषु परापरेषु च प्राणिषु निर्वैरः
 सत्यगर्भभेदराहित्यधर्मवत्तावेति संप्राप्तमदनुग्रहः स
 त्वं मामहमिति पदमेधि इत्यगताविति धातोः गत्यर्थाज्ञाना
 र्थाक्षतिवचनादेविज्ञानासीत्यर्थो बोध्यते इति अत्र पांडवेति
 संबोधनपदं महाकाशतरसपूर्णस्वभावत्वादिगतस्वधर्मा
 चरणविषयसंदिग्धवित्तमलसंभावनाप्रतिपादनार्थमि
 ति विषयपदार्थनमाह तस्यात्पांडवः संजातसमग्राहः
 स्वधर्माचरणसमुत्पत्तौ बभूवेति भावः ५५ इति श्रीमद्भगवद्गीता
 वीरसमिद्धोपनिषा श्रीगीता व्याख्यायां विषयपदार्थनना
 मैकादशोऽध्यायः ११

५५ इति श्रीमदनंदतीर्थभगवत्पादाचार्यविरचिते श्रीमद्भगवद्गीताभाष्ये
 एकादशोऽध्यायः ॥

भक्त अनुवाद
 अब शास्त्र के अर्थ का सारोपा परम रहस्य कहते हैं कि हे पाण्डव
 व मत्कर्म कृत कहे मेरी प्रीति के अर्थ जो कर्म कहे और
 मत्परम कहे मंही हो परम प्रयोजन जिसको और मद्भक्त क
 हे मेरे आश्रित यथा पुत्र स्त्री धन मे आशक्ति हीन और भूत
 कहे प्राणि मात्र मे वैर रहित जो है सोई हमको प्राप्त होता है
 ५५ इति श्रीजगन्नाथ शुक्ल विरचितायो मनभावनीटीकाया
 एकादशोऽध्यायः ११

दोहा

मोरे कर्म मो परमदिसंगत जहो मो भक्त सभी जीव मे वैर
 विन सो पांडव मो भक्त ५५ ॥

[Faint, illegible handwritten or printed script]

[Faint, illegible handwritten text]

